**दक्षिणी कामरूप की गाथा** एक अनूठी और असाधारण अनुभव-यात्रा है। यह हमें जीवन के विविध अनुभवों के सम्मुख खड़ा करती है। यह यात्रा तीन विधवाओं के अभिशप्त जीवन के इर्द-गिर्द घूमती है। संपन्न परिवारों से संबद्ध होते हुए भी ये अपने को किसी-न-किसी तरह वंचित-प्रताड़ित पाती हैं। अमरंगा सत्र का भावी गोसाईं युवा इंद्रनाथ इनका एक मात्र सहारा है। उक्त विधवाओं में एक उसकी सगी छोटी बहन है, दूसरी उसकी बुआ है और तीसरी उसकी चाची है। अविवाहित इंद्रनाथ ईलीमन नाम की सामान्य ब्राह्मण कन्या के प्रति अनुरक्त है; पर वह अपनी मर्यादाओं से बँधा हुआ है और कहीं भी अपना संयम नहीं खोता। उसकी एक छोटी बहन गिरिबाला, एक गोरे शोधकर्ता मार्क के मोहपाश में पड़कर भयावह अंत की ओर अग्रसर होती है। उसकी चाची, सारन (छोटी) गोसाइन भी इसी प्रकार पुष्ट देह वाले एक युवा विधुर महिधर की ओर आकृष्ट होती है, लेकिन अपनी भावनाओं के थपेड़े खाने तक ही सीमित रहती है। अपने दिवंगत पति के प्रति श्रद्धानत उसकी बुआ, दुर्गा, अपने गौरव को बनाए रखने के लिए हर क़ीमत चुकाने को तैयार है।

इस भाव-गाथा का दुखद अंत इंद्रनाथ की आकस्मिक मृत्यु के साथ होता है। उसकी मृत्य का कारण भी वही काश्तकार हैं, जिनके उद्धार के लिए वह स्वयं उनके बीच गया था और उन्हें हमेशा के लिए ऋणमुक्त कर देना चाहता था।

**दक्षिण कामरूप की गाथा** उपन्यास (मूल असमिया : *उने खोना हौदा*) सत्रों की गिरती हुई प्रतिष्ठा का द्योतक है। इसमें जहाँ भावनाओं का उतार-चढ़ाव है, वहाँ स्थानीय जन-जीवन का गहन चित्रण और मार्मिक आकलन भी है।

SHOUT
SHARE
IT

# दक्षिणी कामरूप की गाथा

TITLE : Dakshiṇī Kāmarūpa kī gāthā /
AUTHOR STAT : Indirā Gosvāmī ; Hindī anuvāda, Sravaṇa Kumāra.
IMPRINT : Nayī Dillī : Sāhitya Akādemī, 2011
NATURE SCOPE : Novel.
LANGUAGE : In Hindi.
Translated from Assamese.
OCoLC#37580004
D.K Agencies (P) Ltd.
www.dkagencies.com
DKHIN-40148

अस्तर पर छपे मूर्तिकला के प्रतिरूप में राजा शुद्धोदन के दरबार का वह दृश्य, जिसमें तीन भविष्यवक्ता भगवान बुद्ध की माँ–रानी के स्वप्न की व्याख्या कर रहे हैं, इसे नीचे बैठा लिपिक लिपिबद्ध कर रहा है । भारत में लेखन–कला का सम्भवतः सबसे प्राचीन और चित्रलिखित अभिलेख ।

नागार्जुन कोण्डा, दूसरी सदी ई.
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 150वीं जयंती के अवसर पर प्रकाशित

# दक्षिणी कामरूप की गाथा

*मूल*
इन्दिरा गोस्वामी

*हिन्दी अनुवाद*
श्रवण कुमार

साहित्य अकादेमी

**Dakshin Kamroop Ki Gatha :** Hindi translation by Shrawan Kumar of Assamese Classic, *Une Khowa Howda* (A Saga of South Kamrup) by Indira Goswami. Sahitya Akademi, New Delhi (2011), ₹ 120.

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण : 1997

पुनर्मुद्रण : 2011

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001

विक्रय विभाग, स्वाति, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110 001

वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in

ई-मेल : sahityaakademisales@vsnl.net

क्षेत्रीय कार्यालय

172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई-400 014

4, डी.एल. ख़ान मार्ग, कोलकाता-700025

सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी. आर. आंबेडकर वीथी, बेंगलूरु-560 001

चेन्नई कार्यालय

मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443(304)
अन्ना सालइ, तेनामपेट, चेन्नई-600 018

ISBN 81-7201-760-X

मूल्य : एक सौ बीस रुपए

मुद्रक : विकास कम्प्यूटर एंड प्रिंटर्स, दिल्ली-110032

# भूमिका

यह उपन्यास असम के कामरूप ज़िले के एक दूर-दराज़ कोने में बसे एक छोटे-से गाँव के सत्र से सम्बन्धित है। दरअसल, यह एक गोसाईं परिवार की गाथा है और इसकी समयावधि 19वीं शताब्दी के आरम्भिक काल (1820) से शुरू होकर भारत के ब्रिटिश शासन से स्वतन्त्रता पाने तक (1947-48), यानी सवा सौ वर्ष तक फैली हुई है। इसी गोसाईं परिवार के मुखिया सत्र के अधिकार भी बनते रहे। इन अधिकारों को सत्र के लिए अधिकांश भूमि असम के अहोम राजाओं से दान में मिली थी। जनरल जेंकिन के समय में ब्रिटिश शासकों ने भूमि के अनुदान-सम्बन्धी क़ानूनों को बदल डाला। स्वतन्त्रता के बाद भूमि सम्बन्धी कुछ सुधार भी हुए और उनसे इन अधिकारों की भूसम्पदा को और ठेस पहुँची। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि इस उपन्यास में एक वैष्णव सत्र, राजापुखरी सत्र, की भूमि का भी जिक्र आता है।

सत्र के अधिकारों का जीवन विलासपूर्ण और तड़क-भड़क वाला था जिसका धीरे-धीरे क्षरण होता गया। यह उपन्यास इन अधिकारों के आख़िरी दिनों की कहानी कहता है। इसका मुख्य पात्र, जो कि एक आदर्शवादी युवा गोसाईं है, अपनी ही रैयत के हाथों मारा जाता है।

इस उपन्यास में कुछ नारी पात्र भी हैं जो मुख्यतः दक्षिणी कामरूप के गोसाईं परिवारों की विधवाएँ हैं। यहाँ उनकी अनकही विपदाओं और उन्हें जकड़ने वाले सामाजिक बन्धनों का भी गहनता के साथ चित्रण किया गया है।

अमरीकी बैपटिस्ट मिशन असम में 1836 में आया। उसकी कामरूप ज़िले के कुछ हिस्सों पर तगड़ी पकड़ थी, लेकिन मिशन के लोग ब्रह्मपुत्र घाटी के अधिकांश लोगों का धर्मपरिवर्तन नहीं कर पाए, क्योंकि वैष्णव विचारधारा के प्रति भी लोगों की श्रद्धा कुछ कम न थी। बाद में मिशन के कुछ सदस्य विभिन्न सत्रों में आते रहे और वहाँ से पुरातन पाण्डुलिपियाँ, विशेषकर तन्त्र-विद्या तथा अन्य विषयों से सम्बद्ध, एकत्रित करते रहे।

ऐसे ही एक वैष्णव गोसाईं की विधवा हो गयी युवा बेटी मार्क नाम के एक क्रिस्तान मिशनरी से प्रेम करने लगती है। लेकिन इस प्रेम का परिणाम त्रासदी का रूप ले लेता है। एक रात जब उसे मार्क की झोंपड़ी में उसके साथ पकड़ लिया जाता

है तो उसे घसीट कर बाहर लाया जाता है और उसे मजबूर किया जाता है कि अपने पाप को धोने के लिए वह निर्धारित कर्मकाण्ड की पूर्ति करे। इस कर्मकाण्ड के दौरान इस युवती को लगता है कि इससे तो मृत्यु बेहतर होगी। इसलिए वह जान-बूझकर लपटों से घिरी झोंपड़ी से बाहर नहीं आती। दरअसल, झोंपड़ी को अग्नि के हवाले करना इस कर्मकाण्ड का एक अंग था।

उन दिनों समूचा गाँव, जिसमें इस सत्र के सदस्य भी शामिल थे, अफ़ीम की चपेट में था। इस बुरी लत ने अनेक पुरुषों और स्त्रियों के जीवन को नष्ट कर दिया था, हालाँकि वे दारिद्र्य की ठण्डी ज़ंजीरों से जकड़े हुए थे और अकल्पनीय रूप से अपमानित होते थे। इसके विपरीत अधिकार और गोस्वामी ऐश्वर्य का जीवन जीते थे। उनके अनुयायी, जो उनकी रैयत भी होते थे, अज्ञानता या अन्धविश्वास के कारण उनका आँख मूँदकर अनुसरण करते थे। अधिकार लोग कुछ ख़ास-ख़ास किस्म के मुश्किल कामों के लिए हाथी पालते थे, लेकिन ये हाथी उनकी शक्ति और सम्पदा के प्रतीक भी थे। शादी-ब्याह के अवसरों पर इन हाथियों की बड़ी सज-धज रहती थी और अधिकार लोग दक्षिणी तट में होने वाले शादी-ब्याहों में अपनी पूरी तड़क-भड़क के साथ इन हाथियों पर बैठकर वहाँ पहुँचते थे। इन हाथियों का व्यावसायिक उपयोग भी किया जाता था, यानी इनकी मदद से जंगली हाथियों को पकड़ा जाता था और फिर उन्हें सधाकर या तो बेच दिया जाता था या उनके बदले में कुछ अन्य वस्तुएँ प्राप्त कर ली जाती थीं। दक्षिणी कामरूप के रानी क्षेत्र में एक हाथीबाड़ा था जहाँ से जंगली हाथियों को पकड़ा जाता था और फिर उन्हें वहीं पूरी तरह सधाया जाता था।

लम्बे दाँत वाला एक उन्मत्त हाथी और घुन खाया हौदा जर्जर और विखण्डित हो रहे एक ऐसे सत्र के प्रतीक हैं जहाँ बड़े-बड़े ज़मींदारों के हाथ में सारी सत्ता और वैभव केन्द्रित थे।

दक्षिणी कामरूप के इस दूर-दराज़ के सत्र की कहानी इस शताब्दी के तीसरे दशक के प्रारम्भ से शुरू होती है और पूर्वदीप्ति तथा पुरानी स्मृतियों के सहारे स्वतन्त्रता-प्राप्तिकाल तक पहुँचती है। ये स्मृतियाँ उन्नीसवीं शताब्दी तक भी जा पहुँचती हैं। चौथे दशक के अन्तिम दौर में कम्युनिस्टों के विद्रोह के कारण ग्रामीण असम में बड़ी खलबली मच गई थी। इसके कुछ भाग इतने अलग-थलग और पिछड़े हुए थे कि कुछ बूढ़ी औरतें यह मान रही थीं कि देश में अब भी रानी विक्टोरिया का राज है, और इस नाते उसके प्रति गहरा आदरभाव रखती थीं। उन्हें तो जब कोई कसम खानी होती या किसी को आशीर्वाद देना होता, तो वे रानी का नाम ही लेतीं। रानी दुहाई, दरअसल, उनका तकिया-कलाम बन गया था।

# एक

वर्ष 1948 :

जुए के अड्डे पर हमेशा की तरह ताश की बाज़ी चल रही थी। इन्द्रनाथ वहाँ खड़ा बाज़ी देख रहा था। हवा शान्त और निःस्वर थी। यदि कोई स्वर सुन भी पा रहा था तो वह था केवल बजरी-बिछे रास्ते पर चल रही बैलगाड़ी के पहियों का। यह रास्ता अभी नया-नया बना था। कुछ महिलाएँ एक कक्ष में अलग-थलग बैठीं गोलोकधाम का खेल खेल रही थीं। लेकिन वे भी बिलकुल ख़ामोश थीं।

बोरीहाट के व्यापारी बोलोराम को हर कोई जानता था। वह एक तकिये के सहारे बैठा था। उसने जैसे ही इन्द्रनाथ को खड़े देखा, वैसे ही उसने उसे हाथ से रोक लिया और बोला, "अरे, आप इतनी जल्दी जा रहे हैं? आज तो पूर्णमासी की रात है।"

इन्द्रनाथ ने बाँस की तिपाई से लटकती लालटेन को देखा। पूरे चाँद की रोशनी में लालटेन की रोशनी फीकी दिख रही थी और शान्त हवा में सेवाली[2] के फूलों की हलकी सुगन्ध तैर रही थी। इन्द्रनाथ वहीं बैठ गया और बाज़ी फिर से शुरू हो गयी। खेलने वालों में 'वंशीगोपाल जात्रा मण्डली' का एक अभिनेता और रानी क्षेत्र के फीलखाने का एक अधिकारी भी शामिल थे।

दरअसल, यह अड्डा बोलोराम ही चलाता था। यहाँ कामरूप के दक्षिणी भाग से कई जाने-माने लोग खेलने आते। इनके अलावा कई जात्रा मण्डलियों के अभिनेता भी आते। ये मण्डलियाँ विभिन्न इलाकों से थीं, जैसे सदिलापुर, खड़ापाड़ा, मेधीपाड़ा, डाखला, टोंगापाड़ा इत्यादि। मण्डलियों के संचालकों के बीच हमेशा खींचातानी चलती रहती। उनकी कोशिश यही होती की दूसरी मण्डली का अभिनेता उनकी मण्डली में आ जाये। कभी-कभी हाथापाई तक की नौबत भी आ जाती, और कभी-कभी खून भी बह जाता। आधी रात होती तो कुछ दुबली-पतली कायाएँ, लगभग ठठरी हुई-सी, एकाएक कहीं से प्रकट हो जातीं और पत्ते खेलने वालों के पाँवों पर गिरकर उनसे पैसे माँगने लगतीं। पैसे माँगने वाले ये सब अफ़ीमची ही थे। कभी ये इज़्ज़तदार किसान थे। लेकिन अब तो दयनीय स्थिति में थे। माँगते समय उनकी आवाज़ आर्तनाद करती हुई सी सुन पड़ती। वे तब तक पत्ते खेलने वालों के पाँव पकड़े रहते जब तक कि उन्हें कुछ मिल न जाता।

इन्द्रनाथ इस इलाके का बहुत ही सम्मानित व्यक्ति था। अधिकार[3] की गद्दी पाने की बारी अब उसी की थी। क़द्दावर और मज़बूत पुट्ठों वाला तो वह था ही, उसके सर पर घने, घुँघराले बाल भी थे। उसका रंग पके अंजीर का-सा था। वहाँ रहने वाले अंग्रेज वन-अधिकारियों का-सा। प्रतिष्ठा उसके अंग-अंग से झलकती थी। उसके मिजाज़ से हर कोई परिचित था और हर कोई उससे भय खाता था। झूठे व्यक्ति को तो वह कभी नहीं बख्शता था। गोसाईं की हवेली की ड्योढ़ी में जब पंचायत जुटती और कोई व्यक्ति कसूरवार पाया जाता तो उस पर सबके सामने कोड़े बरसाये जाते और कोड़े बरसाने वाला स्वयं इन्द्रनाथ ही होता। वह इतनी बेरहमी से कोड़े बरसाता कि कोड़े खाने वाले व्यक्ति को वहाँ से उठाकर ही ले जाना पड़ता। लेकिन गरीबों का वह दोस्त था, हालांकि वह उनके लिए ज़्यादा कुछ नहीं कर पाता था, क्योंकि अधिकार अभी उसका पिता ही था। इधर उसका गुस्सा कुछ ठण्डा पड़ा था, खासकर तब से जबसे उसकी इकलौती बहन, गिरिबाला, के पति का देहान्त हुआ था। गिरिबाला से उसे बहुत ही स्नेह था।

इन्द्रनाथ अब अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ। बोलोराम ने एक बार उसकी तरफ़ देखा, लेकिन फिर वह यह सोचकर चुप हो गया कि उसे अब रोकना बेकार ही होगा। इन्द्रनाथ खड़ा हुआ तो बाकी खेलनेवाले भी उसके सम्मान में खड़े हो गए। इतने में बोलोराम पंखा झुला रहे अपने दोनों नौकरों पर डपटा, "अरे, मैं तुम दोनों से कह रहा हूँ। गोसाईं के साथ जाओ और उनकी साइकिल से पहले धूल-मिट्टी झाड़ो।"

इन्द्रनाथ पंजाबी (लम्बा कुर्ता) पहने हुए था। उसने उसकी जेब से शीशम की लकड़ी की पाइप निकाली और उसे अपने मुँह में लगा लिया। फिर उसने उसे जलाया और धुआँ भीतर खींचने लगा। अब वह अपनी साइकिल पर सवार था, और धीरे-धीरे उसके पैडल चलाता हुआ अपने घर की ओर बढ़ रहा था। रात बिलकुल साफ़ और चटक थी। चमचमाता चाँद जाति बाँस[4] के झुँडों में हिलते पत्तों के साथ अट्खेलियाँ कर रहा था। इन्द्रनाथ को लगा जैसे कि चाँद सुनहली मछली हो जो बाँस की पत्तियों के जाल से बच निकलना चाह रहा हो। फेचु लोका नाम का एक पक्षी कू-कू के मीठे स्वर छोड़ता उसके सर पर से निकल गया। अब उसे जगलिया नदी की कलकल भी सुनाई दे रही थी। वह युवतियों द्वारा पहनी जाने वाली मूगा मेखला[5] की सर-सर की तरह थी। पक्षी के स्वर की उदासी उसके दिल को छू गई।

रात के समय जब वह इस रास्ते से गुज़र रहा होता तो उसे हमेशा ऐसा ही अनुभव होता। उसके अपने दिल में भी कहीं अजीब-सी उदासी थी। लेकिन कोई वक्त था जब यह दिल बिलकुल शान्त था। ऐसा भाव उसके मन में तभी उठता, जब वह इस रास्ते से गुज़र रहा होता। वह फनियर की तरह अपना सर उठा लेता, वरना उसके भीतर सुषुप्त-सा पड़ा रहता।

अब तक इन्द्रनाथ जगलिया नदी पर बने लकड़ी के पुल पर पहुँच चुका था। उसने वहाँ मुँडेर के साथ अपनी साइकिल खड़ी की और स्वयं भी वहीं चुपचाप खड़ा हो गया। उसके दाईं तरफ़ घना जंगल था। एक तंग रास्ता खटियामारी जाता था। बरहेरामदो के लोगों ने अब एक ताज़ा अफवाह फैलाई थी कि जंगल के इस भाग में एक भूत रहता है जो पुल तक आ जाता है। पिछले एक महीने से यह अफ़वाह गरम थी। लोगों का कहना था कि भूत पुल के पास ही मँडराता रहता है।

आधी रात का समय था। इन्द्रनाथ इधर-उधर झाँक रहा था ताकि भूत की झलक मिल जाये। उसने यह भी सुना था कि एक दिन जब हाट लगा था, भूत ने पास से गुज़रती कुछ मछियारिनों के कपड़े छीन लिए थे और लोग मारे डर के कुछ बोल भी न पाए थे। इन्द्रनाथ मन ही मन हँसा। बेचारे! वे तो यह भी नहीं बता सकते कि भूत की शक्ल-सूरत कैसी है। कुछ का कहना था कि वह वहाँ के गाँव के किसी बूढ़े अफ़ीमची की तरह दिखता है। कुछ और का कहना था कि वह हैज़ा के मरीज़ की तरह जर्जर है।

अब उसके नथुनों में हाथी की लीद की बदबू भर रही थी। जहाँ हाथी बाँधे जाते थे, वह जगह वहाँ से ज़्यादा दूर नहीं थी। हाथियों के कानों का बजना वह बराबर सुन रहा था। वह अपनी जेब में कुछ ढूँढ़ने लगा। उसके हाथ विमको की माचिस की डिबिया और कैवेण्डर सिगरेट का एक पैकेट लगा। सिगरेट के पैकेट पर एक नाविक का चित्र था। उसने एक सिगरेट सुलगाई और खुश होकर अपने पुराने मित्र बोलो के बारे में सोचने लगा। उसी ने उसकी जेब में चुपके से एक डिब्बी रख दी होगी। उसे पलासबाड़ी हाई स्कूल से छात्रवृत्ति मिली थी। वह छात्रवृत्ति गिलमिल साहब की देन थी। भाग्य ने हमेशा उसका साथ दिया। वह अब एक अमीर आदमी है। जितने भी फिरंगी बरडोआ चाय बागान में आते हैं, उसे विमको माचिस की डिब्बियाँ और कैवेण्डर के सिगरेट भेंट-स्वरूप अवश्य देते हैं।

इन्द्रनाथ ने अपनी साइकिल उठायी और सत्र[6] की दिशा में बढ़ चला। साइकिल के टायर बजरी पर इस तरह की आवाज़ पैदा कर रहे थे मानो चक्की में कुछ पीसा जा रहा हो। अब वह दिवाकर भगवती की झोंपड़ी तक पहुँच गया था। यहाँ पर वह सत्र में दाखिल होने के लिए दायें मुड़ा। दिवाकर युद्ध के दिनों में बेस कैम्प का ठेकेदार रहा था। वह सैनिकों को कबूतर, मुर्गाबियाँ और चावल पहुँचाया करता था। उसके यहाँ हब्शी सिपाही आते-जाते रहते। उनके जूतों की ठप-ठप से सत्र में रहने वाले लोगों की नींद हराम हो जाती। वे रात को सो न पाते। अब तो वहाँ फूस की छत थी, लेकिन पहले वहाँ टीन की चादरें थीं।

इन्द्रनाथ को याद था कि दिवाकर सैनिकों को एक और चीज़ भी पहुँचाया करता था। वह चीज़ बड़ी अजीब थी। यानी जोंकें। अपने दो कामगारों के साथ वह नदी किनारे पहुँचता। वहाँ हाथियों को नहलाया जाता था। उसका हाथी जब पानी से बाहर

आता तो उसके पहाड़ जैसे शरीर से सैकड़ों जोंकें चिपटी होतीं। उन जोंकों को खींचकर अलग किया जाता और बेंत की टोकरियों में भर लिया जाता। फिर उन्हें हब्शी सैनिकों को बेच दिया जाता। सैनिक लोग बदले में उसे तथा उसके अलावा हाथियों के महावतों और महावतों के सहायकों (कामाला[7]) को कभी कढ़ाइयाँ देते, कभी डिब्बा बन्द मेंढक की टाँगें और कभी डिब्बे और बोतलों में बन्द कुछ दूसरे पदार्थ जिन्हें फिरंगी चाव से खाते थे। इसी से उसे जोंकराम भगवती कहा जाता था। पर अब तो वहाँ कुछ नहीं रहा था। अब तो उसकी झोंपड़ी की छत बूढ़े ऊँट की खाल की याद दिलाती है। दीवारें भी ढह जाने को हो रही हैं। पहले सहन में जो भूसा पड़ा रहता था, वह भी अब वहाँ नहीं है। कहा जाता है कि जोंकराम की बरबादी का कारण उसका कूच-बिहार के एक व्यक्ति के सम्पर्क में आना था। वह व्यक्ति अफ़ीम का धन्धा करता था और मिकिर की पहाड़ियों की ढलानों पर चोरी से पोस्त की खेती करता था। जब से इन दोनों ने यह काम मिलकर करना शुरू किया था, जगलिया नदी के किनारों पर होने वाली अफ़ीम की बिक्री कम हो गयी थी। कहाँ एक महीने में दो मन की बिक्री और कहाँ अब केवल दस सेर की बिक्री। जब अफ़ीम से होने वाली कर की वसूली एकाएक गिर गयी तो सरकार को शक हुआ और भगवती फाँस लिया गया। इधर अफ़ीम को लेकर और भी कई किस्से हुए। सरकारी बजट में अफ़ीम से होने वाली आय दूसरे स्थान पर थी। कुछ ही वर्ष पहले एक-एक, डेढ़-डेढ़ मील के चप्पे पर अफ़ीम की दुकानें खोलने के लिए खुलकर लाइसेंस दिए गये थे। फिर भी तस्करी जमकर हुई थी, यहाँ तक कि रंगून की मण्डी में भी अफ़ीम के ढेर लग गये थे।

इन्द्रनाथ का ध्यान झोंपड़ी के पिछवाड़े की ओर गया। अब तो वहाँ जो फूस पड़ा था, वह दुबके बैठे एक नन्हे ऊँट की तरह दिख रहा था। इन्द्रनाथ को साफ़-साफ़ याद है कि जोंकराम कैसे उसके पिता, यानी अधिकार के पाँवों पर गिरा था और हाथ बाँधे कैसे उसके सामने गिड़गिड़ाया था कि उसे आबकारी पुलिस के जाल से बचा लिया जाये। उसके पिता गुवाहाटी से अफ़ीम निषेध अधिनियम (1947) की एक प्रति खरीदकर लाए थे और उसे बारीकी से पढ़ते रहे थे। धारा 39 के अन्तर्गत उस अधिनियम में कुछ और भी जोड़ा गया था जो इस प्रकार था :

> दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1898 की धारा 497 के प्रावधानों के बावजूद इस अधिनियम के अन्तर्गत जो भी व्यक्ति ग़ैर-ज़मानती अपराध की ज़द में आता है, उसे कोई भी न्यायालय बग़ैर सज़ा दिए ज़मानत पर छोड़ नहीं सकता। इस बाबत बाक़ायदा सूचना दी जायेगी, बशर्ते कि सभी आदेश ये स्पष्ट करें कि ज़मानत किस आधार पर स्वीकार की जा रही है…

धारा 5 तो और भी महत्त्वपूर्ण थी।

साक्ष्य मिलने पर जो भी व्यक्ति अफ़ीम की तस्करी या बिक्री करने के लिए

अपराधी पाया जाता है, उसे कम से कम दो साल की कड़ी सज़ा और जुर्माना भुगतना होगा।

भगवती गोसाईं की हवेली की ड्योढ़ी में ही गिर पड़ा था। गोसाईं के सभी यजमान वहाँ इकट्ठे हो गये थे और चीख़ने-चिल्लाने लगे थे कि एक ब्राह्मण को कारावास में डालना महापाप है, कि इस प्रकार पहले किसी ब्राह्मण को दंड नहीं दिया गया। उन्होंने इंस्पेक्टर को चेतावनी दी कि यदि उसने एक ब्राह्मण को जेल में ठूँसा तो वह नर्क के ऐसे गर्त में गिरेगा कि वहाँ से कभी निकल नहीं सकेगा। लेकिन इन्स्पेक्टर ऐसी बातों की कहाँ चिन्ता करने वाला था? वह तो अफ़ीम के जितने ज़्यादा अपराधी पकड़ेगा, उसकी उन्नति के अवसर उतने ज़्यादा बढ़ेंगे। इन्द्रनाथ के पिता ने फिर भी ज्यों-त्यों करके भगवती को ज़मानत पर छुड़वा दिया था।

भगवती का घर बाहर से बिलकुल जीर्ण-क्षीर्ण दिखता था। इन्द्रनाथ ने वहाँ जलता हुआ तेल का दीया देखा। भीतर से ठहर-ठहरकर सूखी खाँसी की आवाज़ भी आ रही थी। इन्द्रनाथ को लगा कि हो न हो, यहाँ अफ़ीमचियों का जमघट लगा होगा और वे गुड़गुड़ी में अफ़ीम पी रहे होंगे। वहाँ पान के पत्तों के भुनने की गन्ध भी आ रही थी जोकि उसके नथुनों में भरती जा रही थी। इस बदनसीब को कई दिनों तक सुधार शिविर में रखा गया ताकि इसकी अफ़ीम पीने की आदत छूटे, लेकिन क्या उसमें कोई बदलाव आया?

इन्द्रनाथ अब सड़क के साथ-साथ मुड़ता गया। वह एक बड़े बरगद के पेड़ के पास से गुज़र ही रहा था कि उसे एक कमज़ोर-सी आवाज़ सुन पड़ी, जैसे कि कोई बीमार पक्षी उसे चीखकर पुकार रहा हो, "मालिक, ताश की बाज़ी लगाकर आ रहे हो?"

इन्द्रनाथ ने पेड़ के साये में झाँककर देखा। वहाँ एक आदमी बूढ़े चील की तरह उकड़ूँ बैठा था। वह कोढ़ का शिकार था और गाँव से बाहर कर दिया गया था। इन्द्रनाथ जब कभी इस वक्त वहाँ से गुज़रता, वह कोढ़ी ज़रूर उसे पुकारता। उसकी चीखती आवाज़ इन्द्रनाथ को हमेशा परेशान करती। उसने उसे फिर याद दिलाया, "क्या आप इस गरीब तड़पती आत्मा को तिनकों का एक छप्पर नहीं दे सकते? मक्खियाँ और मच्छर काट-काटकर मेरी चमड़ी ही खा जायेंगे। मैं कैसी घोर यातना भुगत रहा हूँ। आपके देखते ही देखते मेरी सारी चमड़ी नुच जायेगी और आपको फिर यहाँ नर-कंकाल ही पड़ा मिलेगा।"

इन्द्रनाथ ने अपने कुर्ते की जेब में हाथ डालकर कुछ सिक्के निकाले। वे सिक्के उसे किसी ने बोलो की ताश की बाज़ी के समय दिए थे और देने से पहले बड़े आदर से उसके पाँव छुए थे। उसने वे उस कोढ़ी की ओर उछाल दिए और आगे बढ़ गया। हाथियों की लीद की एक खास तरह की गन्ध हवा में फैली हुई थी। वह और तेज़ चलने लगा। अगर उसने अगला मोड़ पार कर लिया तो वह जल्दी ही अपने बातघर

(हवेली के द्वार) पर होगा। हलकी चाँदनी में घास-फूस की झोंपड़ियों की रूपाकृति युद्ध से ध्वस्त एक गाँव के चित्र के समान दिख रही थी। इस गाँव में कोई तीन सौ व्यक्ति रहते होंगे, लेकिन उनमें से ढाई सौ के करीब अफ़ीम की गिरफ्त में आ चुके थे।

अपनी हवेली के द्वार पर पहुँचते ही इन्द्रनाथ ने अपनी साइकिल ड्योढ़ी में रखी और कुएँ की ओर बढ़ गया। बरामदे में उसकी माँ और दुर्गा बुआ उसका इन्तज़ार करती दिखीं। दुर्गा बुआ के पति का देहान्त कुछ समय पहले हो गया था और अब वह यहीं रहती थी। इन्द्रनाथ की माँ की रातों की नींद उड़ चुकी थी। जब से इन्द्रनाथ की छोटी बहन के युवा पति की अचानक मृत्यु हुई थी, तभी से वह बेचैन थी, और बराबर यही सोचती रहती कि उसकी जवानी कैसे बीतेगी, और क्या उसे उसकी ससुराल से अपने यहाँ ले आना उचित होगा? तब यह भी तो हो सकता है कि उसकी ससुराल वाले उसे वापस लें ही नहीं या जायदाद में से उसका हक भी मार लें। दुर्गा के साथ भी तो ऐसा ही हुआ था।

हर रात उसकी माँ उसका इन्तज़ार करती रहती और उसकी बुआ माँ के पास बैठी रहती। अब जैसे ही उन्होंने इन्द्रनाथ के पाँवों की चाप सुनी, वे उठ बैठीं। उसकी माँ उसे भात परोसने के लिए रसोई की ओर बढ़ी। लेकिन जाते-जाते रुकी और बोली, "यह रोज़-रोज़ देर से आने की गन्दी आदत तुम कब छोड़ोगे? आजकल तो तुम ज़मीन की तरफ़ भी कोई ध्यान नहीं देते। उधर माराभीटा में कम्युनिस्ट अपनी ताक़त बढ़ा रहे हैं। हो सकता है टिड्डी दल की तरह वे हमारी ज़मीनें चट कर जायें। लेकिन तुम्हें क्या? तुम्हारे पिता को नींद तक नहीं आती। वह इसी के बारे में सोचते रहते हैं।"

इन्द्रनाथ ने कोई उत्तर नहीं दिया। फिर दुर्गा ही बोली, "रात के अँधियारे में वह भयावना भूत फिर सड़कों पर आने लगा है। तुम्हारी माँ लगातार बैठी तुम्हारा इन्तज़ार करती रहती है और गुड़गुड़ी पीकर सब्र कर लेती है।"

इन्द्रनाथ अपने को अब रोक न सका। वह एकाएक बरसा, "अरी चुड़ैलो, कौन कहता है तुमसे कि वहाँ बैठकर मेरा इन्तज़ार करो। अगर तुम मेरे पीछे ऐसे ही पड़ी रहीं तो मैं रात को घर लौटूँगा ही नहीं। ध्यान से सुन लो।"

दोनों महिलाएँ एकदम चुप हो गयीं। उनके पास अब कोई शब्द न था।

खाना खा चुका तो इन्द्रनाथ वहीं उन दोनों के पास एक तिपाई पर बैठ गया। रात के इस समय गोसाइन आमतौर पर रसोई से लगे छोटे से कमरे में घुस जाती और वहाँ अपने कपड़े बदलती। घर में चाहे अनेक नौकर थे, पर वह खाना हमेशा खुद ही बनाती, और जब खाना बनाने लगती, तब वह लाल रंग की मेखला पहन लेती (ब्लाउज तथा चप्पलें उसने अपने जीवन में कभी नहीं पहनी थीं)। जब वह घर से

बाहर जाती तो उसके कन्धों और वक्ष पर बड़ी चादर लिपटी होती। जिस छोटे-से कमरे में वह कपड़े बदलती थी, वहाँ उसने एक गुड़गुड़ी भी रख छोड़ी थी जिस पर वह एक-दो सुट्टे ले लेती। लेकिन आज वह उस कमरे में नहीं गयी, बल्कि इन्द्रनाथ से धीमे से बोली, "छोटी गोसाइन अपने यजमानों से मिलने गई थी। जगलिया में हालाँकि पानी बड़ा ज़ोर मार रहा था, पर वह भी उसे रोक न सका। पहले वक़्तों में जब नाव चढ़ावे से लदी लौटती, तो उस पर से सामान उतारने के लिए छः से आठ बन्धुवों की ज़रूरत पड़ती। अब तो दो-एक ही काफ़ी होते हैं। मैंने उससे कहा था कि इतने गन्दे मौसम में वह वहाँ न जाये। पर वह सुनती ही न थी, बल्कि उसने पलटकर जवाब दिया, 'बहुत बुरा वक़्त है। अगर मैंने आने वाले दिनों के लिए कुछ भी बचाकर न रखा तो मुझे भूखों मरना होगा।' वाकई बेटा, छोटी गोसाइन बड़ी हिम्मत वाली है।"

छोटी गोसाइन महाप्रभु गोसाईं के भाई की विधवा है। उसके पति की सत्र के एक वार्षिक उत्सव में आतिशबाज़ी करते समय मृत्यु हो गयी थी। वह स्वयं ही उत्सव के लिए बारूद और दूसरे विस्फोटक पदार्थों से पटाखे तैयार करता था। पति की मृत्यु के बाद भूमि तथा यजमानों का बँटवारा हो गया था और उसे अपना हिस्सा मिल गया था। जिस होशियारी से उसने अपनी भूमि की व्यवस्था की थी और यजमानों का भी ख़याल रखा था, उससे उसकी इज़्ज़त काफ़ी बढ़ गयी थी। लेकिन अब हवा बदल रही थी। इसलिए धीरे-धीरे उसका वर्चस्व खत्म होता जा रहा था।

माँ की बात सुनकर इन्द्रनाथ ने कहा, "तुम दोनों हमेशा छोटी गोसाइन तथा कम्युनिस्टों के ख़तरे की बात करती हो। तुम खुद क्यों नहीं कुछ करतीं? जाओ, जाकर खुद देखो और ज़मीन को बचाओ। तुम्हें ज़मीन और यजमानों के बारे में सब कुछ मालूम है।"

इन्द्रनाथ की बात सुनकर दोनों महिलाएँ एक साथ बोल पड़ीं, "राम! राम! हम गोसाईं घराने की औरतें हैं। वहाँ सबके सामने जायें? छोटी गोसाइन अपने यजमानों के ज़रिए काम करवाती है। स्वयं वह वहाँ कभी पाँव नहीं रखती। इसीलिए उसकी हर कोई इतनी इज़्ज़त करता है। वह तो ज़मीन का मुक़दमा लड़ने गुवाहाटी तक नहीं गयी थी। सब कुछ उसके यजमानों ने ही किया। वह घर की इज़्ज़त और आन-बान बनाए रखना जानती है।"

इस पर इन्द्रनाथ एकाएक बोल पड़ा, "मुझे सब पता है। लेकिन पुराने वक्त गये अब। दादी इसी हवेली में ख़त्म हुई थी, पर उसने कभी बातघर से बाहर क़दम नहीं निकाला था। उसका प्रेत अब इसी चारदीवारी में मँडराता है। जगन्नाथपुरी जाने की उसकी कितनी इच्छा थी। लेकिन उसकी इच्छा उसके दिल में ही रह गयी। उसे हर साल होने वाली 'सभा' (नाट्य-उत्सव) की एक झलक पाने के लिए भी कई परदों के पीछे रहना पड़ता था। तुम सब भी मात्र प्रेत ही हो। इन्सान होने का तो केवल दिखावा है…"

इन्द्रनाथ की माँ को इस पर गुस्सा आ गया। बोली, "चुप रहो। बन्द करो यह बकवास। इस घर की औरतों ने जो इज़्ज़त पाई है, वह देवताओं को ही मिलती है, और तुम बात करते हो प्रेतों की? बोलो का वह भ्रष्ट जुए का अड्डा तुम्हारे दिल और दिमाग को चट कर गया है। तुम्हें तो अपनी जाति का भी लिहाज़ नहीं। तुम उन्हीं के साथ बैठकर चाय पीते हो। तुम्हें पता है कि वहाँ हर तरह के नीच लोग आते हैं।"

इन्द्रनाथ ने जंभाई के साथ-साथ अंगड़ाई भी ली और फिर दुर्गा बुआ की ओर देखते हुए बोला, "बुआ, तुमने चिकारहाटी में अपने पति का घर छोड़कर भारी भूल की। अब तुम्हें जायदाद में से फूटी कौड़ी भी न मिलेगी। देखती रहना। वे तुम्हें वापस लिवाने कतई नहीं आयेंगे। मुझे वहाँ नीचे डाखला में सुनने को मिला कि उन्होंने ज़मीन का कुछ हिस्सा बेच भी डाला है। तुम्हें तुम्हारा हिस्सा मिला?"

दुर्गा को गुस्सा आ गया। वह तड़ककर बोली, "चुप रह! मुझे मेरा हिस्सा मिलेगा और वे मुझे लिवाने भी आयेंगे। मैं यहाँ नहीं मरूँगी। मेरी बात याद रखना।"

इतना कहकर वह अपना माथा अपने घुटनों पर टेककर गूँगी बनी बैठी रही। वह अपने में खोई हुई थी। इन्द्रनाथ के शब्दों ने उसे छील दिया था।

हवेली के पिछवाड़े से, जहाँ बाँसों के झुरमुट थे, गीदड़ों ने लम्बी-लम्बी हूकें निकालना शुरू कर दिया था। बड़ी गोसाइन अपनी जगह से उठी और जल्दी से अपनी कोठरी में घुस गयी ताकि बिस्तर पर लेटने से पहले हमेशा की तरह थोड़ा हुक्का गुड़गुड़ा ले। इन्द्रनाथ भी वहाँ से उठा और घर के भीतर चला गया। अब केवल दुर्गा ही वहाँ बैठी रह गयी। वह पहले की तरह ही घुटनों पर अपना माथा टेके निष्क्रिय हो रही थी। इस तरह बैठे रहना उसकी आदत हो गयी थी। चिन्ताओं से घिरी, दुनिया-जहान से परे, वह ऐसे ही बैठी रहती, बिना एक पल भी सोये। सर्दी का मौसम होता तो वह हरी टहनियों की जलती आग के सामने बैठी रहती, जिसमें से खूब घना धुआँ ऊपर उठता रहता। अक्सर राख से उसकी मेखला भी गन्दी हो जाती। कभी-कभी गर्मी पाने के लिए वहाँ कोई चीता या बाघ भी आ निकलता और वहीं दुबककर बैठा रहता। दुर्गा को आँख के कोने से जैसे ही उसकी झलक मिलती, वह एकदम चौकन्नी होकर सीधी हो जाती और इतने में ही वह हिंस्र पशु वहाँ से चम्पत हो जाता। दुर्गा फिर अपने ख़यालों में खो जाती। उसका मन, दरअसल श्मशान भूमि बन गया था। उसे हर रोज़ कोई न कोई ऐसा कारण ढूँढ़ना पड़ता जिससे वह अपने आपको कायम रख सके। यह काम बड़ा दुस्साध्य था। कुछ वर्ष पूर्व वैधव्य स्वीकारते समय उसने जिन कर्म-काण्डों की सहज ही पूर्ति कर डाली थी, वही अब उसके लिए भय का कारण बनते जा रहे थे। शीघ्र ही अमोटी[10] शुरू हो जायेगी। तब धरती रजस्वला हो जायेगी। तब उसके लिए धरती पर पाँव रखना वर्जित हो जायेगा। तीन दिन तक उसे बाँसों की शैया पर ही पड़े रहना होगा। शौच के लिए बाहर जाते समय

उसे अपने पाँव सुपारी के पेड़ की छाल से ढाँपने होंगे। उसके लिए पका खाना भी वर्जित हो जायेगा और तीन दिन तक कच्ची सब्ज़ियाँ और फलों पर ही रहना होगा। कितना गुस्सा उसे आ रहा था। पर भय भी था और गुस्से तथा भय की मिली-जुली लहरें उसके भीतर दौड़ रही थीं।

उसकी सास हमेशा यही सोचती कि दुर्गा के कारण ही उसके घर पर मौत का साया मँडराने लगा और उसके बेटे को उठा ले गया। वह दुर्गा के पिता, अमरंगा के गोसाईं को दोष देती कि उसी ने अपनी बेटी की शादी उनके यहाँ रचाने के लिए उसकी पत्तरी में कुछ हेर-फेर किया। उसे शक था कि दुर्गा की असली पत्तरी में तीन दुष्ट ग्रह होंगे। वे लोग दुर्गा को कभी किसी शुभ अवसर पर नहीं बुलाते थे। उसे इन्हीं दुष्ट ग्रहों के कारण अशुभ समझा जाता। फिर दुष्ट ग्रह एक नहीं, तीन-तीन। धीरे-धीरे ये बातें उसके मन में बसती गयीं और वह स्वयं भी उनमें विश्वास करने लगी। इन्द्रनाथ के शब्दों ने उसकी सोयी हुई पीड़ा को जाग दिया था। वह लाचार थी। उसकी ससुराल वालों ने उसकी कभी ख़बर नहीं ली थी, वापस ले जाने की तो बात ही कहाँ उठती है। और ऐसे ही दिन, महीने, बीत गये थे। वह आग के पास बैठी हमेशा इन्तज़ार करती रहती और उम्मीद लगाये रहती कि शायद···। पर इससे उसकी त्वचा उलटे काली पड़ती जा रही थी और उसकी मेखला का रंग भी राख जैसा होता जा रहा था। उसके जीवन में अब करने को और कुछ नहीं बचा था। वह करे भी तो क्या करे? सुबह-सुबह पहले खुले में शौच के लिए जाना, फिर कुएँ की बगल में जल्दी से स्नान कर लेना। निचुड़ते कपड़ों से ही वह उस कमरे में जाती जहाँ उसके पूर्वजों और पति के खड़ाऊँ रखे थे। वहाँ वह उनकी पूजा करती। पूजा कर चुकने के बाद वह नौकरों के लिए रखे गये भात और गुड़ में से थोड़ा ले लेती और कभी-कभी रसोईघर के बाहर बैठकर सब्जियाँ काटने लगती, लेकिन तभी जब गोसाइन भी चाहती और वे दोनों प्रसन्न मुद्रा में होतीं। ···दरअसल, जीवन के प्रति उसमें इतनी कटुता भर गयी थी कि उस पर हमेशा उदासी बनी रहती··· बच्चा भी तो नहीं था उसके। उसके भीतर अब निराशा ही निराशा थी और वह निराशा अधिक गहरी और भयावनी होती जा रही थी··· वह बस आग के पास बैठी रहती, और··· वह तो जैसे प्रेत-मात्र होती जा रही थी···

दुर्गा का मन पीछे की ओर मुड़ गया था··· जब इन्द्रनाथ चिकारहाटी आया था। वह चिकारहाटी के गोसाईं से कुछ जंगली हाथियों को पकड़ने और जमातुल्लाह की एशिया कम्पनी से उस बारे में सौदा तय करने आया था। ···तब वह अपने हाथ में दीया लिए बरामदे में आयी थी। दीये की पीली रोशनी में जब इन्द्रनाथ ने उसे देखा था तो वह धक् से रह गया था। कितनी दुबला गयी थी वह, और चेहरा भी किस कदर सूख गया था। वह बेसाख़्ता कह उठा था, "हे ईश्वर! तुम हो बुआ? क्या हो गया है तुम्हें? तुम तो हड्डियों का ढाँचा रह गयी हो।"

तब दुर्गा ने उत्तर दिया था, "कुछ नहीं। भीतर आ जाओ।"

"नहीं, नहीं, पहले बताओ क्या हुआ है। चलो, अमरंगा चलो।"

बुआ की ससुराल वाले बहुत खुश थे कि वह वापस अपने पिता के घर जा रही है। उसके ससुर ने कहा था, "जात्रा के बाद मैं तुम्हें लिवाने बैलगाड़ी भेजूँगा।" 'जात्रा' की कई गाड़ियाँ आयी थीं, अमरंगा से ही नहीं, सोरूहेरामदो, बरहेरामदो, बरिहाट, मेधीपाड़ा तथा दूर के डाखला से भी, लेकिन उस बैलगाड़ी का कहीं नामोनिशान तक नहीं था।

जब वह वहाँ से चली आयी थी तो उसके ससुर ने लम्बे-लम्बे दाँतोंवाला बड़ा कीमती जंगली हाथी पकड़ा था और उससे उसे खूब लाभ हुआ था। फिर मयंग से एक जजमान आया था और उसने चिकारहाटी में सोने और जवाहरात के अकूत चढ़ावे से एक मन्दिर बनवाया था। उसने सात बीघा ज़मीन भी दी थी। अफ़वाह यह भी फैला दी गयी थी कि चूँकि वह अशुभ औरत चली गयी है, इसलिए सत्र की भूमि को उर्वरा करने के लिए सौभाग्य और खुशहाली उतर आयी है। दुर्गा ने यह सब सुना था और चुप बनी रही थी। जगलिया नदी के पार भी ये अफवाहें गरम होती रही थीं···

बिजुली बाँसों[11] के झुरमुट से एक गीदड़ ने हूक लगायी थी और फिर और गीदड़ों ने भी उस हूक में अपना सुर मिला दिया था जिससे रात की ख़ामोशी भंग हो गयी थी। दुर्गा ने अपना सर उठाया और रात के अँधियारे में झाँकने लगी। बाहर सफ़ेद चाँदनी का साम्राज्य था। पुरानी जर्जर, धान कूटने वाली कोठरी में एक पालकी पड़ी थी जिसकी रूपाकृति उसे कुछ-कुछ दिखाई दे रही थी। वह अपने मस्तिष्क के आइने में अपने को शादी के वस्त्र पहने देख रही थी। उसी पालकी में उसे उसके पति के घर, चिकारहाटी, ले जाया गया था। उस पालकी के डण्डे एक समय चाँदी से मढ़े हुए थे और उन पर नक्काशी भी हो रही थी। पर अब तो चाँदनी में वे बल खाते सर्पों की तरह दिख रहे थे। उसकी आँखों में आँसू आ गये। इन्द्रनाथ ठीक ही कहता था। उसे अपने पति की सम्पत्ति में से कुछ नहीं मिलेगा। यदि उसने अपना हक़ माँगना चाहा भी तो उसे गुवाहाटी की कचहरी में जाना होगा। यह सोचकर वह काँप गयी। कचहरी जाने के विचार से ही उसे घृणा हो रही थी। जहाँ तक उसे याद था, उसने कभी नहीं सुना था कि गोसाईं घराने की कोई महिला कभी कचहरी गयी है। क्या वह अपना हक लेने गुवाहाटी जाये? नामुमकिन। बिलकुल नामुमकिन। वह तमाम रात वहीं बैठी रही, अकेली, अपने घुटनों पर अपना माथा टिकाये···

पूर्वी आकाश का रंग अब धीरे-धीरे पुराने रेशम के रंग के समान हो रहा था।। कागज़ी नींबू की खुशबू हवा में भरती जा रही थी। दुर्गा उठकर खड़ी हो गयी, हालाँकि उसके कड़े पड़े घुटने ऐसा करने से इनकार कर रहे थे। फिर वह धीरे-धीरे कुएँ की ओर बढ़ गयी···

# दो

बातघर पार करते हुए इन्द्रनाथ ने कल्टू महावत को तीन बार जल्दी-जल्दी छींकते सुना। उसे गुस्सा आ गया। ज़रूर इस कम्बख़्त ने पिछली रात भगवती के अफ़ीम के अड्डे पर गुज़ारी होगी।

कल्टू छोटे कद का था। दूसरे, कूबड़ होने के साथ-साथ वह आँख से ऐंचाताना भी था। अपनी झुँझलाहट में इन्द्रनाथ ने उसे उलटा-सीधा कहना शुरू कर दिया। "अरे निकम्मे, मैं जानता हूँ तुमने पिछली रात कहाँ बितायी है। मैं तुम्हारा नाम सुधार-शिविर वालों को दे दूँगा। उनके कारिंदे तुम्हें तुम्हारी गन्दी गर्दन से पकड़कर चूहे की तरह घसीटते हुए ले जायेंगे।"

कल्टू हर तरह से कोशिश कर रहा था कि उसे खाँसी और छींक न आये। उसकी आँखों से पानी बहने लगा। साथ ही उसके होंठों के कोनों से लार टपकने लगी, जिससे उसकी ठुड्डी भर गयी। इन्द्रनाथ ने एक बार उसकी तरफ़ हिक़ारत से देखा और फिर जल्दी-जल्दी पाँव बढ़ाता हुआ वहाँ से चला गया।

इन्द्रनाथ अपनी बग़ल में छाता लिए हुए था। वह शान्तिपुरी धोती के साथ एंडी रेशम की पंजाबी[1] पहने था और उसके पाँव में चमड़े के पम्प शू थे। उसे बोंगरा जाना था क्योंकि वहाँ धान की बिक्री को लेकर एक टंटा खड़ा हो गया था। उसने कई दिनों तक अमीन का इन्तज़ार किया, लेकिन वह हरामखोर आया ही नहीं। उसे गरज़ भी क्या पड़ी है। उसी की वजह से तो यह टंटा हुआ है। इसीलिए इन्द्रनाथ को अब उसे निपटाने के लिए खुद जाना पड़ रहा था।

बिजुली के बाँसों की ओट से सूरज निकल रहा था। सुबह की ठण्डी और तेज़ बयार से बाँसों के लम्बे और नुकीले पत्ते साँय-साँय कर रहे थे। सूरज की किरणों ने बाँसों के झुरमुट के बीच उजाले और अँधेरे का जाल-सा बुन दिया था, जैसे कि वहाँ कोई चीथड़ा अटा हुआ हो। कहीं-कहीं सूरज की रोशनी उस चीथड़े के सुराखों में से निकलकर पार जा रही थी, जबकि कहीं-कहीं काले धक्के-से भी दिखाई दे रहे थे। इन्द्रनाथ ने चारों ओर देखा। उसके बायें और दायें पुरानी टूटी-फूटी झोंपड़ियाँ थीं। उनकी मिट्टी की दीवारों का रंग उसे वैसा ही दिखाई दे रहा था जैसे कि किसी गिद्ध के परों का होता है, यानी भुसभुसा-सा, मटमैला-सा। लाल-लाल कद्दुओं का गूदा तथा उनके बीज झोंपड़ियों के फटे छप्परों पर इस तरह पड़े सड़ रहे थे मानो वे सूखे हुए खून के धक्के हों। उधर आग पर पान के पत्तों के भूने जाने की गन्ध भी आ रही थी। उसे ऐसे लगा जैसे कि वह श्मशान घाट में से निकल रहा हो। कुछ ही वर्ष पहले जब वह पलासबाड़ी हाई स्कूल में पढ़ता था, उसे इसी रास्ते से गुज़रकर जाना होता था। उस समय हवा में नये आहू धान[2] की सुगन्ध समाई होती थी। लेकिन

अब तो अफ़ीम ही अफ़ीम की गन्ध ने उसकी जगह ले ली थी। उसके मन में गहरी वितृष्णा भर गयी। सुपारी के पेड़ों पर पान के पत्तों की चढ़ती हुई बेलें, जिन पर से पान के पत्ते नोच लिए गये थे, उसे मनुष्य की सूखी हुई अंतड़ियों की याद दिला रही थीं।

इन्द्रनाथ चलता रहा। फिर वह एक ऐसे स्थल पर पहुँचा जहाँ तीन सड़कें आपस में मिलती थीं। पुराने बरगद के नीचे, भूमि पर वही बिरादरी से बाहर किया गया कोढ़ी पड़ा था। उसने इन्द्रनाथ का अभिवादन नहीं किया, जैसे कि वह हमेशा करता था और न ही उसके लिए उसने गुहार लगायी। क्या कहीं कुछ गड़बड़ी है? कहीं वह मर तो नहीं गया? इन्द्रनाथ को हैरानी हो रही थी। वह उसके निकट गया और उसे गौर से देखने लगा। उसे वह व्यक्ति अर्द्ध-मूर्च्छित-सा दिखा। वहाँ चीथड़ों में पड़े-पड़े वह भूमि के रंग का ही हो गया था। उसके गन्दे, बेढब-से बरतन और टीन के डिब्बे इधर-उधर बिखरे पड़े थे। एक टूटा हुआ वहाँ तवा भी था जिसके साथ लम्बा दस्ता था। इन्द्रनाथ की उस पर नज़र पड़ी। उसने ऐसे तवे मिर्ज़ा के एक सैनिक शिविर में देखे थे। इनका इस्तेमाल हब्शी सैनिक करते थे। फिर उसे याद आया कि ऐसा ही एक तवा उसने सारू (छोटी) गोसाइन के यहाँ भी देखा था, और कई बार वह उससे उसके बारे में पूछने को हुआ था। कहाँ और कैसे मिला उसे यह? पर वह तो हमेशा अपना मुँह सिये रखती थी, एकदम पुरातनपंथी और कर्मकाण्ड की मारी विधवा की तरह। क्या वह जानती नहीं थी कि हब्शी सैनिक इन तवों को किस काम में लाते थे? सैनिक शिविर में छोड़ी गयी ऐसी चीज़ें वह अपने लिए कैसे जुटा पायी? इन्द्रनाथ अब सच्चाई की तह तक पहुँच रहा था। क्या यह सच है कि इस औरत पर भी ग़रीबी का साया मँडराने लगा है? शायद उसके असामी भी अपनी सदियों पुरानी निद्रा से जग गये हैं? लेकिन उसे वह तवा कहाँ से मिला? बेशक, हेरामदो के ब्राह्मणों ने ही यह दिया होगा। क्या नाम था उसका? हाँ, याद आया—महीधर। चारों तरफ़ अफ़वाह भी तो गरम हो रही थी—इसके और मंहीधर के आपसी सम्बन्ध को लेकर।

एक बड़ा गन्दा-सा, रेंगते कीड़ों वाला कुत्ता, उस तवे को इधर-उधर से सूँघ रहा था। फिर उसने उसे चाटना शुरू कर दिया। इन्द्रनाथ ने वहीं से मिट्टी का एक ढेला उठाया और कुत्ते पर दे मारा। कुत्ता चाऊँ-चाऊँ करता हुआ पीछे हट गया। इन्द्रनाथ के मन में अब भी छोटी गोसाइन और महीधर वाली बात चल रही थी। वह वहीं से मुड़ा और अपने रास्ते पर हो लिया। अगर वह अफवाह सच्ची भी हो तो उससे क्या फर्क पड़ता है? थोड़ा इधर या उधर। उसके मन में उतनी तीव्र प्रतिक्रिया नहीं हुई जितनी कि दूसरे अन्धविश्वासी, पुरातनपंथी लोगों में हुई थी। वैसे भी वह इसे लेकर नाखुश तो था नहीं। उसे भी तो हक़ है कि उसे कोई ऐसा व्यक्ति मिले जिस पर वह भरोसा कर सके, या उसका साहचर्य पा सके। विधवाओं को लेकर क्या कुछ नहीं कहा जाता। वही पुराने ढर्रे की बातें। कैसी घोर यातना में से उन्हें गुज़रना पड़

रहा था। किस्मत के फेर ने उन्हें छोटी उम्र में ही विधवा बना दिया और फिर वे चारदीवारी के भीतर पड़ी-पड़ी सड़ती रहीं और खत्म हो गयीं।

झोंपड़ियों में से भुनते हुए पान के पत्तें की गन्ध फिर आ रही थी। इससे उसकी आँखों के सामने भूने जाते हुए मांस का दृश्य घिर गया। सड़ांध, मृत्यु और विनाश। उसे जैसे कि किसी अपशकुन ने घेर लिया हो। इन्द्रनाथ मुख्य सड़क से मुड़ा और जगलिया की ओर बढ़ चला। यह रास्ता घुमावदार था, काचीडरिया घास[3] और गुलाबी फूलों वाले बंकूहून पौधों में से अपनी राह बनाता हुआ। नदी के किनारे कीच और दलदल के बीच उसने कुछ युवतियों को देखा। वे उस नरम-नरम कीच में से तूरी मछलियाँ[4] चुन रही थीं। युवतियों के इर्द-गिर्द किसी आशा के साथ लम्बी-लम्बी गरदनों वाले सारस भी मँडरा रहे थे।

युवतियों ने जब इन्द्रनाथ को पास ही से गुज़रते देखा तो वे ज़ोर से चिल्लायी, "ओ मालिक! ओ छोटे मालिक। यहाँ से नदी पार मत करना। थोड़ा आगे जाओ। वहाँ तुम्हें बैलगाड़ी के निशान दिखेंगे। वहीं से पार करना।"

इन्द्रनाथ ने क्षणभर के लिए उन्हें देखा। फिर उसने छाते को बन्द किया और उसे अपनी बगल में दबा लिया। अब उसने अपने पम्प शू उतारे, उन्हें अपने बायें हाथ में उठाया और दायें हाथ से अपनी धोती सँभालते हुए उथले पानी में घुस गया। नदी के तल पर छोटा-सा गड्ढा था। वहाँ उसका पाँव थोड़ा फिसला जिससे उसका सन्तुलन बिगड़ने को हुआ। युवतियाँ उसे बराबर देखे जा रही थीं। वे खिलखिलाकर हँस पड़ीं और गाने लगीं :

दुल्हन का घोड़ा
सजा है दुल्हन का घोड़ा
पच्चीस घड़ों के पानी से
धुला है दुल्हन का घोड़ा
नारायणी का शुद्ध तेल
मले पीठ पर
दुल्हन का घोड़ा
लगाम लगाये है, माथा सजाये है
कानों में पहने है गेंदे का हार
दुल्हन का घोड़ा
बिस्मिल्ला! कहती है दुल्हन
धप से जा बैठी
उसकी पीठ पर
धम से गिरा है
दुल्हन का घोड़ा

इन्द्रनाथ मन ही मन उन्हें बुरा-भला कहता रहा। "कुतिया! सभी कुतिया हैं।" और वह घुटने-घुटने भर पानी में से निकलकर पार हो गया। फिर उसने अपनी टाँगों पर से उस पानी को झटका और पाँवों को नरम-नरम घास पर साफ़ करके जूते पहन लिये। वह फिर साल के जंगल की ओर जल्दी-जल्दी बढ़ता गया और धीरे-धीरे उसकी घनी हरियाली में विलीन हो गया।

बोंगरा में अपना काम ख़त्म करके इन्द्रनाथ फिर उसी रास्ते से लौट पड़ा। वह अब जगलिया नदी के किनारे खड़ा था। उसके चेहरे पर बड़ा चिड़चिड़ापन था। उनकी भूमि पर कम्युनिस्ट लोग काफ़ी परेशानी खड़ी कर रहे थे। उसे यह सब पसन्द नहीं था। वे उसके असामियों को भी उकसा रहे थे। वे तो यहाँ तक बढ़कर कहने लगे थे कि अगर गोसाईं अपनी भूमि पर अपना कब्ज़ा बनाए रखना चाहता है तो उसे अपने हाथों से भूमि जोतनी होगी। ऊधमी साले! वह गोसाईं तो है ही, अधिकार भी है। क्या वह अपने हाथों से भूमि पर काम करेगा?

सूरज बिजुली बाँसों के झुरमुट के पीछे छिपने लगा था। बहते पानी की सतह पर एक सुनहरापन झिलमिला रहा था और नृत्य कर रहा था, जैसे कि मछलियों का झुण्ड तैरता हुआ कभी पानी के भीतर चला जाये और कभी उससे बाहर आ जाये। आसपास के गाँवों में जलती अग्नि से उठने वाले धुएँ के कारण वहाँ की दृश्यावली पर जैसे कि एक धुंधला-सा रेशमी परदा आ पड़ा था। इस धुँधलेपन में सूरज की रोशनी फीकी पड़ गयी थी। लेकिन उसमें एक प्रकार का सुनहरीपन भी आ गया था। लगता था जैसे कि किसी सुनहरी गुई (बड़े आकार का एक रेंगने वाला जीव) की खाल से उसे ढक दिया गया हो।

इन्द्रनाथ का दिल अब बहुत भारी हो गया था। उसे लग रहा था जैसे कि उसके कानों से किसी के पूरी ताक़त से चिल्लाने और बद्दुआएँ देने के स्वर टकरा रहे हैं। उसने मुड़कर देखा। एक बैलगाड़ी नदी के एक दलदली चकत्ते में फँसी हुई थी और गाड़ीवान अपनी पूरी ताक़त से उसे धकियाता हुआ बैलों पर गालियाँ बरसा रहा था। फिर उसने उसे ज़ोर-ज़ोर से कहते सुना, "माईशाना! माईशाना[5]! कूद जाओ। कूद जाओ।" वह बैलों की नकेल पकड़ने की कोशिश कर रहा था, पर उसका पाँव फिसला और वह पानी में लुढ़क गया। इन्द्रनाथ से जितनी जल्दी हो सका, उसने अपने जूते उतारे, छाता और कन्धे का थैला एक तरफ़ फेंके और गाड़ीवान की मदद के लिए आगे बढ़ गया। फिर देखते ही देखते गाड़ीवान और उसके बैल पानी से बाहर हो गये।

गाड़ी में जो महिलाएँ बैठी थीं, वे एक-एक करके नीचे उतर गयीं और अपने भीगे कपड़ों को निचोड़ने लगीं। इसके साथ ही वे क्योंकि गाड़ीवान से खफ़ा थीं, इसलिए उसे बुरा-भला कहने लगीं, "अरे, तुम्हें दिन के वक़्त भी गाड़ी के पहियों की लीक दिखाई नहीं दी। बेवकूफ़ कहीं का। अंधे हो गये थे क्या?"

उन महिलाओं में एक बुढ़िया भी थी। उसकी कमर तो दुहरी हो ही रही थी, उसकी ठुड्डी के नीचे बहुत बड़ा गिल्लट भी था। वह अपनी मेखला की तहों को ठीक करते हुए बोली, "अफ़ीम खा-खाकर इसकी मति मारी गयी है। इसीलिए यह सब हुआ है। इस कुत्ते की आँखें उबले भात की भाप से भरी हुई हैं। अगर गोसाईं का बेटा ऐन वक़्त पर हमारी मदद न करता तो अब तक हम पानी में डूब गयी होतीं। बैलों के अन्दर भी काफ़ी पानी चला गया है। देखो, अब भी पानी उनके नथनों में से बाहर आ रहा है।"

बुढ़िया अब एकाएक मुड़ी और राजपुखरी के पुजारी की चंचल जवान बेटी ईलीमन को देखने लगी, जो अपने गताला[6] से पानी निचोड़ रही थी। उसे सम्बोधित करते हुए वह चिल्लाई, "अरे ईलीमन! तुम्हें कोई शर्म-लिहाज़ नहीं है। गोसाईं का बेटा सामने खड़ा है और तुमने अपने सारे कपड़े खोल दिए हैं।"

बुढ़िया की कर्कश आवाज़ सुनकर इन्द्रनाथ का ध्यान एकाएक उस लड़की की ओर गया। वह उससे मुश्किल से पाँच गज़ की दूरी पर खड़ी थी। डूबते सूरज की सुनहरी किरणें उस युवती की सुडौल टाँगों पर पड़ रही थीं। जैसे कि वे एक सुनहरी, बृहदकाय गुई के बदन से टकराकर लौट रही हों। उन्हें देखकर इन्द्रनाथ की आँखें चुँधिया गयीं। उन टाँगों को वह ज़िन्दगी भर भूल नहीं सकता था। ···आह! क्या टाँगें थीं वे। जैसे कि बिजुली बाँस की कोमल टहनियाँ हों···

सभी महिलाएँ और युवतियाँ बैलगाड़ी में फिर सवार हो गयीं। बैलों को गाड़ी के आगे जोत दिया गया और गाड़ी नदी के किनारे-किनारे कँटीली झाड़ियों में से होती हुई आगे बढ़ने लगी।

बुढ़िया ने मुड़कर देखा और वह यह देखकर सकते में आ गयी कि ईलीमन गाड़ी में वापस नहीं गयी थी, बल्कि गोसाईं के बेटे इन्द्रनाथ की ओर बढ़ गयी थी। उसने सुना, वह उससे कह रही थी, "छोटे गोसाईं, क्या तुमने मुझे पहचान लिया? तुम अक्सर हमारे यहाँ अपनी दुनाली के साथ जंगली मुरगाबियों का शिकार करने आते रहे हो··· जब तुम अगली बार वहाँ आओगे तो मैं भी झील में उन मुरगाबियों के बीच तुम्हें बैठी मिलूँगी।"

यह क्या कह रही है? क्या बके जा रही है यह? एक ब्राह्मण की बेटी इतनी बेशर्मी से बात करेगी? लेकिन इन्द्रनाथ ने जब फिर उसे ग़ौर से देखा तो उसे उसके शरीर से एक प्रकार की आभा-सी फूटती दिखाई दी।

"मुझे तुमने पहचाना नहीं?"

"नहीं।"

"मैं बाहिनराम भगवती की बेटी हूँ, वही बाहिनराम जो राजापुखरी के गोसाईं के इष्ट को स्नान कराने वाले जोकराम भगवती का भाई है। याद आया? एक बार

जब तुम हमारे गाँव आये थे तो ज़बर्दस्त बवंडर उठ खड़ा हुआ था। अब पहचान गये न मुझे? है न?"

इन्द्रनाथ ने कुछ सोचते हुए उसकी ओर देखा। हाँ, जब-जब वह वहाँ शिकार खेलने गया, वहाँ कई बार तूफ़ान आया। वह गाँव के कई घरों में घुस चुका है। वहाँ उसे आँखें फाड़े नंग-धड़ंग बच्चे घेर लेते थे और उसकी दुनाली को बराबर देखे जाते थे। लेकिन यह लड़की··· नहीं, नहीं इसकी उसे याद नहीं।"

लड़की ने फिर कहा, "झील में जंगली मुरगाबियाँ घनी हो गयी हैं। अब तो हमें झील के पार केवल जमातुल्लाह कम्पनी के साहिबों की बन्दूक़ें ही धाँय-धाँय करती सुनाई देती हैं।"

उसके शब्द-प्रवाह को एक भारी आवाज़ ने टोका, "तुम्हारे इस चेहरे-मोहरे और इन बेशर्म हरक़तों की वजह से तमाम दुलहे डरकर दौड़ गये हैं। बहुत जल्द ही तुम महीने से हो जाओगी। हो सकता है तुम्हारे बाप को बिरादरी-बाहर कर दिया जाये। तब उसे अपनी गर्दन से घड़ा बाँधकर कुएँ में कूद जाना होगा।"

ईलीमन ने इसका प्रतिवाद किया, "अरी, जा, जा बुढ़िया। ज़बान सँभाल अपनी। पिछली बार हैज़ा फैला तो जाने तू कैसे बच गयी। देख नहीं रही, गोसाईं मुझसे बात कर रहा है।"

बेशक, इन्द्रनाथ उससे बात कर रहा था। उसे दक्षिणी तट पर ऐसा दमकता हुआ चेहरा पहले कभी देखने को नहीं मिला था, हालाँकि उसने कई सुन्दर चेहरे देखे थे। वे युवतियाँ लकड़ी बीनने आती थीं। उनका रंग ऐसा होता था मानो जगलिया नदी की छोटी-छोटी लहरों से भरी सतह पर चाँद की चाँदनी फैली हो। फिर जब वह शिकार के लिए जाता तो उसकी बंगरा युवतियों से भेंट होती जिनकी त्वचा जगलिया नदी के नरम कीच के समान रेशम-सी चिकनी होती। उनके शरीर इतने मुलायम और नाज़ुक दिखते मानो उन्हें छूते ही वे छितरा जायेंगे। जब वह डाखला में ज़मीन के एक झगड़े के सिलसिले में गया था तो उसे वहाँ ऐसी मोहक युवतियाँ देखने को मिली थीं जिनकी त्वचा सफ़ेद कुकुरमुत्तों के समान थी और जिनके वक्ष सफ़ेद कद्दुओं के समान नरम और मुलायम दिखते थे। उसने उत्तर कामरूप के रानी क्षेत्र में भी कुछ लड़कियाँ देखी थीं। वह वहाँ दोहारे में पकड़े हाथियों की अन्तिम व्यवस्था करने गया था। वे लड़कियाँ वहाँ महल (हाथीबाड़ा) में मछली बेचने आयी थीं। वे महावत द्वारा सधाये जा रहे जंगली हाथी को भी देखती रही थीं। महावत हाथी को सधाने के लिए कभी-कभी बड़ी निर्दयता से अपने अंकुश का इस्तेमाल करता। अंकुश का इस तरह से इस्तेमाल किया जाना लड़कियों के चेहरे पर उदासी भी ले आता था। उनके साँवले रंग पर उदासी के ये साये एक अजीब-सा भाव पैदा कर देते। वह भाव इन्द्रनाथ को बहुत आकर्षित करता··· हाँ, हाँ, उसे बहुत अच्छी तरह याद है—वे लड़कियाँ हाथियों को देखती हुई मचान की शीतल छाया में झुक-सी जातीं। उनकी आँखों में उस समय

एक प्रकार के आकर्षण और उदासी का मिला-जुला भाव होता। उनके शरीरों की गोलाइयाँ देखकर इन्द्रनाथ को ऐसे लगता जैसे कि कोई अज़दहा किसी पेड़ के इर्द-गिर्द लिपट रहा हो। उनके चेहरों की ताज़गी वैसी ही थी जैसी कि वर्षा की फुहार पड़ने के बाद अरबी के पत्तों की होती है।···

इन्द्रनाथ का ध्यान अब पुरानी बातों की ओर लौट गया था। शरी[8] त्योहार के समय जब पास के गाँवों और सत्रों से पालकियों में जगलिया के किनारे सभी मूर्तियों को लाया गया और उनकी पूजा की गयी तो वहाँ एक छोटा-सा रंगारंग जमघट लग गया था और लोग हँसते हुए और ज़ोर-ज़ोर से बातें करते हुए अलग-अलग दुकानों पर जमा हो गये थे। इन्द्रनाथ ने इस मेले में हाथ से बुने मोटे-मोटे सूती कपड़े पहने गाँव की कई छोरियों को देखा था। ईलीमन क्या उन्हीं में से तो नहीं थी? क्या उसने उसे वहीं देखा था? उसे ठीक से याद नहीं आ रहा था··· हाँ, अलबत्ता शरी त्योहार पर तल्लापाड़ा, मेधीपाड़ा, बरहेरामदो, सोरूहेरामदो, मझकुच्ची, चिकारहाटी जैसे आसपास के स्थानों से कई लड़कियाँ आती थीं। उनके शरीरों से मिट्टी के बरतनों में रखे गये पुराने गुड़ की गन्ध आती। वह गन्ध अब भी उसके मन में अटकी पड़ी थी।

इन्द्रनाथ किसी की रूखी-सी आवाज़ सुनकर अपने दिवास्वप्न से बाहर आया। वह युवती बैलगाड़ी की ओर भागी जा रही थी। फिर उसने गाड़ी के पिछले हिस्से में लटक रहे बाँस के छाजन को उठाया और उसके पीछे ग़ायब हो गयी। ···क्या वह कुछ कह रही थी? ···उसे एक धुँधली-सी ही याद थी··· लेकिन उसकी सुतवाँ नाक पर नाचती पसीने की बूँदें उसे अच्छी तरह याद थीं।

शाम का झुटपुटा अब रात के अँधियारे में घुलता जा रहा था। लुप्त होता प्रकाश वातावरण के मटमैलेपन से मिलकर कुछ ऐसा आभास दे रहा था जैसे कि उस दृश्यावली पर किसी श्यामल-धूसर रंग के पशु की खाल घसीटी जा रही हो। बैलगाड़ी के पहियों से चीं-चीं, कर्र-कर्र-सी आवाज़ उठ रही थी।

इन्द्रनाथ फिर उसी लड़की के बारे में सोचने लगा··· वह जैसे कि यौवन-द्वार पर थी। उसने उसके बाप, यानी पुजारी के बारे में जो कुछ बहुत पहले सुना था, उसकी अब धुँधली याद ही थी। कहा जाता है कि बसन्ती पूजा[9] त्योहार के अवसर पर उसके निवास पर अफ़ीमची ब्राह्मणों का जमघट लगा करता था और हर ब्राह्मण अपने साथ अफ़ीम पीने का पूरा सामान लेकर आता था। कुछ लोग अपने साथ हुक्के और नलियाँ लेकर भी आते थे। कुछ के पास पान के पत्तों को भूनने और देर तक अफ़ीम पीने के लिए कुछ बरतन और कड़ाही इत्यादि भी होती। एक तरह से पुजारी का निवास इस अवसर पर अफ़ीमचियों का अड्डा ही बन जाता था। इनमें बहुत से अफ़ीमची वैष्णव अहनिकपुथी[10] में वर्णित रीतियों का मुश्किल से ही पालन करते थे। उनमें से

कुछ न केवल लहसुन का इस्तेमाल करते, बल्कि गुई के गन्दे मांस और घरेलू चिड़ियों तक को खा जाते। वे खुले में ही लकड़ी जलाते और अपना-अपना खाना पकाते। इन्द्रनाथ ने अपनी कल्पना में देखा कि वह लड़की ईलीमन, अफ़ीमचियों के बीच इधर-उधर दौड़ती हुई किसी को दोना[11] उपलब्ध करा रही है और किसी की खंटी[12]। ···फिर उसने अपनी कल्पना में देखा कि वे अफ़ीमची कुएँ के इर्द-गिर्द बैठे धीमी आवाज़ में बतिया रहे हैं या गप्पें हाँक रहे हैं। बीच-बीच में वे अपने मेज़बान की बेटी के बारे में भी बात करते। उनमें से एक कहता, "अगर इस लड़की के बाप ने इसकी जल्दी शादी न की तो वह बिरादरी बाहर हो जायेगा।" दूसरा उसकी हाँ में हाँ मिलाता और कहता, "तुम ठीक कह रहे हो, मेरे भाई। देखो उसका शरीर कैसे खजूर के पेड़ की तरह बढ़ रहा है।" इस पर एक तीसरे अफ़ीमची ने आँख मारकर और बुरी तरह हँसते हुए जड़ दिया, "उसकी छातियाँ देखीं? ऐसी हो रही हैं जैसे अण्डे देती फाख्ताएँ हों।" ···फिर वे सब उसकी तरफ़ ललचायी नज़रों से देखते रहे।

इन्द्रनाथ उनके मन में इस लड़की के लिए बलवती होती इच्छा को अच्छी तरह समझ सकता था और उसकी कल्पना कर सकता था। छिः छिः! वह ऐसा सोच ही क्यों रहा है? वे मरघटी, नशेड़ी, जिन्हें अफ़ीम ने चाट लिया है, वे इस थिरकते यौवन वाली युवती के साथ भला क्या कर सकते हैं? कब से उनकी शक्ति और पुरुषत्व नष्ट हो गया होगा। उसकी समझ में अब आया कि क्यों वे आज के दिन नदी पार आयी थी। पुजारी के भाई ने ज़रूर वहाँ कनियार सेवा[13] की व्यवस्था की होगी। अब तमाम रात उस जर्जर मकान के सहन में बादुली चाकी[14] जलती रहेगी और तमाम अफ़ीमची मद्धिम-सी रोशनी वाले दीयों के इर्द-गिर्द बैठे रहेंगे। अगर वहाँ कोई स्वर उठेगा तो वह केवल गुड़गुड़ाते हुक्कों का होगा या अफ़ीमचियों की सूखी खरखराती खाँसी का···

उस लड़की की आकृति इन्द्रनाथ की आँखों के सामने फिर खड़ी हो गयी। उसका शरीर! उसका कोमल मांस। वह ओ[15] के मुलायम और चिपकने वाले गूदे की तरह था। वह वैसा ही ताज़ा था जैसी कि नये खोदे गये कुएँ के इर्द-गिर्द की गीली रसीली मिट्टी होती है। हाँ, शायद वह लड़की इस सत्र में अक्सर आती रहती है, उन सभी भुतवा, लपलपाती आँखों वाली बूढ़ियों से बचने के लिए जो उसके गाँव में हैं। ये बूढ़ियाँ रात के समय घर के पिछवाड़े में सुखाए गये गन्दे कपड़ों की टुकड़ों को सूँघती फिरती हैं, यह जानने के लिए कि उन पर मासिक स्राव के निशान तो नहीं हैं। अगर कोई ऐसा निशान मिल गया तो समझ लो कि लड़की बिरादरी बाहर हो गयी। उन्हें इसमें कितना आनन्द मिलता है···

कर्र-कर्र करती बैलगाड़ी भगवती के जीर्ण-शीर्ण बातघर में पहुँच गयी थी। इन्द्रनाथ ने देखा कि कुछ व्यक्ति अपने हाथों में मिट्टी के दीये लिए यात्रियों की

अगवानी करने आये हैं। घर के भीतर लटक रही लालटेनों की मद्धिम रोशनी में बाँस की दीवारों के वे हिस्से, जहाँ से गारा झड़ गया था, ऐसे दिखाई दे रहे थे जैसे कि मरी हुई गाय की लाश पड़ी हो।

एकाएक एक आवाज़ आयी, "अरे, छोटे गोसाईं। ओ, छोटे गोसाईं!"

इन्द्रनाथ हक्का-बक्का रह गया। उसने मुड़कर देखा। वही बूढ़ा कोढ़ी था जिसे गाँव वालों ने गाँव से बाहर कर दिया था। वह बरगद के पेड़ के नीचे बैठा था।

"छोटे गोसाईं, क्या तुम मेरे लिए कुछ खाने को लाये हो? और कुछ नहीं तो एक बीड़ी ही देते जाओ।"

इन्द्रनाथ ने अपनी जेब को टटोला। उसमें सनलाइट ब्राण्ड के सिगरेटों की एक डिब्बी मुड़ी-तुड़ी पड़ी थी। उसने उसे कोढ़ी की ओर फेंक दिया। फिर वह मुड़ा और जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाता हुआ अपनी हवेली के बातघर की ओर बढ़ गया।

## तीन

मई का महीना था। इस महीने में अमोटी[1] उत्सव मनाया जाता है। कहते हैं यह वह समय है जब माँ धरती रजस्वला होती है। जब तक यह उत्सव चलता रहता है, तब तक विख्यात कामाख्या मन्दिर के द्वार बन्द रहते हैं।

जो बैलगाड़ी इन्द्रनाथ की छोटी बहन, गिरिबाला को लिवाने गयी थी, वह लौट रही थी। इन्द्रनाथ की यह बहन बहुत कम उम्र में विधवा हो गयी थी। जो बैल इस गाड़ी को खींच रहे थे, उनकी गर्दनों के इर्द-गिर्द बँधी घण्टियाँ अपनी ख़ास आवाज़ पैदा कर रही थीं। गाड़ी के पीछे-पीछे नंगे और अधनंगे बच्चों तथा जवान और बूढ़ी औरतों का रेला चला आ रहा था। इन औरतों के शरीर को ढकने वाली केवल उनकी मेखला ही थी। कुछेक अपने अंक में नन्हे बच्चे लिए हुए थीं। वे यह जानने को उत्सुक थीं कि गाड़ी के परदे के पीछे कौन है और कहाँ से आया है। उनमें से कुछ ने शोर मचाया, "हो! हो! छोटी माइशाना लौट आयी है।"

"क्या तुम हमेशा के लिए लौट आयी हो?"

"क्या तुमने अपने दिवंगत पति के यहाँ सब कुछ निपटा लिया है?"

"क्या यह सच है कि तुम्हारी सास ने तुम्हें बहुत कष्ट दिए?"

"हमने सुना है कि इन कष्टों के कारण तुम्हारे पेट का बच्चा भी जाता रहा? क्या यह सच है।"

बैलगाड़ी से कोई उत्तर नहीं मिला। गिरिबाला के कन्धे एक सफ़ेद चादर से ढके हुए थे। वह इस तरह की गिद्ध दृष्टि से डरी बैठी थी। वह गाड़ी के पीछे-पीछे चले आ रहे भीड़ के रेले से भी घृणा करती थी। उसे याद है बहुत पहले ऐसे ही

रेले में से किसी ने ज़ोर से चिल्लाकर कहा था, "इसे छुओ नहीं। मत छुओ इसे! अरी सिन्दूर वाली औरतो, अब यह विधवा हो चुकी है।"

बैलगाड़ी ने अपनी रफ़्तार बढ़ा दी थी। उसके पहिये कर्र-कर्र कर रहे थे और घण्टियाँ भी ज़ोर-ज़ोर से बज रही थीं। वह जल्दी ही गोसाईं की हवेली के पिछवाड़े में दाखिल हो गयी। बरामदे में पहले से ही बहुत-सी औरतें जुटी हुई थीं। वे गाड़ी की ओर लपकीं। उन्होंने परदे को एक तरफ़ कर दिया और उनमें से एक ने कहा, "क्या तुम बंगरा से अकेली ही आयी हो? क्या तुम्हारे साथ उन्होंने किसी को भेजा नहीं? पहले तो ऐसा कभी नहीं हुआ? वह जटर-कटर बुढ़ी··· उसे भी इस बार तुम्हारे साथ नहीं भेजा?"

गिरिबाला गाड़ी से कूदकर बाहर आई और बरामदे में दायीं ओर बढ़ गयी। वहाँ उसकी माँ लकड़ी की एक तिपाई पर बैठी चुपके-चुपके रो रही थी। उसने अपनी बेटी की ओर आँख तक उठाकर नहीं देखा। बेटी वहीं उसके पास थोड़ी देर तक खड़ी रही। फिर वह रसोई की ओर बढ़ी। वहाँ जुटी औरतों में से दुर्गा एकाएक चिल्लाती हुई-सी बोली, "उधर मत जा। वहाँ चूल्हे पर मछली पक रही है।"

दूसरी औरतों ने एक ठण्डी आह भरी। गिरिबाला अब कुएँ की ओर बढ़ी। यह अन्दर से लीपा हुआ था। उसके पास ही कभी अमरूद का एक पेड़ था। उसने प्रश्न किया, "पेड़ कहाँ है?"

उत्तर दुर्गा ने दिया, "सूखे पत्ते कुएँ में गिर जाते थे जिससे उसका पानी ख़राब हो जाता था। इसलिए उसे कटवा दिया गया।"

सहन से परे एक पोखर था। गिरिबाला वहाँ जाना चाहती थी। लेकिन दुर्गा ने उसका हाथ पकड़ लिया और बोली, "अब बात पहले वाली नहीं रही। तुम एक विधवा हो। चलो, पहले मुँह-हाथ धोओ। कई लोग तुम्हारा इन्तज़ार कर रहे हैं।"

जमघट में से कोई फुसफुसाया, "यह तो वैसे की वैसी ही है। इसने कभी कढ़ाई या बुनाई नहीं की। अब आने वाले पहाड़ों जैसे दिन यह कैसे बिताएगी?"

दुर्गा ने कुएँ से पानी खींचा और गिरिबाला के लिए उसे ढालने लगी। गिरिबाला ने पहले अपना मुँह धोया, फिर हाथ और पाँव। फिर वह धीमे से दुर्गा से बोली, "इन औरतों से कहो कि वे यहाँ से चली जायें।"

दुर्गा भी उसी की तरह ही धीमे से फुसफुसायी, "ये सब तो तुम्हारी खातिर आयी हैं। तुम्हारे दुःख से यह दुःखी हैं।"

एकाएक गोसाइन उठी और औरतों के उस जमघट की ओर बढ़ी। वह उन्हें बरामदे के दायीं ओर, यानी पाठामाराकाठी[3] ले गयीं। दुर्गा ने गिरिबाला को एक तौलिया दिया। गिरिबाला ने उससे अपना मुँह पोंछा और बोली, "इन औरतों को यहाँ से दफ़ा करो। मैं एकान्त चाहती हूँ।"

दुर्गा ने उत्तर नहीं दिया।

औरतों ने अब गोसाइन को घेर लिया और उस पर प्रश्नों की झड़ी लगा दी।

"तुम उसे बंगरा से वापस ले आयी हो। इसका होगा क्या? इसकी गति भी दुर्गा जैसी ही होगी··· ?"

"जायदाद में इसके हिस्से का क्या होगा?"

"दक्षिणी तट की गोसाइनों के साथ क्या हुआ, इसका तुम्हें ज्ञान नहीं? कैसे उन भेड़ियों ने इनकी जायदाद को छीना।"

गोसाइन ने इसका प्रतिवाद किया। वह बोली, "यह तो केवल एक ही लड़की है। मुझमें दम है कि मैं ऐसी चार-पाँच लड़कियों को अपने पास रख सकूँ। ईश्वर ने मुझे बहुत दिया है··· " उसने यह बात कह तो दी, लेकिन भीतर ही भीतर उसे कोई आशंका खाये जा रही थी। वक़्त बदल रहा था। रंगमाटी के कम्युनिस्ट अपना सर उठा रहे थे। दो या तीन मौक़ों पर जब अमीन ने लगान आदि वसूल करना चाहा तो उसकी धुनाई कर दी गयी। उन दुष्टों ने तो दक्षिणी तट के कुछ गोसाईं लोगों को धमकियाँ भी भेजीं और कहा कि अगर उन्होंने अपने हाथों से अपनी ज़मीन पर हल नहीं चलाया तो उनकी ज़मीन ज़ब्त कर ली जायेगी। ···गोसाईं अपनी भूमि स्वयं जोते?··· हरे! हरे! हरे!··· क्या यह कभी हुआ है? हरे! हरे! हरे!

उसने एक-एक करके सबके चेहरों को बारी-बारी से टटोला और फिर बड़े ठण्डे, किन्तु दृढ़ स्वर में बोली, "न्याय के लिए न्यायालय है, कचहरियाँ हैं। हम दक्षिणी तट की गोसाइनें यों ही चुप नहीं रहेंगी। हम न्यायालय जायेंगी।···"

औरतों की तरफ़ से जैसे कि एक चीख़-सी उठी, "हे भगवान्! हे ईश्वर! दक्षिणी तट की एक गोसाइन कचहरी में जायेगी। ईश्वर, तू ही हमारी रक्षा कर! पहले तो हमने कभी ऐसी जुल्मी बात नहीं सुनी।···"

उनमें से कुछ-एक ने तो लम्बे-लम्बे साँस लेने शुरू कर दिये थे। "ऊह! ऊह·· अदालत! कचहरी! जहाँ चोर, उचक्के और कमी-कमीन जाते हैं। क्या हम गोसाइनें सबके सामने उनके बीच खड़ी होंगी? छिः छिः! शर्म की हद है। ···दामोदरिया गुसाइनें तो ऊपर आकाश में सूरज की ओर भी नहीं देखतीं।"

एक साँवली, लम्बी, पतले होंठों वाली औरत, जो एक पीढ़ी पर बैठी हावन-दस्ते से सुपारियाँ कूट रही थी, बोली, "सुनो गोसाइन! कुछ दिन तुम उसे अपने पास रखो, लेकिन फिर उसे वापस भेज दो। औरत के लिए पति का घर स्वर्ग समान होता है। अगर वह पति के घर से दौड़ जाती है तो समझो कि वह गलियों में घूमने वाली नंगी औरत के समान है। अगर वह कपड़ों से अपने को ढाँपने की कोशिश भी करती है तो लोग उन्हें नोचकर हटा देंगे।"

गोसाइन को घेरे बैठी औरतों के बीच नानीचम्पा और भूमिचम्पा नाम की हेरामदो के स्कूल मास्टर की दो बेटियाँ भी थीं। उनमें से एक बोली, "मेरे सुनने में आया है कि चिकारहाटी का गोसाईं बहुत ही पुराने ख़यालों का है और हर प्रकार के

कर्मकाण्ड से जुड़ा हुआ है, जैसे शंकरी सत्र के वैष्णव प्रमुख होते हैं। वे नहाते समय नदी में पाँच बार डुबकी लगाते हैं और कूच-बिहार के ब्राह्मणों से चंडीपूजा करवाते हैं। कहा जाता है कि वे चैतन्य देव के अनुयायी हैं। जब वे अपने सरों पर तेल और पानी ले जाते हैं, तो अश्वत्थामा का नाम लेते रहते हैं।"

अब बारी नानीचम्पा की थी। वह बोली, "उसकी सास उसे जो यातनाएँ देती थी, वे हद पार कर चुकी थीं। मैंने सुना है कि इसी कारण उसके पेट के बच्चे को भी खत्म कर दिया गया··· अरे, और तो और, जिन दिनों वह महीने से होती थी, उसे शौच के लिए भी जाने की इजाज़त नहीं थी। वह चारपाई से जब नीचे उतरती थी तो पहले उसे सुपारी की छाल से बनी खड़ाऊँ पहनने पड़ती थीं।"

अब भूमिचम्पा बोली, "चिकारहाटी की दो या तीन गोसाइनें तो एक बार भी बातघर न देख पायीं और उससे पहले ही चल बसीं। ···एक गोसाइन बसन्ती पूजा देखने के लिए सहन की ओर घिसट-घिसटकर जा रही थी कि एक दिन वह पकड़ी गयी। हे ईश्वर, उसे जो सज़ा मिली, वह भयानक थी।"

बाकी औरतें यह सब सुनकर ज़ोर-ज़ोर से पूछने लगीं, "वह क्या सज़ा थी? बताओ, बताओ हमें।"

भूमिचम्पा चुप रही। औरतें एक-दूसरे की तरफ़ भयमिश्रित जिज्ञासा से देखने लगीं। सभी औरतें वहाँ गिरिबाला के अपने मुँह से उसकी दुःखभरी कहानी सुनने आयी थीं, लेकिन उसने तो उन्हें कोई मौका दिया ही नहीं। वह तो बिजली की तेज़ी से सीधे उस कमरे की ओर बढ़ गयी जहाँ पूजा के लिए उसके पूर्वजों की खड़ाऊँ पड़ी थीं। वहाँ ऐसे चार जोड़े थे। उसने झटके से दरवाज़ा खोला और कमरे में दाख़िल होकर भीतर से कुण्डी और लोहे का अडंगा लगा लिया।

गोसाइन और बाकी सभी औरतें दरवाज़े की तरफ़ लपकीं। भूमिचम्पा ने पहले दरवाज़े को धकियाया और फिर उसे कुछ समय तक ज़ोर-ज़ोर से झकझोरती रही। जब उसकी कोई पेश न गयी तो वह बोली, "उसने अड़ंगे से दरवाज़े को जाम कर दिया है। वह बिलकुल बदली नहीं है। रणचण्डी की रणचण्डी ही है। इतनी सारी विपत्तियों ने भी उसे रत्तीभर नहीं छुआ।"

गोसाइन की आवाज़ अब टूट चुकी थी। वह बोली, "उसने यह शादी कभी नहीं चाही थी। बल्कि शादी वाले दिन भी उसने ऐसा ही व्यवहार किया था।"

जो औरत हावन-दस्ता चला रही थी, उसने गोसाइन को याद दिलाया, "तुम भी तो, माँ, इस शादी से खुश नहीं थीं।"

"मैं खुश कैसे हो सकती थी? तुम तो सब जानती ही हो। लड़का तो कुछ करता नहीं था, सिवाय इसके कि चौधरी की जात्रा मण्डली के साथ इधर-उधर घूमता रहता था। गोसाईं के और किसी बेटे ने अपना जीवन इस तरह बर्बाद नहीं किया···"

"हाँ, हाँ, हमने यह सब सुन रखा है। वह अपने गले से हारमोनियम लटकाकर उसे ज़ोर-ज़ोर से बजाता हुआ अपना समय नष्ट करता रहता था। हमने यह भी सुना है कि उसकी अफ़ीम बेचने वाली एक औरत से दोस्ती हो गयी थी और उसे जात्रा के लिए तैयार किया जा रहा था···"

इसी बीच एक और औरत बोल पड़ी, "लेकिन उस कुतिया को जात्रा मण्डलियों में लोगों ने नाचने नहीं दिया···"

"हाँ, बहुत ही लचर मामला है यह। सुनने में तो यह भी आया है कि वह उस औरत के घर में पंटाभात (मछलीवाला बासी भात) और शराब भी लेता था।"

बीच में अब एक और औरत बोल पड़ी थी, "बन्द करो अब यह सब बकवास! गोसाइन के सामने ही तुम लोग ऐसी बातें कैसे कर सकती हो!"

पर भूमिचम्पा बोल ही पड़ी, "मैंने चिकारहाटी में लकड़ी का दो-मंज़िला मकान देखा है। भगवान् मालिक है। समझ लो कि हाथी दाँत, बाघों की खाल, हिरनों के सींग, गुई की ख़ाल और जंगली सुअरों के सरों की वहाँ नुमाइश है।"

नानीचम्पा कहाँ चुप रहने वाली थी। वह बोली, "गोसाईं के पास एक बड़ी सजधज वाली बन्दूक़ थी—ठीक वैसी ही जैसी मुसलमान बादशाहों के अधिकारियों के पास होती थी। बन्दूक़ के कुन्दे पर हाथी दाँत के नमूने वाली बेलें रहती थीं। ···वह बन्दूक़ में गोली भरने से पहले गोली की टोपी को अपने दाँतों से हटाया करता था। छिः! ईश्वर ही जाने उन गोलियों पर सुअर की चर्बी होती थी, या कि गाय की···"

अब बारी एक दूसरी औरत ने ले ली, "और वह बोलो गोसाईं जानवरों की खालों, उनके सींगों और हड्डियों को एक तरफ़ करके अपने हारमोनियम पर रियाज़ करने बैठ जाता था··· विश्वास करो मैंने तो यह भी सुना है कि उसके हारमोनियम के स्वर के साथ-साथ वे खालें और हड्डियाँ भी बजने लगती थीं···"

इस पर भी एक दूसरी औरत अब अपने को बोलने से रोक न सकी, "कहते हैं कि टीन की नक्काशी वाले बातघर में साइकलों का ढेर लगा था। वह अफ़ीम बेचने वाली, वह कुतिया, उस दो-मंज़िला मकान में अपना मुँह दिखाने के लिए आती थी। उसके कानों में बड़े-बड़े अनार के फूलों के नमूने वाले झुमके चमचमाते रहते। वे झुमके गोसाईं ने ही उसे दिए थे।"

अब भूमिचम्पा बोली, "वह चुड़ैल पिछले साल हैज़े के रोग से मरी। अच्छा ही हुआ। गोसाईं के घर के खड़ाऊँवाले पवित्र कमरे में घुसने पर उसे ईश्वर की मार पड़ी।"

केवल मेखला से अपने वक्ष को बाँधे दो मोटी औरतें, जिन्हें धान कूटने के लिए रखा गया था, अब बोलीं, "लोग कहते हैं कि उस गन्दी औरत के पेट में बच्चा था।

हाय! हाय! वह उस बच्चे को गिरवाने के लिए एक महाजन के यहाँ गयी। सत्र में किसी ने उसे पकड़ लिया और कई लोगों ने उस पर थू-थू की।"

इस तरह की बेसर-पैर की बातचीत सुनकर गोसाइन दंग रह गयी। वह नहीं जानती थी कि ऐसी गप्पें हाँकना इन लोगों के लिए आम बात है। वह तो यही सोचे बैठी थी कि यह सब बदनामी की बातें उसके मन के किसी खुफिया कक्ष में बन्द पड़ी हैं।

धम! धम! धम··· खड़ाऊँ कक्ष से ऐसी आवाज़ सुनकर सभी औरतें चौंक पड़ीं। गिरिबाला दरवाज़े पर बड़े गुस्से से टाँगें जमा रही थी। गोसाइन दौड़ती हुई उधर गयी और बार-बार दरवाज़ा खटखटाने लगी। लेकिन दरवाज़ा तो पहले की तरह ही मज़बूती से बन्द था। गोसाइन ने अपने पल्लू के कोने से अपनी आँखों को पोंछा और फिर मुड़कर भूमिचम्पा और नानीचम्पा की ओर देखा। वे दोनों गिरिबाला की ही उम्र की थीं। उनके चेहरे भरे-भरे थे और वे साफ़-सुथरे गताले पहने हुए थीं। बेशक, ग़रीबी ने उनकी जवानी लूट ली थी, लेकिन उनके माथे पर सिन्दूर के चमकते गोल चिह्नों को देखकर लगता था कि वे बहुत खुश हैं और सन्तोष से भरी हैं।

उनकी ओर देखते हुए वह एकाएक चिल्लाई, "अरी मुँहजलियो, तुम्हीं छिप-छिपकर बिजुली बाँसों के पीछे से, जब कभी वह तालाब पर नहाने जाती थी, उसकी जासूसी करती थीं। तुम्हारी आँखें हमेशा उसकी माहवारी के निशानों को ढूँढ़ती रहती थीं। क्या तुम्हीं इस सबके लिए ज़िम्मेदार नहीं हो?"

"पहली माहवारी के निशान?···"

"हाँ, हाँ सूरज निकलने से पहले ही तुम चीतों की तरह बाँसों के झुरमुटों के पीछे छिप जाया करती थीं और उसके कपड़ों पर माहवारी के निशान ढूँढती रहती थीं।"

"राम! राम! हम पर यह पाप मत थोपो।"

"तुम्हीं सब मेरे पीछे लगी रहती थीं कि इसकी शादी करो, शादी करो। और फिर तुम्हीं गारोगुली और टुहभकेली के गोसाइयों के पास जाकर कहतीं कि अमरंग गोसाईं की बेटियाँ अछूत हो गयी हैं।"

सभी औरतें अब एक साथ चिल्ला उठीं, "हे ईश्वर, हमें बचाओ। बचाओ हमें।"

फटे-पुराने गन्दे कपड़ों में एक कुबड़ी बुढ़िया अब आगे आयी और बोली, "क्या यह सच नहीं है, माँ, कि जब लड़की की शादी हुई थी तो वह पहले से ही माहवारी से थी?"

इस बुढ़िया को भी धान कूटने के लिए रखा गया था।

इस पर गोसाइन कुछ नहीं बोली। उसने अपना मुँह दूसरी तरफ़ कर लिया और वहीं थूक दिया।

दुर्गा गिरिबाला के लिए चाय बना रही थी। जब उसने बुढ़िया के मुँह से ऐसी बात सुनी तो वह एक क्रुद्ध सिंहनी की तरह बाहर आयी और घृणा से चिल्लाई, "क्या तुमने कभी यह सुना है कि किसी दामोदरिया गोसाईं की बेटी माहवारी शुरू होने के बाद ब्याही जाये? हमारे ख़ानदान में ऐसा कभी नहीं हुआ और न ही कभी होगा।"

भूमिचम्पा के स्वर में भी अब घृणा थी। "तुम कहना क्या चाहती हो? वक़्त बदल रहा है। दक्षिणी तट की दो या तीन गोसाईं लड़कियाँ अब तक अछूत हो चुकी हैं।"

दुर्गा का स्वर भी उतना ही तीखा था। बोली, "हो सकता है। लेकिन गिरिबाला के ब्याह के बाद जब उसे पहली माहवारी हुई थी तो तुम्हीं यहाँ आयति[4] बनकर आयी थीं और सिलबट्टे पर तुमने शुभ सगुन वाली टोकरी रखी थी।"

भूमिचम्पा के स्वभाव में घमण्ड के साथ-साथ निर्दयता का अंश भी था। गिरिबाला के दुःख से उसे एक प्रकार का आनन्द मिलता था। गिरिबाला के बाद सौन्दर्य और निपुणता में वह दूसरे स्थान पर थी। उसके गर्व को चोट पहुँचने से उसे अपनी जीत होती-सी दिखी। अपने प्रतिद्वन्द्वी के पतन से उस जैसे व्यक्ति को खुशी ही मिलती। वह बोली, "क्या यह सच नहीं है कि बोलो गोसाईं गिरिबाला को घसीटकर लकड़ी के उस मकान के पहले तल्ले पर ले गया था और जात्रा के लिए उससे रियाज़ करवाना चाहता था? मैंने तो यहाँ तक सुना है कि गिरिबाला और गोसाईं और उसकी ससुराल वालों के बीच बड़ा घमासान हुआ। क्या यह सच नहीं है? और···"

एकाएक धमाके के साथ खड़ाऊँ कक्ष का दरवाज़ा खुला और गिरिबाला क्रुद्ध बाघिन की तरह दौड़ती हुई बाहर आयी। उसके बाल बिखरे हुए थे और इधर-उधर उड़ रहे थे। उसका गताला भी अपनी जगह से हट गया था और उसके कपड़े इधर-उधर हो रहे थे। वहाँ जमा औरतों को उसने लपलपाती आँखों से देखा और चीख़ती हुई बोली, "तुम मुझसे यहाँ मिलने आयी थीं। आयी थीं कि नहीं? तुम अब मुझसे मिल चुकी हो। मैं अभी ज़िन्दा हूँ, और ज़िन्दा रहूँगी और तुम सबसे अच्छी ज़िन्दगी जिऊँगी···"

गिरिबाला के ये शब्द बीच में ही हवा में लटके रह गये। वह अपनी माँ की छाती पर पेड़ की टूटी डाल की तरह गिर पड़ी।

## चार

गोसाईं की हवेली के सामने एक दूसरा घर था जो चमचमाते सिक्के की तरह चमक रहा था। उसकी छत की टीन की चादरें इस तरह उद्भासित हो रही थीं जैसे उन पर चाँदी का लेप किया गया हो। यह हरि महाजन का घर था। इस घर के पिछवाड़े

में अनाज का गोदाम था जो अनाज से लबालब भरा था। सहन बड़ा साफ़-सुथरा था, और उसमें गाय के ताज़ा गोबर से लिपाई की हुई थी। ऐसे लगता था जैसे किसी ने बकरी की कई खालें सूखने के लिए साथ-साथ बिछायी हों और उनका सफ़ेद हिस्सा ऊपर किया हुआ हो। दूर से अनाज का गोदाम एक बूढ़े हाथी की तरह दिखता था, वह हाथी जो कीचड़ से लथपथ अपने को घुमाव देकर चुपचाप बैठा हो।

जब इन्द्रनाथ अपनी हवेली में से बाहर आया तो उसने देखा कि हरि महाजन के घर के बाहर लकड़ी की बेंच पर कुछ अफ़ीमची बैठे हैं। वे उसी के इलाक़े के ही नहीं थे, बल्कि गारोधूली, चिकारहाटी, मंझकुची जैसे दूर-दराज के स्थानों से भी आये थे। उनकी आँखें ज़मीन से चिपकी हुई थीं। उनके बाल बुरी हालत में थे और जटा बन रहे थे। वहाँ बैठे वे ऐसे दिख रहे थे मानो किन्हीं त्वचाओं और हड्डियों को किन्हीं खास आकृतियों और अवस्थाओं में जमा कर रखा गया हो। यह दृश्य देखकर इन्द्रनाथ का मन चिढ़ गया और उसने अपनी आँखें दूसरी ओर कर लीं।

अफ़ीमचियों के अँगूठों पर स्याही लगी थी। उन्होंने अफ़ीम के लिए अपना राशन कार्ड बनाने के उद्देश्य से अपने अँगूठों के निशान दिए थे। वे निशान उनके लिए तो मात्र काले धब्बे थे जो वक़्त के साथ मिट जायेंगे, लेकिन वे इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि इन्हीं काले धब्बों की वजह से वे हमेशा के लिए एक भयावने, अंधकारमय भविष्य से बँध गये हैं। नहीं, उन्हें इससे कोई सरोकार नहीं था। वे तो अपने नशे में कहीं के कहीं उड़े जा रहे थे।

अफ़ीम और भूने जा रहे पान के पत्तों की गन्ध ने इन्द्रनाथ के नथुनों को भर दिया था। उसने अपनी पंजाबी की जेब से रूमाल निकाला और उससे अपनी नाक को ढाँप लिया। उसने ग़ौर किया कि गाँव के दोनों ओर सुपारियों के पेड़ों पर पान के पत्तों की बेलें पत्तों से पूरी तरह खाली हैं और सूखी डण्ठलों-सी लटक रही हैं। इसी प्रकार घास-फूस की झोंपड़ियाँ भी देखभाल के अभाव में बिलकुल बेजान दिख रही थीं।

जब इन्द्रनाथ उस मोड़ पर आया जहाँ उसका रास्ता मुख्य सड़क से जा मिलता था तो उसे एकाएक विचार आया कि वह भगवती के घर के पास से गुज़र रहा है। पिछले दिनों जब वह बोलो के जुए के अड्डे से हलकी चाँदनी में लौट रहा था तो उसे कमज़ोर दीवार की झिरियों में से उसकी लड़की के बदन की झलक मिली थी और उसे लगा था जैसे कि उसने पानी में आलोड़न करती रूपहली मछली देखी हो। लेकिन अब तो वहाँ बिलकुल सुनसान हो रहा था। अब तो वहाँ वह बैलगाड़ी भी नहीं थी जिसके पिछले पर्दे पर फूल बना था। इन्द्रनाथ को एक प्रकार की पीड़ा-सी हुई। वह तो अभी उस रोज़ ही आयी थी। शायद वह पास के सगे-सम्बन्धियों से मिलने गयी हो। उसने पिछवाड़े में झाँककर देखा। हाँ, उसे मारकिन की दो शमीज़ें

अलगनी पर लटकती दिखीं। उन शमीज़ों का रंग ढलते सूरज के रंग में मिल गया था, और जब हवा चलती थी तो वे पास के नींबू के पेड़ से जा टकराती थीं।

इन्द्रनाथ अपने ख़यालों में खो गया··· अभी पिछले दिन ही तो उसकी माँ ने इशारे से बताया था कि उसके लिए दामोदरिया गोसाईं की दो लड़कियों का, जो नौ या दस वर्ष की हैं, रिश्ता आ रहा है। बनमाली देव के महारा सत्र से भी कई लोग लड़कियों के चित्र और उनकी कुण्डलियाँ लेकर आये थे। डिफोलू से भी दो लोग आये थे और अपने साथ टोकरीभर चावल, तेल, आलू, गुड़, वनस्पतियाँ और एक तगड़ी मोटी रोहू मछली लेते आये थे। इन्द्रनाथ ने स्वयं इन वस्तुओं को खड़ाऊँ कक्ष में देखा था। उसके पूर्वजनों ने कभी साधारण ब्राह्मण लड़कियों के साथ विवाह नहीं किया था। उसकी माँ, दादी, सभी प्रतिष्ठित सत्रों से आयी थीं।

इन्द्रनाथ अब मुख्य सड़क पर था। उसने एक बार पीछे मुड़कर देखा और पाया कि एक शमीज़ नींबू के पेड़ में अटकी पड़ी झण्डी की तरह दिख रही थी··· जैसे-जैसे वह आगे बढ़ा, उसे अफ़ीम और भूने जा रहे पान के पत्तों की गंध के अलावा हाथी की लीद की गंध भी परेशान करने लगी। उसके मन में उथल-पुथल होने लगी थी। जो कुछ वह अपने चारों ओर देखता था, उससे उसे हमेशा एक प्रकार की हताशा-निराशा घेर लेती थी। ऐसी मनःस्थिति के बीच उस लड़की का चेहरा बार-बार उसकी आँखों के सामने आने लगा। उसे लगा जैसे कि वह श्मशान घाट में हो। उसकी आँखों के सामने चिता जल रही थी और उसका अन्तिम क्रिया-कर्म कर दिया गया था। लेकिन उसकी आँखों के सामने बार-बार एक गुलाब का पौधा भी ठहर जाता था जो फूलों से लदा हुआ था।

पास से साल की लकड़ी के लट्ठों से लदा एक ट्रक घनघनाता और इन्द्रनाथ पर धूल उड़ाता निकल गया। इन्द्रनाथ का चेहरा और बाल धूल से बुरी तरह लथपथ हो गये। वह अब सड़क के उस हिस्से पर आ गया था जो साल के जंगल में से होकर जाता था। यह हिस्सा पहाड़ी सड़क के समान दिखता था। थोड़ा आगे एक नाला था जो एक लकड़ी की पुलिया के नीचे से बहकर जगलिया नदी से मिलने के लिए बेक़रार हो रहा था। पुलिया के पास इन्द्रनाथ को कुछ लोग दिखाई दिये। वह उनमें से अधिकांश को पहचानता था। वे बरहेरामदो, सोरुहेरामदो, तल्लापाड़ा, मेधीपाड़ा तथा नदी के पार के इलाक़ों से भी थे। वे सब घोर अफ़ीमची थे। उनके बीच उसे एक व्यक्ति दीख पड़ा। वह खादी की टोपी और किरमिच के जूते पहने हुए था और अफ़ीमचियों को बड़े मनोयोग से सम्बोधित कर रहा था। वह कांग्रेस पार्टी का एक कार्यकर्ता था जो घर-घर जाकर अफ़ीमचियों के बारे में आँकड़े इकट्ठे करता था। वह पेड़ के ठूँठ पर खड़ा था।

इन्द्रनाथ उसके थोड़ा और निकट हुआ और पुलिया के पास खड़े होकर कार्यकर्त्ता का भाषण सुनने लगा। वह भी सर से पाँव तक धूल से अटा पड़ा था,

लेकिन उसकी आवाज़ बड़ी मज़बूत और साफ़ थी। वह अफ़ीम के ज़हरीले प्रभाव पर बोल रहा था। इन्द्रनाथ उसे साफ़-साफ़ सुन रहा था। वह कह रहा था, "आप लोग शायद जानते नहीं कि जगलिया नदी के दोनों ओर के लोगों में अफ़ीम की यह लत पूरी तरह घर कर गयी है। महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन ने इस बुराई के प्रति हमारी आँखें खोलीं। हमें इस डेढ़ सौ वर्ष पुराने रोग को जड़ से उखाड़ फेंकना होगा। आप महात्मा गाँधी के अनुयायी हैं। आपमें से कई लोग ब्रिटिश शासनकाल के दौरान जेल भी गये हैं।"

भीड़ में से एक व्यक्ति एकाएक उठ खड़ा हुआ और कहने लगा, "कम-से-कम इस इलाक़े के लोग तो जेल में अधिक नहीं गये। केवल चार ही गये थे, और चारों के चारों तुरन्त लौट आये।"

कार्यकर्त्ता क्षमा-याचना की मुद्रा में आगे की ओर झुक गया।

अब एक और व्यक्ति उठकर खड़ा हुआ और ज़ोर से चिल्लाया, "नदी के उस तट की ओर से तो कोई शहीद नहीं हुआ। क्या तुम हमें इस इलाक़े के उन लोगों की ठीक से संख्या बता सकते हो जो स्वतन्त्रता आन्दोलन में जेल गये थे?"

पेड़ के ठूँठ पर खड़ा व्यक्ति एक बार फिर झुका और बोला, "सारे आँकड़े सरकारी अभिलेखों से उपलब्ध हैं। जब समय आयेगा तो मैं आप तक यह जानकारी भी पहुँचा दूँगा।"

एकत्रित लोग अब चुप हो गये और कार्यकर्त्ता कहता गया, "क्रान्ति के दौरान महात्मा गाँधी से प्रेरित होकर समूचे असम से अनेक कार्यकर्त्ता जेल गये और अफ़ीम की बुराई के विरुद्ध जो लड़ाई लड़ी गयी, उससे अफ़ीम का व्यापार एक ही वर्ष में 602 मन गिर गया।"

अब बारी एक दूसरे व्यक्ति की थी। वह बोला, "लेकिन यहाँ तो हमारे इलाके में अफ़ीम के व्यापार में कोई कमी नहीं आयी, बल्कि वह तो बढ़ा ही है।"

इन्द्रनाथ को याद आया कि दीनबन्धु एंड्रूज़ के सभापतित्व में अफ़ीम को लेकर एक समिति का गठन हुआ था और यह प्रस्ताव सामने आया था कि असम परिषद् का जहाँ तक अधिकार-क्षेत्र है, वहाँ अफ़ीम का व्यापार ख़त्म कर देना चाहिए। लेकिन ब्रिटिश सरकार इस धन्धे से होने वाली आय को छोड़ना नहीं चाहती थी और उसने उलटे अफ़ीम की बिक्री को काफ़ी बढ़ावा दिया था।

इन्द्रनाथ के कानों में कार्यकर्त्ता की आवाज़ फिर पड़ी। वह कह रहा था, "आप लोग शायद जानते नहीं कि अफ़ीम अधिनियम में कुछ संशोधन भी हुए हैं।"

कई अफ़ीमची अब एकसाथ बोल उठे, "बताओ, बताओ हमें। वे संशोधन क्या हैं?"

कार्यकर्त्ता ने अपनी टोपी उतारी और उसे झाड़ा। फिर वह कहता गया, "दूसरा संशोधन बहुत लम्बा है। दसवें संशोधन में एक नया खण्ड जोड़ा गया है···" उसने

अपनी पंजाबी की जेब को टटोला और उसमें से कुछ मुड़े-तुड़े काग़ज़ निकाले और कहता गया, "···यह अंग्रेज़ी में है। पहले मैं अंग्रेज़ी में ही इसे पढ़कर सुनाऊँगा।"

उसका लहज़ा पूरा कामरूपी था। उसने पढ़ना शुरू किया, "असम अफ़ीम निषेध अधिनियम 1947 की संशोधन धारा 10—जो भी व्यक्ति यह जानते हुए और यह यक़ीन करते हुए कि इस अधिनियम के अन्तर्गत अपराध हुआ है, और वह इस अपराध के साक्ष्य को मिटाता है और अपराधी के बारे में ऐसी सूचना देता है जिसमें कि इस अधिनियम के अन्तर्गत अपराधी का अपराध छिप जाये या वह इस अपराध के बारे में ऐसी सूचना देता है जिसके बारे में उसे पता है या वह विश्वास करता है कि वह झूठी है, उसे इस अपराध के लिए प्रावधान के अनुसार दण्ड दिया जायेगा।"

भीड़ की ओर से उसकी हँसी उड़ाता एक ज़ोरदार ठहाका उठा। एक व्यक्ति ने, जो बीड़ी पी रहा था, अपनी बीड़ी को परे फेंका और खिल्ली उड़ाने के अन्दाज़ में बोला, "स्वयंसेवक बाबू, तुम हमें बाघों और भालुओं के बारे में कुछ बता रहे थे या कि राम-रावण युद्ध के बारे में? हमें तो इसका सर-पैर समझ में नहीं आया।"

इस पर हँसी का एक और ठहाका लगा। लेकिन यह ठहाका किसी बोरे में डाली गयी सूखी हड्डियों की खड़खड़ाहट से अधिक मेल खाता था।

कार्यकर्त्ता ने अपनी टोपी फिर उतारी और उसे झाड़ने लगा। फिर वह बोला, "मैं जानता हूँ आप लोग निरक्षर और भोले हैं। दुःख की बात तो यही है कि आप लोग अपना नाम भी नहीं लिख सकते। अगर आप लोग अपना नाम लिख सकते तो आपकी यह हालत न होती।"

उनमें से अब एक और व्यक्ति खड़ा हो गया और कहने लगा, "वह बूढ़ा गिलमिल साहिब भी हमें अंग्रेज़ी पढ़ाना चाहता था। लेकिन उसे ढेकी की आवाज़ पसन्द नहीं थी। वह ढुक-ढुक करती रहती थी जिससे उसका ध्यान बँट जाता था।"

फिर एक और व्यक्ति उठा और बोला, "हम जानते हैं कि वे गोरे साहिब क्या करना चाहते थे। वे सब कुछ अपने लिए कर रहे थे। वे हमें अफ़ीम खिला-खिलाकर तोड़ देना चाहते थे, हमारी आवाज़ को कमज़ोर कर देना चाहते थे···"

फिर एक और आवाज़ आयी, "यहीं हमारे दक्षिणी तट के इलाक़े का ही नहीं, उन सफ़ेद बन्दरों ने तो समूचे देश का सत्यानाश कर दिया है।"

अब एक व्यक्ति उन्हें समझाता हुआ बोला, "चुप, चुप। नेताजी कुछ और कहने जा रहे हैं··· तुम्हें पता है कि वह चार मोजों के सेक्रेटरी हैं? बड़े अधिकार हैं उनके। चाहें तो बिना वारंट के ही हममें से किसी को हथकड़ी लगवा दें।"

सबकी आँखें अब उसी व्यक्ति की ओर थीं। वह एक दुबला-पतला व्यक्ति था जिसने एक गन्दी-सी हाफ़ पैण्ट पहन रखी थी। वह लकड़ी ढोने वाले एक ट्रक में क्लीनर का काम करता था।

एक बूढ़ा अफ़ीमची, जो एक लाठी के सहारे खड़ा था, ज़ोर से चिल्लाया, "चुप रहो, कुत्तो।"

लेकिन दूसरे ने झट उसे झटक दिया, "अरे, हैज़े के मारे मरदूद! किसे कुत्ते कह रहे हो?"

ये दोनों व्यक्ति आपस में भिड़ने को हो रहे थे, लेकिन एक-दूसरे कार्यकर्त्ता ने, जिसके हाथ में बेंत था, बीच-बचाव करके उन्हें ठण्डा किया।

पहले कार्यकर्त्ता की आवाज़ अब फिर सुनाई दे रही थी। "सुनो भाइयो, अब मैं तुम्हें संशोधन के बारे में कुछ बताता हूँ। मेरे सुनने में आया है कि जगलिया के किनारे रहने वाले अफ़ीमचियों ने एक बकरी काटी और गारो की पहाड़ियों के अफ़ीम के तस्करों के साथ मिलकर एक ठाठदार दावत की। अगर ऐसा ही चलता रहा तो समझ लो एक दिन अपने को सींखचों के पीछे पाओगे। सरकार के जासूस चारों ओर फैले हुए हैं। उन्हें झट पता चल जायेगा।"

अब दूसरा कार्यकर्त्ता बोला, "किसी गवाह की भी ज़रूरत नहीं होगी। ···सरकार ने आप लोगों की भलाई और इलाज के लिए एक शिविर लगाया है। आपको वहाँ खाना भी मुफ्त मिलेगा···।"

हाफपैण्ट वाला ट्रक क्लीनर खुशी से उछल पड़ा, "मुफ्त खाना! मुफ्त इलाज! वाह! पर उन औरतों का क्या होगा जिन्हें अफ़ीम की लत लग चुकी है? उनका तुम लोग क्या करोगे? ···वे थुलथुल करती, सुस्ती की मारी औरतें। क्या करेंगी वे? पूरी कंजरियाँ हैं, कंजरियाँ। निकम्मी कहीं की। इधर-उधर से अफ़ीम चुरा लाती हैं और उसे बेचती हैं। दस-दस, बारह-बारह मर्दों के साथ सोती हैं। क्या करेंगी वे?"

नेता ने अपनी टोपी फिर उतारी। वह कुछ घबरा-सा गया था। उसने उसे एक बार फिर झाड़ते हुए कहा, "आप लोगों की पत्नियों और बच्चों के भविष्य को ध्यान में रखकर सरकार ने हेरामदो में उनके इलाज और पुनर्वास के लिए भी एक शिविर लगाया है। जहाँ तक उन गिरी हुई औरतों का ताल्लुक है, अगर ज़रूरत पड़ी तो उन्हें ज़बरदस्ती ले जाया जायेगा।"

पूरी भीड़ पर अब खामोशी छा गयी थी। नेता कह रहा था, "सरकार को आपकी भलाई का ख़याल है। मुझे विश्वास है कि आप लोग जानते हैं कि आज़ादी के बाद हमारी अपनी सरकार बनी है, और यह सरकार ज़ोर-ज़बर में यक़ीन नहीं रखती। इसे केवल आपका सहयोग चाहिए। उसे आपका प्यार और सहानुभूति चाहिए। हम इस शिविर के लिए चार डॉक्टरों की व्यवस्था करेंगे। दो डॉक्टर बराबर गुवाहाटी से आयेंगे और एक पलासबाड़ी से। ज़्यादा ज़िम्मेदारी यहाँ अमरंगा के डॉक्टर की होगी। आप लोगों को इस ज़हर से बचना चाहिए और अपनी मातृभूमि की रक्षा करनी चाहिए।"

भीड़ पर छायी ख़ामोशी जारी रही। एक बूढ़ा अफ़ीमची, जो चीथड़ों में था और जिसका एक-एक अंग काँप रहा था, अपनी लाठी के सहारे उठ खड़ा हुआ। उसे देखते ही इन्द्रनाथ की भृकुटियाँ तन गयीं। उसके माथे पर खिन्नता की लकीरें झलकने लगीं।

बूढ़े अफ़ीमची ने नेता की ओर अपने काँपते हाथ से उँगली उठाई और बोला, "क्या यह सच है कि इलाज के दौरान हमें अफ़ीम की छोटी-छोटी गोलियाँ भी दी जायेंगी? और अभी-अभी किसी ने मुझे बताया कि पपीते के साथ हमें कबूतर का झोल भी खाने को मिलेगा?"

एक दूसरा अफ़ीमची बोला, "क्या हमें मिट्टी के बर्तनों में जमाया हुआ दही भी खाने को मिलेगा? चाहे जितना भी हम खाना चाहें? क्या यह भी सच है कि शिविर में जाने के बाद चार अफ़ीमचियों ने अफ़ीम लेना छोड़ दिया और सीधे स्वर्ग में पहुँच गये।"

इन्द्रनाथ उनकी बातें सुनकर अन्दर-ही-अन्दर बड़बड़ाने लगा, "पागल साले!" फिर वह भारी क़दमों के साथ, झुँझलाहट से भरा, सड़क पर आगे बढ़ गया।

किसी के घर के पिछवाड़े से गन्ने की भीनी-भीनी सुगन्ध आ रही थी। अभी दिन का उजियारा था। इन्द्रनाथ ने उस उजियारे में लोमड़ी के एक जोड़े को सड़क पार करते देखा, जिसे शायद इस भीनी सुगन्ध के कारण नशा हो रहा था। उसने बैलगाड़ी के पहियों की कर्र-कर्र भी सुनी। एक बैलगाड़ी उसी की तरफ़ आ रही थी। उसने देखा कि उस बैलगाड़ी की छाजन खजूर के पत्तों से नहीं, जंगूर[1] के मोटे चमकीले पत्तों से बुनी गयी थी। शायद गोसाईं के घर की कुछ महिलाएँ अपने रिश्तेदारों के यहाँ कुछ दिन बिताने जा रही थीं। बैलगाड़ी पास से गुज़र गयी। उसके पिछले हिस्से पर एक रंग-बिरंगा परदा था जो सब कुछ ढाँपे हुए था। इन्द्रनाथ की नज़र उस परदे पर अटक गयी। किसी ने परदे की ओट से बाहर की ओर नहीं देखा, न ही किसी ने कोई गीत गाया। शायद वे कहीं श्राद्ध के लिए जा रही थीं। उसे कोमल नारियल और जावाकुसुम के तेल की मिली-जुली सुगन्ध का एहसास हुआ। सूरज साल के पेड़ों के पीछे छिप रहा था। छिपते सूरज की किरणों की आभा ने सूखे, पीले पत्तों में से छनकर आने के कारण सूर्य को एक सुनहरे मुकुट से मण्डित कर दिया था। पीले-पीले प्रकाश के चकत्ते जंगल की तलैया में तैरती सुनहरी मछलियों का एहसास दे रहे थे। लगता था डूबता सूरज जैसे कि अपने जाल में सुनहरी मछलियों को भर रहा हो और फिर उन्हें अपने साथ नीचे की ओर खींच रहा हो।

जब इन्द्रनाथ बोलोभद्र के जुए के अड्डे पर पहुँचा तो अँधेरा पहले ही हो चुका था। बोलो रात के खेल की तैयारी कर रहा था। वहाँ लकड़ी की चौकियों पर नरम-नरम गद्दे बिछाए जा रहे थे और उन पर गाव-तकिये रखे जा रहे थे। पेट्रोगैस पहले से ही तेज़ कर दिया गया था और उसे कामिनी के पेड़ की एक डाल से लटका दिया गया था। इससे सफ़ेद चमचमाती रोशनी चारों ओर फैल गयी।

बोलो ने देखा कि इन्द्रनाथ अपनी साइकिल को घसीटता चला आ रहा है। छोटे गोसाईं को देखकर वह खुश हो गया और बड़े जोश से पुकार उठा, "सारू गोसाईं! मैं अपने कुछ आदमियों को आपको लिवाने भेज ही रहा था। आज पूरी रात ताश

चलेगी। मैंने एक ब्राह्मण लड़के का भी इन्तजाम कर लिया है। वह आपको चाय और हलवा देता रहेगा।"

तभी इन्द्रनाथ ने घर के भीतर से कुछ महिलाओं की ज़ोर-ज़ोर से हँसने की आवाज़ सुनी। वह बोला, "मुझे पक्का यकीन है कि वे भीतर चौसर खेल रही हैं। तुम्हारी जवान बीवी हमें बार-बार परेशान करेगी और पूछेगी कि अगली चाल क्या चलनी है···"

बोलो खिलखिलाकर हँस पड़ा और बोला, "नहीं, नहीं, वह उन महिलाओं के साथ है ही नहीं। वह तो आज रात सुरजा ठाकुर के यहाँ पल्ला[2] देखने चिकारहाटी जा रही है।"

इस पर इन्द्रनाथ बोला, "तुम पुरुषोत्तम को जानते हो, वही हमारा तोंदल असामी? वह भी वहाँ अभिनय करेगा। उसे भीष्म की भूमिका मिलेगी। वह सुबह से ही ग़ायब है। उसने नाश्ता भी नहीं किया।"

उसी समय एक बड़ी सज-धज वाली बैलगाड़ी वहाँ आयी और गोधूलि-गोपाल[3] नाम की झाड़ी के निकट, द्वार पर रुक गयी। भीतर के कक्ष से तीन महिलाएँ बाहर आयीं। वे अपने चेहरों पर नीचे तक चादरें ओढ़े हुए थीं। इन्द्रनाथ को देखकर वे उसके अभिवादन में झुकीं। उनमें से एक बोलो की सबसे छोटी पत्नी थी। उसने कहा, "छोटे गोसाई, कृपा करके वहाँ ज़्यादा देर मत खड़े रहिए। वह नंगा प्रेत फिर प्रकट होने लगा है। वह दही बेचने वालों की मटकियों से सारा दही चट कर जाता है···"

इस पर बोलो हँस पड़ा और बोला, "दूध, दूध कहो, दूध। वह एकबारगी ही सारा दूध गटक गया।"

महिलाएँ एक-एक करके गाड़ी में जा बैठीं। गाड़ीवान ने अपने चाबुक को झटका और बैल तुरन्त आगे बढ़ने लगे। उनके गले की घण्टियाँ बज रही थीं और गाड़ी के पहिए कर्र-कर्र कर रहे थे।

अब इन्द्रनाथ की नाक को एक ख़ास किस्म की लुभावनी सुगन्ध ने गुदगुदाया। यह सुगन्ध उन महिलाओं की त्वचा से उठी थी जो अभी-अभी वहाँ से गयी थीं। इससे उसे ताज़ा गन्ने के रस की याद आ गयी। कभी-कभी वह सुगन्ध जगलिया नदी से भी उठती थी जब उसमें नयी-नयी बाढ़ आती थी। वह अपने ख़यालों में खो गया। इस सुगन्ध का उस पर कुछ अजीब-सा असर हुआ। यह उसे विगत में ले गयी··· गोल घुटनों तक बिना किसी आवरण के··· पतली-पतली टाँगें और आँखें जैसे कि नदी के सुनहरे भूरे जल में दो सूर्य उद्भासित हों··· बाज़ी देर रात तक बड़े जोशोखरोश के साथ चलती रही··· बोलोराम गाँव का मालदार व्यापारी था। मोटा तो था ही, तोंद भी उसकी उतनी ही बढ़ी हुई थी। सर पर गंजापन, लेकिन भूरे बालों का एक पतला घेरा भी, प्रभामण्डल के समान।

इन्द्रनाथ को बोलो के तोंदियल पेट को देखकर जगलिया नदी के रेत के ढूहों की याद आ गयी जहाँ वह दिसम्बर के ठण्ड के महीने में कछुओं के अण्डे इकट्ठे

करने जाता था। बोलो के पुरखे मारवाड़ से आये थे। वे युद्ध के दौरान सत्र के निकट मिर्ज़ा में सेना के आधार शिविर में अन्न-पानी (राशन) पहुँचाने के कारण अमीर हो गये थे। स्वतन्त्रता-संग्राम के दौरान उसके परिवार वालों ने युद्धवीरों को दो बन्दूक़ें दान में दी थीं।

एक बार जबकि जुआ ज़ोरों पर था, उसने कहा था, "छोटे गोसाईं, वो दो बन्दूक़ें जो कभी मेरे पास होती थीं, महाराजा रणजीत सिंह की सेना के काम आयी थीं। वे असम कैसे पहुँचे, यह भी एक बड़ी अजीब और रोचक कहानी है··· एक अंग्रेज तोपची महाराजा के तोपखाने में कई तरह की बन्दूक़ें और तोपें तैयार करता था। ये बन्दूक़ें घोड़ों, ऊँटों और हाथियों पर कसी जाती थीं। एक लम्बी हलकी-सी बन्दूक़ आपके दादा को भेंट की गयी थी। वह तीन सत्रों के गोसाईं थे। उस बन्दूक़ के कुन्दे पर हाथी-दाँत की नक्काशी थी।"

···एकाएक कामिनी की झाड़ी पर दो साइकलों के पटके जाने की आवाज़ आयी। एक नौकर सहन में मछली पकड़ने वाले जाल बुन रहा था। उसने वहीं से आवाज़ दी, "अरे, अरे, देखो कौन आया है। खानापाड़ा के चौधरी साहब और दास साहब। वे अब तमाम रात बाज़ी लगायेंगे।"

चौधरी और दास दोनों ही इन्द्रनाथ के सामने बड़े आदरपूर्वक झुके और फिर खेलने लगे। खेल में अब नयी जान आ गयी थी। आधी रात हो चुकी थी।

खेल खत्म हुआ तो इन्द्रनाथ ने बोलो से कहा, "तुम्हें मुझे एक बंधुवा देना होगा।"

इस पर चारों खिलाड़ी एकाएक बोल पड़े, "बंधुआ! किसलिए?"

इन्द्रनाथ ने अपनी बात जारी रखी, "बंधुवा ही नहीं, मुझे तुम्हें दो मिट्टी की मटकियाँ भी देनी होंगी ताकि मैं उनमें दही और नींबू का रस ले जा सकूँ। अभी उन्हें खाली रहने दो। वह उन्हें उठाकर ले जायेगा।"

बोलो ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा और बोला, "अब मैं समझा! आप पुल पर प्रेत को पकड़ना चाहते हैं।"

बोलो की हँसी में सभी पत्ते खेलने वाले शामिल हो गये।

बोलो ने फिर चुटकी ली, "आप गोसाईं लोग बहुत चालाक होते हैं, लोमड़ियों की तरह। तभी कहा जाता है कि शूद्रों के बैल खेत जोतते हैं और गोसाइयों के बैल केवल बातें करते हैं।" फिर उसने सहन में बैठे अपने दोनों नौकरों की ओर देखा और उन्हें आदेश दिया, "ए, सुन रहे हो? तुम दोनों को गोसाईं के साथ जाना होगा।"

उनमें से एक ने, जिसका नाम कालीमन था और जो लकड़ी की सलाइयों से मछली पकड़ने का जाल बुन रहा था, अपना सामान एक तरफ़ रख दिया और पेट्रोमैक्स की ओर पीठ करके बोला, "अरे मालिक, मेरी कमर पर यह निशान देखते हो? उसने एक बार मुझ पर धावा बोल दिया था। मैंने सरसों के तेल की बोतल उस पर दे मारी

और वहाँ से किसी तरह बच निकला··· किसी ने मुर्दा गाय की खाल निकालकर उसे जंगल में फेंक दिया। वहाँ भंगी तो हैं नहीं। तो वह नंगा प्रेत ही होगा जो रात को बाहर निकलता है।"

फटिक नाम के दूसरे बंधुए ने भी सहमति में अपना सर हिलाया और कहने लगा, "हाँ मालिक, यह ठीक कहता है। यहाँ भंगी तो कहीं हैं ही नहीं। वही प्रेत होगा। लेकिन मैं गोसाईं का यह सामान ले चलूँगा।"

अब बोलो इन्द्रनाथ से मुख़ातिब था, "आप इसे ले जाइए। यह बिलकुल निडर है। आप जानते हैं एक बार इसने क्या किया था?" बोलो इन्द्रनाथ के बिलकुल नज़दीक आ गया था और उसके कान में बोलने लगा था, "आपने वामदेव मौजेदार की वह दहला देने वाली कहानी तो सुनी ही होगी। उसकी जवान और खूबसूरत बीवी कुएँ में डूबने से मर गयी। बाद में इस बात की पुष्टि हो गयी कि उसने आत्महत्या की है। वामदेव ने किसी को मुर्दा नहीं दिखाया, बल्कि उसे अपने घर के पिछवाड़े में चुपके से दफ़ना दिया। इससे चारों ओर खलबली मच गयी। उसका खटियामारी अस्पताल की किसी नर्स से चक्कर चल रहा था।···"

फटिक बीच में ही बोल पड़ा, "हाँ, हाँ, उसे दफ़ना दिया गया था। लेकिन उससे पहले उसका दाह-संस्कार करने की तैयारी थी। उसका शरीर लगभग आधा जल चुका था। फिर लोगों ने बहुत हो-हल्ला किया। इस पर अधजली लाश को आग से बाहर खींचा गया और फिर उसे दफ़ना दिया गया। तभी एक अजब घटना घटी। अधजली लाश की गंध पाकर कुछ लोमड़ियों ने उसे कुरेदकर बाहर निकाल लिया।"

इस पर महालदार चौधरी बोल पड़ा, "हमारे शास्त्रों का कहना है कि जो लोग आत्महत्या करते हैं, उन्हें दफ़ना देना चाहिए, और अपने कथन की पुष्टि में उसने संस्कृत का एक श्लोक पढ़ा। उसने यह श्लोक धीरे-धीरे और अटकते-अटकते पढ़ा। उच्चारण की इसमें कई ग़लतियाँ थीं।"

इन्द्रनाथ इस पर मुस्करा उठा और बोला, "महालदार चौधरी, तुम्हारा पुश्तैनी मकान तो भगवती पाड़ा में था। है न? गोसाइयों के सभी पुरोहित वहीं से आते थे···"

"हाँ, हाँ! वे सभी पुरोहित हैं," यह कहकर चौधरी रहस्यपूर्ण ढंग से मुस्करा दिया। इन्द्रनाथ इस मुस्कराहट का मतलब समझता था। उस धमकी, उस त्रास का एहसास अब भी उसे परेशान कर रहा था। ···हाँ, वे धमकियाँ जो कम्युनिस्ट देते थे। ···गोसाईं लोगों को एक दिन अपनी ज़मीन की जुताई खुद करनी पड़ेगी।···"

बोलो फिर कह रहा था, "छोटे गोसाईं, आप फटिक को अपने साथ ले जायें। वह बड़ी हिम्मत वाला है। वह पाँच घण्टे तक उस लाश के पास खड़ा रहा था। और मरी हुई महिला के अंगों की प्रशंसा करता रहा था। वे कोमल बाँसों की तरह

चिकने और सुन्दर थे, चाहे वह ज़िन्दा नहीं थी, और आग में काफ़ी हद तक जल चुकी थी।"

बोलो अपनी कहानी सुनाता रहना चाहता था, लेकिन पहले ही काफ़ी देर हो चुकी थी और आधी रात बीत चुकी थी।

इन्द्रनाथ अपने घर लौटने के लिए तैयार था। उसकी माँ और बुआ दुर्गा नींद से ऊँघती हुई उसका इन्तज़ार कर रही होंगी। अब तो गिरिबाला भी वहाँ थी, इसलिए वह भी उन्हीं के साथ बैठी होगी। अब तीन महिलाओं की आकृतियाँ उसके सामने थीं, बरामदे में बैठी उसका इन्तज़ार करती हुई। इन्द्रनाथ को एक तरह की खीझ-सी आ गयी। अब उसका उस पर नियन्त्रण भी नहीं रहा था। इसलिए लाचारी और झुँझलाहट के मिले-जुले भाव उसके मस्तिष्क को चीरते से निकल गये··· उसने जगलिया के लकड़ी के पुल के निकट लोमड़ियों को हू-हू करते सुना। वह बोलो की ओर मुड़ा और कह उठा, "मुझे अभी जाना होगा। फटिक को वो मटकियाँ दे दो और उससे कहो कि मेरे पीछे-पीछे चला आये।" और यह कहकर वह तेज़ क़दमों से अपने घर के लिए चल पड़ा।

लकड़ी के पुल के पास पहुँचकर इन्द्रनाथ ने आकाश की ओर देखा। वह साफ़ था और चन्द्रमा के प्रकाश से जगमगा रहा था। चन्द्रमा अपने पूरे यौवन पर था और एकदम साफ़-शफ़्फ़ाफ दिख रहा था, जैसे कि किसी सुन्दरी ने अपना परिधान उतार फेंका हो और नग्न अवस्था में अपने सौन्दर्य का परिचय देती खड़ी हो। वह साल के जंगल को पार कर रहा था। जगलिया के किनारे चन्द्रमा की इस रोशनी में रेत के ढूहे सफ़ेद भेड़ों के झुण्ड के समान दिख रहे थे।

फटिक उसके ठीक पीछे-पीछे चल रहा था। गहरी ख़ामोशी छायी हुई थी, जो उदासी भी देती थी और भय भी। दोनों तेज़-तेज़ और चुपचाप चलते रहे। उन्हें एक-दूसरे के कदमों की चाप स्पष्ट सुनाई दे रही थी। उन्हें पाँव तले रौंदे जा रहे सूखे मिट्टी के ढेलों की आवाज़ भी सुनाई दे रही थी। अचानक उन्हें पुल के दायीं ओर सड़क पर आती एक स्त्री की आकृति दिखाई दी। फटिक के पाँव लरज़ गये··· कौन हो सकती है यह? उसके हाथों में जो मटकियाँ थीं, वे भी हिल गयीं और ज़मीन पर आ पड़ीं··· फिर वह एकाएक मुड़ा और जिधर से आया था, उधर ही दौड़ पड़ा।

इन्द्रनाथ चुपचाप खड़ा रहा। उसने चाँदनी रात में टकटकी लगाकर देखा। कुछ भी तो नहीं। उसे केवल भगवती का मकान दिखा, जो घुटने मोड़कर बैठे हाथी की तरह दिख रहा था··· फिर उसे पुल के एक कोने पर उस झिलमिल स्त्री की आकृति दिखाई दी। वह उसी की ओर चली आ रही थी। इन्द्रनाथ को लगा जैसे कि उसके शरीर में खून का दौरा रुक गया हो। एक ठण्डी-सी लहर उसके ऊपर से गुज़र गयी। उसने ज़ोर से पुकारा, "कौन··· कौन है वहाँ?"

वह आकृति उसके नज़दीक आती गयी। फिर वह बिलकुल नज़दीक आ गयी। इन्द्रनाथ ने देखा कि वह तो हाथ में टेकनी लिए एक बुढ़िया है और उसके शरीर के वस्त्र तार-तार हैं।

बुढ़िया उसे सम्बोधित करते हुए बोली, "मुझे पहचाना नहीं? हम उस दिन जगलिया के दक्षिणी तट पर मिले थे, और मेरे साथ पुरोहित की लड़की थी···"

इन्द्रनाथ एकाएक कह उठा, "हाँ, हाँ! लेकिन तुम रात को इस वक़्त यहाँ क्या कर रही हो?"

"इस वक़्त के अलावा मेरे पास और कोई वक़्त नहीं है। हम सब जानते हैं कि तुम इसी वक़्त बोलो के अड्डे से लौटते हो। मैं काफ़ी देर से तुम्हारी राह देख रही थी।"

बुढ़िया ने जिस कपड़े से अपना चेहरा ढाँप रखा था, वह एकाएक फिसल गया। उसके बाल सफ़ेद पटसन हो रहे थे। वह इन्द्रनाथ को बिलकुल भुतवा-सी लगी। उसने अपना चेहरा अपने गताले के कोने से पोंछा और बोली, "सारू गोसाईं, मैं तुमसे माफ़ी चाहती हूँ। मैं संकट में हूँ। इसीलिए मैं इस बेवक़्त तुमसे मिलने चली आयी।"

"संकट? कैसा संकट? शायद वह अफ़ीमची उस स्वयंसवेक के जाल में फँस गया है। बढ़िया। मैं अपने सत्र से सभी अफ़ीमचियों का सफ़ाया हुआ देखना चाहता हूँ।"

बुढ़िया ने आपत्ति की, "नहीं, नहीं! ऐसा नहीं है। मैं तो तुम्हें ईलीमान के बारे में बताने आयी हूँ।"

"ईलीमन?"

एक अपरिभाषित-सी सनसनाहट उसे पार करती-सी निकल गयी। ऐसी बुढ़िया की बात सुनने के लिए उसे यहाँ नहीं खड़ा रहना चाहिए। आख़िर, वह तो सत्र का भावी अधिकार है। उसे बड़ी होशियारी और समझदारी बरतनी होगी। उसे अपनी प्रतिष्ठा भी बनाए रखनी है। सत्र का भाग्य इसी बात पर निर्भर करेगा कि वह इस दिशा में एक-एक क़दम कैसे उठाता है। लेकिन वह तो जैसे कि मायाजाल में फँस गया था। वह वहीं का वहीं खड़ा था, और वहाँ से हिल नहीं पा रहा था। बुढ़िया ने उसके मन की अनिश्चितता भाँप ली। वह एक क़दम और आगे आयी और बोली, "वह लड़की परेशानी में है।"

"परेशानी?" इन्द्रनाथ के मुँह से निकला।

"छोटे गोसाईं, मुझे तुमसे बात करते हुए किसी तरह की झिझक नहीं है। इसीलिए मैं रात के इस वक़्त आयी हूँ।"

इन्द्रनाथ का धीरज ख़त्म हुआ जा रहा था। उसने उसकी बात काटते हुए कहा, "बताओ, मुझे, जल्दी बताओ। हुआ क्या है?"

ठीक उसी समय पुल के पास जर्मन बान[4] की झाड़ी कँपकँपायी और उसकी शाखाओं में से एक दूसरी दुबली-पतली-सी औरत साये की तरह प्रकट हुई··· नहीं, यह पुजारी की बेटी नहीं हो सकती।

बुढ़िया ने लड़की की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, "डरो नहीं, छोटे गोसाईं। लोग जानते हैं कि हम आधी रात के समय दिशा-मैदान के लिए निकलती हैं। अब सुनो। एक क्षण ऐसा आता है जब हर प्रकार का डर ग़ायब हो जाता है। अगर बाघ या पागल हाथी भी सामने आ जाये तो कोई फ़र्क नहीं पड़ता। लेकिन आदमी एकदम दूसरी चीज़ है।"

इन्द्रनाथ झुँझला उठा था। बोला, "वह वहाँ क्यों खड़ी है? वहाँ तो झाड़ियों के पास साँप घूमते-फिरते हैं। उससे कहो इधर चली आये। तुम दोनों के बीच यह क्या खिचड़ी पकती रही है?"

बुढ़िया ने अपने गताले से अपनी ठुड्डी को ढाँप लिया और रुकते-रुकते बोली, "वह तुम्हारे नज़दीक नहीं आ सकती। उसकी मेखला खून से सनी है।"

इन्द्रनाथ एकाएक कह उठा, "खून?"

"सुनो, गोसाईं, कुछ ऐसी दुष्ट और कमीनी औरतें भी हैं जो रात के समय चुपके-चुपके लोगों के घरों के पिछवाड़े में जाती हैं। उनका काम केवल यही देखना होता है कि घर की लड़की माहवारी से तो नहीं है। मुझे डर है कि इस लड़की के साथ भी कुछ ऐसा ही घटा है। मैं इसे यहाँ ले आयी हूँ क्योंकि मैं उनसे डरती हूँ। वे चारों ओर इस बारे में ख़बर फैला देंगी। हाँ, शर्तिया वे ऐसा ही करेंगी और इस लड़की की शादी नहीं हो पायेगी। फिर वे पुराने ब्राह्मण इसे और इसके बाप को समाज से बाहर कर देंगे। लेकिन मैं जानती हूँ, मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि दक्षिणी तट की कितनी लड़कियाँ वयस्क हो चुकी हैं। लेकिन ये सब बातें दबा दी जाती हैं। उनके पीछे किसी का तगड़ा हाथ है। यह बच्ची तो एक नाजुक बेल की तरह है। इसके पीछे किसका हाथ रहेगा?"

इन्द्रनाथ सन्न रह गया। उसके मुँह से एक शब्द भी न निकला। कैसी अजब स्थिति है?

अब लंटना झाड़ी[5] थोड़ी हिली। चाँदनी रात में वह कोमल, फूल-सा शरीर कँपकँपाया और लज्जा से अपने आप सिमट गया। इन्द्रनाथ के सामने अब झाड़ी के पीछे एक ऐसी लड़की खड़ी थी जिसने जवानी की दहलीज़ पर अभी क़दम रखा ही था। क्या किसी गोसाईं को ऐसी विचित्र स्थिति का पहले कभी सामना करना पड़ा है? क्या किसी गोसाईं की बेटी को भी पहले कभी ऐसे हालात से जूझना पड़ा है?

आधी रात की उस घड़ी में जगलिया नदी के ऊपर बनाये गये लकड़ी के पुल के निकट तीन आकृतियाँ खड़ी थीं, बिलकुल चुप, जैसे कि वे पत्थर में से तराशी गयी हों।

कुछेक क्षणों के बाद इन्द्रनाथ बोला, "इसे वापस घर ले ज़ाओ।"

इस पर वह बुढ़िया बोली, "अभी मैंने तुम्हें उस संकट के बारे में नहीं बताया जो हमारे सरों पर मँडरा रहा है।"

"बताओ! जल्दी!"

"इसके बाप ने एक बार कहा था कि कूच-बिहार का वह दुष्ट अफ़ीमची ब्राह्मण इसे स्वीकार कर लेगा, चाहे यह महीने से भी हो गयी हो, और इस पर ख़ानदान की इज़्ज़त बच जायेगी···"

इन्द्रनाथ बुदबुदाया, "कूच-बिहार का ब्राह्मण?"

"उसने ऐसा ही कहा। उसका कहना है कि कूच-बिहार में उसकी कुछ ज़मीन है, लेकिन उसे देखने वहाँ कभी कोई नहीं गया। पिछले दो वर्षों से वह इसके बाप को अफ़ीम पहुँचाता रहा है। ईश्वर ही जानता है कहाँ से। अब इस ब्राह्मण को जब इसकी हालत का पता चलेगा तो वह मंगनी के लिए कुछ उपहार जुटा लेगा।"

लंटना झाड़ी फिर हिली, जैसे कि वहाँ छिपी लड़की काँपी हो···

"छोटे गोसाईं, मैं तुमसे खुलकर, बिना किसी संकोच के बात कर सकती हूँ। जिस दिन से तुम्हारी उससे नदी के तट पर भेंट हुई है, उस दिन से वह तुम्हें अपना दिल दे बैठी है। जब यह अभी छोटी ही थी, तब इसकी माँ चल बसी थी। यह मेरी छाती का दूध पीकर बड़ी हुई है···" कहते-कहते बुढ़िया का गला भर आया था। उसने अपने कंधों पर पड़े गन्दे गताले से अपनी आँखें पोंछीं और कहती गयी, "वह वापस राजापुखरी नहीं जाना चाहती। मैं उस कमीने अफ़ीमची से इसकी शादी कैसे होने दूँ!"

बुढ़िया अब अपने पर से नियन्त्रण खो चुकी थी और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी थी।

लंटना की झाड़ी फिर बुरी तरह से काँपी। उसके पीछे खड़ी लड़की का शरीर भी काँप रहा था। वह शैवाली के उस पेड़ की तरह दिख रही थी जिसके पत्ते और फूल ज़बरदस्त तूफ़ान ने झकझोर कर गिरा दिए हों।

बुढ़िया कुछ क़दम और आगे बढ़ी। उसके पाँव दही की टूटी मटकियों के उन टुकड़ों पर पड़ रहे थे जिन्हें फटिक बुढ़िया का भूत समझकर घबराहट में गिरा गया था। अब वह बहुत ही धीमी आवाज़ में बोली, "गोसाईं! यह सच है कि तुम्हारे परिवार में कभी किसी ने किसी साधारण ब्राह्मण लड़की से शादी नहीं की, लेकिन मैंने सुना है कि दक्षिणी तट के दामोदरिया गोसाइयों ने उत्तरी तट की ब्राह्मण लड़कियों से विवाह किए हैं··· किसी अनुयायी ने कभी किसी प्रकार की कोई आपत्ति नहीं की··· वक़्त अब बदल रहा है, गोसाईं···। गोसाइनें अब अपने घरों से बाहर आकर गुवाहाटी भी जाती हैं। वे अपनी ज़मीन के लिए लड़ती भी हैं और न्याय के लिए कचहरी भी जाती हैं···"

अद्‌भुत! रात के उस समय टूटी मटकियों के टुकड़ों पर खड़ी यह बुढ़िया बकबक किए जा रही है। अद्‌भुत···! वाकई अद्‌भुत!

"समूचे दक्षिणी तट पर तुम्हें ऐसी सुन्दर लड़की नहीं मिलेगी··· अपनी इन दो आँखों से मैंने सब लड़कियों को देखा है। मैंने उनके बाल भी सँवारे हैं··· लेकिन विश्वास करो इस जैसी लड़की तुम्हें कहीं नहीं मिलेगी। देखो! वह खड़ी है वहाँ। जैसे आकाश से चन्द्रमा का कोई अंश नीचे गिरा हो। सुनो, सारू गोसाईं। तुम्हारा गोत्र अलग है। तुम शांडिल्य गोत्र के हो। वह भरद्वाज गोत्र की है। मैंने हर चीज़ का पता लगा लिया है। इसीलिए मैं तुम्हारे पास आयी हूँ। तुम्हारा एक शब्द ही काफ़ी होगा।"

लंटना की झाड़ी फिर हिली। अब सब कुछ सामने आ चुका था, जैसे कि वह लड़की उसके सामने नग्न खड़ी हो।

बुढ़िया बहुत ही विनम्र स्वर में कहती गयी, "डाखला, बामुंडी, राजाबाहा—इन सब जगहों पर गोसाईं लोगों ने ब्राह्मण लड़कियों से शादी की है। हम सबको इसका पता है। वे अनुयायी सब कहाँ गये? एक शब्द भी बोला कोई? ज़रा लड़की को तो देखो। क्या चेहरा है! गोसाईं, इसे इसके कष्ट से उबारो। केवल तुम ही ऐसा कर सकते हो!"

इन्द्रनाथ कुछ देर तक बिना हिले-डुले खड़ा रहा। उसे उत्तर तो देना ही होगा··· वह उस बुढ़िया से मुखातिब हुआ, "मेरा बाप बहुत बड़ा अधिकार है। उसका साया अब भी मेरे सर पर है। मैं अभी कुछ नहीं कह सकता। मुझे सोचने के लिए कुछ समय दो।"

···बहुत समय हो गया है··· आधी रात बीत चुकी है। अब यहाँ खड़े रहना सम्भव नहीं। उसे यहाँ से चले जाना चाहिए।

बुढ़िया और निकट आ गयी, जैसे कि उसका रास्ता रोकना चाहती हो। बोली, "लेकिन बहुत कम समय रह गया है। कूच-बिहार वाला वह ब्राह्मण अफ़ीम के साथ ढेकी के पीछे छिपा हुआ है। हमारी मदद करने वाला और कोई नहीं।" उसका मुँह लगभग इन्द्रनाथ के कान को छू रहा था। वह बड़ी उत्तेजना से फुसफुसायी, "पुलिस को ख़बर कर दो। उन्हें बताओ कि वे फ़ौरन ढेकी पर जाकर देखें। उन्हें छड़ी के भीतर देखना होगा। वह छड़ी छत पर से लटक रही है और अफ़ीम से भरी हुई है। केलों के एक गुच्छे के भीतर भी अफ़ीम छिपाई गयी है। जल्दी करो, छोटे गोसाईं।"

बुढ़िया जैसे कि टूट चुकी थी। उसकी साँस उखड़ रही थी और वह हवा के लिए अपना मुँह खोले हुए थी। उसके शरीर से कुछ खट्टी-सी गन्ध आ रही थी जो कि इन्द्रनाथ के नथुनों में चढ़ रही थी। कभी-कभी दुर्गा के शरीर से भी ऐसी ही गन्ध आती थी और उन किसान औरतों से भी जिनकी छातियों में दूध रहता था। वे धान के खेतों में काम करने की ख़ातिर अपने नन्हों को घर छोड़ आती थीं। "पलटन हेरामदो में बेकार पड़ी हैं। तुम वहाँ जाओ। फ़ौरन! केवल तुम ही उन्हें यह ख़बर दे सकते हो। मुझे उम्मीद है कि तुम मेरी बात समझ रहे हो। अगर वह बदमाश पकड़ा गया

तो फिर ख़तरा टल गया समझो··· लेकिन तब तक जब तक कि तुम फ़ैसला नहीं कर लेते।"

लंटना झाड़ी में फिर कम्पन हुआ। क्या कहे वह? क्या यह उसकी नियति का संरक्षक हो सकता है? इन्द्रनाथ चुप रहा। उसे लगा जैसे कि भावना और भावुकता का एक पतला रेशमी डोरा उसके चारों ओर लिपटता चला जा रहा है और उसे जकड कर झाड़ी के पीछे छिपी लड़की के क़दमों पर फेंकने को है। आख़िर उसकी ख़ामोशी टूटी, "तुम अभी जाओ, तुम दोनों ही। मुझसे जो बन पड़ेगा, करूँगा। अभी तुम जाओ। जब तक मैं यहाँ खड़ा हूँ, तुम्हें घर के भीतर हो लेना चाहिए।"

वह बुढ़िया और वह लड़की दोनों, पुल के नीचे से होती हुई छोटे रास्ते से चली गयीं और थोड़ी देर में नज़र से ओझल हो गयीं। झाड़ियों के पीछे से गीदड़ हू-हू कर रहे थे। उनके दो छौने चाँदनी में खेलते हुए पुश्ते की ढलान से ऐसे लुढ़के जैसे मिट्टी के दो गोले हों। कुछ समय के लिए इन्द्रनाथ वहाँ वैसे ही खड़ा रहा। क्या कभी किसी को ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ता है? इधर यह लड़की जिसने अभी यौवन में क़दम रखा ही है, उसके सामने खड़ी है और उसका निचला परिधान शायद मासिक स्राव से सन गया है··· क्या यह सम्भव है? ···उसे याद आया··· अभी वह बच्चा ही था जब वह एक बार अपनी माँ से जा लिपटा था। माँ उस समय माहवारी से थी। कैसा संकट आ खड़ा हुआ था तब। माँ को एक दिन के लिए उपवास करना पड़ा था और परिवार के पुरोहित ने आकर प्रायश्चित्त के साथ उसे शुद्ध किया था। संस्कृत का वह श्लोक अब भी उसके कानों में बजता है।

वह क्या करे? क्या वह कूच-बिहार के उस अफ़ीम के तस्कर को होम गार्ड्स के हवाले कर दे? उसे फिर याद आया··· एक बार जब वह कहीं जा रहा था तो उसकी भेंट एक आबकारी इन्स्पेक्टर से हुई थी जो अपनी साइकिल से जा रहा था। और जैसे ही उसने उसे देखा था, वह साइकिल से नीचे कूद गया था और उसे प्रणाम करते हुए बहुत ही सम्मान के साथ बोला था, "सारू गोसाईं, आपके गाँव को अफ़ीम की लत ने जकड़ लिया है, और आप चुपचाप सब देख रहे हैं!"

इन्द्रनाथ ने उसे जो उत्तर दिया था, वह भी उसे याद था, "कौन कहता है कि हम चुपचाप खड़े देख रहे हैं? मेरे पिता, जोकि इस समय अधिकार हैं, कभी भी उन अफ़ीमचियों को बढ़ावा नहीं देते जो अफ़ीम के बदले अपनी ज़मीन गिरवी रखने आते हैं। दूसरे, जो सालाना सभा होती है, उसमें वह बराबर अफ़ीम खाने की बुराइयों पर एक भाषण देते हैं। राजाबाहा का सुधार शिविर वास्तव में मेरे पिता ने ही शुरू किया था।"

"तब आप हमारी मदद क्यों नहीं करते, छोटे गोसाईं? तिनियाली में तीन दुकानें ऐसी हैं जहाँ अफ़ीम बिकती है। बड़ा तगड़ा धन्धा है उनका। कुछ साल पहले जो भी अफ़ीम बेचने के लाइसेंस के लिए आवेदन करता था, उसे लाइसेंस मिल जाता

था। अब तो जगलिया के पूरे तट से लेकर उन खेतों तक, जहाँ तुम्हारे हाथी बँधते हैं, अफ़ीन ही अफ़ीम की बिक्री होती है।"

"हाँ, हाँ! मैं जानता हूँ। एक वक्त था जब असम सरकार के बजट में अफ़ीम से होने वाली कमाई दूसरे दर्ज़े पर होती थी। मैं ठीक कह रहा हूँ न?"

"मुझे खुशी है कि आपको सब कुछ याद है। लेकिन मैं असली मुद्दे पर आना चाहता हूँ। अब तो अफ़ीम खाने वालों को भी परमिट लेना पड़ता है। हर अफ़ीम बेचने वाली दुकान को हिदायत दी जाती है कि वह जनता को बेचने के लिए अफ़ीम का एक निश्चित मासिक कोटा ले। लेकिन उसके बावजूद महालदार मालख़ाने से अफ़ीम की कुछ मात्रा कोई-न-कोई कारण बताकर ले ही जाता है। यह पूरे दक्षिणी तट पर हो रहा है। लेकिन आप जानते हैं आपके यहाँ क्या हो रहा है?"

"क्या?"

"यहाँ की दुकानों ने मालखाने से अफ़ीम लेना लगभग बन्द कर दिया है। यह एक बहुत ही अजब बात है। इसकी ठीक से छानबीन होनी चाहिए।"

"तब तो अफ़ीम से होने वाली आमदनी भी काफ़ी कम हो गयी होगी?"

इन्स्पेक्टर हँसा और बोला, "महालदार का कहना है कि अफ़ीम की बिक्री में कमी होने का कारण अफ़ीमचियों का अफ़ीम खाना छोड़ देना है। क्या आप यक़ीन कर सकते हैं? क्या यह सम्भव है?"

इन्द्रनाथ यह सुनकर स्तम्भित रह गया। वह पिछले कुछ वर्षों से खुद अपनी आँखों से सब कुछ देखता रहा था। एक बार पान की बेलों को खूब पत्ते लगे थे और वे सुपारी के पेड़ों के इर्द-गिर्द लिपटी हुई थीं। लेकिन ये बेलें धीरे-धीरे गिरने लगीं और ऐसे दिखने लगीं जैसे कि सूखी हुई अंतड़ियाँ हों। दरअसल, पत्ते तो अफ़ीमची खा गये थे। तब यह कैसे सम्भव हो सकता है कि पुराने अफ़ीमची अफ़ीम खाने की अपनी लत छोड़ रहे हैं? पान के पत्ते तो अब ब्याह-शादियों के लिए भी हाथ नहीं लगते। उन्हें आसपास के गाँवों से लाना पड़ता है। असली स्थिति यह है। और यह आदमी कहता है कि महालदार के अनुसार लोग अफ़ीम खाने की अपनी पुरानी आदत छोड़ रहे हैं!

इन्स्पेक्टर ने अपनी बात जारी रखी, "सुनो, गोसाईं! आपके क्षेत्र में केवल दस ही लाइसेंस वाले लोग हैं। लेकिन आबकारी पुलिस की रिपोर्ट के मुताबिक अस्सी प्रतिशत से ज़्यादा जनसंख्या अफ़ीम की आदी है। इसलिए आप हमारी मदद करें। मुझे ज़ाती तौर पर लगता है कि अफ़ीम के तस्करों का गारो की पहाड़ियों या कूच-बिहार के इलाके से सम्पर्क है। आप जानते हैं, गोसाईं, कि कलकत्ता के बन्दरगाह पर कितनी अफ़ीम पकड़ी गयी? अफ़ीम की तस्करी के लिए एक रास्ता जंगल से होकर बर्मा और मलाया को जाता है। मेरा ख़याल है कि आपके गाँव में भी ऐसा ही कोई सम्पर्क स्थापित किया गया है। आपका यहाँ बड़ा दबदबा है। आपका आदेश चलता

है। आप जैसे लोगों को चाहिए कि वे इस ख़तरनाक ज़हर से जनता को बचायें।"

इन्द्रनाथ आबकारी इन्स्पेक्टर के शब्द भूला नहीं था। बोलो के यहाँ पत्तों की बाज़ियों के दौरान अफ़ीम के बारे में जो बात होती थी, उसे वह भी याद थी। एक या दो व्यक्तियों ने गारो की पहाड़ियों में पोस्त की बुवाई का भी ज़िक्र किया था। वहाँ से मिलने वाली अफ़ीम का रंग चालान के ज़रिये मालखाने से मिलने वाली अफ़ीम के रंग से अलग था। इस बारे में एक व्यक्ति ने उसे बताया था कि एक महालदार गिरफ्त में आते-आते कैसे बचा। उसने इन कहानियों पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया था, क्योंकि वह पत्ते की बाज़ी में पूरी तरह खोया रहता था। लेकिन अब उसे सब कुछ याद आ रहा था। उसे अफ़ीम के बारे में बहुत पहले सुनी कुछ और भयावह कहानियाँ भी याद आ रहीं थीं। कहा जाता था कि पुराने समय में सती प्रथा और अफ़ीम के बीच भी कुछ रिश्ता था। ढाका में चिता पर जलाये जाने से पहले सती होने वाली स्त्रियों को अफ़ीम खिलाई जाती थी। एक बार तो ऐसा भी हुआ कि जगलिया के तट पर रहनेवाला एक ब्राह्मण ढाका में अपने जजमानों के यहाँ गया था। वहाँ उसने जब देखा कि अग्नि में से एक सती कूदकर बाहर आ गयी है तो उसके भय की सीमा न रही। आग से झुलसी हुई उस स्त्री की छाती, बाजू और टाँगों से धुआँ हुए मांस के लोथड़े लटक रहे थे। ऐसा दृश्य देखकर मतली-सी होती थी।

इतिहासकार विल्सन और मिल ने कहीं लिखा है कि—हाँ, याद आया। 1815 और 1828 के बीच, यानी 13 वर्ष की अवधि में, ढाका में 710 और कलकत्ता में 5100 औरतें अमानुषिक ढंग से सती की गयीं। कौन विश्वास करेगा कि असम की गारो पहाड़ियों का इन विधवाओं को जलाने में कोई हाथ नहीं था। गारो पहाड़ियों की अफ़ीम खूब मशहूर थी और उन दिनों भी इसकी बहुत माँग थी।

इन्द्रनाथ पुल के पास बिलकुल बेहिस, परेशान-सा, अनिर्णय की स्थिति में खड़ा रहा। क्या करे वह? क्या हेरामदो की आबकारी पुलिस के पास जाना वाकई ठीक रहेगा? फर्ज़ करो कि इसी जाल में ईलीमन का बाप भी फँस जाता है। तब!

इन्द्रनाथ को 1947 के असम अफ़ीम निषेध अधिनियम के संशोधन-10 की याद आयी। इसके अनुसार जो व्यक्ति अफ़ीम के तस्कर को आश्रय देता है, वह भी उस अपराध का उतना ही भागीदार है और दण्डनीय है जितना कि तस्कर। अगर उसका बाप फँस गया तो वह कहाँ रहेगी? केवल यही सोचकर कि वह पुजारी जो राजापुखरी के परिवार की मूर्तियों को स्नान कराता था, जेल जा रहा है, इन्द्रनाथ रुक गया। वे धूर्त अफ़ीमची ब्राह्मण! मूर्ख कहो उन्हें! वे झूठी शान के मारे हेरामदो के उपचार शिविर में जाने से आना-कानी कर रहे थे। लेकिन यह बात सभी जानते थे कि ईलीमन के बाप और कूच-बिहार के उस अफ़ीम के व्यापारी के बीच अफ़ीम बेचने और ख़रीदने की साझेदारी है। उस बूढ़े को वह कैसे बचा सकता है? उस बुढ़िया

ने यह तो सोच लिया कि उस तस्कर को पकड़वा देना चाहिए, लेकिन उसने यह नहीं सोचा कि इसके परिणाम क्या होंगे?

···हां, हां। अब हर बात अधिकाधिक स्पष्ट होती जा रही थी। उसने अफ़ीम अधिनियम के 5वें संशोधन को भी पढ़ा था—"प्रावधानित किया जाता है कि जिस व्यक्ति के बारे में अफ़ीम की तस्करी करने या अफ़ीम बेचने का साक्ष्य मिलता है, उसे न केवल दो वर्ष की कड़ी सज़ा मिलेगी बल्कि जुर्माना भी होगा···" दो साल का समय कोई कम नहीं होता। इस बीच कहीं कुछ घट सकता है।

इन्द्रनाथ ने चलना शुरू कर दिया। उसने हाथीबांधा बकारा (जगलिया के किनारे जहाँ अधिकांश पालतू हाथी बाँधे जाते थे) को पार किया और बरगद के उसी पुराने पेड़ के पास पहुँच गया जहाँ एक बहिष्कृत कोढ़ी अपने नारकीय जीवन के दिन पूरे कर रहा था। आधी रात के समय वह कहीं नहीं दिख रहा था। कहाँ हो सकता है वह? शायद वह कहीं दिशा-मैदान के लिए गया हो या इधर-उधर घूमते भेड़ियों के डर से किसी मकान के बरामदे में दुबका पड़ा हो।

उसने दिवाकर भगवती के घर की बाड़ के बाँस के फाटक को पार किया। उसे वहाँ बेंत और गारे से तैयार की गयी दीवार की झिरियों में से मद्धिम-सी रोशनी आती दिखाई दी। यह दीवार लगभग टूटने को हो रही थी। फिर उसे अचानक बैलगाड़ी के पहियों की कर्र-कर्र सुनाई दी। उसने देखा कि उसकी दिशा में दो बैलगाड़ियाँ सामान से लदी बढ़ी चली आ रही हैं। एक गाड़ी में से एकाएक आवाज़ आयी, "अरे, क्या छोटे गोसाई हो? घर लौटने का क्या यही वक़्त है?"

इन्द्रनाथ फौरन समझ गया कि यह आवाज़ उनके पुश्तैनी पुरोहित पुरुषोत्तम भगवती की है। वह थोड़ा घूमा और उसने देखा कि पुरोहित की गंजी टांड चाँदनी रात में चमचमा रही है। उसके कंधे एक चादर से ढके हुए थे। वह चादर सारस के परों के समान सफ़ेद थी।

"गोसाई, कब तक ऐसे ही भटकते रहोगे? तुम्हारा असामी धीरे-धीरे तुम्हारी ज़मीनें हड़प करता जा रहा है। अभी पिछले दिन ही गोसाइन मेरे सामने रोयी थीं। उनका कहना था कि तुम अपनी इस सम्पत्ति में कोई रुचि नहीं लेते। तुमने सुना नहीं जल्दी ही वह ख़तरनाक भूमि परिसीमन अधिनियम आ रहा है और तुम्हारी तमाम कर-मुक्त भूमि छीन ली जायेगी। अब तो सारस का धैर्य और लोमड़ी की चालाकी दरकार है। अगर ज़िन्दा रहना है तो ये दो गुण अपनाओ। आज के लिए नितान्त आवश्यक है।"

इन्द्रनाथ के कुछ ज़्यादा पल्ले नहीं पड़ रहा था। दूसरे, बैलगाड़ी के पहियों की कर्र-कर्र से पुरोहित के शब्द पकड़ में भी नहीं आ रहे थे। पुरोहित अब गाड़ी में से एकाएक कूदा और इन्द्रनाथ के निकट आ गया। "···सारू गोसाई। इतनी रात गये।

लगता है तुम शराब पी रहे थे। हम जानते हैं कि तुम वहाँ पत्ते खेलने जाते हो। लेकिन शराब? वह तो तुम पहले कभी नहीं पीते थे।"

इन्द्रनाथ ने उत्तर नहीं दिया। उसकी दृष्टि लदी हुई बैलगाड़ियों की ओर चली गयी। वे कोमल कटहल के गुच्छों से अटी पड़ी थीं। उनमें बड़े-बड़े दही के मटके, धान के टोकरे, गुड़ वाले लकड़ी के मर्तबान, सुपारियाँ और पान के पत्ते भी थे। दो बंधुवे दही के मटकों को कसकर पकड़े हुए थे ताकि उनमें से दही फैले नहीं। चाँद की रोशनी में उनकी नंगी पीठें खूब चमचमा रही थीं।

"इन्द्रनाथ, सभी जानते हैं कि तुम ज़्यादा नहीं बोलते। शराब वाली बात तो मैंने यों ही मज़ाक में कह दी। पुराने ज़माने में देवताओं की शराब सोमरस थी, लेकिन वे इसे अपनी बुद्धि को तेज़ करने के लिए पीते थे। कहते हैं कि इन्द्र, जो इसे मात्र आनन्द के लिए पीता था, एक भी ऐसा ग्रन्थ पीछे नहीं छोड़ गया जो स्थायी महत्त्व का हो··· लेकिन हमारे महर्षि जिन्होंने सोमरस का पान किया, कई दैवी मन्त्रों, उपनिषदों और वेदों के रचयिता बने। सोमरस की कहानी बहुत ही दिलचस्प है।"

पिछले महीने की बारिश से सड़क बहुत ही खुरदरी हो गयी थी और उसमें कई गड्ढे पड़ गये थे। ऐसी सड़क पर बैलगाड़ियाँ पहले की अपेक्षा कहीं ज़्यादा शोर कर रही थीं। इन्द्रनाथ पुरोहित के और निकट हो गया और उसके साथ-साथ चलने लगा।

"तो आप जजमानों के यहाँ से आ रहे हैं?"

"हाँ, मैं बंगरा से आ रहा हूँ। तुम जानते ही हो कि वह मौजेदार भी मेरा जजमान है।"

"हाँ, हाँ, मैंने उसके बारे में सुना है। उसकी पत्नी कुएँ में गिरकर मर गयी थी। जगलिया नदी के इस तरफ़ के लोगों ने इसके बारे में कई तरह की अफ़वाहें उड़ा रखी हैं।"

पुरोहित और निकट आ गया। "यह बहुत ही गम्भीर बात है, इन्द्रनाथ।"

"क्यों?"

"जगलिया के आस-पास जो कहानी फैली हुई है, वह झूठी नहीं है। मौजेदार ने खटियामारी के अस्पताल की एक नर्स से अपना इश्क़ चलाया था। वह उसके घर भी आयी थी। इससे मियां-बीवी के बीच झगड़ा शुरू हो गया।" उस मोटे, गंजे ब्राह्मण ने ऐन इन्द्रनाथ के कान में फुसफुसाया। "मौजेदार से मेरी जो आज बात हुई है उससे यह बात पता चलती है कि झगड़ा कुएँ के पास हुआ। उस दौरान जो खींचतान हुई, उससे बीवी··· अ अ··· कुएँ में गिर गयी।"

"तो आखिर उसने मान ही लिया है। अच्छी बात है। उसे अब जेल की रोटियाँ तोड़ने के लिए तैयार हो जाना चाहिए।"

पुरोहित ने अब ज़ोर-ज़ोर से बोलना शुरू कर दिया, "मान गया है? कैसा मान गया है? उसने कुछ नहीं माना। दाह-संस्कार से पहले उसने डॉक्टर से सर्टिफ़िकेट भी

ले लिया था। लेकिन इस समूचे मामले के बारे में सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उसका अन्तःकरण अब उसे सताने लगा है। वह किसी तरह प्रायश्चित्त करना चाहता है।"

ब्राह्मण ने अब नकियाते हुए और अशुद्ध उच्चारण के साथ प्रायश्चित्त वाला एक संस्कृत श्लोक बोलना शुरू कर दिया, जिसका अर्थ इस प्रकार था—वह ब्राह्मण जो एक ब्राह्मण स्त्री की हत्या करता है, उसे बारह वर्ष तक अपना पाप धोना होगा। अगर वह एक क्षत्रिय स्त्री की हत्या करता है तो उसे छः वर्ष तक प्रायश्चित्त करना होगा।

इन्द्रनाथ का मन अब फिर भटकने लगा था। उसे पुरोहित के शब्द मुश्किल से ही सुन पा रहे थे। तब तक बैलगाड़ियाँ गोसाईं के गन्ने के खेतों में पहुँच गयी थीं। कोमल गन्नों की मीठी सुगन्ध से उसके नथुने सरसराने लगे थे।

पुरोहित कहे जा रहा था, "सुनो इन्द्रनाथ, याज्ञ्यवल्क्य ऋषि ने ऐसे अपराध के लिए प्रायश्चित्त का बहुत ही दुर्दान्त प्रावधान लिया था। अपराधी को बारह वर्ष तक मनुष्य की खोपड़ी को एक छड़ी पर सन्तुलित रखना पड़ता था और घर-घर जाकर चावल की भिक्षा माँगनी पड़ती थी। उसे मात्र इसी चावल पर निर्भर रहना होता था··· अगर इन नियमों का दृढ़ता से पालन किया जाता तो संसार में ऐसी बुराइयाँ होती ही नहीं। लेकिन आजकल तो हर चीज़ को आसान बनाना पड़ता है। मैंने स्वयं इन दो हाथों से पुराने नियमों के साथ समझौता कर लिया है।"

इन्द्रनाथ ने एकाएक उसे टोका, "बापू, जब तुम मौजेदार के बारे में सब कुछ जानते ही हो, तो तुम्हें पलासबाड़ी के थाने में फौरन रिपोर्ट लिखवानी चाहिए थी।"

"क्या कह रहे हो, सारू गोसाईं? वह नहीं कहता कि उसने उसे कुएँ में धकेला था। उसका कहना था कि खींचा-तानी के बीच उसने अपना सन्तुलन खो दिया और वह कुएँ में गिर गयी। दूसरे, डॉक्टर ने पोस्टमार्टम की जो रिपोर्ट दी है, उसमें तो यह कहा गया है कि उसको दिल का दौरा पड़ा और वह कुएँ में गिर गयी। डॉक्टर ने सर्टिफिकेट देते देर नहीं लगायी।"

वे कुछ दूर तक साथ-साथ चलते रहे। इन्द्रनाथ के दिल में कहीं एक टीस-सी उठी। उधर नींबू की ताज़ा सुगन्ध उसके नथुनों में भरने लगी। इतने में एक उल्लू उलू-उलू करता उनके सरों के ऊपर से निकल गया··· वे बात किये बिना आगे बढ़ते रहे और आखिर बातघर पहुँच गये। बातघर युद्ध के दृश्यों वाले टीन से सजाया गया था। इन्द्रनाथ वहीं रुका और ब्राह्मण से बोला, "बापू, मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूँ।"

"पूछो, पूछो! क्या है तुम्हारा प्रश्न? आज तुम्हारा मन कहीं और है।"

"क्या हमारे सत्र के किसी अधिकार ने कभी किसी साधारण ब्राह्मण परिवार की लड़की से शादी की है?"

ब्राह्मण कुछ देर तक खामोश रहा, जैसे कि वह अपने मन-ही-मन कुछ हिसाब लगा रहा हो। फिर वह बोला, "ठीक है! सुनो, सारू गोसाईं! तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर

देने के लिए मुझे शक संवत 1400 में जाना पड़ेगा। मुझे शांतदेव के गरैमारी[7] से शुरू करना होगा। उसकी स्थापना उसने इस सत्र से पहले की थी। मुझे डाखला की एक ब्राह्मण कन्या की याद आ रही है। एक गोसाईं ने उसे सोने की बालियों का एक जोड़ा भेंट किया था। हर तरह की व्यवस्था हो चुकी थी। लेकिन अनुयायियों ने घोर आपत्ति की और यह शादी हो न सकी। बाद में मेरे सुनने में आया कि उस ब्राह्मण कन्या ने बामुण्डी में शादी कर ली है। लेकिन एक अफवाह यह भी फैली कि शादी के बाद भी गोसाईं का उस कन्या के साथ रिश्ता बना रहा। डाखला और समारिया में कई लड़कियाँ हैं, निचली जाति की, जिनका गोसाइयों से सम्बन्ध रहा है और जिन्हें बाद में सोना देकर छोड़ दिया गया। लेकिन मुझे अब भी कोई ऐसा उदाहरण नहीं मिल रहा जब एक गोसाईं ने किसी साधरण ब्राह्मण लड़की से शादी की हो।"

एकाएक कँटीली झाड़ियों के निकट कुछ गीदड़ों ने शोर मचाना शुरू कर दिया। दोनों व्यक्ति उस शोर से चौंक गये। सामान से लदी बैलगाड़ियाँ सड़क पर आगे बढ़ती रहीं। पुरोहित इन्द्रनाथ के साथ पीछे-पीछे रहा। फिर उसने पूछा, "लेकिन सारू गोपा! तुम मुझसे यह सवाल क्यों कर रहे हो?"

"नहीं, नहीं! ऐसे ही! मेरा ख़याल है मुझे यह सब कुछ जानना चाहिए।"

"सुनो, गोसाईं। बुरा वक़्त आ रहा है। जगलिया के दूसरी तरफ़ दामोदरिया गोसाइयों ने साधारण ब्राह्मण लड़कियों से शादी करना शुरू कर दिया है। रंगमारी के कम्युनिस्ट लाल झण्डे के साथ लोगों को आतंकित कर रहे हैं, और गोसाइयों की लड़कियाँ शादी से पहले ही रजस्वला हो रही हैं। अब इतना पाप हो रहा है हर जगह। क्या कभी तुमने यह सब सुना था? वे गोसाइनें जो कभी बातघर तक नहीं आयी थीं, अब गुवाहाटी में मुकदमे लड़ रही हैं। लेकिन तुम तो किसी ब्राह्मण लड़की के बारे में पूछ रहे थे। क्यों? मेरी समझ में नहीं आ रहा।"

"नहीं, नहीं, बापू। भूल जाओ इसे! चिन्ता की कोई बात नहीं··· वाकई!"

"मैं जानता हूँ तुम ऐसा कोई क़दम नहीं उठाओगे जिससे तुम्हारे परिवार के बेदाग इतिहास पर धब्बा लगे। तुम जानते हो धर्मात्मा युधिष्ठिर ने पुरुष किसे कहा है—सतकार्य की गूँज धरती-आकाश को छूती है। जब तक यह गूँज है तब तक मनुष्य पुरुष कहलायेगा।"

इन्द्रनाथ ने पुरोहित को विदाई दी और बातघर को पार करके सहन में जा पहुँचा। पुरोहित जल्दी-जल्दी, बैलगाड़ियों को पकड़ने, उनके पीछे हो लिया।

उधर इन्द्रनाथ ने सहन को पार किया और बरामदे की सीढ़ियाँ चढ़ गया। यहाँ से जगलिया ऐसे दिखती थी मानो वह ज़मीन में से खोदकर बाहर निकाली हुई कोई बेरंग हड्डी हो। हमेशा की तरह उसकी माँ और दुर्गा बैठी उसका इन्तज़ार कर रही

थीं और उनके सर उनके घुटनों पर टिके हुए थे। लेकिन उसे एक तीसरी आकृति भी दीख पड़ी। वह गिरिबाला की थी जोकि एक लकड़ी के खम्भे के सहारे खड़ी थी।

इन्द्रनाथ को चिढ़ हो आयी। उसने अपनी चादर से अपना माथा पोंछा और भुनभुनाया-सा अपना मुँह-हाथ धोने कुएँ की ओर बढ़ गया। वहीं खड़े-खड़े उसने अपना गीला मुँह सुखाया और दूर झाड़ियों की ओर टकटकी लगाए देखने लगा। केवल जगलिया का एक भाग ही बेरंग हड्डी की तरह दीख पड़ रहा था।

## पाँच

गिरिबाला कुएँ की जगत पर उकड़ूँ बैठी थी, जबकि दुर्गा उस पर पानी ढाल रही थी। वह स्नान कर रही थी। ईंटों की जगत कहीं-कहीं से टूट रही थी और पुरानी होने के कारण उस पर से पलस्तर झड़ रहा था। वहाँ की बल्ली का रंग भी भूसरा पड़ गया था, जैसे कि वह घड़ियाल की खाल हो।

गिरिबाला मारकीन की शमीज पहने थी, जिसके गले के पास चुन्नट थीं। उसकी कमर पर पतले धागों से बुनी मेखला थी। गीले कपड़े उसके भरे शरीर से चिपक रहे थे और उसकी गोलाइयों को और नुमायां कर रहे थे। दुर्गा केवल अपने वक्ष के इर्द-गिर्द सूती मेखला बाँधे हुए थी।

कुएँ पर खड़े सत्र से आती कच्ची सड़क का एक भाग साफ़ दिख रहा था। दरअसल, दोनों महिलाएँ आपस में खिलवाड़ करती हुई, बारी-बारी से एक-दूसरे पर पानी ढालती हुई, नहा रही थीं। एकाएक उन्हें बच्चों की किलकारियाँ सुनाई पड़ीं। दुर्गा और गिरिबाला ने सड़क की ओर देखा। वहाँ कोई साइकिल पर आ रहा था। उसकी पोशाक बिलकुल सफ़ेद थी। उसके सर पर एक पुरानी फ़ेल्ट हैट थी। वह बिलकुल सारस की तरह दिख रहा था। बच्चे साइकिल के पीछे दौड़ रहे थे और ज़ोर-ज़ोर से कह रहे थे, "संन्यासी साहिब! संन्यासी साहिब! हमारी मिठाइयाँ कहाँ हैं? हमें मिठाई चाहिए।"

दोनों महिलाएँ अपने पंजों के बल खड़ी हो गयीं और गर्दन आगे बढ़ाकर यह देखने की कोशिश करने लगीं कि सड़क पर हो क्या रहा है। उन्होंने देखा कि साइकिल पर एक बहुत बड़ा अजीब-सा गट्ठर है, और साइकल वाला व्यक्ति चारों ओर देखता हुआ हर किसी पर मुस्करा रहा है।

गिरिबाला एकाएक कह उठी, "कौन है यह? कौन हो सकता है यह व्यक्ति?"

"वह मार्क साहिब है। वह फिर आया है। शायद वह दूसरे सरकारी काग़ज़ों के साथ-साथ कमिश्नर साहिब से पत्र भी लाया है।"

गिरिबाला की उत्सुकता बढ़ी। "ये कैसे काग़ज़ हैं? वह उन्हें क्यों लाया है?"

"वह हमारे सत्र का इतिहास लिखना चाहता है। वह पुरानी पाण्डुलिपियाँ इकट्ठी कर रहा है। जानती हो? साँची के पत्तों पर लिखी हुई? वह घर-घर जाता है और मुफ्त दवाइयाँ बाँटता है। वह अफ़ीमचियों के यहाँ भी जाता है और उन्हें अफ़ीम की बुराइयों पर भाषण देता है। पिछले वर्ष मैंने उसे एक पुरानी असमिया पाण्डुलिपि व्यास आश्रम[2] पढ़कर सुनायी थी, और उसने उसे अंग्रेजी में उतार लिया था।"

गिरिबाला दंग रह गयी। "तुमने पाण्डुलिपि पढ़ी थी?"

"हाँ, वह छपाई में तो असमिया पढ़ सकता है, लेकिन पुरातन हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ नहीं पढ़ पाता। जिस तरह रुकते-रुकते और एक अन्धे व्यक्ति की तरह टटोलते हुए उसने पढ़ना शुरू किया था, उससे मुझे उस पर दया आयी थी। फिर वह बड़ी मेहनत से उस सामग्री को अपनी भाषा में उतारने लगा। उस समय वह पसीने से तर था और पसीने की बूँदें काग़ज़ पर गिर रही थीं।"

मार्क अब अपनी साइकिल के साथ पहले बातघर के निकट आया और फिर सहन में आ गया। बच्चे उसके पीछे-पीछे चल रहे थे और कुछ-न-कुछ बोले जा रहे थे। उधर पुरानी साइकिल और उसकी घण्टी अपनी तरह की आवाज़ें कर रही थीं। दुर्गा और गिरिबाला नहाने के उस स्थल से पिछले दरवाज़े की राह खुले आँगन को पार करती हुई अपने कमरे में जा पहुँचीं। उन्होंने अपने गीले कपड़ों को कसकर पकड़ रखा था। थोड़ी देर बाद वे दोनों ढंग के कपड़े पहने बाहर बरामदे में आ गयीं।

गोसाइन, इन्द्रनाथ और शम्भू अमीन भी बाहर आ गये थे। उन्होंने मार्क साहिब का अभिवादन किया और उसे बैठने के लिए एक लकड़ी की कुर्सी दी··· अचानक दुर्गा ने चिल्लाना शुरू कर दिया। दरअसल हुआ यह था कि मार्क साहिब का साया उसके शरीर पर पड़ रहा था और इससे वह घबरा उठी थी। एक फिरंगी का साया एक गोसाईं विधवा पर पड़े! वह तुरन्त फिर कुएँ की ओर दौड़ी और दूसरी बार नहाने की तैयारी करने लगी।

मार्क महोदय सम्मानपूर्वक गोसाइन के सामने झुके और अपनी टूटी-फूटी असमिया में बोले, "मेरा ख़याल है इस बार यहाँ ज़्यादा दिन टिकना होगा। अगर आप मुझे हाथियों की चरागाह में एक झोंपड़ी दे दें तो मेरा काम चल जायेगा।"

उन्होंने अपनी जेब से कुछ सिक्के निकाले और उन्हें गोसाइन के पाँवों के नज़दीक रखकर उसका फिर अभिवादन किया।

गोसाइन ने अपने माथे पर अपनी चादर खींच ली और बोली, "जब तक आपका मन है, आप रहिए। हमारे लोग सीधे-सादे देहाती हैं। वे आपके मीठे वचन सुनकर खुश होंगे।"

इस पर इन्द्रनाथ भी बोल पड़ा, "इस बार वहाँ आपकी मदद के लिए भी आपको कोई मिल जायेगा। एक लड़की है।"

"कौन?"

इन्द्रनाथ ने गिरिबाला की ओर इशारा करते हुए कहा, "यह।"

गिरिबाला और मार्क ने एक-दूसरे की ओर देखा। मार्क की आँखें उसके काले, घने बालों पर टिक गयीं जो स्नान के बाद अभी गीले ही थे और उसके कन्धों पर लहरा रहे थे। साथ ही उसका सद्यस्नात शरीर लेटेकू[3] की कली के समान चमक रहा था। मार्क ने अपनी आँखें झुका लीं।

इन्द्रनाथ बोला, "मैं इसे स्कूल में दाखिल करवाने के बारे में सोच रहा था, लेकिन ··· मेरे माता-पिता मेरे ख़यालों के नहीं हैं। हम गोसाइयों के घरानों से लड़कियाँ अब भी आम लोगों के बीच नहीं जातीं, स्कूल जाने की बात तो दूर रही। और इसके पति का अभी कुछ ही महीने पहले देहान्त हुआ है। अब इसके पास समय ही समय है।"

मार्क ने लड़की की तरफ़ फिर देखा। लड़की की आँखें सूखी और ख़ाली-ख़ाली थीं, जैसे कि किसी सूखे हुए भोल[4] की खाल हो।

उसी समय गोसाइन घर के भीतर मेहमान के लिए चाय बनाने चली गयी। इन्द्रनाथ ने अपनी बात कहना जारी रखा, "पिछली बार जब आप यहाँ आये थे तो आपने मुझे बताया था कि आप गिलमन साहिब द्वारा छोड़े गये कागज़ात का अध्ययन करना चाहेंगे।"

"हाँ, हाँ! मैं उस जर्मन व्यक्ति की जीवनी लिखना चाहता हूँ और वह इच्छा अब भी मुझमें काफ़ी बलवती है। इस उद्देश्य से मुझे राभा आदिवासी गाँवों में भी कुछ समय के लिए रहना पड़ेगा।"

"यह तो बढ़िया बात है। आप जानते हैं कि गिलमन साहिब ने, जिन्हें यहाँ के लोग गिलमिल साहिब कहते हैं, यहाँ दूसरी बार शादी की थी और वह लड़की राभा[5] गाँव की थी? बेचारी! वह उनके आखिरी दिनों तक उनकी पूरे मन से सेवा करती रही।"

"हाँ, मैंने यह सब सुन रखा है। मैंने यह भी सुना है कि उसने भी कोई कोर-कसर उठा न रखी और उन पिछड़े आदिवासियों के लिए बहुत काम किया।"

बरामदे के एक कोने में गंजी टांट वाला शम्भू अमीन बैठा था। वह एक थुलथुल व्यक्ति था, जिसका पेट बढ़कर आगे आ रहा था। वह अपनी सफ़ेद साफ़ धोती के ऊपर एक पुरानी सदरी पहने हुए था। धोती उसके घुटनों तक ही पहुँच पा रही थी। उसके पास ही एक फटा-पुराना छाता रखा था। वह भी अब इस बातचीत में शामिल हो गया।

"मुझे नहीं पता कि साहिब को इस बारे में जानकारी है या नहीं। गिलमिल साहिब को फौज़दारी के मामले निपटाने का भी अधिकार था। यह अधिकार उन्हें कमिश्नर साहब ने विशेष रूप से सौंपा था। वह किसी पर हमला करने वाले या मारपीट करने वाले के लिए छः महीने तक की क़ैद सुना सकते थे··· जब उस स्त्री का देहान्त

हो गया तो उन्हें गद्दे के अन्दर छिपायी गयी कुछ रकम मिली। वह रकम उसने गिलमिल साहिब को बताये बग़ैर अपने बुरे दिनों या संकट काल के लिए बचा छोड़ी थी···।"

"गद्दे के भीतर पैसा?" बरामदे में उपस्थित सभी लोग एकाएक कह उठे।

"हाँ, हाँ! यह रकम ज़्यादातर नोटों में थी, जिन्हें गद्दे के भीतर सी दिया गया था। लोगों का कहना है कि वह रकम उसने साहिब के इलाज़ के लिए जमा की थी। साहिब को कोई पुराना रोग था।"

हर कोई यह बात सुनकर हँसने लगा, यहाँ तक कि मार्क महोदय भी मुस्करा दिये।

गिरिबाला मार्क को बड़े ग़ौर से देख रही थी। उसे वह बहुत सुन्दर लगा। उसकी आँखें उसे उन पनियल फूलों की याद दिला रही थीं जो बरसात के दिनों में हर कहीं खिल उठते हैं। उसके सर पर घने घुँघराले शहद के रंग के बाल थे। उसका रंग एक आम ब्रिटिश नागरिक का-सा नहीं था। खुली धूप में जगह-जगह भटकने के कारण वह यजमानी ब्राह्मणों का-सा हो रहा था।

फिर वहाँ एक बँधुआ आया। उसके हाथ में सुपारी कूटने के लिए लकड़ी का हावनदस्ता था। इसके अलावा उसके पास एक सराय (थाली) भी थी, जिसमें सुपारियाँ, पान के पत्ते और एक छोटे से पीतल के बर्तन में गीला चूना था। उसने वे सब चीज़ें मोटे अमीन के सामने रख दीं। अमीन उस समय अपने गमछे से अपने चेहरे के पास मँडराती मक्खियों को उड़ा रहा था। उसने हावन को उचित अनुपात में अलग-अलग पदार्थों से भर लिया और फिर उन्हें दस्ते से कूटने लगा। जैसे-जैसे वह दस्ता चलाता, गारो की पहाड़ियों से लाये गये कोमल पान के पत्तों में छिपी सुगन्ध बाहर आती और वहाँ हवा में फैल जाती।

अमीन कहने लगा, "साहिब, सुनिए! मैं आपको एक मज़ेदार कहानी सुनाने जा रहा हूँ। एक मौजेदार था मोनजोई चौधरी। वह अच्छा शिकारी था। उसके पास पीतल की एक शानदार बन्दूक़ थी। कुछ लोगों का कहना है कि उसके पुरखों ने उसे ईस्ट इण्डिया कम्पनी से ख़रीदा था, जबकि कुछ औरों का कहना था कि उसके पुरखों ने उसे मालपाड़ा के फ्रांसीसी व्यापारियों से खरीदा था और ये व्यापारी पिछले सौ वर्ष से नमक का व्यापार कर रहे थे। एक दिन वह एक हाथी पर सवार होकर मिर्ज़ा के जंगलों में घुस गया और उसने एक मोटे-ताज़े जंगली सुअर पर गोली चला दी···।"

उसने अब हावन में से अपने हाथ से कुटी हुई सामग्री बाहर निकाली और उसे फाँक गया। वह उसे मज़े ले-लेकर चबाता रहा और फिर बोला, "कुछ अजब इत्तिफाक था। जब मोनजोई चौधरी ने गोली चलायी तो दूसरी तरफ़ से भी गोली की तेज़ आवाज़ आयी। एक पूर्व की ओर से, दूसरी पश्चिम की ओर से। जैसे कि दोनों गोलियों का निशाना एक ही था। मौजेदार जंगल में और भीतर चला गया। वहाँ उसे

वह मृत जीव मिला। उसके बाहर के दाँत एक बाँस की झाड़ी के निकट ज़मीन में गड़े हुए थे। उसके सर से खून की दो धाराएँ बह रही थीं। और यह खून गंदले पीले रंग का था, जैसे किसी पुराने छप्पर का रंग हो। शरीर पर मांस बहुत था। मोनजोई चौधरी वहीं खड़ा हो गया और उसने निश्चय किया कि वह लाश को पास के भोला गाँव में ले जायेगा और मांस को गाँव वालों के बीच बाँट देगा··· फिर उसके मन में एक और विचार आया कि इस मुर्दा सुअर को वह घासफूस से छिपा दे···। लेकिन ठीक उसी समय उसे जंगल की एक पगडण्डी पर जूतों की भारी थाप सुनाई दी। उसके सामने एक मानव आकृति उभरी। मौजेदार हैरान रह गया। वह आकृति जर्मन, तारा, खगरी और कँटीली कुटुहा नाम की झाड़ियों से प्रकट हुई थी। एक विचित्र दृश्य था। उसके सामने जो व्यक्ति खड़ा था, वह छोटे कद का था, अजब-सी शक्ल वाला, पुरानी, खाकी रंग की सैनिक वर्दी में। उसका रंग झाग वाले दूध के समान था। उसकी एक आँख ग़ायब थी। मौनजोई चौधरी के काटो तो खून नहीं। वह समझ गया कि यह घुसपैठिया और कोई नहीं गिलमन ही है, यह बूढ़ा जर्मनी-निवासी जो पास के बोरदोआ चायबागान से आया है।

"टूटी-फूटी असमिया में वह बोला—यह सुअर मैंने मारा है।

"चौधरी चीख़ पड़ा—कैसे कहते हो कि तुमने सुअर को मारा है?—उसने अपनी बन्दूक़ को जुम्बिश दी और फिर चिल्लाया—देखते हो यह बन्दूक़? यह तीस फुट तक मार करती है, और जहाँ से मैंने गोली चलायी थी, वह जगह ठीक तीस फुट के अन्दर थी। सुअर को मैंने मारा है। समझे।

"दूसरा व्यक्ति जो सफ़ेद बन्दर की तरह दिखता था, खी-खी करके हँस पड़ा और अपने कन्धे पर से बन्दूक़ हटाकर प्रतिकार करता-सा बोला—इस बन्दूक़ को देखते हो? यह एनफील्ड 303 है। यह मेरे बेटे अलेक्ज़ेण्डर की है जिसने युद्ध में अपनी जान दे दी। मैं वहाँ था, उस पेड़ पर, जब मैंने इस जंगली सुअर को मार गिराया।

"वे दोनों लाश के निकट गये और उसके घाव का निरीक्षण करने लगे। उन्हें यह देखकर ज़बरदस्त हैरानी हुई कि दोनों गोलियाँ ठीक एक ही जगह पर लगी थीं। उन दोनों के मुँह से एक साथ निकला—ठीक उसी जगह! कैसा अजब इत्तिफाक है!

"अब गिलमन ने विजयोल्लास में कहा—पहले मैंने मारा। मेरी ही गोली से यह मरा है।

"मौज़ेदार की प्रतिक्रिया भी तीव्र थी। वह चीख़ता-सा बोला—क्या बकवास करते हो? मेरी गोली इसे पहले लगी। मैंने इसे मारा?

"कुछ देर तक वे ऐसे ही झगड़ते रहे। फिर बात मारपीट तक आ गयी। चौधरी ने गिलमन साहिब के गालों पर ज़ोर से चार थप्पड़ जड़ दिये।"

जो लोग शम्भू अमीन को सुन रहे थे, वे एक साथ बोल उठे, "क्या! चार थप्पड़। एक गोरे साहिब को? बाप रे बाप!"

"साहिब बड़े गुस्से में था। वह सड़क के चौराहे की ओर दौड़ा। वहाँ वह अपने हाथी पर सवार हो गया और ज़िला मजिस्ट्रेट से मुलाकात करने सीधा गुवाहाटी की ओर चल पड़ा। इस जर्मन व्यक्ति के साथ मजिस्ट्रेट के सम्बन्ध काफ़ी अच्छे थे। उसने इसे सलाह दी—मेरे दोस्त! तुम्हें हमने आक्रमण के मामलों, मारपीट के मामलों और छोटे अपराधों के मामलों में मुकदमा चलाने का अधिकार दे रखा है। अपने इस मामले में तुम खुद ही अपना फ़ैसला सुना सकते थे। लेकिन एक बात का ख़याल रखो। अगर तुम बन्दूक़ चलाते हो तो तुम्हें सिर्फ़ एक ही गोली दागने की इजाज़त है। यह हमेशा याद रखना।

"गिलमन साहिब अपने हाथी पर फिर सवार हुआ और जल्दी-से-जल्दी मिर्ज़ा के चौराहे पर जा पहुँचा। वहाँ पहुँचकर उसने बड़े रौब से मोनजोई चौधरी के आदमियों को पुकारा और घोषणा की—मैं गुवाहाटी से तुम्हारे चौधरी के सीने को एक ही गोली से चाक करने का हुक्मनामा लेकर आया हूँ। बस, एक ही गोली से उस हरामी का काम तमाम कर दूँगा।"

"मौज़ेदार के सभी आदमी गिलमन साहिब के पाँवों पर गिर पड़े। वे बेहद डर गये थे। वे उस जर्मन व्यक्ति के फ़ौजदारी के मामलों के अधिकारों को अच्छी तरह जानते थे। उन्होंने उसके आगे हाथ जोड़े और चौधरी की ज़िन्दगी बख्श देने के लिए मिन्नत की। मोनजोई चौधरी का एक आदमी बहुत होशियार और चालाक था। वह पतला-दुबला और लम्बा होने के साथ-साथ काले रंग का था। कुछ देर तक वह अपना सर खुजलाता रहा और फिर बोला—साहिब! आप दक्षिणी तट के अव्वल दर्जे के शिकारी हैं। चौधरी साहब भी बढ़िया शिकारी हैं, यहाँ तक कि वह एक गोली से दो शेर चित्त कर सकते हैं। अब हमारे लिए बढ़िया मौका है कि हम देखें आप दोनों में से कौन बड़ा निशानेबाज़ है।

"गिलमन एकदम अचम्भे में आ गया और ज़ोर से बोला—क्या बकवास कर रहे हो! कैसा मौक़ा?

"उस दुबले-पतले आदमी ने फिर कहा—बारीहाट के हर हफ्ते लगने वाले बाज़ार के दिन जब शाम हो जायेगी, चौधरी साहिब अपने सफ़ेद घोड़े पर एक ही छलाँग में समूचा बाज़ार पार कर जायेंगे। तब साहिब, आप एक ही गोली से उसे खत्म कर देना।

"गिलमन साहिब और चौधरी, दोनों ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

"आख़िर बारीहाट के बाज़ार वाला दिन आ ही गया। बाज़ार लोगों से खचाखच भरा था। हर कोई एक आँख वाले जर्मन और बेबाक चौधरी के बीच मुक़ाबला देखने को उत्सुक हो रहा था। ये सब लोग अलग-अलग जगहों से आये थे—जैसे तालुआपाड़ा, मेहीपाड़ा, राजाबाहा, झारोबाड़ी, खटियामारी इत्यादि। ऐसे लग रहा था जैसे कि कोई बहुत बड़ा उत्सव हो।

"जब सूरज पश्चिम में डूबने को हुआ तो इन्तज़ार की घड़ी आ पहुँची··· डूबते सूरज को देखकर ऐसे लगता था मानो वह हाथियों के बाड़े में गिर पड़ा हो और उसी दिशा से चौधरी अपने सफ़ेद घोड़े पर सवार, धुएँ और धूल से अटी पड़ी संध्या को गर्जना के साथ चीरता, देखा जा सकता था। ···गिलमन साहिब भी तैयार-बर-तैयार था। उसकी बन्दूक़ तनी हुई थी और वह निशाना साधे बैठा था··· दर्शकों की भीड़ एक-दूसरे को धकियाती हुई बड़ी उत्तेजना में कह रही थी—देखो! देखो, वहाँ! वह एक आँख वाला साहिब चौधरी को गोली मारकर गिरायेगा। ···वह रहा साहिब! धिक्कार है उस पर! अच्छा हो आसमान ही उस पर गिर पड़े। ···वह देखो, चौधरी साहिब को। सर पर सफ़ेद पगड़ी, कन्धों पर सफ़ेद चादर, और बदन पर सफ़ेद पंजाबी··· वह रहा! कैसी रफ्तार से जा रहा है! ···वह आ रहा है! ···वह आया! ···वह गया!— ···बहुत तेज़ रफ्तार थी उसकी! ···वह बच निकला···।"

"लेकिन इसके साथ-साथ वहाँ चीख़-ओ-पुकार भी होने लगी। गिलमन साहिब की बन्दूक़ से जबर्दस्त धमाका हुआ था, जैसे कि कहीं बहुत बड़ा विस्फोट हुआ हो। किसी को पता नहीं था कि बारीहाट सड़क पर चौधरी और उसका घोड़ा कहाँ ग़ायब हो गये।"

वे सब लोग, जो अमीन को घेरे बैठे थे, एकाएक बोल उठे, "बेचारा चौधरी! मारा ही गया!"

अमीन ने उन तमतमाये चेहरों की ओर देखा, अपने गमछे से मक्खियों को उड़ाया और अपनी बात कहता रहा, "अरे! तुम लोगों ने कुछ समझा ही नहीं।"

वे फिर चिल्लाये, "तो हुआ क्या?"

"मैं तुम्हें बताता हूँ। वह तो केवल केले का तना था और उसके साथ फूस का एक गट्ठर और सन का एक गुच्छा था··· उन सबको इकट्ठा रखकर बड़ी होशियारी से उन पर चौधरी के कपड़े ओढ़ा दिये गये थे और वह एक घोड़े पर रख दिया गया। घोड़े को पूरी तरह सधाया गया था··· तो यह था मोनजोई चौधरी जिसे हर किसी ने उस शाम हाट में देखा था।"

सब लोग ठहाका मारकर हँस पड़े, और बोले, "सच कह रहे हो, मक्कार अमीन?"

"हाँ, बिलकुल सच! उस दुबले-पतले नौजवान ने, जो लोमड़ी की तरह चालाक था, जर्मन साहिब को खूब उल्लू बनाया। पुतले को घोड़े पर इतनी मज़बूती से बाँधा गया था कि उसकी पगड़ी तक नहीं हिली, उसके गिरने का तो सवाल ही नहीं उठता था। गिलमिल की गोली उस पुतले के पेट को चीरती हुई हाट के पीछे वाले अंजीर के पेड़ में जा धँसी। जानते हो लोग उस जर्मन को लेकर कौन-सा गाना गाते हैं? नहीं? तब सुनो···

"काना गिलमिल।

काना गिलमिल
चौधरी बन गया
पुलिस का दोस्त।"

फिर एक बार ज़ोर का ठहाका लगा। बल्कि मार्क के चेहरे पर भी हल्की-सी मुस्कराहट आ गयी। वह बोला, "यह सब उस भीषण भूकम्प से पहले घटा था। है न?"

शम्भू अमीन ने अपनी रज़ामन्दी दिखाते हुए अपना सर हिला दिया।

"हाँ, हाँ," वह बोला, "यह वह समय था जब फ्रांसीसी सौदागर अपने नमक के बोरों के साथ ग्वालपाड़ा आये थे और जब हमारे शान्तदेव महाप्रभु सत्र को गरैमारी से यहाँ ले आये थे और उस समय के इष्ट गोपीनाथ की बड़ी सज-धज के साथ स्थापना की गयी थी। लेकिन गरैमारी में पक्की चट्टान को काटकर बनायी गयी सीढ़ियों को वह भूकम्प निगल गया था। और तो और, कान्यकुब्ज के ब्राह्मण दक्षिणी तट की ओर चले आये थे, क्योंकि यहाँ अच्छी खेतीबाड़ी होने की सम्भावना थी और वे यहाँ की उपजाऊ भूमि पर बस गये थे।"

इन्द्रनाथ अब तक चुपचाप बैठा अमीन की बातों का रस ले रहा था। वह बोला, "जहाँ तक मैं जानता हूँ, गिलमन का 1925 में बरदोवा में देहान्त हो गया था। मैंने यह कहानी पहले भी सुनी है। लेकिन अन्त में जब गिलमन को उसके साथ हुए धोखे की असलियत का पता चला तो उसे इसमें रस आया और एक बढ़िया खिलाड़ी की तरह वह चौधरी के पास गया और उससे एक दोस्त की तरह हाथ मिलाया।"

इसी बीच गोसाइन भीतर के कमरे से बाहर आयी। वह अपने वक्ष को लाल मेखला से बाँधे हुए थी और उसके सर पर एक पुरानी चादर थी। उसने अपनी ज़िन्दगी में कभी न ब्लाउज़ पहना था, न जूते। वह गोरे रंग की, एक पतली-दुबली बूढ़ी महिला थी। उसके होंठ लगातार तम्बाकू पीने के कारण काले हो गये थे। दुर्गा उसके पीछे-पीछे आ रही थी। वह एक तश्तरी लिये हुए थी। तश्तरी में विभिन्न शक्लों के पीतल के प्याले और गिलास थे। उसने वह तश्तरी फ़र्श पर रख दी। मार्क के साये से बचते हुए उसने उसके निकट एक चौड़े मुँह का गिलास भी रख दिया। मार्क ने उसे देखकर गोसाइन से मज़ाक में कहा, "मेरा अनुमान है आपने वे बर्तन, जिन्हें मैंने पिछली बार इस्तेमाल किया था, अलग से रख दिये होंगे। आख़िर हम म्लेच्छ ही तो ठहरे। हैं न?"

अब हर कोई ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा। लेकिन गोसाइन ने ऐसा दिखावा किया जैसे कि उसने कुछ सुना ही न हो, और बोली, "मेरे पास भुने चावल, दही और गुड़ का ताज़ा शरबत है। क्या आप अभी कुछ लेना चाहेंगे? गोसाईं खड़ाऊँ कक्ष में पूजा कर रहे हैं। क्या उनका इन्तज़ार करना चाहेंगे?"

मार्क ने सहमति दिखाते हुए अपना सर हिला दिया। थोड़ी देर बाद सब एक-एक करके चले गये, लेकिन गिरिबाला वहीं खड़ी रही, लकड़ी के एक ख़म्भे की

टेक लिये हुए। उसके बाल अब भी गीले थे। वह मोटे सूती कपड़े की शमीज़ पहने हुए थी जिसके गले पर अजब तरह के बल दिये गये थे। वह महीन बुनाई वाला एक गताला भी पहने हुए थी जो उसके सुघड़ वक्ष को ढाँपे हुए था।

मार्क ने अपनी आँखें उठाकर उसकी ओर देखा। उसके ताज़गी-भरे सौन्दर्य ने उसके भीतर हिलोरें पैदा कर दीं जिससे उसकी आँखें तुरन्त झुक गयीं। वह उसके जवानी में विधवा हो जाने के बारे में सोच रहा था, जिसके परिणामस्वरूप उसे अपने दिल में एक हलका-सा दर्द भी महसूस हुआ।

वह बोला, "तो कल से मैं तुम्हारा छात्र हूँ। मैंने दक्षिणी तट से कई पाण्डुलिपियाँ इकट्ठी की हैं। ईश्वर ही जानता है मैं उन्हें प्रकाशन के लिए कब अन्तिम रूप दे पाऊँगा। मुझे उम्मीद है तुम मेरी मदद करोगी।"

गिरिबाला ने कोई जवाब नहीं दिया। कुएँ के निकट अंजीर के पेड़ से एक उल्लू की केवल अजीब-सी आवाज़ आयी—उलू-लू-लू···। फिर उन्हें खड़ाऊँ कक्ष से गोसाइन के आने की पदचाप सुनाई दी।

## छः

विधवा गोसाइन, जो इस सत्र में नितान्त अकेली रहती है, दरअसल पातहल्दिया नाम की एक जगह की रहने वाली है। उसकी शादी इस सत्र के गोसाईं से हुई थी जो कम उम्र में ही चल बसा। उसके अनुयायी विभिन्न जगहों पर फैले हुए हैं, जैसे गोरल, बमुण्डी, मझकुची इत्यादि।

यह गोसाइन देखने में बहुत ही सुन्दर है। यह इतनी गोरी-चिट्टी है कि अँधियारी से अँधियारी रात में भी ढूँढ़ने वाले की आँखें उसे ढूँढ निकालें। वह हाथी दाँत की प्रतिमा की तरह दिखाई देती है। उसका रंग उन गोरे सैनिकों से मिलता-जुलता है जिन्होंने दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान यहाँ पास ही में डेरा डाला था।

दोल[1] उत्सव के दौरान जगन्नाथपुरी के मन्दिर के कुछ पण्डे ऐसी ब्राह्मण-विधवाओं की तलाश में आते थे जो भगवान् जगन्नाथ के दर्शन करना चाहती थीं। अपने सत्र से गोसाइन ही एक ऐसी विधवा थी जो उन पण्डों के साथ गयी थी और एक लम्बे समय तक जगन्नाथपुरी में रही थी।

दिसम्बर का महीना जब आता है तो बगोरी[2] के फल पककर मूंगा रेशम का रंग धारण कर लेते हैं। पिछले कई वर्षों से इस समय सत्र के लोग पातहल्दिया से आने वाली धान की बोरियों से लदी बैलगाड़ी की आवाज़ सुना करते हैं।

लेकिन इधर दो-तीन वर्षों से उनका आना अनिश्चित हो गया है। जब इस गोसाइन का पति ज़िन्दा था तो धान की बोरियों को ढंग से जमाया जाता था और

उनका मुस्तैदी से हिसाब-किताब रखा जाता था। तब गोसाइन को आमतौर पर समय बीतने का पता नहीं रहता था। लेकिन जब वह बगोरी के पेड़ों में चमगादड़ों की आवाज़ सुनती तो वह भी अपने कान साधकर पातहल्दिया से आने वाली बैलगाड़ियों की आवाज़ पकड़ने की कोशिश करती। पर अब उसके पति के देहान्त के बाद उसका ध्यान भी इस बात की ओर गया था कि धान से लदी बैलगाड़ियाँ नियमित रूप से नहीं आ रहीं। हेरामदो के यजमानी ब्राह्मण, महीधर बापू, ने उसे आगाह किया था कि इधर पातहल्दिया के आसपास कुछ अजब तरह के लोग अपने हाथों में लाल झण्डे लिये घूमते रहते हैं। वे एक खेत से दूसरे खेत पर पहुँचते हैं और बैठकें बुलाते हैं।

छोटी गोसाइन अपने घर के बातघर की ओर गयी और अधिकार के बातघर की दिशा में देखने लगी। दरअसल, इस समय दुर्गा उससे गपशप करने चली आती थी, लेकिन अब तो उसका कहीं नामोनिशान तक न था। क्या उसका अपनी ननद, बड़ी गोसाइन से फिर झगड़ा हो गया है? लेकिन जब वह बड़ी गोसाइन से भिड़ पड़ी थी तो उसके उत्तेजना-भरे शब्द उसके यहाँ भी साफ़-साफ़ सुने जा सकते थे। पर आज तो एकदम सन्नाटा था। कई बार वह वहाँ से अपने अस्त-व्यस्त कपड़ों के साथ भी दौड़ी चली आती थी। तब वह बातघर के भीतर खड़ी हो जाती और कुछ-न-कुछ बके जाती। लेकिन बातघर से वह आगे नहीं बढ़ती थी। अलबत्ता, उसके शब्द-प्रवाह में एक शब्द अक्सर साफ़-साफ़ सुनने को मिलता और वह शब्द था—'देवर'। वह कहती, "क्या मेरी ससुराल वाले मुझे इस नरक में ही रखे रहेंगे? ज़रूर वे मेरे सबसे छोटे देवर को मुझे लिवाने भेजेंगे। तुम देखती रहना।"

और ऐसे ही चलता रहा। छोटी गोसाइन बराबर देख रही थी कि चिकारहाटी से उसे कोई लेने नहीं आया था। वह अब चाह रही थी कि दुर्गा उसके यहाँ तुरन्त चली आये। उसे उससे बात करना और गप्पें लड़ाना अच्छा लगता था। वह उसे समझती भी थी और उसके प्रति हमदर्दी भी रखती थी। अब क्योंकि गिरिबाला भी परिवार में वापस आ गयी थी, इसलिए दुर्गा की खीझ और आक्रोश और बढ़ गये थे।

उसने बड़े गोसाईं के घर की ओर एक बार फिर बड़ी उम्मीदभरी निगाहों से देखा। लेकिन नहीं, वहाँ दुर्गा तो क्या, किसी और का भी नामोनिशान न था··· अब उसका मन गिरिबाला की ओर चला गया। कितनी सुन्दर बालिका थी वह! जब उसे मासिक स्राव होता तो वह गिरिबाला को ही बुलाती। वह बालिका अपने कपड़े उतारकर, नंगी हो, रसोईघर की ओर दौड़ पड़ती और उसका दोपहर का खाना ले आती। कितनी नन्ही-सी थी वह! और अब वह विधवा बनकर लौट आयी है। कैसी भयंकर दुनिया है यह! उसकी आँखें आँसुओं से भर गयीं।

एकाएक किसी की आवाज़ सुनकर वह चौंकी, "माँ, हमें बारीहाट से तेल मँगवाना होगा।"

छोटी गोसाइन ने अपने वक्ष के इर्द-गिर्द लपेटी हुई मेखला को ठीक किया और अपने गताले को भी अपने कंधों पर ठीक से ओढ़ लिया। उसके कोमल, गौरवर्ण वाले शरीर पर यहाँ-वहाँ दो-तीन नसें कँपकँपायीं। आवाज़ महीधर बापू की थी।

वह पिछले कुछ समय से देख रही थी कि जब कभी वह उसके निकट आता हे, उसके शरीर के भीतर से आवेग की एक लहर-सी गुज़र आती है। वह मुड़ी और उसने देखा कि महीधर वही धोती पहने हुए है जो वह उसके लिए तब लायी थी जब वह अपने अनुयायियों से मिलने पातहल्दिया गयी थी।

महीधर अपने कन्धों के इर्द-गिर्द एक साफ़-सुथरी चादर लपेटे हुए था। दरअसल, महीधर एक सुन्दर पुरुष है जिसके सर पर घने बाल हैं और नाक एकदम सीधी है। उसकी आँखें भी एकदम चमचमाती हैं। यह चमचमाहट उसके भीतर से आती है, जैसे कि भीतर के दीये के प्रकाश में कोई लाल रंग की दीवार चमचमाती हो। अभी पिछले दिन ही तो दुर्गा ने उससे कहा था कि लोग उसे और महीधर को लेकर हेरामदो तथा मेधीपाड़ा तक में बातें करते हैं। वे आपस में चैमेगोइयाँ करते हैं कि 'बापू' उसके संध्या के स्नान के लिए खुद कुएँ से पानी लेकर आता है और रात के वक़्त जब वह शौच के लिए बाहर जाती है तो वह उसे लालटेन दिखाता है।

दुर्गा के मुँह से तब एकाएक निकला था, "छोटी गोसाइन, तुम वाकई बहुत बहादुर हो। इससे पहले कभी किसी दामोदरिया गोसाइन ने विधवा होने के बाद अकेले रहने की हिम्मत नहीं की। हर कोई जानता है कि यहाँ खूँख्वार भेड़िये आते हैं और रात के समय तुम्हारे बरामदे में बैठे रहते हैं।"

महीधर अभी वहीं था। उसके हाथ में एक ख़ाली बोतल थी। गोसाइन बोली, "इसका मतलब है कि तेल बिलकुल नहीं है।"

"नहीं! आपके यहाँ जब नये विवाहित जोड़े आपसे आशीर्वाद लेने आते हैं, तो आपके ख़याल में वे कितना तेल लेकर आते हैं? अभी उस दिन की तो बात है। महाजन का बेटा और बहू यहाँ आये थे न! जानती हैं कितनी कंजूसी दिखायी थी उन्होंने?"

"हाँ, हाँ, तुम ठीक कहते हो। बोतल गरदन तक भी नहीं भरी थी। अब गोल सिक्के तो बिलकुल ग़ायब ही हो गये हैं। थगी[3] को सजाने के लिए आजकल सजावटी तांबे के सिक्के काम में लाये जाते हैं।" यह कहकर गोसाइन भीतर अँधेरे कमरे में चली गयी जहाँ उसका पलंग बिछा था। वहाँ एक लकड़ी का खम्भा भी था जिस पर रस्सी से बाँस की टोकरी बँधी थी। उसमें कुछ पैसे पड़े थे। उसने वे पैसे निकाले। इस बीच महीधर दरवाज़े की दहलीज़ पर पहुँच गया था और वहीं खड़ा था। उसे छुए बगैर छोटी गोसाइन ने उसकी हथेली पर वे पैसे रख दिये।

पहले की तरह आज भी महीधर ने गोसाइन के लकड़ी के पलंग की ओर देखा। पलंग पर एंडी की फटी-पुरानी चादर बिछी थी। गोसाइन को कुछ ताज्जुब हुआ। वह आज भी उसकी नज़रों का अर्थ पकड़ नहीं पायी थी।

यह कमरा लगभग अँधियारा ही था। जहाँ पलस्तर झड़ गया था, वहाँ मद्धिम-सी रोशनी दीवार की झिर्रियों में से भीतर रास्ता पा जाती थी। वह पलस्तर सड़ते मांस का आभास देता था। वहाँ सरकण्डों की एक दीवार भी थी जिसके निचले हिस्से को देखने से मरी हुई गाय की लाश का एहसास होता था। अपने देहावसान से पहले गोसाईं के मन में यह विचार आया था कि कुछ ज़मीन बेच दी जाये और टीन की छत वाली एक इमारत खड़ी की जाये। लेकिन उसके चल बसने के बाद सब कुछ बदल गया। जीवन ही अँधियारा और अवसादपूर्ण हो गया। रंगमाटी के पुश्तैनी इलाके में कम्युनिस्ट घुस आये थे, और वहाँ घुसकर उन्होंने इस हद तक असामी काश्तकारों को प्रभावित किया था कि जब महीधर वहाँ लगान वसूल करने गया तो उन्होंने उसे भगा दिया और दूर तक उसका पीछा किया। वह वहाँ से बाल-बाल बचा था, पर उसे कोई चोट नहीं आयी थी।

छोटी गोसाइन अब उसे पीछे हटते हुए देख रही थी। उस पर एक प्रकार का भय छा गया था। उसका गला सूख गया था और लकड़ी के तख्ते की तरह कड़ा पड़ गया था। कुछ समय से अब यही अनचीह्ना भय उसका पीछा कर रहा था और धीरे-धीरे उसकी आत्मा को खाये जा रहा था। कौन जाने आने वाले दिन कैसे होंगे? अगर असामियों ने धान का हिस्सा देने से इनकार कर दिया तो वह क्या करेगी?··· अगर वे हिंसा पर उतर आये और महीधर की हड्डियाँ तोड़ दीं, तब वह क्या करेगी?··· सम्भव है एक दिन ऐसा भी आ जाये जब इस गोसाइन को, जो तीन-तीन सत्रों के गोसाईं परिवारों की मालकिन है और जिसके पास कभी असीमित भूमि थी, भुखमरी और मृत्यु का सामना करना पड़े। वह डाखला के गोसाईं की बेटी है। जब अमरंगा के तीन सत्र[4] गोसाईं को उसके बारे में पता चला था तो वह इस बात पर तुल गया था कि वह उसे अपनी बहू बनाकर रहेगा। अभी वह मुश्किल से पाँच या छह बरस की ही रही होगी कि अमरंगा गोसाईं ने डाखला के गोसाईं को जीतने के लिए उसके यहाँ एंडी कपड़ा, दही, धान तथा सरसों के तेल के मर्तबान इत्यादि भेंटस्वरूप भिजवाने शुरू कर दिये थे। जिस पालकी में वह बैठकर अपनी ससुराल आयी थी, उसके डण्डे बड़े शानदार थे और उन पर चाँदी मढ़ी थी। उसके गले में सोने की भारी डुगडुगी[5] और गलपट्टा[6] था। लेकिन दुर्भाग्य से उसे उस डुगडुगी से हाथ धोने पड़े थे क्योंकि पलासबाड़ी के एक बेईमान डॉक्टर ने उसके बीमार पति का इलाज करते समय उसे हथिया लिया था। यह डॉक्टर एक तो बहुत ऊँचे दाम माँगता था, और दूसरे अदायगी सोने के ज़ेवरों में चाहता था। इसके साथ ही वह इस बात पर भी ज़ोर देता था कि पलासबाड़ी से उसे दीदारुद्दीन की घोड़ा-गाड़ी में ले जाया जाये। उन दिनों यह अपनी तरह की ही घोड़ा-गाड़ी थी और इसका चालक एक मुसलमान था।

छोटी गोसाइन कमरे से बाहर आयी और दरवाज़े पर उसने कुण्डी चढ़ा दी। फिर उसने आकाश की ओर देखा। वहाँ काले, बरसाती बादल छाये हुए थे। उसे

अपनी चाय फौरन तैयार कर लेनी चाहिए, वरना एक बार बारिश शुरू हो गयी तो अध-टूटा रसोईघर पानी से भर जायेगा। यह भी अजब मुसीबत है! दूसरे, जैसे ही पानी पड़ेगा, वह भयंकर नाग जो अब काफ़ी समय से रसोईघर के पास ही दिखाई देता है, प्रकट हो जायेगा। एक दिन तो उसकी सूखी केंचुली उड़कर उसके दोपहर के भोजन में आ पड़ी थी।

वह फिर रसोईघर में गयी और वहाँ उसने सुलगती राख पर पड़े भूसी के ढेर को फुकनी से सुलगाना शुरू कर दिया। जल्दी ही वहाँ लपटें उठने लगीं। उसने आग पर पानी की एक कड़ाही रखी। यह कड़ाही उसे एक रिश्तेदार से मिली थी। वह रिश्तेदार मानपुर का रहने वाला था और उसने उसे मिर्ज़ा के एक हब्शी सैनिक से प्राप्त किया था। छोटी गोसाइन को यह पता नहीं था कि वह कड़ाही एक सैनिक शिविर से आयी है। कुछ ही दिन पहले जब वह बातघर पार करके कहीं जा रही थी तो उसकी भेंट कल्टू महावत से हो गयी। उसके हाथ में एक वैसी ही कड़ाही थी। जब उसने उससे उसके बारे में पूछताछ की तो वह यह सुनकर स्तब्ध रह गयी कि ये चीज़ें कभी फिरंगी सैनिकों की हुआ करती थीं। कल्टू ने तब विस्तार से बताया था कि उसने वह कड़ाही कैसे प्राप्त की। उसने बताया कि वह अपने हाथियों को नहालने के लिए नदी पर ले जाता था, जहाँ उसकी दोस्ती एक सैनिक अर्दली से हो गयी थी। वह अर्दली वहाँ हाथी के शरीर से जोंकें इकट्ठी करने के लिए एक बाल्टी के साथ आया करता था। इन जोंकों को वे सैनिक भूनकर बड़े चाव से खाते थे और साथ में रम के घूँट भी भरते रहते थे। उस अर्दली ने कल्टू को वह कड़ाही अपनी दोस्ती की याद में दी थी।

छोटी गोसाइन अपने इन्हीं ख़यालों में खोयी हुई थी कि दरवाज़े पर ज़ोर की खटखट हुई। कड़ाही में पानी बुरी तरह खौल रहा था। उसने कड़ाही आग पर से उतारी और पीछे की ओर देखने लगी। दरवाज़े के निकट दुर्गा खड़ी थी, बिना कंघी किये गये बालों के साथ। बल्कि उसके बाल बिखर रहे थे। उसका गताला भी अपनी जगह पर नहीं था। उसके वक्ष का ऊपरी भाग साफ़ दिख रहा था।

छोटी गोसाइन एकाएक बोल उठी, "अरे, क्या हुआ है तुम्हें? मैं तो दोपहर भर तुम्हारा इन्तज़ार करती रही…"

दुर्गा की आवाज़ रुँध रही थी। "तुमने सुना नहीं? गिरिबाला को साँप ने काट लिया है। गोसाईं अपने अनुयायियों के यहाँ है। इन्द्रनाथ भी यहाँ नहीं है। वह कम्युनिस्टों के खिलाफ कार्यवाई करने रंगमाटी गया हुआ है।"

छोटी गोसाइन एकाएक चिल्ला पड़ी, "साँप ने काट लिया है! हे ईश्वर!"

"वह क्यों नहीं काटेगा उसे? वह लड़की उस ईसाई की मदद करने के लिए गाँव-गाँव पाण्डुलिपियों की तलाश में घूमती रहती है। उसने कोई गाँव नहीं छोड़ा। तल्लापाड़ा के यजमानी ब्राह्मण की ढेकी में जब वह पाण्डुलिपियों की तलाश में एक

मयानी पर चढ़ी तो वहाँ एक दुष्ट सांप ने उसे काट लिया। वे लोग बार-बार उससे कह रहे थे कि वह उस पर न चढ़े। लेकिन वह लड़की! क्या वह किसी की सुनती है!"

"किस तरह का साँप था वह? ज़हरीला था?"

"कैसे पता चलता? वह एकाएक ग़ायब हो गया··· बड़ी गोसाइन ने तुम्हें बुला भेजा है। चलो मेरे साथ।"

छोटी गोसाइन ने दहकते अँगारों पर थोड़ा पानी छिड़का, रसोई के दरवाज़े पर सिटकनी चढ़ायी और जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाती हुई दुर्गा के साथ चल पड़ी। उसने अपने यहाँ का बातघर पार किया और फिर महाप्रभु गोसाईं के बातघर में दाखिल हो गयी। इस बातघर की छत टीन की थी और कंगूरों पर ढलान लिये हुए थी।

सहन में काफ़ी शोर मचा हुआ था। वहाँ छोटा-सा जमघट लग गया था। छोटी गोसाइन को देखकर बड़ी गोसाइन अपने हाथों को नचाती हुई ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगी, "कुछ करो! इसे बचाओ! हाय रे, इसे मौत के मुँह से अब कौन बचायेगा? जल्दी करो! कुछ करो।"

वह अपने पर काबू पाने में असमर्थ थी और फूट-फूटकर रो रही थी। हिचकी लेते-लेते उसका कलेजा जैसे कि बाहर निकला आ रहा था। गिरिबाला की एक टाँग रस्सी से कसकर बँधी हुई थी और जिस जगह पैर पर साँप ने काटा था, उसे पानी के बर्तन में डुबोया हुआ था। उसकी आँखें पूरी तरह खुली थीं और उसका चेहरा भावविहीन हो रहा था।

सुबकियाँ लेते-लेते बड़ी गोसाइन ने कहा, "बारीहाट से डॉक्टर आया था और उसने इसे देखा··· और वैसे ही चला गया। कहने लगा उसके पास ठीक से औज़ार नहीं हैं। ···फिर कहता गया कि इसे पलासबाड़ी के अस्पताल में ले जाओ। हे मेरे ईश्वर! कौन ले जायेगा इसे वहाँ? एक हाथी पागल हो गया है। उसने अपनी सब साँकलें तोड़ डाली हैं और बड़े गुस्से से इधर-उधर घूम रहा है। ···हर कोई इसे पलासबाड़ी ले जाने से डर रहा है।"

"क्या! क्या हाथी पागल हो गया है?"

"हाँ, उसने घास के साथ अपने ही कान का मद ले लिया था।"

इस पर छोटी गोसाइन ने निराशा के स्वर में कहा, "अरे, बाप रे! तब तो यह मामला बहुत ही गम्भीर है। क्या उसने कीचड़ खा लिया है?"

"कीचड़ खा लिया होता तो कहीं अच्छा होता। तब तो उसके कानों के नीचे लौंग रखने से बात बन जाती।"

"हाँ, एक कान के नीचे दो लौंग काफ़ी होते।"

भीड़ में से एक आवाज़ आयी, "वह नन्हा हाथी जो महाप्रभु के दोहार से आया था, एक गड्ढे में गिर गया है। अब कुछ भी हो सकता है।"

गोसाइन फिर चिल्ला उठी। "अब इसे पलासबाड़ी अस्पताल ले जाने वाला कोई नहीं। ···कृपा करके आगे आओ और कुछ करो···।" वह लगभग पागलों की तरह व्यवहार कर रही थी और बार-बार चिल्लाये जा रही थी, "देखो, देखो, उसे! उसका रंग हरा हो गया है। अरे, कुछ करो। ईश्वर के लिए कुछ करो।"

छोटी गोसाइन चित्त पड़ी लड़की की ओर बढ़ी और उसने उसके हाथ को छुआ। फिर उसने एकाएक ऊपर की ओर देखा और बोली, "नहीं, नहीं। वह हरी कहाँ हुई है? उसे ज़हरीले साँप ने नहीं काटा। हो सकता है वह शालिकि थूटिया[7] किस्म का साँप हो।"

भीड़ में से फिर किसी ने कहा, "कौन जानता है किस किस्म का साँप था वह! अभी पिछले ही दिन मछुआरे की बेटी को एक साँप ने काट लिया। लेकिन वह तीन दिन तक ज़िन्दा रही। लोगों का कहना है कि गोसाईं धातू तमरेश्वरी[8] पढ़ते रहे और इसी से वह जीवित रही। उन मन्त्रों को अब कौन पढ़े। और ईश्वर ही जाने मन्त्रों वाली उस पुस्तक को वह कहाँ रख गये हैं।"

भीड़ में से एक और आदमी बोला, "हममें से यहाँ कोई संस्कृत नहीं जानता। उस पुस्तक में से मन्त्रों को पढ़ने के लिए हेरामदो से किसी यजमानी ब्राह्मण को बुलाना होगा।"

अब तो गोसाइन और भी बौराने लगी थी। वह बार-बार अपने हाथों को हिला रही थी और बरामदे में चक्कर काटे जा रही थी। उसके बाल बिखर गये थे और बुरी हालत में थे। इस बीच वहाँ कुछ और दर्शक आ जुटे थे और लड़की को ज़्यादा से ज़्यादा निकट से देखने के लिए एक-दूसरे को धकिया रहे थे।

ठीक उसी समय मार्क भीड़ को एक तरफ़ ठेलता हुआ गोसाइन के सामने आ खड़ा हुआ। गोसाइन एकाएक सँभली और कुछ क़दम पीछे हट गयी। तनाव की इस घड़ी में भी वह यह नहीं भूली थी कि मार्क एक म्लेच्छ, इसाई, है और नीची जाति का है।

'ख़ैर,' मार्क बोला, "मुझे मेहरबानी करके एक तेज़ चाकू दीजिए। फ़ौरन! और मुझे इसके साथ अकेला छोड़ दीजिए। ···कृपया···"

एक क्षण के लिए तो गोसाइन चक्कर में पड़ गयी। वह इधर-उधर देखने लगी। उसके भीतर अब भी खलबली मची हुई थी और उसके हाथ-पाँव काँप रहे थे। हवेली का वह कक्ष, जहाँ गोसाईं अपने पूर्वजों की खड़ाऊँ रखता था, बहुत ही शुभ माना जाता था। गोसाइन ने फिर इधर-उधर देखा। किसी को किसी तरह का कोई ऐतराज़ नहीं था, बल्कि उनके अनुयायी भी, जो वहाँ खड़े थे, चुप रहे। उन्हें उस ईसाई के कथन पर कोई आपत्ति न थी। कितनी नाजुक घड़ी थी वह! ···तुरन्त फ़ैसला होना चाहिए··· वक़्त तेज़ी से निकला जा रहा था···

एक-एक करके सब लोग कमरे से बाहर चले गये। मार्क के उस अफ़ीमची सेवक

को भी, जो उसके लिए पुरानी पाण्डुलिपियाँ ढोता था, वहाँ रुके रहने की अनुमति नहीं मिली। साहिब ने अब दरवाज़ा बन्द कर लिया था।

अधिकांश लोग बाहर ही खड़े थे और बड़ी व्यग्रता से इन्तज़ार कर रहे थे। उनकी आँखें बन्द दरवाज़े पर गड़ी थीं। लेकिन गोसाइन चुपचाप खड़ी नहीं रह सकी। वह बड़ी बेताबी से बरामदे में चक्कर काट रही थी।

आकाश में काले बादल तेज़ी से घुमड़ रहे थे। दूर कहीं बिजली की कड़क सुनाई दी और फिर वह कड़क निकट आते-आते और तेज़ हो गयी। अचानक हवा के वेग से बन्द कमरे की खिड़की एकाएक खुल गयी। गोसाइन दौड़कर खुली खिड़की के निकट हुई और उसने भीतर झाँककर देखा। खड़ाऊँ के पास सरसों के तेल का दीया अब भी जल रहा था। पर यह साहिब क्या कर रहा है? उसे धक्का-सा लगा। उसने देखा कि जहाँ साँप ने काटा था, वहाँ साहिब ने चाकू से चीरा लगा दिया है और उसी चीरे में से खून चूसे जा रहा है। फिर उसका सर ऊपर उठा। उसने खून को एक तरफ़ थूक दिया और फिर खून चूसने के लिए उस पर झुक गया। उसकी गर्दन के इर्द-गिर्द लिपटा गमछा खून से लाल हो गया था।

लेकिन गिरिबाला? वह तो वैसे ही बिना हिले-डुले पड़ी थी। ···और उसके कपड़े? ···हे ईश्वर! उसकी मारकिन की शमीज़ तो लगभग···

गोसाइन ने मारे लज्जा और वेदना के अपना सर दूसरी तरफ़ घुमा लिया। पर उसकी तेज़ आँखों ने यह भी जान लिया कि उसके कपड़ों की इस हालत के लिए वह क्रिस्तान किसी तरह भी ज़िम्मेदार नहीं है, क्योंकि वह तो खून चूसने में ही व्यस्त था। वह खिड़की के सामने खुद खड़ी हो गयी और उसमें लगी सलाखों को उसने कसकर पकड़ लिया। वह नहीं चाहती थी कि और कोई व्यक्ति वह सब देखे जो उसकी अपनी आँखों ने देखा था। यह दृश्य कितना लज्जाजनक था। कितना दुःखदायी! और यह गिरिबाला? क्या चीरा देने और खून चूसने से उसे कोई दर्द नहीं हुआ? क्यों वह ऐसे ही बिना हिले-डुले, बिना कोई हरकत किये पड़ी है? ···जैसे कि कोई लाश हो! क्यों? क्या अब तक भी उसे होश नहीं आया? नहीं, नहीं, उसे होश है। उसकी पलकें दीये की रोशनी में किसी भेड़ के रंग की तरह पीली दिख रही थीं। उसने उनका झपके जाना भी देखा था।

गोसाइन वहाँ पूरी तरह चौकस हुई खड़ी थी। वह नहीं चाहती थी कि कोई भी खिड़की के निकट आये और भीतर झाँके। मार्क ने गिरिबाला के घाव पर जो चीरा दिया था, गिरिबाला ने उस चीरे के दर्द को रत्तीभर भी महसूस नहीं किया था। हे ईश्वर! क्या ऐसा हो सकता है? एक क्षण के लिए दीये की लौ ज़ोर से फड़फड़ायी। गिरिबाला अब भी बिलकुल वैसे ही बेहोश पड़ी थी। क्या वह ख़त्म हो चुकी है?· ··गोसाइन ने उस मद्धिम रोशनी में अपनी आँखें गड़काकर देखने की कोशिश की। उसकी साँस रुक रही थी··· क्या वह ज़िन्दा है? नहीं, नहीं, वह ख़त्म नहीं हुई है।

उसकी आँखें जुगनुओं की तरह चमचमा रही थीं, लेकिन उसके होंठ··· काठ की तरह कड़े पड़े हुए थे।

गोसाइन का मस्तिष्क चक्करघिन्नी बना हुआ था। गिरिबाला उसकी अपनी बेटी, लगभग नग्न, पसरी पड़ी थी, जैसे कि वह म्लेच्छ की भुजाओं में सो रही हो···! हे मेरे ईश्वर! कैसा दुर्दांत दृश्य है यह! मुझे क्षमा करो, प्रभु!··· उनसे कुछ ही दूर तो पूजा के लिए पूर्वजों की पवित्र खड़ाऊँ रखी हैं··· उसे एकदम घिन हो आयी। उसने अपनी आँखें दूसरी तरफ़ घुमा लीं··· भाग्य का लिखा देखो। एक दामोदरिया गोसाइन को अपने ही घर के भीतर एक क्रिस्तान को बरदाश्त करना पड़ रहा है। क्या उसे इस पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए सभी कर्मकाण्ड पूरे करने होंगे?

गोसाइन अब खिड़की से हट गयी थी और अपने सहन में तुलसी के पौधे के पास बैठ गयी थी। उसे याद आया कि कभी पहले उसने स्वयं ही अपने अनुयायियों पर कई तरह की नैतिक पाबन्दियाँ लगायी थीं। वे अनुयायी हेरामदो, राजाबाहा और बमुण्डी जैसी जगहों से आये थे। उसके पूर्वज कई तरह के विधान और कर्मकाण्ड पीछे छोड़ गये थे। यदि कोई नीच जाति का व्यक्ति किसी ब्राह्मण के बाल नोचता है तो उसे बारह बार धानु प्रायश्चित्त करना होगा। यदि वह किसी ब्राह्मण की लाश को छूता है तो उसे चन्द्रायण प्रायश्चित्त[9] करना होगा। और यदि कोई बढ़ई या धोबी या नर्तक किसी ब्राह्मण के जनेऊ को तोड़ता है तो उसे तिरेपन मन कौड़ियाँ दण्ड-स्वरूप देनी होंगी। ···ये सब विधान और वर्जनाएँ उसके मिस्तष्क में अब भी सुरक्षित थीं। वह उन्हें भूल भी कैसे सकती है! जिस ग्रंथ में ये सब विधान और वर्जनाएं मिलती हैं, वह उनके परिवार के पुरोहित के पास पड़ा है। अभी उस दिन ही तो उसने एक गोसाईं के मामले में अपनी व्यवस्था दी थी, क्योंकि गोसाईं ने अपनी बन्दूक़ से एक हिरन मार डाला था और उसे खा गया था। ···वह अब क्या करे? ···उसका सर घूमने लगा था और उसे लगा था जैसे कि धुएँ की एक परत ने उसकी आँखें ढाँप दी हैं।

कुछ देर बाद उसने अपनी आँखें उठाकर ऊपर की ओर देखा तो पाया कि गुईमैनी उसके पास खड़ी है। वह कई वर्षों से उसके साथ थी और गुड़गुड़ी पीने की साझेदार थी।

अब गुईमैनी ही बोली, "क्या सोच रही हो? वह साहिब तो कब का कमरे से बाहर आ चुका है। यहाँ बारिश हो रही है। भीतर आ जाओ। बारिश बड़े ज़ोरों की है। तुम भीग जाओगी।"

वे दोनों दौड़कर बरामदे में चली गयीं। मार्क वहीं खड़ा था। वह बोला, "गिरिबाला को अब पलासबाड़ी के अस्पताल में ले जाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। मैंने सारा ज़हर निकाल दिया है। ज़्यादा नहीं था। सौभाग्य से साँप भी ज़्यादा ज़हरीला नहीं था।"

फिर उसने उन्हें अपना गमछा दिखाया जो ज़हरीले खून के धब्बों से भरा पड़ा था। वह उसे बरामदे के दूसरे सिरे पर ले गया और दियासलाई जलाकर उसे आग लगा दी। अब वह गोसाइन के पास आया और वहाँ खड़ी भीड़ की ओर इशारा करके बोला, "उनसे कहिए कि वे चले जायें। बारिश और ज़ोरों से होगी। ···आप चिन्ता न करें। वह अब बिलकुल ठीक हो जायेगी।"

"किस क़िस्म का साँप था वह?" गोसाइन ने जानना चाहा। "मचुआगुम[11] था या कि हुलुंगागुम[12] या मैरगुम[13]?" ब्राह्मणों की ढेकी में इस किस्म के नाग घूमते ही रहते हैं, क्योंकि वे वहाँ सब तरह की चीज़ें रखते हैं—धान की भूसी, झाड़ू और ईश्वर जाने क्या-क्या··· और लड़की आपकी खातिर पता नहीं, कहाँ-कहाँ पाण्डुलिपियाँ ढूँढ़ती फिरी।"

मार्क ने अपना सर झुका लिया और बोला, "अब ऐसी चिन्ता मत कीजिए। वह ख़तरे से बाहर है। जाइए और स्नान कीजिए।"

गोसाइन को अब भी विश्वास नहीं हो रहा था। वह बेचैन थी। वह बातघर की ओर बढ़ गयी और इन्द्रनाथ का इन्तज़ार करने लगी। बिजली बार-बार कड़क रही थी। तूफ़ान तेज़ी से बढ़ा चला आ रहा था···। बारिश भी अब बढ़ती ही जायेगी ···क्या पलासबाड़ी से किसी डॉक्टर को लिवा लाना सम्भव होगा?

वह बारिश में बिलकुल भीग चुकी थी, लेकिन वहाँ से हटने का नाम नहीं ले रही थी। इस बीच गोसाइन और दुर्गा से आज्ञा लेकर छोटी गोसाइन भारी वर्षा के बीच दौड़कर अपने बातघर की ओर बढ़ी और फिर घर के भीतर हो ली···

जैसे ही छोटी गोसाइन अपने सोने के कमरे में पहुँची, उसने अपने भीगे गताले और मेखला को उतार फेंका (ब्लाउज़ या शमीज़ तो उसे पहनने की आदत थी ही नहीं), गमछे से अपने शरीर को पोंछा और एक सूखी मेखला पहन ली। इधर बारिश बढ़ती ही जा रही थी। इस तेज़ बारिश के बीच भी उसने पागल हाथी के चिंघाड़ने की आवाज़ सुनी। क्या वह दोहार की हथिनी पर आक्रमण करेगा? हो सकता है! वह उस दिशा से दो हाथियों की गुहार सुन रही थी। वह महीधर के लिए चिन्तित थी, क्योंकि उसे हाथियों के बाड़े के पास से ही गुज़र कर आना था। शायद उसे पता नहीं था कि वह दुष्ट हाथी खेत में घुस चुका है। ···हे भगवान्! उसे ठीक-ठाक पहुँचा दीजियो···। बारिश का तेवर अब भी बदला नहीं था। छत कई जगह से टपकने लगी थी, और वहाँ कई जगह फ़र्श पर पानी भर गया था। बूढ़े महावत ने एक बार उसे बताया था कि अगर मस्ती में आया हाथी घास के साथ अपना ही मद ले ले तो वह बुरी तरह पागल हो जाता है और बड़ी आसानी से बड़े-बड़े पेड़ों को उखाड़ फेंकता है। तब वह बहुत ही ख़तरनाक हो जाता है।

उसने 'महीधर बापू', 'महीधर बापू' कहते हुए दरवाज़ा खोला और बरामदे में बाहर आयी। वह अब भी बुरी तरह बेचैन थी। वह बारिश की परवाह किये बिना सहन में चली गयी और बातघर की ओर बढ़ने लगी। उसे वह दिन याद था जब वह महीधर से पहली बार मिली थी। तब वह महीने से थी। वह घर के भीतर ही रह रही थी और केवल बिना उबला दूध ही लेती रही थी।

एकाएक उसने सुना कि कोई उसे सहन में खड़ा पुकार रहा है। कौन ऐसी हिम्मत कर सकता है कि वह सीधा सहन में ही चला आये और फिर इस तरह उसे पुकारना शुरू कर दे? वह अचम्भे में पड़ गयी थी और जब बाहर आयी थी तो उसने देखा था कि एक हृष्ट-पुष्ट युवक उसके सामने खड़ा है। उसने इससे पहले दक्षिणी तट के इलाके में ऐसा तन्दुरुस्त व्यक्ति कभी नहीं देखा था। उसने अपने गताले को खींचकर ठीक किया था। उसके लम्बे बाल तब बड़े खबूसूरत ढंग से उसके कन्धों और वक्ष पर छितरा रहे थे।

युवक ने अपना परिचय देते हुए कहा था कि उसका नाम महीधर शर्मा पाठक है और वह हेरामदो आने से पहले दतारा में था और उसकी पत्नी का प्रसव में देहान्त हो गया था और अब वह बिलकुल अकेला है।

गोसाइन ने तब उससे पूछा था, "तुम्हारी पत्नी का देहान्त हुए कितना अर्सा हो गया है?"

"इस बार पूर्णमासी को दो महीने हो जायेंगे।"

"तुम अब क्या करते हो?"

"क्यों? आपने उन यजमानी ब्राह्मणों के बारे में कुछ सुना नहीं?"

"क्या?"

"हम ब्राह्मणों के बीच अब यह बहस चल पड़ी है कि यजमानों के यहाँ कौन जायेगा। कभी-कभी झगड़ा भी हुआ और उन्होंने एक-दूसरे के जनेऊ तक तोड़ डाले। इस घोर पाप का हमने शोक मनाया और सौ बार गायत्री मन्त्र का जाप किया। हमारे पास कोई काम नहीं रहा और हमारी हालत बुरी हो गयी। इसलिए अब मैं आपके पास आया हूँ। रास्ते में जब मैं जगलिया नदी पार कर रहा था तो मेरी छोटे गोसाईं इन्द्रनाथ से भेंट हुई। वह आपके बारे में कह रहे थे कि वक़्त बहुत ख़राब है, आपको अपनी सहायता के लिए एक आदमी रखना चाहिए। इन दिनों गोसाइयों के लिए किसके मन में इज़्ज़त है? वाकई वक़्त बहुत खराब है। मैं आपकी सेवा करने आया हूँ, छोटी गोसाइन। असामी काश्तकार लोमड़ों की तरह चालाक हो गये हैं। अभी उस दिन ही तो··· मेरी आँखों के सामने ही घटा था। एक कुम्हार के बेटे ने एक ब्राह्मण को ज़मीन के मामले को लेकर बुरी तरह से पीट दिया था और ज़ख़्मी भी कर दिया था। लोग उसे पंचायत के सामने लाना चाह रहे थे, लेकिन इसके लिए वे हिम्मत नहीं

जुटा पा रहे थे। वह किसी की परवाह भी नहीं करता था और अपने हाथ में एक नेपाली खंजर लिये इधर-उधर घूमता रहता था।"

छोटी गोसाइन ने महीधर के मुँह से जब यह सब सुना तो वह स्तब्ध रह गयी थी। इस दौरान महीधर ने अपने कपड़े के जूते उतारकर उन पर से मिट्टी झाड़ डाली थी और उन्हें एक तरफ़ रख दिया था। फिर वह सहन में पड़ी एक चटाई पर बैठ गया था और छोटी गोसाइन के बाहर आने का इन्तज़ार करने लगा था, क्योंकि वह घर के भीतर चली गयी थी। जब वह बाहर आयी थी तो उसके बालों में से जवाकुसुम तेल की गंध हवा में चारों ओर फैल रही थी। वह बोली थी, "मुझे किसी का डर नहीं, न ही मुझे अकेले रहते हुए डर लगता है। लेकिन मुझे एक ऐसे ब्राह्मण की ज़रूरत है जो मेरी माराभीटा की ज़मीन और दूसरी ज़मीनों से लगान वसूल कर सके, और जब मैं अपने अनुयायियों के यहाँ जाऊँ तो वह मेरे साथ-साथ रहे। लेकिन मैं तुम्हारी इन सेवाओं के लिए तुम्हें दे क्या सकती हूँ? जब गोसाईं जीवित थे तब बात बिलकुल दूसरी थी। घर में हर वक़्त काफ़ी कुछ रहता था। अब तो माराभीटा से मुझे धान भी नहीं मिलता और जो लगान मुझे मिलना चाहिए, वह भी मुझ तक वे नहीं पहुँचाते। यही हाल दूसरी ज़मीनों को लेकर है। और फिर मेरी गराल वाली वह ज़मीन! ··· पिछले दो वर्षों से मुझे वहाँ के काश्तकारों से कोई खबर नहीं मिली। मेरी हालत ऐसी ख़राब हो रही है कि मुझे लगता है एक दिन सरकार के लोग आयेंगे और कर चुकता न कर पाने के सिलसिले में मेरे घर तथा दूसरी परिसम्पत्तियों की नीलामी कर देंगे।"

महीधर को गोसाइन की बात सुनकर हमदर्दी हो आयी थी। "हाँ," वह बोला था, "मैं समझ सकता हूँ। आप अफ़ीम के मारे दक्षिणी तट के इन काश्तकारों से उम्मीद भी क्या कर सकती हैं। आप चिन्ता न करें। मैं ढेकी के पास वाले उस कमरे में सो जाऊँगा जो कभी जात्रा की टोलियों के अभ्यास के काम आता था। जहाँ तक दूसरी ज़रूरतों का सवाल है, वे तब पूरी हो जायेंगी जब मैं आपके साथ आपके अनुयायियों के यहाँ जाऊँगा।"

छोटी गोसाइन की आँखें अब ढेकी के पास वाले कमरे की ओर मुड़ गयी थीं। वह बहुत बुरी हालत में था। कई जगह से दीवारों पर मिट्टी का लेप झड़ गया था और उससे उसके भीतर का बाँस दिखने लगा था। छत सम्भवतया टपकने लगी थी। जात्रा की टोली को लौंडे-लपाड़ों ने उसकी दीवारों पर राम और रावण के जो चित्र उलीके थे, वे भी दिख रहे थे··· लेकिन उसका अपना सोने का कमरा भी तो वहीं पास में था।

अब कई वर्ष बीत चुके हैं और महीधर छोटी गोसाइन का दायाँ हाथ बन चुका है। अच्छा वक़्त हो या बुरा, कोई संकट घिर आया हो या वैसे ही, वह तो अब उसके जीवन का अंग बन चुका है। एक बार जब वह हैज़े से पड़ गया था तो छोटी गोसाइन

ने उसकी सेवा-सुश्रूषा में रात-दिन एक कर दिए थे। लेकिन उसका अन्तःकरण उसे बार-बार कचोटता रहता था··· यह जो कुछ हो रहा है, एक गोसाईं की विधवा के लिए क्या उचित और उपयुक्त है? यह विचार जैसे कि उसे खाये जाता था। उसका उससे छुटकारा भी तो न था।

बारिश अभी हो रही थी। वह वैसे ही चलती रही, बुरी तरह से भीगी हुई। वह सत्र को जाने वाली सड़क के किनारे, सहन की बाड़ के निकट, बोकुल के पेड़ के निकट जा रही थी। चाहे बारिश का अपना शोर था, फिर भी उसे हाथियों की आवाज़ साफ़ सुन पड़ रही थी। अगर महीधर मारा गया तो? क्या वह उसकी मृत्यु के बाद अपने को सुरक्षित रख सकेगी? नहीं, नहीं, यह सम्भव नहीं दिखता। ···उसकी आँखें आँसुओं से भर गयी थीं। वह बोकुल के पेड़ के नीचे बुत बनी खड़ी रही, जैसे कि वह वहाँ जादू से जकड़ी हुई हो।

एकाएक उसे पदचाप सुनाई दिये। कुछ लोग उधर ही आ रहे थे। हे ईश्वर! अब वह क्या करे? भागकर घर वापस कैसे जाये? उसकी मेखला भी पानी से बिलकुल तर हो रही थी और उसकी टाँगों से चिपक रही थी। अब वह भागे भी तो कैसे? वे लोग और निकट आते जा रहे थे। उसे उनमें इन्द्रनाथ की आवाज़ भी सुन पड़ी। वह कह रहा था, "लगता है उस मतवाले हाथी ने दोहार की हथिनी को मार डाला है।"

"वह किसके साथ दोहार गयी थी?"

"चिकारहाटी के गोसाईं के साथ। उसकी टाँग में कड़ी से ज़ख्म हो गया था। हमें बोतल से उसे दूध पिलाना पड़ता था। दुर्गा उसके लिए चावल उबालती थी और केले के तने के साथ उसे खिलाती थी।"

एकाएक इन्द्रनाथ ज़ोर से पुकार उठा, "वहाँ कौन खड़ा है, बोकुल के पेड़ के नीचे?"

एक और आदमी ने भी आवाज़ लगायी, "दौड़ जाओ यहाँ से। चले जाओ। पागल हाथी कभी भी इधर आ सकता है और तुम्हें कुचल डालेगा। पर वहाँ तुम हो कौन?"

इन्द्रनाथ ने अपनी टॉर्च की रोशनी बोकुल के पेड़ की ओर फेंकी। वहाँ एक स्त्री को, जिसके बाल लम्बे थे और जो बारिश में बुरी तरह भीग रही थी, देखकर वह हैरत में पड़ गया। वह फिर चिल्लाया, "कौन है वहाँ, इस तूफान और बारिश में?"

गोसाइन ने अपना चेहरा अपने गताले से ढाँप लिया था। इन्द्रनाथ उसे पहचान नहीं पा रहा था। उसने बड़ी कमज़ोर आवाज़ में कहा, "तुम देखते नहीं मैं कौन हूँ· मैं···"

इन्द्रनाथ और उसका साथी वैसे ही आगे बढ़ गये। लेकिन उसे बार-बार अचम्भा हो रहा था कि वह गोरे बदन की, लम्बे बालों वाली औरत कौन हो सकती है। उसे

वह बहुत परिचित भी लगी। पर वह है कौन? क्या वह किसी दूसरे गाँवे से आयी है? नहीं, नहीं! ऐसा नहीं हो सकता। ···वह गोरा रंग··· और किसी का तो हो नहीं सकता इस दक्षिणी तट के इलाके में··· छोटी गोसाइन ही होगी··· हाँ, छोटी गोसाइन!

अजब मामला है। वह यहाँ तक सड़क के किनारे क्यों आयी, जबकि उसका अपना सहन है? अजीब बात है···

इन्द्रनाथ को बातघर के निकट कुछ लोग अपने हाथों में लालटेनें लिये दीख पड़े। उनमें से कुछ ने चिल्लाकर कहा, "क्या जंगलात के दफ़्तर में इसकी रपट दे दी गयी है?"

"दो-एक आदमी रानी में रेंजर के पास गये तो हैं।"

"हमने सुना है कि कल कमिश्नर साहिब अपनी पलटन भेजेंगे।"

इन्द्रनाथ के साथ एक अफ़ीमची आया था। वह बोला, "क्या, क्या कमिश्नर साहिब खुद अपनी बन्दूक़ लेकर पागल हाथी को मारने आयेंगे?"

"चुप रहो, बेवकूफ़!"

उस अफ़ीमची का चेहरा गमछे से ढका हुआ था। उसने अब खाँसना शुरू कर दिया। फिर उसने बलगम थूकी और कहने लगा, "हाथी जीरंग के जंगल में ग़ायब हो गया है। कमिश्नर साहिब आयेंगे तो क्या होगा? बन्दर की तरह टाप कर वापस चले जायेंगे।"

"जब वह जंगल से लौटेगा, तो वह और भयंकर होगा।"

अफ़ीमची अब फिर ज़ोर-ज़ोर से कह रहा था, "डाखला से जो ओझा आया था, वह उस हाथी का मद अपने साथ ले गया है। यह हाथी कभी ठीक नहीं होगा। जब यह गोली से मर जायेगा तो उसके लम्बे दाँत मैं ले जाऊँगा।"

"अरे, कमीने! चुप रह! डाखला का वह ओझा कौन है?"

"तुमने उसे देखा नहीं? वह कई दिनों तक हाथीबाड़े के आस-पास मँडराता रहा ··· क्या खल्वाट था उसके सर पर, जैसे सूखा कुम्हड़ा हो। उसे पहले ही पता था कि यह उसके साथ होगा। क्या तुमने उसे गाते हुए नहीं सुना :

"धत् बेटा धत्
सब सीख लिया है अब तुमने
नहीं बचा है बाक़ी कुछ
खाओ, पिओ, मौज उड़ाओ
ओ मेरे राना, मेरे राना
हमेशा अपने महावत का मानो कहना
शाबाश! बेटा शाबाश!"

बातघर में इन्द्रनाथ ने अपने गीले जूते उतारे और उनका पानी निकाला। फिर उसने अपनी धोती के सिरे को निचोड़ा और अपने चेहरे को उससे पोंछकर सुखाया।

लेकिन वही विचार उसे बार-बार परेशान कर रहा था, मानो वह जाल में फँसा हिरन हो। वह औरत थी कौन? क्या वह छोटी गोसाइन थी? लेकिन वह बोकुल के पेड़ के नीचे रात के वक़्त बरसते पानी में क्यों खड़ी थी? उसे वापस जाकर उससे पूछना चाहिए था··· वह बचना क्यों चाह रही थी?

उधर बिजली चमकी और साथ ही बड़े ज़ोर की कड़क हुई। बारिश का पानी भी और ज़ोरों से पड़ने लगा। एकाएक इन्द्रनाथ को एक आकृति दिखाई दी। वह भी पानी से तर थी और छोटी गोसाइन के घर के बातघर की ओर दौड़ती हुई बढ़ रही थी। फिर एक क्षण बाद ही उसने देखा कि वह बचने वाली औरत उसी घर के अन्दर दाख़िल हो गयी है··· बेशक वह औरत छोटी गोसाइन ही थी।

## सात

अभी पौ नहीं फटी थी। दुर्गा जब खुले में शौच के लिए गयी तो उसने लोहारघाट जाने वाली सड़क पर एक बस के रुकने की आवाज़ सुनी। उसे लगा कि शायद जगन्नाथपुरी और प्रयाग के पण्डे दक्षिणी तट की उन ब्राह्मण विधवाओं को लिवाने आये हैं जो उन पवित्र स्थानों की यात्रा करना चाहती हैं। उसने सुना था कि डाखला, बंगरा और दूसरे स्थानों की गोसाईं विधवाएँ पण्डों के साथ जाने के लिए हमेशा तैयार-बर-तैयार रहती हैं। दरअसल, वहाँ पहुँचकर वे पावन गंगा में अपने मृत पतियों की राख बहाना और देवता को अपने केश अर्पित करना चाहती थीं। जगन्नाथपुरी में तो वे अपने-अपने पति की स्मृति में एक सौ एक रुपये का भोज भी करवायेंगी।

दुर्गा सुपारी के एक लम्बे पेड़ के नीचे खड़ी हो गयी और सड़क की ओर देखने लगी। उसने देखा कि तीन पण्डे सड़क पर बड़े उत्साह के साथ चले आ रहे हैं। सब रामनामी चादर ओढ़े हुए थे और आपस में बतिया भी रहे थे। लेकिन उसके सर के ऊपर क्योंकि एक कठफोड़वा रटाङ्-रटाङ् की रट लगाये हुए था, इसलिए वह उनके शब्द सुन नहीं पायी। वह बार-बार अपनी भौजाई, गोसाइन से प्रार्थना करती रही थी कि वह उसे जगन्नाथपुरी और प्रयाग जाने के लिए कुछ राशि दे। उसने उसे यह आश्वासन भी दिया था कि उसके मृत पति का भाई यह ऋण चुकता कर देगा। फिर वहाँ पैसे की कमी भी क्या है, क्योंकि उस वर्ष चिकारहाटी के गोसाईं की ज़मीनों पर भरपूर फसल हुई थी।

···जब वह स्नान करने के बाद पूजा भी कर चुकी तो उसने छोटी गोसाइन के बातघर से पण्डों को आते देखा। उन्होंने सड़क पार की और उस ड्योढ़ी के नीचे खड़े हो गये जहाँ हाथी का साज़ोसामान रखा था। गोसाइन भी अब अपने बरामदे

में आ गयी थी। उसके हाथ में सुपारी और पान की तश्तरी थी। पण्डों ने झुककर उसका अभिवादन किया। एक बँधुवे ने उन्हें बैठने के लिए चटाइयाँ दीं और फिर वह चला गया।

उनमें एक पण्डा पतला-दुबला था और उसका चेहरा लोमड़ का-सा था। वह टूटी-फूटी असमिया में बोला, "माँ, पिछले वर्ष हम दक्षिणी तट से सात विधवाओं को प्रयाग और जगन्नाथपुरी की तीर्थयात्रा पर ले गये थे। लेकिन इस साल तो केवल दो ही गोसाइनें चलने के लिए तैयार हुई हैं···"

उसके बोलने के ढंग और लहज़े से लगता था कि वह ऊपरी असम का रहने वाला है।

गोसाइन ने उत्तर देते हुए कहा, "हाँ, मैं जानती हूँ। इससे ज़्यादा आप और क्या उम्मीद करते हैं! लगभग समूचा दक्षिणी तट अफ़ीम की लत में जकड़ा हुआ है।"

"लेकिन हम तो सोच रहे थे कि इस बार छोटी गोसाइन हमारे साथ चलेगी। उसके सामने कुछ समस्या है। उसे अपनी ज़मीनों से लगान इकट्ठा करना है। गोसाईं के देहान्त के बाद उसे धान का मिलना भी कम हो गया है। दूसरे, वह एक बार तीर्थ यात्रा पर हो भी आयी है।"

उसी क्षण दुर्गा भी वहाँ पहुँची और पण्डों के सामने खड़ी हो गयी। वे उसकी ओर आशा-भरी निगाहों से देख रहे थे। अपने सर को अपने गताले से ढाँपते हुए वह गोसाइन से बोली, "मुझे इस तीर्थयात्रा के लिए कुछ पैसे दो। चिन्ता मत करो। मेरा देवर इसे लौटा देगा। मुझे कमज़ोरी लगने लगी है और कभी-कभी मेरा सर चक्कर खाने लगता है। इससे पहले कि मुझे कुछ हो, मैं वहाँ जाकर पावन गंगा में अपने पति की अस्थियाँ प्रवाह करना चाहती हूँ।"

पण्डों को बात बनते दिखी। उन्होंने बड़े उत्साह से कहा, "हम केवल एक सौ बीस रुपये लेंगे। एक बार हमने ब्रह्मपुत्र पार कर लिया तो अमीनगाँव पहुँचते ही इस भद्र महिला के प्रति हमारी ज़िम्मेदारी शुरू हो जाती है।"

दरअसल, शिकारियों को जैसे कि अपना शिकार मिल गया था। वे उसके और-और निकट होते जा रहे थे। इसलिए उन्होंने अपनी बात में और उत्साह भरते हुए कहा, "माँ, चिन्ता मत करो। अगर थोड़ा-बहुत कम भी पड़ गया तो उसे हम पूरा कर लेंगे··· लेकिन हम इनका पूरा ख़याल रखेंगे। हम औताल की गोसाइन को तो अपनी पीठ पर लादकर ले गये थे। वह किसी के हाथ से खाना नहीं खाती थी। बाकी सब उसके लिए अछूत और म्लेच्छ थे··· हम सब देख लेंगे। आपको चिन्ता करने की बिलकुल ज़रूरत नहीं। भगवान जगन्नाथ की जय हो।"

गोसाइन कुछ देर तक चुप खड़ी रही। फिर वह एकाएक बड़बड़ाती हुई मुड़ी और उस छोटे कक्ष की तरफ़ बढ़ गयी जहाँ वह हमेशा हुक्का गुड़गुड़ाती थी। ब्राह्मण लड़के ने वहाँ हुक्का गुड़गुड़ाने का सब ज़रूरी सामान पहले ही रख दिया था। गुईमैनी

भी बरामदे में खड़ी इन्तज़ार कर रही थी। वह गोसाइन के साथ हुक्का गुड़गुड़ाने के अलावा कुछ गपशप करना चाहती थी।

तीनों पण्डों ने आपस में सलाह-मशविरा करना शुरू कर दिया। एक बोला, "शायद गोसाइन भीतर इस पर विचार करने गयी है।"

"हाँ, हाँ! यही बात होगी।" दूसरे ने कहा। फिर वे दुर्गा की ओर देखने लगे और बोले, "गोसाइन के लिए यह छोटी-सी रक़म क्या मायने रखती है। है न? आपके सत्र में तो एक हज़ार एकड़ भूमि होगी? हमने सुना है कि गोसाईं अपने अनुयायियों के यहाँ जा रहा है। जब वह लौटेगा तो उसके साथ भेंटों और लगान से लदी गाड़ियाँ होंगी। बाबा विश्वनाथ आपकी सभी कामनाएँ पूरी करेंगे।"

दुर्गा चुप रही।

"पिछली बार भी आपने हमारे साथ चलने की योजना बनायी थी। आपने कहा था कि आपका देवर आपके लिए व्यवस्था करेगा और आपने गोसाइन से भी बात की थी। है न?"

दुर्गा ने उत्तर में कोई शब्द नहीं कहा।

"हमने सुना है कि आपकी ससुराल वाले बहुत अमीर हैं और उनकी ज़मीनों का कोई हिसाब नहीं है। क्या वे आपको··· ?"

लेकिन दुर्गा ने उनकी बात पर कान नहीं धरा और वहाँ से हट गयी। वह उद्विग्न थी और उसी उद्विग्न अवस्था में वह सीधी गोसाइन के हुक्के वाले कक्ष की ओर बढ़ गयी। दरवाज़े तक पहुँचकर वह रुक गयी। उसके नथुने कँपकँपा रहे थे और उसका वक्ष दबी हुई सिसकियों के कारण तेज़ी से उठ-बैठ रहा था। फिर दरवाज़े पर अपनी मुक्कियाँ मारते हुए वह चिल्लायी, "मेरी माँ ने मरते समय तुम्हें मेरी शादी के लिए सोने की बालियाँ दी थीं। तुमने उन्हें मुझे कभी नहीं दिया। कहाँ हैं वे? मुझे वे बालियाँ अभी चाहिए, इसी वक़्त।"

गोसाइन ने बन्द दरवाज़े के पीछे से ही घृणा-भरी चिड़चिड़ाहट में कहा, "अरी राँड! किसने दी थीं तुझे सोने की बालियाँ? क्या तुम्हारे उस मर्दूद पति ने तुम्हें कभी कुछ दिया? अपना घर छोड़कर तू यहाँ चली क्यों आयी?"

जब लोगों ने यह गाली-गलौज होते सुना तो बरामदे के निकट उनका वहाँ एक छोटा-सा हुजूम लग गया। कल्टू महावत की बूढ़ी माँ ने, जो वहाँ गोसाईं के कुएँ से पानी लेने आयी थी, दुर्गा को समझाना शुरू किया, "शान्त हो जाओ। ठण्डेपन से काम लो। तुम गोसाइन से झगड़ा क्यों करना चाहती हो? यह तो साफ़ ही है कि तुम्हारे पति के यहाँ से तुम्हें लिवाने कोई नहीं आया।"

वहाँ जो औरतें और भी आ जुटी थीं, वे भी बारी-बारी से कहने लगीं, "हाँ, हाँ, यह सच है कि तुम्हारी ससुराल से कोई नहीं आया। ···तुम गोसाइन की छत्रछाया में रहती हो··· तुम्हें उसकी बात सुननी चाहिए और अमन-चैन से समय काटना चाहिए।"

दुर्गा को लगा जैसे कि उसका सारा खून निचुड़ गया है। उसके भीतर से एक शीत लहर-सी गुज़र गयी। वह बुत बनी, वहीं की वहीं जमी खड़ी थी। उसकी तमाम हेकड़ी और आक्रोश राख बन चुके थे।

···हाँ, वहाँ से कोई क्यों नहीं आया? तीन वर्ष बीत चुके हैं और अभी तक पति के घर से कोई लिवाने आया ही नहीं। ···वहाँ से तो एक शब्द भी सुनने को नहीं मिला। क्यों? एक बार बहुत पहले चिकारहाटी से कटहल से लदी गाड़ी और दही के दो बड़े मटके आये थे, लेकिन तब से अब तक किसी ने यह जानने तक की कोशिश नहीं की कि वह ज़िन्दा है या मुर्दा।

दुर्गा को भीड़ में से एक और आवाज़ सुन पड़ी, "तुम्हारी ससुराल की ज़मीन में तुम्हारा पक्का हिस्सा है। अब समय है कि तुम एक वकील करो और अपने हिस्से का दावा पेश करो।"

दुर्गा यह सुनकर भड़क उठी और ऐसी बात कहने वाली पर डपट कर बोली, "मेरे मामलों में अपनी टाँग मत अड़ाओ। क्या इस घर की बेटी गुवाहाटी की कचहरियों के चक्कर काटे? तुम देखती रहो। वे एक दिन आयेंगे और मुझे पूरे सम्मान के साथ चिकारहाटी ले जायेंगे।"

भावावेग के कारण उसकी आवाज़ काँप रही थी। वह बरामदे के दूसरे सिरे की ओर दौड़ पड़ी, और वहाँ उसने गुड़ीमुड़ी होकर अपने गताले से अपना मुँह ढाँप लिया।

एकत्रित भीड़ पर अब खामोशी छा गयी थी। केवल गोसाइन के गुड़गुड़ी वाले कमरे से गुड़गुड़ाहट का स्वर ही सुन पड़ रहा था। गोसाइन, मुइमैनी के साथ, परेशान हुए बिना, शान्त होकर, अपनी गुड़गुड़ी गुड़गुड़ाती रही।

एक बुढ़िया भीड़ में से आगे आयी और दुर्गा के निकट पहुँची। उसकी मेखला खुल गयी थी। वह उसे अपने हाथों से थामे हुए थी। सूखे हुए केलों के समान उसके दोनों स्तन स्पष्ट दीख पड़ रहे थे, पर वह उनके प्रति पूरी तरह निरपेक्ष थी। वह दुर्गा से बोली, "माईशाना, सुनो! अगर अपनी जायदाद वापस चाहती हो तो अपने पति के यहाँ ही जाकर रहो।"

एक दूसरी औरत ने भी अपनी बात जड़ दी, "तुम तश्तरी में पड़ा केवल एक बेर हो। ज़रा-सी तश्तरी हिली नहीं कि वह इधर से उधर लुढ़कता रहेगा। तुम्हें छोटी गोसाइन की तरह काफ़ी मज़बूत होना पड़ेगा। उसकी तरफ़ देखो। किस रोब से वह अपनी ज़मीनों की देखभाल कर रही है!"

दुर्गा ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया और वह पवित्र खड़ाऊँ वाले कक्ष की ओर बढ़ गयी। तमाम औरतें मूक-बधिर हुई उसे घूरे जा रही थीं और साथ-साथ यह भी सोच रही थीं कि देखें अब यह क्या करती है। दुर्गा उस कक्ष में दाखिल हो गयी और मारे गुस्से के उसने दीवार से लगे एक खाने में से एक लकड़ी का बक्सा

निकाला और उसे घसीट कर दरवाजे की दहलीज़ तक ले गयी। कुछ औरतें दौड़कर उसके पास पहुँचीं और उसे रोकने की कोशिश करने लगीं। फिर वे एकाएक पीछे हट गयीं, क्योंकि उन्हें ख़याल आया कि वह एक गोसाइन है और उसे वे छू नहीं सकतीं। उन्होंने केवल एकसाथ मिलकर चिल्लाना शुरू कर दिया, "अरी, चिकारहाटी की बहू! तुम क्या कर रही हो? उस बक्से को क्यों घसीट रही हो?"

"मुझे कुछ कहने की ज़रूरत नहीं। मैं छोटी गोसाइन के यहाँ जा रही हूँ।"

भीड़ में से एक औरत फिर चिल्लायी, "एक मिनट इन्तज़ार करो, माईशाना। बक्स तुम्हारे लिए बहुत भारी है। ···बेरोहू बँधुवे से कहो कि वह इसे ले चले।"

बेरोहू भी वहीं पास में खड़ा था और यह सब कौतुक फटी-फटी आँखों से देख रहा था। जब उसने उस औरत के वे शब्द सुने तो मानो उसे साँप सूँघ गया। उसने डरी-डरी आँखों से गोसाइन के गुड़गुड़ी वाले कक्ष की ओर देखा। कक्ष का दरवाज़ा बन्द था। वह बड़ा अनमना-सा हो बक्से की ओर बढ़ा और उसे उठाकर उसने अपने सर पर टिका लिया। दुर्गा तेज़ क़दमों से बातघर की ओर बढ़ी। बेरोहू उसके पीछे-पीछे था। तमाम भीड़ बँधुवे के पीछे-पीछे चल पड़ी। उन सब में यह जानने की घोर उत्सुकता थी कि देखें अब क्या होता है?

इस बीच छोटी गोसाइन अपने घर की खिड़की से यह समूचा दृश्य देख रही थी। जब उसने दुर्गा, बेरोहू तथा और औरतों की भीड़ को अपने यहाँ आते देखा तो वह तुरंत अपने बरामदे में आ गयी। जैसे ही वे लोग सहन में आये, बेरोहू ने वह बक्सा ज़मीन पर उतार दिया और वहाँ से भाग खड़ा हुआ। उसे इस बात का बहुत डर था कि गोसाइन उसे कहीं देख न ले।

दुर्गा छोटी गोसाइन की ओर दौड़ी और उसके पाँवों के पास गिरकर ज़ार-ज़ार रोने लगी। उसके लम्बे बाल खुल गये थे और बिखर रहे थे। उस समय वह चालीस वर्ष की महिला एक छोटी बालिका के समान दिख रही थी।

इस बीच जो औरतें दुर्गा के पीछे-पीछे चली आयी थीं, वे आपस में फुसफुसाने लगीं, "राम, राम! आजकल तो गोसाइनें भी आपस में कुत्ते-बिल्ली की तरह लड़ती हैं··· ऐसा ही होता है··· जब किसी की खुशी छिन जाये तो उसके साथ ऐसा ही व्यवहार होता है।··· एक समय था जब पातहल्दिया और बामुण्डी की गोसाइनें कभी अपनी आवाज़ ऊँची नहीं करती थीं। अब तो उन्हें बातघर में खड़े होकर भी सुना जा सकता है। ···अरे छोड़ो जी। गोसाईं परिवार की औरतें तो अब गुवाहाटी की कचहरी में भी पहुँच जाती हैं और अपने ज़मीन के हिस्से के लिए लड़ाई करती हैं।"

छोटी गोसाइन तेज़ी से बाहर आयी और उन औरतों पर बरस पड़ी, "बहुत हो गया! अब अपने-अपने घर जाओ। जब मैं तुम्हें धान कूटने के लिए बुलाती हूँ तब तो तुम्हें फुर्सत नहीं होती, लेकिन अब गोसाइन के मामलों में टाँग अड़ाने के लिए तुम्हारे पास दुनिया-जहान की फुर्सत है।" यह कहकर वह सहन के फाटक के पास गयी और वहाँ का अड़ंगा हटाकर उन्हें जाने के लिए इशारा किया।

एक-एक करके वे औरतें भिनभिनाती-बड़बड़ाती वहाँ से चली गयीं। जब वे गोसाइन के पास से गुजरीं तो उसे उनके शरीर से सड़े हुए कटहल की बदबू आयी। उसने अपने गताले से तुरन्त अपनी नाक ढाँप ली। फिर उसने बाँस के अड़ंगे को अपनी जगह पर वापस रखा और सहन में मुड़ गयी। अब उसके पास केवल राजाबाहा से आयी नौकरानी रह गयी थी। वह पीछे के आँगन को बुहार रही थी। दुर्गा अब भी अपने लकड़ी के बक्से के पास बैठी रो रही थी और सिसकियाँ ले रही थी।

छोटी गोसाइन उसके निकट आयी और बड़ी सहज होकर बोली, "दुर्गा, यह हमारी नियति ही है कि हम स्त्री के रूप में पैदा हुईं। हमें धैर्य के साथ हर किसी को बर्दाश्त करना सीखना होगा। हमारे पतियों के चल बसने के कारण ही हमारी यह दुर्दशा हुई है। अब मुझे बताओ तुम यह बक्सा क्यों लायी हो और इसमें क्या है?"

दुर्गा ने रोना बन्द कर दिया और कुछ देर के लिए चुप हो गयी। फिर बोली, "चार तोले सोने की एक डुगडुगी है। एक चन्द्रहार भी है। वह गोसाईं को अपने अनुयायियों से भेंट में मिला था··· एक जोड़ी सोने के बुन्दे हैं··· बाक़ी मेरे कपड़े हैं।"

इस पर छोटी गोसाइन ने प्रश्न किया, "तो तुम्हारे सारे ज़ेवर सोने के हैं?"

"हाँ।"

छोटी गोसाइन के स्वर में अब जैसे कि कुछ चिड़चिड़ाहट आ गयी थी। वह बोली, "तब तुम इन्हें यहाँ क्यों लायी हो? वहाँ गोसाइन की हवेली में वे कहीं ज़्यादा सुरक्षित थे।"

"मैं और क्या कर सकती थी? सिर्फ़ यही ज़ेवर बचे हैं मेरे पास जिन्हें मैं बेच सकती हूँ और अपने पति की अस्थियाँ गंगाजी में प्रवाहने वहाँ जा सकती हूँ। अब मेरी केवल यही इच्छा बची है।"

छोटी गोसाइन उदास हो गयी। उसे दुर्गा के लिए थोड़ी चिन्ता भी हो आयी। वह बोली, "सुनो दुर्गा, मेरे घर की हालत तो तुम देख ही रही हो। बिलकुल जर्जर हो रहा है और असुरक्षित भी है। छत टपकती है। मैं तुम्हारी ये कीमती चीज़ें रखने का हौसला कैसे कर सकती हूँ?"

दुर्गा चुप रही। छोटी गोसाइन कहती गयी, "बड़ी गोसाइन की हवेली में बहुत बड़ी परछत्ती है। मैं तो तुम्हें यही सलाह दूँगी कि तुम अपने बक्से को वापस ले जाओ और उसे वहीं परछत्ती में रखवा दो। वहाँ यह सुरक्षित रहेगा।" फिर दुर्गा की ओर उसने अपने हाथ बढ़ाये और उन्हें दिखाते हुए कहने लगी, "देखो इन हाथों को। कोई चूड़ी या अँगूठी नहीं है इन पर। न ही मेरे पास कुछ और है। ये सब चीज़ें तभी चली गयी थीं जब गोसाईं की आतिशबाज़ी में मौत हुई थी। उस समय उसके दिमाग़ में केवल अफ़ीम का ही धुआँ था··· महीधर आता ही होगा। मैं उसके हाथ बक्सा भिजवा दूँगी।"

दुर्गा को इस बात पर गुस्सा आ गया। वह तुनककर बोली, "उस राक्षसी, उस चालबाज़ डायन के पास इसे भेजने की कोशिश मत करना। मैं तुम्हें अपना समझती हूँ और तुम्हीं पर मुझे भरोसा है। यह बक्सा अपने ही घर में पड़ा रहने दो।"

छोटी गोसाइन को जैसे कि गहरा धक्का लगा। वह एकाएक बोली, "अरी, तुम्हारी यह मजाल कि तुम अपनी ही भाभी को राक्षसी और डायन कहो। तुम्हें ज़बरदस्त ग़लतफ़हमी हुई है। चलो, थोड़ा ठण्डा पानी पी लो। तुम्हें अच्छा लगेगा।"

उसने दुर्गा को खड़ी होने को कहा और फिर उसके साथ कुएँ की ओर बढ़ गयी। वह कुआँ कच्चा था। छोटी गोसाइन के पास कभी इतना पैसा नहीं रहा कि वह इसके अन्दर सीमेण्ट का पलस्तर करवा सके। बस, इसके चारों ओर बाँस की बाढ़ खड़ी कर दी थी जो अब खस्ता हो रही थी। बाँसों पर काई जमने के कारण बाँस हरे-काले हो रहे थे।

उसने कुएँ में मोटी रस्सी से बँधे एक पुराने पीतल के बर्तन को लटकाकर पानी निकाला। फिर पानी को दुर्गा की अंजलि पर उँड़लते हुए बोली, "मैं अब भी यही सोचती हूँ कि यह बक्सा यहाँ नहीं होना चाहिए। चलो, महीधर को आने दो। मैं अपनी ज़मीन के दस बीघे में खुद धान बोने की सोच रही हूँ। पातहल्दिया वाली मेरी ज़मीन को काश्तकार खाली करने से इनकार कर रहे हैं। काम करवाना कितना मुश्किल हो गया है। महीधर कहता है कि वह उन्हें कुछ पैसा देकर वहाँ से हटा सकता है। ओह! कैसा ख़राब समय आ गया है।"

लेकिन उसके शब्द दुर्गा पर कोई असर नहीं कर पा रहे थे। दुर्गा अब भी सिसकियाँ ले-लेकर रोये जा रही थी, और गताले से अपने आँसू पोंछे जा रही थी।

छोटी गोसाइन पिछवाड़े में गयी और वहाँ से राजाबाहा वाली नौकरानी को बुला लायी। फिर उससे बोली, "जाओ, जाकर देखो, क्या महीधर बापू वहाँ सड़क पर है? वह इन्द्रनाथ गोसाईं से बात कर रहा था। उससे कहो कि वह फ़ौरन चला आये।"

छोटी गोसाइन की बात सुनकर नौकरानी बोली, "लेकिन माँ, वह तो यहीं खड़ा तुम दोनों की बातें सुन रहा था।"

"क्या? वह यहीं था?"

"हाँ, माँ!"

"तब तुमने मुझे बताया क्यों नहीं?"

"वक़्त ही कहाँ था? वह कुछ देर तक दीवार के पीछे खड़ा सुनता रहा। फिर वह वहाँ से हट गया।"

छोटी गोसाइन हँसने लगी और बोली, "मुझे विश्वास है कि वह मेरी पात-हल्दिया वाली ज़मीन से किरायेदारों को हटाने में सफल रहा है।"

दुर्गा छोटी गोसाइन से फिर अनुनय कर रही थी, "मैं तुमसे विनती करती हूँ कि इस बक्से को यहीं रहने दो। यह तुम्हारे कमरे में लकड़ी के उस पीढ़े पर पड़ा

रहेगा। अगर मेरे ये ज़ेवर चले गये तो मेरे पास कुछ नहीं बचेगा। मेरे तमाम दिन अँधियारे और रातें भयावनी हो जायेंगी।"

छोटी गोसाइन कुछ देर तक चुप रही। फिर वह अनमनी-सी हुई बोली, "ठीक है, उसे वहाँ मेरी खटिया के नीचे रख दो। लेकिन खाना आज तुम मेरे साथ ही खाओ। हवेली में तभी वापस जाना। जब तुम्हारा सब कुछ चला ही गया है, तब यह हठ किस काम का? तुमसे सबसे बड़ी भूल यह हुई कि तुम अपने पति का घर छोड़कर चिकारहाटी से इन्द्रनाथ के साथ यहाँ चली आयीं। तुम्हारे कोई बच्चा तो है नहीं। तब तुम्हारी ससुराल वाले तुम्हें किस आधार पर ज़मीन और जायदाद में हिस्सा दें? अगर यह सब कुछ तुम्हें चाहिए ही, तो तुम्हें गुवाहाटी में कचहरी में जाना होगा। कर सकोगी यह सब? क्या यह सम्भव है?"

दुर्गा ने उत्तर दिया, "इन्द्रनाथ मेरी मदद करेगा। उसे मुझसे बहुत स्नेह है। वह मेरा सम्मान भी करता है··· अभी तक दामोदरिया गोसाइनों में से किसी ने भी कभी गुवाहाटी की कचहरी में क़दम नहीं रखा। मुझे भी यह सब करना नहीं पड़ेगा। मुझे विश्वास है कि वे एक दिन आयेंगे और मुझे लिवा ले जायेंगे।"

छोटी गोसाइन दुर्गा से कुछ और कहना चाहती थी, लेकिन उसने अपने को रोक लिया। सड़क पर उसे जगन्नाथपुरी के पण्डे दिखाई दे गये थे। वे हेरामदो की दिशा से आ रहे थे।

सूरज माटियापहाड़ के पीछे लुप्त होता जा रहा था। उसका पीला प्रकाश आकाश में कद्दू की बेल के पीले फूलों की तरह फैलता जा रहा था। पेड़ों और झाड़ियों को पहले जो कोमल और रेशमी प्रकाश ढाँपे हुए था, वह अब एकाएक अँधियारे में परिवर्तित होता जा रहा था।

छोटी गोसाइन और दुर्गा शाम का खाना खा चुकने के बाद बरामदे में बैठी हुई थीं। दोनों को इन्तज़ार था कि हवेली से बुलावा ज़रूर आयेगा। उन्हें तो यह भी उम्मीद थी कि बड़ी गोसाइन या तो स्वयं आयेगी या दुर्गा को लिवाने किसी को भेजेगी। लेकिन सड़क पार से कोई संकेत नहीं मिला। सम्भवतया गिरिबाला उस क्रिस्तान मार्क के साथ किसी पुरातन और जर्जर पाण्डुलिपि में उलझी हुई थी।

दुर्गा ने गताले से अपना मुँह पोंछा और बोली, "इन्द्रनाथ अपने अनुयायियों से मिलने बाघजप गया है। अगर वह घर में होता तो मैं इस तरह अब तक यहीं न पड़ी रहती।"

उसकी आँखों में आँसू तिर आये थे। वह अपनी भावनाओं को काबू में नहीं रख पा रही थी। लेकिन फिर उसे आशा की एक किरण दिखाई दी। इन्द्रनाथ का अब बोलो के यहाँ से लौटने का समय हो गया है। जैसे ही उसे इन बातों के बारे में गोसाइन से पता चलेगा, वह दौड़ा-दौड़ा चला आयेगा। हाँ, वह ज़रूर आयेगा। उससे यह बर्दाश्त नहीं होगा कि गोसाईं परिवार की बेटी एक रात के लिए भी घर से बाहर रहे।

आधी रात बीत चुकी थी। छोटी गोसाइन और दुर्गा अपने पाँवों के बल एक-दूसरे के निकट, बरामदे में बैठी थीं। छोटी गोसाइन को नींद के झोंके आ रहे थे। वह कभी अपना सर अपने घुटनों पर टिका लेती और कभी दीवार के सहारे कर लेती। दुर्गा की आँखें पूरी तरह खुली थीं, लेकिन इन्द्रनाथ को लेकर उसके मन में कई तरह के विचार आ रहे थे, जिनमें चिन्ता और भय, दोनों मिले हुए थे··· वह तो सत्र का भावी अधिकार है··· लेकिन वह करता क्या है? तमाम दोपहर, और देर रात तक, बोलो के यहाँ पत्ते खेलता रहता है। वह पागल हाथी यहाँ-वहाँ, हर कहीं, मँडरा रहा है। अगर वह आधी रात के समय सड़क पर आ गया और उसने इन्द्रनाथ पर हमला कर दिया, तब? भगवान ऐसा न करे। वह जल्दी सही-सलामत घर लौट आये।

छोटी गोसाइन वैसे ही अपने घुटनों पर अपना सर टिकाये गहरी नींद में उतर गयी थी। उधर बाहर, माटियापहाड़ पर, गीदड़ों ने बाँसों के झुरमुटों के पीछे से एकाएक हू-हू करना शुरू कर दिया था। कुएँ की ओर से एकाएक एक उल्लू उड़ता हुआ आया और धान कूटने वाले ओसारे की छत पर जा बैठा और दुर्गा की ओर अपनी बड़ी-बड़ी, गोल-गोल आँखों से घूरने लगा।

दुर्गा अब क्या करे? वह बरामदे से उठी और बातघर की ओर बढ़ गयी। वह अपशकुनी पक्षी भी उसके पीछे-पीछे हो लिया और बातघर की छत पर जा पहुँचा। एक विचित्र, अचिह्नित-सा भय दुर्गा के रक्त को ठण्डा किये दे रहा था। वह पछतावे की भावना से बुरी तरह परेशान थी। वह मूर्खों की तरह वहाँ से क्यों चली आयी? पद, प्रतिष्ठा तथा आत्मसम्मान, इन शब्दों का उसके जीवन में अब कोई अर्थ नहीं रहा था··· वह क्या करे? मन्दिर जाकर वहीं सो जाये? वह बातघर के भीतर किंकर्तव्यविमूढ़-सी खड़ी थी और यह निर्णय नहीं कर पा रही थी कि उसका अगला क़दम क्या हो। फिर एकाएक उसकी निगाह गोसाईं के घर में हिलती हुई रोशनी पर पड़ी। वह सम्भवतया लालटेन की रोशनी थी और उस जगह से आ रही थी, जहाँ हाथी का हौदा और अन्य साज़ोसामान रखा जाता था।

दुर्गा अब बहुत उत्तेजित थी। वह उसी उत्तेजना में छोटी गोसाइन की ओर दौड़ती हुई गयी और उसे जगाते हुए बोली, "देखो, कौन आ रहा है? मैंने कहा था न कि इन्द्रनाथ ज़रूर आयेगा।"

इसके थोड़ी देर बाद ही इन्द्रनाथ सहन में दाख़िल हो गया। वह अपने हाथ में एक लालटेन लिये हुए था। छोटी गोसाइन अपने गताले और मेखला को ठीक करती हुई हड़बड़ाकर खड़ी हो गयी। लालटेन की रोशनी में उसकी श्वेत त्वचा अंग्रेज साहिबों की त्वचा की तरह चमक रही थी। वह बोली, "अच्छा हुआ इन्द्रनाथ, जो तुम आ गये। इसे ले जाओ। इसे तुम्हारी माँ की छत्रछाया में ही रहना चाहिए। जिस समय यह यहाँ आयी थी, इसके दिमाग़ की हालत ठीक नहीं थी। अब काफ़ी कुछ सँभल चुकी है।"

इन्द्रनाथ ने फाटक पर आर-पार रखे बाँस के अड़ंगे को हटाया और सड़क पर

चलने लगा। दुर्गा अपने सर को गताले से ढाँपे उसके पीछे-पीछे चल रही थी। वह उल्लू भी उनका पीछा कहाँ छोड़ने वाला था। वह भी बातघर से उड़ा और उनके ऊपर से गुज़रकर उस गलियारे पर जा बैठा जहाँ हाथी का साज़ोसामान पड़ा था।

छोटी गोसाइन ने फाटक का अड़ंगा वापस अपनी जगह कर दिया। फिर वह सरसों के तल का दीया उठाकर ढेकी की ओर गयी जहाँ एक लालटेन बिस्तर पर अपना मद्धिम प्रकाश बिखेर रही थी। वह कुछ देर तक वहीं, वैसे ही, खड़ी रही और महीधर को बिस्तर पर गहरी नींद में सोये देखती रही। महीधर की नंगी छाती के बाल दीये के पीले प्रकाश में ऐसे चमक रहे थे जैसे कि किसी ने उन्हें जगलिया के स्वच्छ जल से अभी-अभी धोया हो। वह उन्हें बराबर देखे जा रही थी। दक्षिणी तट के इस इलाक़े में उसने इतने पुष्ट शरीर वाले व्यक्ति को पहले कभी नहीं देखा था।

उसने यह क्यों नहीं पूछा कि गोसाइन ने खाना खाया भी है कि नहीं? उसे पूछना चाहिए था कि गोसाइन, किस चिन्ता में हो? मुझे बताओ। मैं तुम्हारी समस्या का हल ढूँढूँगा।

उसने फिर दीये के मद्धिम प्रकाश में महीधर के शरीर पर दृष्टि डाली। उसकी त्वचा का रंग जगलिया नदी के किनारे की चकाचौंध पैदा करने वाली भूरी कीच से मिलता था। उसके भीतर उसे छू लेने की तीव्र इच्छा जागृत हो गयी थी··· आह! जैसे स्वयं श्री रामचन्द्र जंगलों में दिन भर भटकने के बाद निद्रा ले रहे हों। फिर उसे उसी दीये के प्रकाश में उसके जनेऊ से बँधी पुखराज की अँगूठी चमचमाती दीख पड़ी।

छोटी गोसाइन उसे देखे ही जा रही थी। क्या वह भीतर प्रवेश करे? क्या वह उसके थोड़ा और निकट हो जाये?

अचानक वह उल्लू ज़ोर-ज़ोर से चीख़ता हुआ और उसके सर पर झपटता हुआ ढेकी की छत पर जा बैठा। वह वहीं से मुड़ी और बरामदे में चली गयी। उसे लगा जैसे कि वह घायल शिकार है। वह स्वयं को धिक्कारने लगी और धिक्कार और विषाद की यह भावना उसके समूचे अस्तित्व पर छा गयी। ···यह तो बहुत बड़ा पाप होगा! यह तो उसे नरक की अग्नि में धकेल देगा और उसे पूरी तरह भस्म कर डालेगा! हे ईश्वर, क्षमा करो, क्षमा करो, मुझे।

उसे उस अपशकुनी पक्षी की तीखी चीख़ बराबर सुनाई दे रही थी। वह ढेकी की छत पर बैठा था। उसने आकाश की ओर देखा और स्वयं से कह उठी, "यह पक्षी! यह भीतर चला आया है। ईश्वर हमें क्षमा करना।" अब वह अपने कमरे के भीतर गयी। दुर्गा का लकड़ी का बक्सा वहीं पड़ा था और अपनी उपस्थिति का पूरा एहसास करा रहा था। उसने जल्दी से एक फटा-पुराना शाल निकाला और उसे बक्से पर ओढ़ा दिया। वह एकाएक बहुत ही दुःखी और अशक्त हो उठी थी, जैसे कि उसकी तमाम शक्ति किसी ने उलीच ली हो। वह आहिस्ता से अपने बिस्तर की ओर बढ़ी और उस पर लेट गयी।

# आठ

सभी पुराने कांग्रेसी कार्यकर्त्ता या तो होमगार्ड बन गये थे या फिर अफ़ीम उन्मूलन शिविर के निषेध अधिकारी। वे हमेशा खाकी कमीज़ और खाकी निक्कर पहने रहते और उनके हाथ में एक लम्बा डण्डा होता। उनमें से कुछ ने सत्र के एक-एक कोने को छान मारा था और बड़ी मुश्किल से उन तमाम मर्दों और औरतों की एक सूची तैयार की थी जो बुरी तरह से अफ़ीम के आदी हो चुके थे। कई बार वे अफ़ीम के तस्करों की गतिविधियों का पता लगाने में जासूसों का काम भी करते। अफ़ीम अधिनियम 1949 में संशोधन हो जाने से इन होमगार्डों और निषेध अधिकारियों को व्यापक अधिकार मिल गये थे। वे बिना वारण्ट के किसी भी झोंपड़ी या घर में घुस सकते थे।

उस रात ईलीमन से अजीबोगरीब हालात में भेंट हो जाने के बाद इन्द्रनाथ ने पूरी तरह फैसला कर लिया था कि वह कूच-बिहार के उस ब्राह्मण की तस्करी पर होमगार्डों की मदद से तगड़ा जाल फेंकेगा। लेकिन उसे फुर्ती से काम करना होगा। उस बुढ़िया ने अब तक तो किसी न किसी तरह इस सच्चाई को छिपाने में सफलता पायी थी कि ईलीमन वयस्क हो चुकी है, लेकिन अगर कूच-बिहार के उस गन्दे ब्राह्मण को किसी तरह इस बारे में पता चल गया तो वह फ़ौरन उसके बाप के पास शादी के प्रस्ताव के साथ पहुँच जायेगा। इन्द्रनाथ के मन में अब भी ईलीमन का सौन्दर्य हिलोरें ले रहा था और उसकी याद उसके समूचे अस्तित्व को जकड़े हुए थी।

एक सुअवसर उसके सामने अपने आप एकाएक आ उपस्थित हुआ। जुलाई का महीना था। इन्द्रनाथ बोलो के ताश के अड्डे के लिए रवाना होने को था। एक बार ज़ोर की बारिश हो चुकी थी। उसने अपनी साइकल उठायी और बातघर में आकर रुक गया। अभी बूँदा-बाँदी चल ही रही थी। एकाएक उसे चिंघाड़-सी सुन पड़ी। यह चिंघाड़ उसी मस्त हाथी की थी जिसने अपनी ज़ंजीरें तुड़वा ली थीं। वह उस आवाज़ को फौरन पहचान गया। यह उसी लम्बे दाँत वाले हाथी की थी। यह बिना दाँत वाला हाथी, जैसा कि लोग समझते हैं, नहीं हो सकता। इस हाथी को भी सत्र में दोहार से लाया गया था।

इन्द्रनाथ का इसके साथ ख़ास लगाव था। वह कितना भरा-भरा और बलिष्ठ दिखता था। प्रशिक्षण के दौरान तो यह बेहतर से बेहतर होता गया था। आह! इसकी चिंघाड़ की क्या बात थी! जैसे एकसाथ सहस्र शंख बज उठे हों। नहीं, नहीं, नहीं, इस क्रुद्ध चिंघाड़ की तुलना शंखनाद से नहीं की जा सकती। इस आवाज़ में क्रोध ही नहीं था, बल्कि चुनौती भी थी और साथ-साथ बढ़ते विनाश की सूचना थी। उसे बाँसों का रौंदा जाना और कुचला जाना साफ़ सुन पड़ रहा था।

जंगलात के महकमे के अहलकार पूछताछ करने रानी से आये थे। गुवाहाटी की पुलिस भी आयी थी और उनकी रिपोर्ट ले गयी थी। रिपोर्ट में कहा गया था कि यह मस्त हाथी पहले ही धान के दो खेत बरबाद कर चुका है, हालांकि इसने अभी तक किसी की जान नहीं ली, लेकिन किसी वक़्त कुछ भी हो सकता था। कमिश्नर साहब को शायद उसे गोली मार देने का आदेश ही देना पड़े। इस बीच बंगरा, दतारा और चापापुरी के निपुण फन्देबाज़ों ने उसे पकड़ने की कोशिश की थी, लेकिन कामयाब नहीं हो सके थे। हाथियों के बाड़े में एक ओझा भी था जिसने पशु को अपने मन्त्रों से शान्त करने की कोशिश भी की थी।

सुबह के वक़्त इन्द्रनाथ की माँ, गोसाइन, ने उसे चेतावनी दी थी, "वह मस्त हाथी यहीं कहीं पास में घूम रहा है। आज रात बोलो के अड्डे पर नहीं जाना। सुना, बेटे। वादा करो मुझसे।"

इन्द्रनाथ ने इस बात को प्यार से हँसी में उड़ा देना चाहा था। उसका उत्तर था, "वाह! सभी हाथी तो मुझे अच्छी तरह जानते हैं। वे मुझे फ़ौरन पहचान जायेंगे और मुझे कुछ नहीं कहेंगे।"

"लेकिन बेटे, जब हाथी मस्त हो रहा हो तो वह अपने मालिक को भी भूल जाता है। वह इतने होशोहवास में नहीं होता कि किसी को पहचाने।"

इस पर इन्द्रनाथ ने व्यंग्य किया, "तुम्हें याद है, माँ, जब इस हाथी का पहले पहल दाँत दिखाई दिया था? उस दाँत से मैंने अपनी पंजाबी के बटन बनवाये थे। आज मैं वही पंजाबी पहनूँगा। तुम्हें याद ही होगा उसका व्यवहार कितना बढ़िया होता था? मेरे निर्देशों को उसने कितनी जल्दी पकड़ा था।"

गोसाइन का उत्तर भी उतना ही रोषपूर्ण था। "यह बकवास छोड़ो। ऐसे बात कर रहे हो जैसे कि वह तुम्हारे बटनों को पहचान लेगा।"

इन्द्रनाथ ने ज़्यादा इन्तज़ार नहीं किया। इससे पहले कि उसकी माँ कुछ और कहती, उसने अपनी साइकल उठायी और बातघर की ओर चल पड़ा, जैसे कि उसे कोई अनजानी मजबूरी घेरे हुए हो। ···उसके भीतर उस जीर्ण-शीर्ण झोंपड़ी की सरकण्डों वाली झीनी दीवार के पीछे से दीये के प्रकाश की लौ को फिर से देखने की तीव्र इच्छा हो उठी थी।

बारिश अभी रुकी ही थी। पानी की बूँदें भटरा की झाड़ियों और कटही जामुन के पेड़ों के पत्तों से टपक रही थीं। कुछ बूँदें इन्द्रनाथ पर भी गिरीं। बारिश में ऐरम के पौधे खूब उग आये थे और उनके चौड़े, गीले पत्ते चमचमा रहे थे। छोटे-छोटे पानी के साँप भी बाहर चले आये थे और मेंढक यहाँ-वहाँ फुदक रहे थे। पिछले वर्ष, जब मौसम ऐसा ही हो रहा था तो उसने बोलो के यहाँ जाना बन्द कर दिया था। लेकिन अब तो यह उसके भीतर का आग्रह था। फिर कुछ समय से अफ़ीम उन्मूलन शिविर

के कार्यकर्त्ताओं ने बोलो के अड्डे पर भी आना शुरू कर दिया था जिससे उनसे मिलना और बातचीत करना आसान हो गया था।

वह कोढ़ी अपनी उसी पुरानी जगह पर उकड़ूँ बैठा था। उसके घुटने उसकी छाती से सटे हुए थे। वह पूरी तरह तर था और एक भीगे हुए गिद्ध की तरह दिखाई दे रहा था।

इन्द्रनाथ अब भवती के घर के निकट था। वह उस झीनी दीवार के पीछे जल रहे दीये को देख सकता था। दीये की मद्धिम रोशनी बाहर तक आ रही थी, जिससे भीतरी कक्ष कुछ-कुछ दिखाई दे रहा था। रोशनी की इस लौ में उसके लिए एक विचित्र आकर्षण था··· उसे वहाँ कुछ और आकृतियाँ भी दिखाई दे रही थीं। हो सकता है तस्करी वाली अफ़ीम का कुछ अफ़ीमची मज़ा ले रहे हों। दरअसल, वह वहाँ से थोड़ा-थोड़ा धुआँ बाहर आते हुए भी देख सकता था। पास के एक फ़ीलख़ाने से हाथी की लीद में मिलाये गये सुपारी के भुने पत्तों की गंध भी इन्द्रनाथ की नाक में भर रही थी।

वह जानता था कि यह गंध उस कक्ष से आ रही है जहाँ एक लालटेन लटक रही है। कूच-बिहार वाला वह ब्राह्मण ज़रूर वहाँ पहुँच गया होगा। अच्छा मौक़ा है यह उसे रंगे हाथों पकड़ने का! अफ़ीम के इन तस्करों को अपने मूलस्थान, राजापुखरी, लौटने का कोई मौका नहीं मिलना चाहिए। उन्हें वहाँ पकड़ना मुश्किल होगा, क्योंकि राजापुखरी के कार्यकर्त्ता उतने सक्रिय नहीं हैं।

हाँ, यही वक़्त है। इसे हाथ से गँवाना नहीं चाहिए। उसने सड़क पर अपने कदम बढ़ाये। वहाँ सड़क की सतह पर नये-नये पत्थर लगाये गये थे। उस जर्मन साहिब, गिलमैन ने ही इस रास्ते की मरम्मत करवायी थी। कुछ साल पहले यह सड़क बहुत ही ख़राब हुआ करती थी। गिलमैन साहिब की छोटी फोर्ड मुश्किल से, जब वह कभी-कभार इधर आता, मनियारी-किनियारी तक पहुँच पाती थी। फिर उसे इस सत्र तथा बरदोआ चाय बागान तक लाने के लिए हाथियों से खिंचवाना पड़ता··· कभी-कभी गुवाहाटी और उसके परे के चाय बागानों के गोरे साहिब इस सड़क पर शिकार खेलने आते थे। तब उनकी कारें सड़क के ख़राब हिस्सों में फँस जाया करती थीं और वे हाँफते हुए फीलखाने तक दौड़े चले आते थे और अनुनय-विनय करने लगते थे। कुछ हाथी इस काम में बड़े दक्ष हो गये थे, विशेषकर यह हाथी जो अब मस्त हो रहा था। गोरे साहिबों की कितनी फोर्ड गाड़ियाँ इसने खींची होंगी।

इन्द्रनाथ जब लकड़ी के पुल पर एक विशेष स्थल के निकट पहुँचा तो उसे वह चाँदनी रात वाली मुलाक़ात याद आ गयी जो उसके और ईलीमन के बीच हुई थी। तब से अब तक पूरा एक हफ्ता बीत चुका था··· पर नहीं, आज तो पुल के आस-पास कोई नहीं है। पुल के नीचे से नदी की धारा अपने पहले वाले वेग से बह रही थी और बहते पानी की गर्जन हवा में चारों ओर फैल रही थी। बाढ़ के साथ बहकर आयी

लंटाना झाड़ियों की टूटी हुई टहनियों और घास से एक खास तरह की गंध उठ रही थी।

इन्द्रनाथ आगे बढ़ गया। उसने बोलो के फाटक पर लगा अड़ंगा हटाया और अड्डे में दाख़िल हो गया। बोलो ने बहुत शानदार व्यवस्था कर रखी थी। खुली हवा में बाँस के डण्डों के सहारे तिरपाल को फैलाया गया था और उसे मज़बूती से बाँध दिया गया था। दो कोनों में दो गैस बत्तियाँ, जिन्हें अच्छी तरह साफ़ किया गया था, खूब चमचमा रही थीं और ऐसा लगता था जैसे कि वहाँ दिन का समाँ हो। कांग्रेस के पुराने कार्यकर्त्ता और अफ़ीम निषेध समिति के स्वयंसेवक वहाँ ताश पार्टी में शामिल होने के लिए पहले से ही पहुँचे हुए थे। वे बड़े सहज दिख रहे थे और बीड़ी पी रहे थे। चौधरी और दास, जो कि बोलो की ताश पार्टी के नियमित सदस्य थे और जिन्हें पत्तेबाज़ी की ज़बर्दस्त ललक थी, वे भी नरम गद्दी पर आलथी-पालथी मारे बाज़ी के लिए बिलकुल तैयार बैठे थे। यहाँ-वहाँ पीतल के मोटे गिलास भी पड़े थे जो चाय से भरे हुए थे। इसके अलावा वहाँ सुपारी की तश्तरियाँ भी थीं जिन पर खिलाड़ियों के हाथ आसानी से पहुँच सकते थे। छोटे गोसाईं पर उनकी नज़र पड़ते ही वे सब उठकर खड़े हो गये। वहाँ दो होमगार्ड भी थे। शायद वे निचली जाति के थे। उन्होंने उसे दण्डवत् प्रणाम किया और उसके पाँव की धूल अपने माथे पर लगायी।

ताश की बाज़ी देर रात तक चलती रही। अफ़ीम निषेध समिति के होमगार्ड एक साथ खड़े हो गये और इन्द्रनाथ के निकट होते हुए बोले, "हुज़ूर, कल सुबह समिति की बैठक होगी। दक्षिणी तट से हमारे तीन सेक्रेटरी भी वहाँ मौजूद रहेंगे।"

इन्द्रनाथ ने उनकी तरफ़ देखा और बोला, "सुना है हमारा यह इलाका अफ़ीम की तस्करी का केन्द्र बन गया है। मेरा ख़याल है कि तुम्हें इसकी ख़बर है और तुम चौकन्ने भी हो।"

"छोटे गोसाईं, इस धन्धे में हैं तो बहुत लोग, लेकिन दुर्भाग्यवश हम अभी तक सिर्फ एक ही अफ़ीमची को पकड़ सके हैं। उसे हमने लगभग रंगे हाथों पकड़ा है। मिनियारी-किनियारी वाली यह वही दुष्ट औरत है जो अफ़ीम की गोलियाँ तैयार करते समय कुछ गोलियाँ अपने लिए इधर-उधर कर देती थी। लेकिन जब हम उसे भीतर ले गये और उसकी तलाशी ली तो अफ़ीम गायब थी। हम अब तक भी समझ नहीं पाये हैं कि उसने अपने शरीर के किस हिस्से में उसे छिपाया था। बड़ा अजीब माजरा है यह। हमने एक दूसरी औरत का इन्तज़ाम किया कि उसे नंगा करके उसकी तलाशी ले। लेकिन उसे भी कुछ नहीं मिला। वाकई, बड़ी अजीब बात है यह।"

हर कोई ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा। बोलो भी अपनी हँसी मुश्किल से ही रोक पा रहा था। वह बोला, "होमगार्ड बापू, औरत का शरीर उतना ही रहस्यमय है जितना

कि उसका चरित्र। अब एक छोटी-सी अफ़ीम की गोली के बारे में क्या कहें। वह तो समूचे हाथी को अपने भीतर छिपा सकती है।"

वहाँ मौजूद सभी लोग फिर हँसने लग गये। इन्द्रनाथ अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ, लेकिन बोलो ने उसका हाथ थाम लिया और उसे रोकने की कोशिश करने लगा, "बारिश अब रुक गयी है और चाँद पूरी तरह चमक रहा है। आप अब कहाँ जाना चाहते हैं?"

इस पर चौधरी, जो जात्रा टोलियों में काम करता था, बोला, "मेरा ख़याल है आप उस दुष्ट हाथी से डरे हुए हैं और जल्दी से जल्दी घर पहुँचना चाहते हैं। मैंने सुना है कि वह जिरंग तक घूम आया है और अब माटियापहाड़ वापस आ गया है। छोटे गोसाईं, उस दिन आप डींग मार रहे थे कि आप उस प्रेत को पकड़ कर रहेंगे। क्या आपको कामयाबी मिली?" यह कहकर वह विद्रूपभरी हँसी हँसने लगा।

लेकिन इन्द्रनाथ भी कहाँ पीछे रहने वाला था। उसका उत्तर था, "मैं उस हाथी से बिलकुल नहीं डरता। इधर मेरी पंजाबी की ओर देखो। मैंने उसी के दाँत से बने बटन इसमें टाँक रखे हैं। और रही बात उस प्रेत की! बस, देखते रहो कैसे मैं उस मनगढ़ंत क़िस्से का पर्दाफ़ाश करता हूँ।"

इन्द्रनाथ के साथ अब दो होमगार्ड थे। तीनों के पास पुरानी साइकलें थीं। जब वे चल रहे थे तो इन्द्रनाथ की साइकल को भी धकिया रहे थे। कुछ देर तक वे चुपचाप चलते रहे। जब वे लकड़ी के पुल के पास पहुँचे, तो इन्द्रनाथ ने कहा, "तुम लोग जानते हो कि मैंने ताश की बाज़ी एकाएक क्यों छोड़ दी और तुम लोगों के साथ क्यों चला आया?"

"क्यों, छोटे गोसाईं, क्यों?"

"मेरे हाथ कुछ भेद लगे हैं।"

"भेद? कैसे भेद?"

"मैंने एक अफ़ीम के तस्कर का पता लगा लिया है। वह इस वक़्त यहीं है। इस स्थल से ज़्यादा दूर नहीं है।"

दोनों होमगार्ड बहुत उत्तेजित हो उठे। उनमें से एक बोला, "गोसाईं, कृपया हमें थोड़ा विस्तार से बताइए। कल सुबह हम इस बात को अपनी मीटिंग में उठायेंगे।"

"हाँ, गोसाईं, हो सकता है हमें कोई पुरस्कार भी मिल जाये। आप जानते ही हैं कि हम कोई भी कार्यवाही न कर सकने के कारण कितने बदनाम हैं। हमें शर्म से अपना सर झुका देना पड़ता है," दूसरे होमगार्ड ने कहा।

अब पहले वाले होमगार्ड ने प्रश्न किया, "वह कौन है? क्या वह दक्षिणी तट के इलाक़े में चुपके-चुपके घूमने वाला कोई जासूस है?"

"नहीं, नहीं! जासूस नहीं है। वह तस्कर है। असली तस्कर!"

"अरे, राम रे! तस्कर? इस सत्र में?"

उन्हें इतनी उत्तेजना और उत्सुकता हो रही थी कि उन्होंने अपने घुटनों के बल होकर इन्द्रनाथ के पाँव पकड़ लिये।

"मालिक, छोटे गोसाईं! हमें उसका नाम बताइए। हम आपके अत्यन्त आभारी होंगे।"

"मैं उसका नाम नहीं जानता, लेकिन वह भगवती के घर आता-जाता है। विशेष रूप से तब जब राजापुखरी का पुरोहित भगवती के यहाँ आता है। तब वह व्यक्ति उसके साथ होता है। ···क्या तुम जानना चाहोगे कि उसकी पहचान क्या है?"

दोनों एकसाथ बोल उठे, "हाँ, गोसाईं, हाँ।"

"यह व्यक्ति अपने साथ मालभोगा केलों का गुच्छा लाता है जो कि उसकी पुरानी साइकल के हैंडल से बँधा रहता है। यह है उसकी पहचान।"

"क्या? बस, इतनी ही। चलिए फिर। हम जल्दी करें।"

दोनों स्वयंसेवकों ने तेज़ी से चलना शुरू कर दिया। उस वक़्त उनके डण्डे सड़क पर खट-खट की आवाज़ कर रहे थे।

कुछ देर तक इन्द्रनाथ लकड़ी के पुल के पास चुपचाप खड़ा रहा। पुल के एक सिरे के निकट पुराना जामुन का पेड़ था। उस पेड़ से उसकी पंजाबी तथा उसके बिना-ढके सर पर बारिश के पानी के कुछ कतरे गिरे। साथ ही एक अजीब तरह की गन्ध ने उसे घेर लिया। यह गन्ध सड़े हुए पत्तों की थी। वे ज़मीन पर भरपूर मात्रा में थे और कीचड़ में भी धँसे हुए थे। एकाएक उसने पीछे मुड़कर देखा। जो कुछ उसे दीख पड़ा, उससे वह भयभीत हो उठा। वह वहीं का वहीं खड़ा रह गया। उससे मात्र दस गज़ की दूरी पर वह दुष्ट हाथी, पहाड़ का पहाड़, खड़ा था। उसके बड़े-बड़े कान फड़फड़ा रहे थे और उसके लम्बे दाँतों में जंगली बेलें अटी पड़ी थीं। उसकी विशाल काया कीचड़ से सनी हुई थी और वह कीचड़ कहीं-कहीं सूख भी गया था। कैसा भयावना दृश्य था वह! इन्द्रनाथ का समूचा शरीर काँपने लगा। वह! वही है वह! नौ फुट ऊँचा। वह चुपचाप खड़ा है, आतंकित करता हुआ, ठीक उस जामुन के पेड़ के पीछे। उसके भौंथरे सिरों वाले दाँत नीचे की ओर आते हुए, और उसकी मोटी सूँड अज़दहे की तरह बल खाती हुई।

इन्द्रनाथ को लगा जैसे कि कोई ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर कह रहा है, "भागो! भाग जाओ, गोसाईं, तेज़ी से। जितनी तेज़ी से बन पड़े।"

नहीं, नहीं। हाथी उस पर हमला नहीं करेगा। वह तो चुपचाप खड़ा है।

···यह रहा वह! जगन्नाथ, महाप्रभु का सबसे प्यारा हाथी। कई बार इन्द्रनाथ उसकी पीठ पर बैठकर कुलसी नदी के तल पर फँसी लकड़ी के लट्ठों से लदी नावों को निकलते देखता रहा है। महावत ने अंकुश से इसके सर पर कितने ही घाव के निशान छोड़े होंगे। उन्हें देखकर वह अक्सर उदास हो जाता था।

कल्टू महावत उसे बताया करता था कि यह जगन्नाथ बहुत ही नटखट है। इससे पहले उसने ऐसा हाथी कभी नहीं देखा था। जो चीज़ उसे पसन्द न आये, वह उस पर हमला कर देता है··· और अगर किसी से उसे प्रेम हो जाये··· तो यह भी शुभ लक्षण नहीं।

एक दिन बल्टू नाम का एक लालची अफ़ीमचोर उसके पास आया और कहने लगा, "क्या शानदार हाथी है! गोसाईं जब उस पर अपने अनुयायियों के यहाँ जाने के लिए सवारी करता है तो वह बिलकुल राजा दिखता है··· क्या तुम मेरे जैसे एक ग़रीब अफ़ीमची को इस सुन्दर हाथी पर बैठने का एक मौक़ा नहीं दोगे? ओ भइया! मुझे सिर्फ़ एक बार बैठने का मौक़ा दो। बदले में मैं तुम्हें कुछ अफ़ीम दूँगा।" छोटे गोसाईं, आप ही बताइए मैं क्या करता। एक दिन लालच में आकर मैंने उसकी ज़ंजीरें खोल दीं और उस चोट्टे बल्टू को उसकी पीठ पर बैठा दिया। हम जगन्नाथ पर सवार बारीहाट की ओर बढ़ रहे थे। जब हम पुल के पास से होते हुए एक जामुन के पेड़ के निकट आये तो जगन्नाथ एकाएक रुका और ऐसा दिखावा करने लगा जैसे कि उसकी पीठ पर जबर्दस्त खुजली हो रही हो। उसने पेड़ के तने से अपनी पीठ रगड़नी शुरू कर दी। होते-होते यह रगड़ने की प्रक्रिया बढ़ गयी और इतनी ज़्यादा बढ़ी कि बल्टू ने अपना सन्तुलन खो दिया और वह नीचे ज़मीन पर धम से आ गिरा। बड़ी मुश्किल से मैंने जगन्नाथ पर काबू पाया, वरना वह उसे अपने पाँव तले कुचल डालता। बल्टू वहाँ से अपने सर पर पाँव रखकर भागा और साथ-साथ चिल्लाता रहा—यह मुझे मार देगा। यह मुझे मार देगा। ···छोटे गोसाईं, मैंने अपने जीवन का आधा हिस्सा कई तरह के हाथियों की पीठ पर ही गुज़ारा है। जब तक यह घटना नहीं घटी थी, मैं यकीन नहीं कर सकता था कि हाथी दैवी जीव है, हालाँकि लोग अक्सर यह कहा करते थे··· लेकिन अब मेरा इसमें यक़ीन हो गया है।"

जगन्नाथ! क्या बात है! इसी दुष्ट हाथी ने पिछले चार दिनों से लोगों को आतंकित कर रखा है। और खड़ा ऐसे है जैसे कि कुछ हुआ ही नहीं, जैसे कि वह गोसाइन के हाथ की तश्तरी से भात खा रहा हो। ओह! सड़ते पत्तों और कीच की यह गन्ध और उसके सर के घावों से ताज़ा कटे बाँसों की खपच्चियों से उठने वाली सड़ांध-सी वह दुर्गंध। हे ईश्वर! हे ईश्वर!

इन्द्रनाथ ने अपने दोनों हाथों से अपनी साइकल के हैण्डल को मज़बूती से पकड़ा और वहाँ बिलकुल चुपचाप खड़ा रहा। वह उस हाथी की लाल-लाल आँखों में टकटकी लगाये देखे जा रहा था और इसी तरह वे एक-दूसरे को घूरते खड़े थे···

···आह! आ! ···उट! ···आ! आ! ···उट! ···उस पगलाये हाथी ने ये अजीब-सी आवाज़ें पैदा कीं। फिर वह एकाएक मुड़ा और साल के जंगल में बिजली की चमक की तरह ग़ायब हो गया।

इन्द्रनाथ वहाँ जड़वत् खड़ा रहा, जैसे कि उस पर गाज गिरी हो। क्या जगन्नाथ ने अपने पागलपन के बावजूद उसे पहचान लिया है? कहा जाता है कि हाथी को पास

की चीज़ें बहुत बड़ी दिखाई देती हैं। इसलिए उसने उसे दूर से ही देख लिया होगा और पहचान लिया होगा। एक अजीब तरह की तीखी पीड़ा उसकी मांस-मज्जा से होती हुई उसकी हड्डियों तक पहुँच गयी। बेचारा जगन्नाथ! एक वक़्त आयेगा जब उसे गोली मारनी ही होगी··· इन्द्रनाथ के अब होश पलटे। अपनी साइकल को धकेलते हुए उसने फिर चलना शुरू कर दिया। जब वह बरगद के पेड़ के निकट आया तो उसने देखा कि भगवती के घर के बाहर काफ़ी हलचल हो रही है। वहाँ कुछ भीड़ भी जुटी थी। हो सकता है होमगार्डों ने आख़िर उसके घर पर छापा मारा हो और कूच-बिहार के उस दुष्ट तस्कर को पकड़ लिया हो।

इन्द्रनाथ वहीं कुछ देर खड़ा वहाँ की गतिविधि देखता रहा। एकाएक एक आवाज़ ने उसे चौंका दिया। उसने मुड़कर देखा। वही कोढ़ी था। "मालिक, आप यहाँ के होने वाले अधिकार हैं। आपके सत्र में अफ़ीम के एक तस्कर को पकड़ लिया गया है। बस, इत्ती-सी बात है। वहाँ देखने को अब है क्या? जाइए, घर जाइए। पहले ही काफ़ी देर हो चुकी है।"

इन्द्रनाथ चुपचाप आगे बढ़ गया।

रात के वक़्त दक्षिणी तट के सेक्रेटरियों की मीटिंग बुलायी गयी थी। उन्हें सोनापुर, बारीहाट, बट्टारहाट, राजाबाहा तथा अन्य जगहों से आना था। यह मीटिंग उसी रात होनी थी। दूसरे, स्वयंसेवकों को भी इसमें बुलाया गया था। लेकिन जब समूचे सत्र में जोतराम भगवती के बारे में ख़बर फैली तो वे स्वयं भगवती के घर पर ही जा जुटे।

एक होमगार्ड के हाथ में ऐसी बन्दूक़ थी जिससे आमतौर पर पक्षी मारे जाते हैं। उसने हवा में दो गोलियाँ छोड़ीं। फिर उन्होंने सोने के कमरे के दरवाज़े को ज़ोर-ज़ोर से हिलाना और बजाना शुरू किया। एकाएक एक व्यक्ति, जो कि कमरे के भीतर चारपाई के नीचे छिपा हुआ था, वहाँ से तेज़ी से निकला और पिछवाड़े की ओर भागा। सब सक़ते में आ गये। वे दोनों स्वयंसेवक, जो कि उसे पकड़ने पर तुले हुए थे, उसके पीछे दौड़े। वह व्यक्ति माटियापहाड़ की ओर बढ़ गया, और पहाड़ी की चोटी पर पहुँचकर फुर्ती से एक सागौन के पेड़ पर चढ़ गया। संभवतया उसका मस्तिष्क अफ़ीम के धुएँ से अभी तक अटा पड़ा था। पास ही के एक दूसरे पेड़ पर एक मचान बनी हुई थी जिस पर जमालुद्दीन गेरिया, डाखला के खानसाहब के हाथी का महावत, पागल हाथी के इन्तज़ार में बैठा हुआ था। वह एकाएक बड़े गुस्से से चिल्लाया, "अरे, कौन हो तुम वहाँ? क्यों मेरे काम में ख़लल डाल रहे हो? मैं पिछले दो दिनों से यहाँ रस्सा लिए बैठा हूँ। वह पागल हाथी अभी तक कहीं दीख नहीं पड़ा। मुझे उसके कानों की फटकार सुन पड़ रही है। काश कि मैं उसकी पीठ पर कूद सकता। तब सब ठीक हो जाता।···"

···सन्नाटा! ···लेकिन अब दौड़ते हुए लोगों और सीटियों की आवाज़ें भी सुनाई देने लगी थीं, और उस व्यक्ति का पीछा कर रहे स्वयंसेवक भी वहाँ पहुँच चुके थे। मचान पर बैठे व्यक्ति की आवाज़ में और गुस्सा भर गया, "ये क्या माजरा है? कौन इतना शोर मचा रहा है? मैं दक्षिणी तट के इलाक़े में तीन पागल हाथियों को पकड़ चुका हूँ। चौथा भी अब मेरी पकड़ में आने को है। तुम लोग यह शोर मचाकर इस मौके को मेरे हाथ से गँवा रहे हो। अरे! पेड़ पर कौन चढ़ रहा है? जानते नहीं कि हाथी तुम पर पिल पड़ेगा और तुम्हें ख़त्म कर देगा? तुम उसकी आवाज़ सुन नहीं रहे? कैसे वह बाँसों को रौंद रहा है! क्या तुम सब बहरे हो गये हो?"

इस बीच वे दोनों होमगार्ड वहाँ आ पहुँचे और हाँफते हुए मचान के पास खड़े हो गये। उधर अफ़ीमची ने जब हाथी के बारे में यह सब सुना तो वह इतना भयभीत हो गया कि उसकी पकड़ पेड़ पर से ढीली पड़ गयी और वह धड़ाम से नीचे आ पड़ा। होमगार्डों ने उसे तुरन्त घेर लिया। इस बीच वहाँ कुछ और स्वयंसेवी भी आ गये थे। उन्होंने अफ़ीमची को रस्से से बाँध दिया। लेकिन वहाँ रुकना क्योंकि ख़तरे से ख़ाली नहीं था, इसलिए वे जल्दी से जल्दी वहाँ से हट गये और गोसाईं के बातघर की ओर चल पड़े।

चाहे रात काफ़ी हो चुकी थी, फिर भी बातघर में काफ़ी लोग जमा थे। उन्हें एक ब्राह्मण अफ़ीम के तस्कर के पकड़े जाने से धक्का लगा था। दक्षिणी तट के इलाक़े में ऐसी घटना पहली बार घटी थी।

वह तस्कर बातघर के एक लकड़ी के खम्भे के सहारे खड़ा था। एक होमगार्ड केलों का एक गुच्छा लाया और उसे उसने तस्कर के सामने ज़मीन पर रख दिया। जब तस्कर ने केलों का वह गुच्छा देखा तो उसका दिल डूबने लगा और वह अपने दोनों हाथों से अपना माथा थामकर अपने पाँवों के बल बैठ गया। होमगार्ड ने एक-एक करके केलों को छीलना शुरू किया। हर केले में से अफ़ीम की छः या सात गोलियाँ निकलीं। जब-जब वह केलों को दबाकर गोलियाँ निकालता, वहाँ खड़े लोगों के मुँह से 'ओह! आह!' की आवाज़ निकलती। ताज्जुब हो रहा था कि किस होशियारी से उसने केलों के भीतर अफ़ीम की गोलियाँ छिपायी थीं।

भीड़ में से एक व्यक्ति बोला, "देखो, किस सफ़ाई से काम किया है! केले के छिलके बिलकुल पहले की तरह दिखते हैं···!"

पौ फटने वाली थी। माटियापहाड़ से तोतों के झुण्ड के झुण्ड चले आ रहे थे और जगलिया नदी की ओर बढ़ रहे थे। जंगली मुरगाबियों की एक लम्बी पंक्ति भी उसी दिशा में अपने वैभव के साथ उड़ी जा रही थी। प्रातःकाल की बयार में जंगली बेरों की सुगन्ध ने एक प्रकार की मृदुता भर दी थी।···

···आख़िरकार होमगार्डों और निषेध अधिकारी ने उस तफ़्तीश को ख़त्म कर दिया। निषेध अधिकारी बोला, "यह पहली बार है कि हमने दक्षिणी तट के एक असली

तस्कर को पकड़ा है। अब इस तस्कर के गारो की पहाड़ियों में अड्डों का भी जल्दी ही पता चल जायेगा। कहा जा रहा है कि कलकत्ता के बन्दरगाह में भी हर रोज़ हमारे यहाँ की अफ़ीम भारी मात्रा में पकड़ी जाती है।"

एक होमगार्ड बड़ी उत्तेजना में बोला, "निश्चित रूप से कूच-बिहार के इस ब्राह्मण के कलकत्ता बन्दरगाह के तस्करों से भी सम्बन्ध होंगे।"

भीड़ भी इस पर अपनी-अपनी टिप्पणी देने लगी, "आह, कितने विचित्र ढंग से यह हर किसी को ठगता रहा। ···बड़े आराम से आता था और चला जाता था। ···जैसे कि हमारी तरह इस सत्र का ही रहने वाला हो! ···ऐसे कपटी ब्राह्मण के बारे में पहले तो कभी नहीं सुना!"

इस बीच होमगार्ड जोकराम भगवती तथा उसके भाई राजापुखरी के पुरोहित को गोसाईं के बातघर में ले आये थे। दोनों के हाथों पर हथकड़ियाँ पड़ी थीं। जोकराम के सर के बाल आधे काले और आधे सफ़ेद थे। इसी प्रकार उसकी भौहें आधी सफ़ेद और आधी काली थीं। उन दोनों की नाक कुछ-कुछ लम्बी थी, गाल चौड़े थे और दोनों तरफ़ लटक रहे थे। जोकराम की आँखें आभारहित थीं। जैसे सूरज की किरणें पड़ने से गंदला पानी दिखता है। दोनों ने घुटनों तक मैली-कुचैली धोती पहन रखी थी। उन्होंने जो जनेऊ पहन रखे थे, वे भी उतने साफ़ नहीं दीख पड़ रहे थे, बल्कि ऐसे दिखते थे जैसे कि किसी पशु की आँतें हों। दोनों ने पुरानी एंडी की पंजाबियाँ पहन रखी थीं। वे ज़मीन पर उकड़ूँ बैठे थे और अपने भाग्य को कोसते हुए कह रहे थे, "कृपया हम पर तरस खाइए! हमें पलासबाड़ी के थाने में मत ले जाइये।" वे हाथ जोड़कर अनुनय कर रहे थे।

इतने में भीड़ में से कोई ज़ोर से कह उठा, "पलासबाड़ी ही क्यों? तुम दोनों को तो गुवाहाटी की जेल में बन्द किया जाना चाहिए जहाँ तुम्हें नीच जाति के लोगों द्वारा पकाये गये मोटे चावल खाने को मिलें।"

अब भीड़ में से एकसाथ अनेक लोग बोल उठे, "अब कोई धरम-करम नहीं बचा! सब खत्म हो गया है। कितने बुरे वक़्तों में से हम गुज़र रहे हैं!"

जोकराम भगवती को एकाएक याद आया कि अफ़ीम अधिनियम की धारा 10 के संशोधन के अनुसार जो लोग अफ़ीम के तस्करों को शरण देते हैं या उनकी मदद करते हैं, उन्हें भी तीन वर्ष की कड़ी सज़ा हो सकती है। उसने होमगार्डों से विनती की, "क्या हम अधिकार गोसाईं से कुछ मिनटों के लिए बात नहीं कर सकते? कृपया हमें उनके पासस ले चलिए।"

दक्षिणी तट से आया एक अधिकार-सम्पन्न अहलकार अब बोल पड़ा, "अफ़ीम के मामलों में गोसाईं अपने हाथों में क़ानून नहीं ले सकता। किसी को उसके पास जाने की इजाज़त नहीं मिलेगी। हमें अब मनियारी-किनियारी जाना होगा। पलासबाड़ी के थाने से पुलिस वहाँ आ जायेगी और जो ज़रूरी कार्यवाई होगी, करेगी।"

राजापुखरी के पुरोहित ने अपनी तमाम प्रतिष्ठा एक तरफ़ रख दी और ज़ोर-ज़ोर से हिचकियाँ लेकर रोने लगा और अपने टूटे हुए, उत्तेजित स्वर में कुत्ते की तरह कीं-कीं करने लगा। "पापियो, तुम सब नरक में जाओगे! हाँ, सब नरक में जाओगे। एक ब्राह्मण की हत्या तुम्हारे सर चढ़ेगी। ···जानते हो हमारे शास्त्रों में क्या लिखा है? कहा गया है कि इस संसार में कई तीर्थ हैं। ये तीर्थ महासागरों में भी हैं··· और यही तीर्थ ब्राह्मणों के चरण-कमलों में भी पाये जा सकते हैं।"

जोकराम भगवती ने भी, गिरफ़्तार होने से बचने के लिए, शास्त्रों से उद्धरण देने शुरू कर दिये। कहने लगा, "वहाँ यह भी लिखा है कि ब्राह्मण के हाथ में स्वर्ग और हरि दोनों विराजमान हैं···और उसके अंगों में कई पवित्र तीर्थस्थल और यज्ञधाम हैं। ···उसकी धमनियों में त्रिगुणात्मक प्रकृति है और उसकी ग्रीवा में गायत्री मन्त्र निवास करता है···"

निषेध अधिकारी ने जोकराम को एकदम टोका। उसमें अब उसे सुनने का धैर्य नहीं था। उसने आदेश दिया, "यह सब सुनने के लिए अब कोई समय नहीं है। हमें तुरन्त मनियारी-किनियारी के लिए रवाना हो लेना चाहिए।"

एकाएक कूच-बिहार का ब्राह्मण, जो कि मुख्य अभियुक्त था, खड़ा हो गया और दूसरे दो ब्राह्मणों की ओर इशारा करते हुए बोला, "ये दोनों क़सूरवार नहीं हैं। इन्हें जाने दीजिए। मैं यहाँ बार-बार इसलिए आता था क्योंकि मैं राजापुखरी के पुरोहित की बेटी से शादी करना चाहता था। इसलिए इन्हें खुश रखने के उद्देश्य से मैंने इनके लिए अफ़ीम की तस्करी की। हुज़ूर, श्रीमान्, इन्हें छोड़ दीजिए।"

लेकिन उसकी बात पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। एक होमगार्ड ने अपनी पकड़ तस्कर पर मज़बूत कर दी और उसे एक रस्से से जकड़ दिया। जोकराम और उसका भाई, दोनों इतने अशक्त थे कि उन्हें बाँधकर ले जाना ज़रूरी नहीं समझा गया। वे सब मुख्य सड़क की दिशा में चल पड़े।

ऐसी सनसनीखेज़ घटना इस सत्र में पहले कभी नहीं हुई थी। एक ब्राह्मण पुजारी को अफ़ीम की तस्करी के अपराध में क़ैदी बना लिया जाये। आसपास के सभी गाँवों में यह खबर जंगल की आग की तरह फैल गयी। लोग, जिस रास्ते से क़ैदियों को ले जाना था, उसके दोनों तरफ़ जमा होने लगे और कुछ तो उनके पीछे-पीछे भी चलने लगे।

सत्र की लगभग सभी औरतें ईलीमन से अपनी हमदर्दी जताने भगवती के घर आ पहुँचीं। तीनों ब्राह्मणों के गिरफ्तार हो जाने के बाद वह अब उस बुढ़िया के साथ अकेली रह गयी थी··· वह कच्चे फ़र्श पर बिछायी गयी एक चटाई पर बैठी थी, बिलकुल मायूस, और आँखें उसकी ज़मीन पर गड़ी हुई। उसके घने, खुले बाल उसकी पीठ पर गिर रहे थे। उसने कंघी नहीं की थी। उसके सुन्दर बालों की एक लट उसके

एक बाजू के ऊपरी हिस्से पर लिपटी हुई थी। उसके धड़ पर ब्लाउज़ वगैरह कुछ नहीं था। केवल गताले और मेखला से उसका वह अच्छी तराश वाला शरीर ढका हुआ था।

अब भगत की पत्नी बोली, "ईश्वर न करे! तुम्हारे जैसी सुन्दर लड़की और कूच-बिहार का वह लम्पट। क्या वह किसी तरह भी तुम्हारे योग्य था? बड़े शरम की बात है। लोग कहते हैं कि कूच-बिहार में वह एक औरत छोड़कर आया है। ई ईश्वर!"

"अगर उसके घर में कोई दूसरी औरत है भी तो क्या हर्ज़ है? डाखला के गोसाईं की दो गोसाइनें हैं और उसे किसी तरह की कोई शरम नहीं। यह ठीक है या नहीं? मैंने सुना है जब एक गोसाइन गोसाईं के साथ लेटती है तो दूसरी आग के पास बैठकर बरामदे में अपनी बारी का इन्तज़ार करती है। लकड़ी की आग के पास लगातार बैठने से उसके हाथ-पाँव काले पड़ गये हैं। उसका समूचा शरीर सूखकर नागफनी की झाड़ियों जैसा कँटीला हो गया है।" यह कहने वाली गुईमैनी थी। वह कद में छोटी और कुबड़ी थी। गोसाइन के साथ बैठकर आमतौर पर तम्बाकू पीने वाली यही होती थी। वह कहती गयी, "मत रो, मेरी बच्ची! छोटा गोसाईं तुम्हारे पिता को बहुत जल्दी छुड़वा लेगा। मेरी बात ध्यान में रखो। यह मैंने अपने कानों से सुना है। चलो, उठो, अब! तुम तो बहुत अच्छी लड़की हो।"

ईलीमन के साथ साये की तरह रहने वाली यह बुढ़िया उठी और उसने अफ़ीमचियों द्वारा फैलायी गयी गन्दगी को साफ़ करना शुरू कर दिया। कई तरह के बर्तन वहाँ बिखरे पड़े थे जो अफ़ीम पीने के काम में आते थे। वहाँ कुछ मिट्टी के बर्तन भी थे जिन्हें सुपारी के पत्तों को भूनने के काम में लाया जाता था। फिर लकड़ी की कलछियाँ थीं, मिट्टी के घड़े के ऊपरी हिस्से को तोड़कर बनाये गये भेम[2] भी थे। इन सब चीज़ों को भीतर ले जाया गया।

गुईमैनी, जो कि अपने कूबड़ के कारण दुहरी हो गयी थी और अपनी कमर को अपने दोनों हाथों से थामे रहती थी, अब फिर बोली, "वह कौन-सा काले मुँह वाला बन्दर था जिसने ऐसा रिश्ता बताने की जुर्रत की?"

बुढ़िया ने उत्तर दिया, "मैं क्या कह सकती हूँ। पुजारी जी की हालत इन दिनों बहुत खराब है। बस, किसी तरह से दो जून की रोटी मिल जाती है। इधर यह जवान लड़की है। कुछ ने दहेज की भी माँग की। कोई बंगाल का होगा! ···मैंने सुना है कि जब गोसाईं की बेटी की शादी हुई थी तो चिकारहाटी के उसकी ससुराल वालों ने कलकत्ता में अपने बेटे की पढ़ाई के लिए सात सौ रुपये की माँग की थी। कितना खराब वक़्त आ गया है।"

एकाएक अब एक दूसरी औरत कह उठी, "सात सौ रुपये।"

"हाँ, हाँ! एक ग़रीब पुजारी की बेटी से इस तरह कौन शादी करेगा? इसके बाप को तो केवल अफ़ीम के पीछे दौड़ने की अक़्ल है। यह एक बाँझ औरत की तरह तमाम उम्र अपने बाप के घर में पड़ी-पड़ी बुड्ढी हो जायेगी।"

"क्या बकवास कर रही है, पागल बुढ़िया! लगता है भात के बर्तन से उठने वाली भाप ने तुझे अंधा कर दिया है। देख, कितने सुन्दर बाल हैं इसके! और इसकी सुन्दर चमड़ी का रंग। जैसे अभी-अभी आसमान से उतरी हो। चलो, चलो तुम सभी! उठो और कमरे में ढूँढ़ो। हो सकता है बाँसों के खोल में कुछ पैसे छिपाकर रखे गये हों। अगर इस ब्राह्मण लड़की को निराहार रहना पड़ा तो समझ लो यह महापाप होगा।"

ईलीमन की साथिन बुढ़िया ने उन बाँसों को खोजना शुरू कर दिया जिन पर चूने के निशान थे। जब उसके हाथ एक ऐसा बाँस लग गया तो उसने उसे सरौते से काटकर खोला। खन-खन करते चाँदी के कई सिक्के एकाएक बाहर आ गये। यह दृश्य देखकर वहाँ बैठी गाँव की सभी औरतें हक्की-बक्की रह गयीं। इस पर गुईमैनी कह उठी, "मैं पक्के तौर पर कह सकती हूँ कि यह पैसा गोरे सिपाहियों का है। वही इसे छोड़ गये होंगे। वह निकम्मा भगवती! हर कोई जानता है कि वह हाथियों के बदन से नोची गयी जोंकों को बेचकर पैसा बनाता था। वह विदेशी सिपाहियों का ठेकेदार था। वह उनके लिए हर तरह की चीज़ें जुटाता था। उसी की वजह से यहाँ के गाँवों की सभी मुरगाबियाँ ग़ायब हो गयीं। उसने उन्हें बेचकर भारी नफ़ा कमाया। उस समय वह बरामदा बड़ा था और यहाँ कई लोग आते-जाते रहते थे।"

एकाएक गुईमैनी एक गाना गाने लगी। वह गोरे सिपाहियों को लेकर था—

"ओ, मेरे मित्रो,
अपनी-अपनी लाठियाँ उठाओ,
जालुकबाड़ी की पहाड़ियों पर
गोरी पलटन आ पहुँची है।
अपने बम चलाने के लिए।"

ईलीमन की साथिन बुढ़िया ने गुईमैनी के शब्दों पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह चुपचाप और बाँस ढूँढ़ती रही। अचानक उसे चूने के निशान वाले दो बाँस और मिले। लेकिन वह इन औरतों के सामने उन्हें खोलना नहीं चाहती थी। इसलिए वह उन्हें कुछ देर तक यों ही देखती रही और फिर ज़ोर से बोली, "तुम्हें सुबह-सुबह अपने घर में कोई काम नहीं? धान की बुवाई का समय तो आ चुका है। मैंने गोसाईं के बंधुवे को कटहल का बोरा अपनी पीठ पर लादे ले जाते हुए देखा था।"

बूढ़ी औरत के इन शब्दों ने उन औरतों पर कुछ असर दिखाया। वे जल्दी से उठीं और एक-एक करके वहाँ से खिसकने लगीं। उनमें से कई तो सुबह का कामकाज ऐसे ही छोड़कर आयी थीं, क्योंकि उन्हें अफ़ीम के तस्कर ब्राह्मणों को देखने की उत्सुकता ने धर दबोचा था।

लेकिन गुईमैनी के सामने ऐसी कोई अनिवार्यता नहीं थी। उसकी सभी बहुएँ उससे आतंकित थीं और सभी काम अपने आप निबटा लेती थीं। इससे गुइमैनी को गोसाइन के साथ तम्बाकू पीने के लिए काफ़ी समय मिल जाता था। इसलिए उसने

एक कोने में से हावन-दस्ता उठाया और ईलीमन के पास बैठकर सुपारियाँ कूटने लगी और फिर बोली, "बिटिया, तुम तो अब काफ़ी बड़ी दिखती हो, और सयानी भी। तुम्हारी छातियाँ तो अब ऐसे हो रही हैं जैसे अण्डे देने वाली फ़ाख़्ताएँ हों। क्या तुम्हारी माहवारी शुरू हो चुकी है?"

बुढ़िया से अब रहा नहीं गया। वह पलटकर बोली, "गुईमैनी, मेरा ख़याल है आजकल तुम्हारे पास कोई काम नहीं। पहले तुम सिक्कों के ढेर के साथ हफ़्ता बाज़ार में बैठती थीं। तुम्हें याद है तुम जब एक बार सिक्कों की गठरी उठाकर लिये जा रही थीं तो बोकुल के पेड़ के नीचे तुम कैसे गिरी थीं?"

"याद क्यों नहीं है मुझे? उन दिनों गोरे सैनिकों की वजह से सिक्कों की बहुत माँग रहती थी। अब वह माँग कहाँ है? वक़्त बदल गया है। अब मुझे वैसा काम करने की कोई ज़रूरत भी नहीं। खैर, मैं अब यहाँ बैठी तुमसे कुछ पूछ रही हूँ। वह बहुत ही गूढ़ और गम्भीर क़िस्म की बात है!"

ईलीमन अब तक सर झुकाये बैठी थी। उसने अब अपना सर उठाया और गुईमैनी की ओर देखा। उसकी वह बुढ़िया भी वहीं आकर उसके पास बैठ गयी। गुईमैनी ईलीमन की उपस्थिति में कुछ नहीं बोलना चाहती थी। इसलिए वह बुढ़िया को ढेकी में ले गयी और वहाँ फुसफुसाने लगी, "बड़ी गोसाइन ने मुझे यहाँ भेजा है। अब मुझे सच्चाई बताओ। अगर तुमने झूठ बोला तो गोसाइन तुम्हें शाप देगी और यह शाप तुम्हारी सात पीढ़ियों तक चलेगा।"

बुढ़िया सन्न हुई वहाँ गूँगी बनकर खड़ी थी। "गोसाइन को पता चल गया है कि ईलीमन और इन्द्रनाथ एक रात लकड़ी के पुल के पास मिले थे। वे बिलकुल एक-दूसरे के आमने-सामने···क्या यह सच है? क्या वास्तव में ऐसा हुआ?"

बुढ़िया पर तो जैसे कि गाज आ गिरी हो। वह पत्थर की मूर्ति बन गयी थी।

"चलो, चलो, बताओ मुझे, सच्चाई क्या है? तुम्हें याद नहीं मेरे साथ बोकुल के पेड़ के नीचे क्या हुआ था? जब मैंने बड़े गोसाईं और उस नीच जाति की स्त्री के बारे में कुछ कहा था?"

"हाँ, हाँ! हर किसी को इसके बारे में पता है। जब तुम अँधियारी रात में सिक्कों की गठरी के साथ हफ्ता बाज़ार से लौट रही थीं तो काले प्रेत ने तुम पर हमला कर दिया था और तुम्हारी धुनाई की थी। इससे तुम्हारे सारे सिक्के ज़मीन पर बिखर गये थे। छोटे-छोटे बच्चों को उन्हें इकट्ठा करने में बड़ा मज़ा आया था। लेकिन हम जानते हैं कि वह काला प्रेत कौन था!"

गुईमैनी अब अपना कूबड़ दोनों हाथों से थामे बुढ़िया की ओर झुकी। "कौन ···कौन था वह?"

"लोग कहते हैं कि वह बड़ा गोसाईं खुद ही था। वह बोकुल के पेड़ के नीचे छिपा तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा था।"

गुईमैनी गुस्से से झुँझला उठी, "चुप कर! रण्डी कहीं की। यह सच है कि मुझे किसी ने पीटा था, अँधेरे में, लेकिन मैं देख नहीं पायी थी कि वह कौन था। अरी खूसट बुढ़िया, क्या मैं मूर्ख हूँ जो तुम्हारा विश्वास करूँगी? बड़े गोसाईं को उस समय कई कर्मकाण्ड करने थे। क्या वह अपना कर्त्तव्य भूलकर बोकुल के पेड़ के पीछे छिपता?"

"हाँ, हाँ! गोसाईं कहाँ बोकुल के पेड़ पर था। हर कोई जानता है कि वह उस नीच जाति की स्त्री को फुटी[3] और डुगडुगी नाम के गहने भेंट में दिया करता था। वह उसे गुवाहाटी की सैर भी करवाया करता था, ढकी हुई बैलगाड़ी में। कितना गुस्सा आता था उसे अगर कोई उसे यह जता देता था तो।"

गुईमैनी अब चीख़ उठी, "अरी डायन, तू हैज़े से मरेगी। तू महाप्रभु की बुराई करती है। ···तू सात नरकों में सड़ेगी। मेरी बात का ख़याल रखना··· रण्डी···।"

"मैंने तुम्हें जो दूसरों से सुना बता दिया। अब गोसाइन को जाकर मत बताना। हर कोई जानता है कि हमारा यह गोसाईं पूरा सन्त है। उसने स्कूल के लिए और अस्पताल के लिए अपनी ज़मीन दे डाली है। उसकी कृपालुता का कोई अन्त नहीं। उसने तो अफ़ीम निषेध समिति के शिविर के लिए भी ज़मीन दान दे दी है। कैसा नेक इन्सान है वह! ईश्वर उसकी उम्र लम्बी करे!"

गुईमैनी ने अपना एक हाथ अपने कूबड़ पर से उठाया और आकाश की ओर इशारा करते हुए बोली, "चाँद को पकड़ने की कोशिश मत करो। एक ब्राह्मण पुजारी गोसाईं नहीं होता। अब तुम कसम खाकर सच-सच बताओ। उस सड़क पर, नये-नये पत्थरों वाली गिलमिल साहिब की उस सड़क पर, इन्द्रनाथ गोसाईं और ईलीमन के बीच क्या हुआ था? नरक के अग्निकुण्ड का विचार करो और मुझे सच-सच बताओ।"

बुढ़िया कुछ देर तक चुप रही। फिर उसे एकाएक याद आया। मुख्य पुजारी की वह बैलगाड़ी। वह उस रात उसी सड़क से होकर जा रही थी। शायद उसने इन दोनों को साथ-साथ देख लिया था। राम रे! हाँ, अब सब कुछ साफ़ हो रहा है। पुजारी उस व्यक्ति के लिए प्रायश्चित्त करने गया था जिसने अपनी पत्नी की हत्या कर डाली थी। बैलगाड़ी में कटहल और दही के मटके लदे हुए थे। वह ब्राह्मण चीते की तरह हमेशा चौकन्ना रहता था। निश्चित रूप से उसने सब कुछ देख लिया होगा और इस मामले की खबर गोसाइन को दे दी होगी। ऐसे अच्छे मौके को वह अपने हाथ से कैसे जाने देगा! भ्रष्ट तो वह है ही। एक अजगर की तरह वह अपने आखेट पर मोहिनी डालता है और फिर उसे अपने जबड़ों में कस लेता है। जैसे हाथी अपनी सूँड से अपने शिकार को सूँघ लेता है, वैसे ही उसे भी अपने शिकार का पता चल जाता है। फिर जैसे एक बड़ा हाथी बड़ी आसानी से अपनी सूँड से एक छोटे-से सिक्के को भी उठा लेता है, उसी तरह यह काइयाँ ब्राह्मण भी यहाँ-वहाँ से छोटी-मोटी ख़बरें इकट्ठी करता

रहता है और उन्हें बहुत बड़ा करके इधर-उधर फैला देता है। इसके रंग-ढंग उस केकड़े के समान हैं जो किसी घोंघे द्वारा फेंके गये खोल को पहनकर दुनिया को भ्रम में डालता है।

"गज़ब! गज़ब!" बुढ़िया के मुँह से निकला।

गुईमैनी फिर चीख़ी, "जल्दी से बोल। कमीनी! क्या तू गूँगी हो गयी है?"

गोसाईं के शाप के डर से बुढ़िया काँपने लगी। वह काफ़ी देर तक ज़बान को सीकर बैठी थी। फिर वह धीमी आवाज़ में बोली, "गुईमैनी, मैं नहीं समझ पा रही तुम्हें कैसे बताऊँ··· उस रात ईलीमन दिशा-मैदान के लिए बाहर गयी थी। क्योंकि वह दुष्ट हाथी वहीं कहीं पास में मँडरा रहा था, इसलिए उसे हमेशा वाली जगह पर जाते हुए डर लग रहा था। वह जगह काफ़ी दूर थी। इसीलिए वह नज़दीक के लकड़ी के पुल के पास ही चली गयी। उस समय इन्द्रनाथ गोसाईं बोलो के अड्डे से लौट रहा था और इत्तिफाक से उसे वहाँ ईलीमन दिख गयी थी।"

ठीक उसी समय दोनों बुड्ढी औरतों को सिसकियों की आवाज़ सुन पड़ी। ईलीमन मुँह ही मुँह में कुछ कहे जा रही थी और रोये जा रही थी। उनकी समझ में कुछ ही शब्द आये। लेकिन लगता था कि वह गुईमैनी के बारे में कुछ कह रही है··· "क्या तुम इन्सान हो या आदमख़ोर बाघिन! ···हम दोनों अकेली रह गयी थीं ···पिता और चाचा को पकड़ लिया गया था··· और तुम··· ऐसे बेहूदा सवाल कर रही हो!"

गुईमैनी ने अपने दोनों हाथ अपने कूबड़ पर रखे, इधर-उधर डोलती हुई वह उठी और दरवाज़े की ओर देखने लगी। फिर वह चुपचाप सोचने लगी—यह एक ब्राह्मण की बेटी है। इसने अभी तक कुछ खाया भी नहीं। नहीं, यह ऐसे सवाल पूछने का वक़्त नहीं है। वह अब ज़्यादा देर तक नहीं रुकेगी। उसे अब तक गोसाइन के यहाँ होना चाहिए था। गोसाइन अपनी लाल मेखला पहनकर तम्बाकू पीने वाले कक्ष की ओर जा रही होगी।

गुईमैनी ने अपने कूबड़ को अपने हाथों से सँभाला और किसी तरह घिसटती हुई अहाते के फाटक तक जा पहुँची। फिर वह बुढ़िया की ओर मुड़ी और बोली, "सुनो, वक़्त खराब है, बहुत ही खराब है। वह सुन्दर हाथी, जिस पर कभी गोसाईं का हौदा सजता था, वह अब मस्त हो गया है। अपनी मस्ती या उन्मत्तता में वह किसी भी समय किसी को भी कुचल सकता है। वह म्लेच्छ क्रिस्तान गोसाईं के खड़ाऊँ वाले कक्ष में चक्कर काट रहा है। अगर बड़े गोसाईं यहाँ होते तो वह ऐसे व्यक्ति की खाल छील देते, ऐसे ही जैसे बलि के बकरे की छीली जाती है।"

उसने अब फाटक खोला और सड़क पर पहुँच गयी। वहाँ घने और लम्बे सरकण्डे थे। उसने अपनी मेखला को उठाया और वहीं पेशाब करने बैठ गयी, बिना इस बात की परवाह किये कि वहाँ कोई आसपास भी हो सकता है।

ईलीमन को जाने क्यों ऐसा विश्वास था कि उसके पिता और चाचा जल्दी ही लौट आयेंगे। और कूच-बिहार का वह दुष्ट ब्राह्मण! ···वह सीखचों के पीछे रहेगा। उसने इधर यह भी महसूस किया था कि वह उससे हमेशा अकेले में बात करना चाहता था, क्योंकि जब कभी वह पिछवाड़े की बगिया से सब्ज़ियाँ तोड़ने जाती, वह भी सुपारी के पेड़ों से लिपटी बेलों से पान के पत्तों को तोड़ने के बहाने उसके पीछे-पीछे हो लेता। और उसकी आँखों की वह टकटकी? वह कभी इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि किसी पुरुष की निगाह उसे बिलकुल नग्न भी महसूस करा सकती है, जैसे कि उसके सारे वस्त्र फाड़ फेंके गये हों। या किसी पुरुष की आँखें उसके मांस के छोटे-छोटे टुकड़े भी कर सकती हैं। उसने उस पुरुष को काफ़ी हद तक बर्दाश्त किया था।

बुढ़िया ने बाँस के खोलों में से सभी सिक्के इकट्ठे कर लिये थे और उन्हें एक गमछे में बाँध लिया था। वह अब इन्द्रनाथ के बारे में सोच रही थी। उसे अपने भीतर ही भीतर ऐसा विश्वास था कि वह जल्दी ही खुद आयेगा या उसका हालचाल पूछने के लिए किसी को भेजेगा। वह ईलीमन के पास गयी। वहाँ से हावन-दस्ता उठाया और अपने कूल्हों के बल बैठ गयी। उसने अपने पाँवों के बीच हावन को कस लिया और दस्ते से सुपारियाँ कूटने लगी। फिर बोली, "सामने बाड़ वाले फाटक को खोलकर बाहर मत जाना। तुम्हारी माहवारी चल रही है। हमारे सरों पर पहले ही महापाप मँडरा रहा है। अब उस पाप को और मत बढ़ाना। अगर तुमने पिछले जन्म में कुछ नेक काम किये हैं तो ईश्वर ज़रूर तुम्हारी मदद करेगा। इन्द्रनाथ गोसाईं आयेगा और तुम्हें लिवा ले जायेगा। वह जानता है कि हम अब अकेली रह गयी हैं और हमारी मदद करने वाला कोई नहीं है। मेरी बात याद रखना। वह ज़रूर आयेगा।"

फिर उसने अपने दायें हाथ की तर्जनी से इशारा करते हुए अपने शब्दों पर ज़ोर देकर कहा था, "वह दूसरों की बात पर नहीं जायेगा। उसकी रगों में शान्तदेव महाप्रभु का खून बहता है!"

ईलीमन ने भूमि का स्पर्श किया और अपना एक हाथ अपने एक कान पर रखकर बड़ी झुँझलाहट में बोली, "चुप कर! पागल कहीं की! अगर वह शान्तदेव महाप्रभु की तरह है तो क्या तुम सोचती हो कि वह एक ब्राह्मण की बेटी से शादी करेगा?"

बुढ़िया ने दस्ते को नीचे रखा और अपने दोनों हाथ ऊपर की ओर उठाकर शान्तदेव महाप्रभु की स्तुति-वन्दना करने लगी। "वह तो सच में ईश्वर था। जो दरजी उसके कपड़े सीता था, उसने एक बार उसकी चार भुजाएँ देखी थीं··· तुम अपने दिल में उसी का नाम जपा करो। वह तुम्हारी रक्षा करेगा और तुम्हारी मनोकामनाएँ भी पूरी करेगा। दक्षिणी तट के कई गोसाईं अधिकारों ने साधारण ब्राह्मण लड़कियों से

शादी की है। उनके किसी अनुयायी ने कभी अपना मुँह नहीं खोला। चल, आ! शान्तदेव महाप्रभु का नाम सिमरन कर! तू बहुत अच्छी लड़की है।"

बुढ़िया ने अब हावन में से कुटी हुई सुपारियों को बाहर निकाला और एक मुट्ठी भरकर उसे फाँक लिया। फिर वह चारों दिशाओं में देखते हुए ईलीमन की ओर झुकी और उसके कान में फुसफुसाकर बोली, "यहाँ अब कोई नहीं है। वे तमाम औरतें चली गयी हैं, कुछ खेतों में धान रोपने और कुछ चावल कूटने। जब इन्द्रनाथ आयेगा तो उसे बाहर ही मत खड़ा रखना। अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करना। उसे भीतर लिवा लाना।"

फिर उसने उसकी ओर देर तक बड़ी अर्थपूर्ण दृष्टि से देखा और बिना दूसरा शब्द कहे उठ खड़ी हुई। उसने एक टोकरी और ख़रीदारी वाला थैला उठाया और घर से बाहर चली गयी और बारीहाट के बाज़ार की ओर बढ़ने लगी। ईलीमन लकड़ी का पुल पार करते हुए उसका साया देख सकती थी। वह अपने विचारों में डूबी हुई थी ···जब इन्द्रनाथ अपनी साइकल पर आयेगा तो क्या वह उसे भीतर बुला सकेगी? क्या उसमें इतना साहस है?

फिर उसे पिछले दिन की घटनाएँ याद आयीं। ज़रूर उनके पीछे इन्द्रनाथ का हाथ रहा होगा। अब तो इसमें शर्म की कोई गुँजाइश नहीं रह जाती। उसके दिल में उसके लिए जगह तो है। वरना कूच-बिहार का वह काइयाँ ब्राह्मण कैसे रंगे हाथों पकड़ा जाता?

वह उठकर अब खड़ी हो गयी और पिछवाड़े में कुएँ की ओर बढ़ गयी। कुएँ के इर्द-गिर्द बाँस की बाड़ पूरी तरह टूट रही थी और टूटकर बिखर रही थी। लेकिन कथना के फूल पूरी तरह खिल रहे थे। वे बड़े सुन्दर और मोहक लग रहे थे। उन सफ़ेद फूलों को देखकर उसे एक स्वस्थ गाय के दूध की शुद्धता याद हो आयी। जहाँ वह खड़ी थी, वहाँ से उसे गोसाईं की हवेली का बरामदा दिख रहा था। जिस दरवाज़े से इन्द्रनाथ आता-जाता था, वह थोड़ा-सा खुला था··· नहीं, नहीं वह नहीं आयेगा! ···पर क्यों नहीं? वह जानता है कि वह अकेली है···

ईलीमन कथना पेड़ के नीचे देर तक खड़ी रही। उसने अपनी गरदन को लम्बी करके फिर देखा। नहीं, वहाँ कोई नहीं था। वह मायूस हो गयी और वापस घर के भीतर चली गयी। फिर उसने अपनी दृष्टि इधर-उधर दौड़ायी। बुढ़िया ने उस कमरे को साफ़ कर दिया था जहाँ अफ़ीमची लोग जुटा करते थे। उसने उन सब बर्तनों और दूसरी चीज़ों को भी वहाँ से हटा दिया था जो अफ़ीमचियों के काम आती थीं। एक दीवार से लगाकर लकड़ी की छोटी तिपाइयाँ रखी गयी थीं। ईलीमन ने उनमें से एक को उठाया, उसे कमरे के बीचोंबीच रखा और अपने गताले से उस पर से मिट्टी हटाने लगी··· जब वह आयेगा तो वह उसे यहीं लिवा लायेगी और पिछवाड़े में इसी तिपाई पर बैठने को कहेगी। पिछवाड़े में कथना के दो पेड़ हैं। उनके खिले हुए सफ़ेद फूल उसे अच्छी आड़ देंगे। यहाँ वह इत्मीनान से बैठ सकेगी। हाँ, वह यहाँ बैठेगा और

वे दोनों बतियायेंगे। कोई उन्हें देख नहीं पायेगा··· वह इस, इतने बड़े सत्र का होने वाला अधिकार है और एक राजकुमार की तरह उसके चेहरे पर दैवी प्रकाश है। आह! उसका मन एक बहुरंगी तितली की तरह हो रहा है। उस तितली के चमकीले परों को छूने के लिए कोई अपना हाथ बढ़ा रहा है। वह पिघले जा रही है और किसी अतीन्द्रिय आकार से एकस्थ होती जा रही है।

अपनी भावाओं की ऊँची उछाल के साथ वह कुएँ की ओर बड़ी तेज़ गति से बढ़ी। उसकी आँखें एक बार फिर गोसाईं की हवेली के बरामदे में घूम गयीं। हाँ, वह खड़ा है। वहीं! अब वह क्या करे? हाँ, हाँ वही है। वह इधर ही देख रहा है। काक' के बाँसों के झुण्ड ने निश्चित रूप से उसके सामने कोई बाधा उपस्थित नहीं की है। हाँ, अब उसकी दृष्टि उसी पर टिकी है। उसका मन, उसकी आत्मा, उसका शरीर, सब कथना के सफ़ेद फूलों से एकाकार हो गये हैं··· लेकिन वह इधर क्यों नहीं आ रहा? वह उसी रास्ते से आ सकता है जो उसके पिछवाड़े तक आता है। वह क्यों नहीं आ रहा है? वह कब तक यहाँ उसका इन्तज़ार करती रहे?

सूरज की वजह से जो साया पड़ रहा था, वह कुएँ के इर्द-गिर्द टूटी हुई पुरानी बाड़ को लगभग छू रहा था। धीरे-धीरे वह रेंगता हुआ कथना के फूलों को पार करके लकड़ी के पुल की ओर पिछवाड़े से परे चला गया।···लेकिन इन्द्रनाथ नहीं आया।

ईलीमन के साथ रहने वाली बुढ़िया बारीहाट से लौट आयी थी। उसने टोकरी को बरामदे में रखा और कुएँ की ओर चल दी। कुएँ से कुछ पानी खींचकर उसने उससे अपना मुँह और हाथ-पाँव धोये। उसने किसी न किसी तरह अनुमान लगा लिया था कि उसकी अनुपस्थिति में क्या हुआ होगा। उसने गहरी साँस ली और फिर अपनी मेखला को अपने घुटनों तक उठाकर अपनी टाँगों को रगड़-रगड़कर धोने लगी। फिर वह घर के भीतर गयी और ईलीमन के पास जाकर बोली, "तुम पगली की पगली रही। तुमने तो भात भी नहीं पकाया। जा, मूर्ख लड़की, पहले स्नान कर और फिर रसोईघर में खाना बना।" फिर उसने अपनी टोकरी में से कुछ चीज़ें निकालीं और उन्हें तरतीब से रख दिया। लेकिन इस बीच वह बराबर बड़बड़ाती रही, "जो ठीक है सो ठीक है। आखिर वह होने वाला अधिकार है। वह उन औरतों के घर में कैसे घुस सकता है जो अकेली रहती हैं? और फिर कल क्या नहीं हुआ? वह ऐसे ही कैसे चला आता? एक चोर की तरह··· प्यार करने के लिए? एक बार उसने आना शुरू किया तो कई आँखें और कान फैलकर चौड़े हो जायेंगे। लोगों की ज़बान भी हिलने लगेगी। वह ठीक वक़्त पर ही आयेगा और वह भी मंगनी की तैयारी के साथ। मेरी बात का ध्यान रखना।"

ईलीमन एकदम भड़क उठी, "बन्द करो यह बकवास! बन्द करोगी या नहीं।"

"वाह! नाराज़ क्यों होती हो? इतने अरसे से तुम्हारा बाप कूच-बिहार के उस ब्राह्मण के पैसों पर पलता रहा। यह ठीक है या नहीं? पाप की कमाई! हराम का पैसा!

अब वह पुलिस के जाल में फँस गया है। यह तो होना ही था। इसीलिए कहा जाता है··· जो बहुत बड़बड़ करता है वह अपने ही शब्दों के जाल में फँस जाता है। बहुत होशियार डॉक्टर को ही अक्सर साँप डसता है। ज्योतिषी नव-ग्रहों के फेर में खुद ही पड़ जाता है, और ब्राह्मण अपने ही पापों को भोगता है।"

ईलीमन अब तक बिलकुल थक चुकी थी। वह चीख़ती हुई बोली, "ओह, अगर वे दोनों ही वापस नहीं आये तो हमारा क्या होगा?"

"तुम तो जवान हो। फिर इतना डर क्यों? किसलिए डरती हो? इन्द्रनाथ गोसाईं ही इस सबके पीछे है। वह ज़रूर कोई-न-कोई रास्ता निकाल लेगा।" बुढ़िया रसोईघर के निकट गयी और जलाने के लिए लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े करने लगी। शाम का साया, जो अभी तक लकड़ी के पुल के साथ लुका-छिपी खेल रहा था, आख़िर जगलिया नदी में कूद गया और ग़ायब हो गया।

बाहर पदचाप स्पष्ट सुनाई दे रहे थे। खाक़ी वर्दी पहने होमगार्ड जोकराम भगवती तथा पुजारी के साथ फाटक के भीतर आये। वे दोनों लौट आये थे। उनके चेहरे सूख रहे थे। वे दुबला गये दिखते थे। उनकी चमड़ी और हड्डियाँ एक हो गयी थीं। जो थोड़ा-बहुत मांस उनके शरीर पर बचा था, उसने अफ़ीम का रंग ले लिया था। वे खस्ताहाल अफ़ीमचियों की तरह हो गये थे।

होमगार्ड आये और चले गये। ये दोनों व्यक्ति कुएँ पर गये और वहाँ उन्होंने अपना मुँह धोया। जब वे घर के भीतर दाख़िल हुए, तब वे गुस्से से भिनभिना रहे थे।

बुढ़िया की ओर अपनी तर्जनी उठाते हुए जोकराम चिल्लाया, "क्या ईलीमन इस सत्र के किसी घर में गयी थी?"

"पिछले दिन महाजन ने उसे बहू के चौका चढ़ने के अवसर पर बुलाया था।" बुढ़िया ने उत्तर दिया। "लेकिन मैंने उसे भेजा नहीं। आखिर, वह एक ब्राह्मण की बेटी है। यदि वह अहाते से बाहर क़दम रखती है तो उसे वहाँ से लौटने पर स्नान करना होगा।"

जोकराम भगवती दहाड़ उठा, "चुप रह, कमीनी, कुतिया!"

बुढ़िया ने रोना शुरू कर दिया और कहने लगी, "मैं यहाँ इसकी माँ के साथ उसकी शादी पर आयी थी। अब वह तो रही नहीं··· क्या अब यह छोटी बच्ची इस बन्द कमरे में घुट-घुटकर मर जायेगी? वह बाहर क्यों नहीं जा सकती? वह बड़े गोसाईं के श्राद्ध के लिए गोसाइयों के घर ज़रूर जायेगी। वह बँधुवाओं द्वारा की गयी पर्दे की ओट में जगलिया नदी से शगुन का जल लेने भी जायेगी। मैं खूब अच्छी तरह समझती हूँ कि उसे कहाँ जाना चाहिए और कहाँ नहीं। यही सब काम करते-करते मेरे बाल सफ़ेद पड़ गये हैं और हड्डियाँ बूढ़ी हो गयी हैं। मैं हमेशा साये की तरह इसके साथ-साथ लगी रहती हूँ ताकि इस पर किसी तरह की कोई आँच न आये···"

अब चिल्लाने की बारी पुजारी की थी। वह बोला, "तब ये घाव मेरे सीने पर किसने किया?"

"वे घाव क्यों नहीं करेंगे? अगर कोई बाघ सौ गौओं को मारकर खा जाये तो समझ लो कि उसकी मौत भी आ गयी है। तुमने अभी तक कूच-बिहार के उस ब्राह्मण की जूठन ही खायी है। और तुम्हारे वे अफ़ीमची साथी, क्या वे चुप रहेंगे? ···और कूच-बिहार वाला वह ब्राह्मण! मैं तो शुरू से ही ताड़ गयी थी। लोग ठीक ही कहते हैं। उसकी माँ एक बौनी महरिया की तरह तेज़-तर्रार थी और उसका बाप सुल्तान गाज़ी (एक डाकू) की तरह बदनाम था।"

पुजारी फिर उसी तरह बरसा, "ईलीमन बड़ी हो गयी है। हमें उसके यौवन में पदार्पण करने की रस्म को भी पूरा करना है। कौन यहाँ आयेगा इस टूटे-फूटे घर में उसका हाथ माँगने? मुझे उस ब्राह्मण से कितनी उम्मीदें थीं! वह कुछ भी रहा हो, लेकिन था तो पैसे वाला ही न! इस नरक से तो वहाँ का जीवन कहीं बेहतर होता। मुझे विश्वास है कि वह अपने पैसे के बल पर क़ैद से छूट जायेगा।"

अब बरसने की बारी बुढ़िया की थी। "शर्म से डूब मरो! किस तरह के बाप हो तुम? अपनी बेटी उस दोनों जहान के चोर को देना चाहते हो? उसके पैसे पर अपनी ललचायी आँखें गड़ाये हुए हो? वे ठीक ही कहते हैं, मत कहो कि ब्राह्मण की थैली छोटी है। इसमें पकाने के लिए चावल और बर्तन दोनों ही आ जाते हैं और फिर इसमें एक बड़ी मछली भी आ जाती है।"

ईलीमन का बाप अब रोने को हो रहा था। वह एकाएक फूट पड़ा, "तब मैं क्या करूँ? यह दिन-ब-दिन सयानी होती जायेगी। अगर मैं इसकी शादी नहीं करता तो हमें बिरादरी से बाहर कर दिया जायेगा।"

इसी बीच दोनों बड़ों के बीच चल रही बातचीत ने ईलीमन को और परेशान कर दिया था। वह अपने भीतर ही भीतर सिकुड़ती गयी और जहाँ तक उससे बन पड़ा, उसने अपने उभारों को भी छिपाने की कोशिश की, लेकिन उसका समूचा वदन ही कथना के फूलों की तरह खिल रहा था। वह कब तक दुनिया की आँखों से इसे ओट में रख सकती है? ···और तो और, इस जर्जर मकान की कच्ची, फटी दीवारों में से भी खोजती आँखें उसके यौवन से भरते शरीर की झलक पा जाती हैं, वैसे ही जैसे जगलिया नदी की लहरियों पर चाँद का भग्न, किन्तु चमकीला रूप दिखाई देता है।

ईलीमन की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। वह शख्स आता क्यों नहीं? क्या पद-प्रतिष्ठा तथा आत्मसम्मान इतने महत्त्वपूर्ण हैं? क्या वह उन्हें एक तरफ़ करके आ नहीं सकता? नहीं, नहीं। शायद सत्र में ऐसी स्थिति कभी पैदा ही नहीं हुई। वह भावी अधिकार है। कितनी मूर्ख है वह कि वह ऐसे सोच रही है। एक अमूर्त पीड़ा उसके दिल में कहीं गहरे चीरने लगी। उसके भीतर एक अबूझ-सा डर था जिससे उसकी आत्मा थरथरा रही थी···

# नौ

बड़े गोसाईं की श्राद्ध की रस्म पूरी हो चुकी थी। हेरामदो, राजाबाहा, तल्लापाड़ा, मनियारी-किनियारी, बोकू तथा दूसरी जगहों से आये हुए अनुयायी लौटने की तैयारी कर रहे थे। बड़ा गोसाईं वर्तमान अधिकार, यानी इन्द्रनाथ के पिता, का पिता था। इन्द्रनाथ का पिता कर्मकाण्ड की वेशभूषा में था। वह पटरेशम की धोती पहने हुए था और उसके कन्धों पर पट और मूगा रेशम से बना उत्तरीय था। पिछवाड़े के बरामदे में दो बड़े, सजावट वाले पीढ़े पड़े थे जिन पर इन्द्रनाथ और उसका पिता बैठे थे। इन्द्रनाथ भी कर्मकाण्ड वाली पोशाक में था। उनके सामने दो बड़ी ताँबे की थालियाँ थीं। इन थालियों में सिक्के ही सिक्के थे—कुछ चाँदी के रुपये और बाकी छोटी रेज़गारी। अनुयायियों की कमर में बड़े-बड़े रूमाल और छोटी थैलियाँ खुँसी थीं। एक-एक करके वे पीढ़े के पास आते, अपनी थैलियों में से सिक्के निकालकर थालियों में भेंटस्वरूप रखते और अधिकार के पाँवों की धूल लेकर वापस हो जाते। जब थालियों में सिक्कों के ढेर ऊपर तक उठ आते, यजमानी ब्राह्मणों के लड़के उन थालियों को उठाकर ले जाते और भीतर के एक कमरे में बड़े बिस्तर पर उन्हें ख़ाली करके वापस ले आते।

गिरिबाला ने गाढ़े दही के बड़े-बड़े मटकों की गिनती की और श्राद्ध से सम्बन्धित छोटे-मोटे कामों को निपटाया। अब वह बरामदे में उस स्थल पर खड़ी थी जहाँ नरम मांस वाली बकरियों की बलि दी जानी थी। इस बरामदे के निकट एक छोटा कमरा था जो प्रायः इस्तेमाल में नहीं आता था। इसी कमरे में वह पुरानी पालकी रखी हुई थी जिसमें बड़ी गोसाइन को उरपुट से इस हवेली में लाया गया था। पालकी उरियम लकड़ी की बनी हुई थी, लेकिन कई वर्षों से वहाँ पड़ी रहने के कारण उसे घुन खा रहा था। पालकी के दोनों तरफ़ के हत्थे किसी ख़ास धातु के बने हुए थे। इसलिए उनकी चमक वैसी की वैसी थी।

गिरिबाला ने जो हस्तलिपियाँ इकट्ठी की थीं, वे इसी पालकी में पड़ी थीं। वह भीतर कमरे में जाती, उन हस्तलिपियों को निकालती और फिर उनकी गिनती करने लगती। वे विभिन्न विषयों पर थीं। उनमें से एक तुलसीदास के रामचरित् मानस के एक अध्याय से भी सम्बन्धित थी। उसका अनुवाद असमिया में श्रीकान्त सूर्यविप्र ने किया था। मार्क उसी पर कुछ समय से काम कर रहा था। यह हस्तलिपि लगभग डेढ़ सौ वर्ष पुरानी थी। वहाँ पुरुष मोहिनी मन्त्र[1] के सांची[2] पत्ते भी थे। गिरिबाला ने हँसते हुए एक पत्ते को उठाया और उसे पढ़ने लगी—एक ताल फूलों से भरा है। उसके किनारे फूलों से ही बने हैं। ये फूल किसी सुन्दरी की सर की शोभा बनेंगे--उस सुन्दरी की, जिसे कोई पुरुष बहुत मूल्यवान समझेगा, जैसे टोकरी में प्यार से रखा गया कोई वस्त्र हो···

निश्चित रूप से मार्क भी इस अवसर पर ज़रूर पहुँचा होगा। संभवतया वह पिछवाड़े में लोहारों के साथ अपने हाथ में दोना लिये बैठा होगा। क्या वह जाकर देखे कि वह वहाँ है या नहीं? आज वह गताला ओढ़े हुए नहीं थी, बल्कि बढ़िया रेशम की चादर ओढ़े हुए थी। उसकी मारकिन की शमीज़ पर पिस्तौल-कट के बाजुओं वाला ब्लाउज़ था जिसके गले पर चुन्नट थे। उसने बाँस से बनी कंघी से अपने बाल काढ़े थे और दो चोटियाँ किये हुए थी। अपने इन साफ़-सुथरे कपड़ों में वह एक फ़रिश्ते के समान दिख रही थी।

छोटी पालकी वाले कमरे की दहलीज़ को पार करते हुए गिरिबाला मार्क का पता लगाने पिछवाड़े की ओर गयी। वहाँ गाँव से आये हुए अनेक लोग थे, लेकिन मार्क का कहीं पता न था। वह दौड़ती हुई विशाल, खुले रसोईघर की ओर गयी। वहाँ गड्ढों में रखा भात काफ़ी कम दिख रहा था। दरअसल, लोगों को खिलाने के लिए भात को ज़मीन में खोदे गड्ढों में ही रखा जाता था, लेकिन उसे उनमें रखने से पहले केले के पत्ते फैला दिये जाते थे। फिर बड़े-बड़े डोंगों में रखा ग़ोश्त, काली दाल, अरहर की दाल तथा तरकारी भी कम दिख रही थी।

गिरिबाला अब वड़े सहन की ओर गयी। यह सहन धान्यागार के निकट था। ···गाँव के लगभग सभी अधनंगे बच्चे अपने सामने, वहीं ज़मीन पर, केले के पत्ते और दोने लिये बैठे थे। उनके हाथ-पाँव पतले-पतले थे, लेकिन उनके पेट बढ़े हुए थे। उनकी आवाज़ें स्पष्ट सुनाई दे रही थीं, "···महाराज, थोड़ा ग़ोश्त और दो··· हमें ऐसी दावत साल में केवल एक बार ही खाने को नसीब होती है। यह बूढ़ा गोसाईं बार-बार क्यों नहीं मरता! ···उई, उई! इन्हें श्राप दो, श्राप, ताकि ये गोसाईं लोग हमेशा मरते रहें ··· चुप, चुप! गोसाईं ने सुन लिया तो तुम्हारे ज़िन्दा की ख़ाल खिंचवा देंगे।"

गिरिबाला खिलाने वाले बूढ़े ब्राह्मणों की दयनीय स्थिति देख रही थी। वे बच्चों को खाना तो खिला रहे थे, लेकिन साथ-साथ उन्हें यह भी डर था कि कहीं ये बच्चे उत्तेजना में अपने हाथ हिलाते हुए उन्हें छू न लें। ···नहीं, मार्क यहाँ भी, इन नन्हें शैतानों के साथ, नहीं बैठा है।

गोश्त के साथ पकायी गयी काली फलियों की सुगन्ध गिरिबाला के नथुनों को गुदगुदा रही थी। वह वापस रसोईघर की ओर गयी। वहाँ सफ़ेद खुशबूदार खरिका जहा[3] भात एक बहुत बड़े गड्ढे में रखा था। यह गड्ढा लगभग दस फुट लम्बा और छः फुट चौड़ा था और हाथीदाँत की तलैया के समान दिख रहा था। राजाबाहा और भगवतीबाड़ा से आये ब्राह्मण लड़के मेहमानों की देखभाल में लगे थे और उन्हें भात तथा शोरबा दे रहे थे। आह, भात तथा काली फलियों से कैसी मोहक खुशबू आ रही है! ज़रूर उन्होंने अदरक और काली मिर्च का इस्तेमाल किया होगा। उन पर गाय के दूध से तैयार किये गये घी की भी एक परत दिख रही थी, और थोड़ा हटकर वह अंजीर के पेड़ से लटकती, कटी हुई बकरी की ख़ाल भी देख सकती थी। हवा तेज़

चलने के कारण वह ख़ाल कपड़े की तरह हिल रही थी। जिस गड्ढे में बकरी को काटा गया था, वह अभी भी भरा नहीं था। खोदी गयी मिट्टी पास ही गड्ढे के बाहर पड़ी थी। इस बार भी उसे बकरी काटे जाने की रस्म देखने से वंचित रखा गया था। उसे बचपन में भी इसे देखने की मनाही रही थी।

एकाएक गिरिबाला चौंकी। चौंकाने वाला शम्भू अमीन था जो बड़े ज़ोर-ज़ोर से गाँव के कुछ लड़कों पर बरस रहा था, "उठो, उठो! ऐ शैतानो! अब ब्राह्मणों के खाने की बारी है। जल्दी से उठो। क्या तुम यहाँ हमेशा के लिए बैठे रहना चाहते हो?"

खिलाने वाले ब्राह्मण अब और सक्रिय हो गये थे, क्योंकि उन्हें कुछ और ब्राह्मणों को भी खिलाना था। वे अपने सर और कमर पर कामरूपी शैली के तौलिये लपेटे हुए थे। उनकी नंगी पीठ पर से पसीने की धाराएँ बह रही थीं। उनके जनेऊ से लटकी सोने की अँगूठियाँ उनके हिलते शरीरों के साथ-साथ नाच रही थीं। गिरिबाला उन्हें देखती हुई वैसे ही खड़ी रही। वे पीतल के डोंगों में शोरबे वाला गोश्त ले जा रहे थे··· आह, कितनी सोंधी, लुभावनी सुगन्ध आ रही है! ···लेकिन एकाएक उसे एक दूसरी सुगन्ध का भी भान हुआ। वह चक्कर में पड़ गयी। क्या किसी लोभी ब्राह्मण ने पालकी वाले कमरे में शोरबे वाले ग़ोश्त के साथ काली फलियों का डोंगा छिपा रखा है? उनकी यह पुरानी आदत जाती नहीं। ज़रूर किसी ने उस कक्ष में गोश्त से भरा डोंगा रखा होगा।

उसने इधर-उधर देखा और फिर चुपके से उस कक्ष में दाखिल हो गयी। उसने ठीक ही सोचा था। वहाँ केले के पत्तों से ढका मिट्टी का एक डोंगा रखा था और उसे चारे की एक बोरी के नीचे छिपाया गया था।

ठीक उसी समय बाहर से उन ब्राह्मणों का शोर सुनाई देने लगा जो उपहार-स्वरूप अपनी दक्षिणा ले रहे थे। ऐसी दक्षिणा के समय हमेशा इनमें छीना-झपटी शुरू हो जाती थी। जब बड़े गोसाईं के पहले श्राद्ध की रस्म के समय ज़मीन, उरियम लकड़ी की चारपाइयाँ, चावल की टोकरियाँ, एंडी की चद्दरें इत्यादि बाँटी गयी थीं तब भी इन ब्राह्मणों ने आपस में झगड़ा करना शुरू कर दिया था। कभी-कभी मुक्के चलने की नौबत भी आ जाती थी और चारों ओर अफरा-तफ़री मच जाती थी। कहा जाता है कि कभी-कभी दो गुटों के बीच सौदेबाज़ी होते-होते घमासान युद्ध भी शुरू हो जाता था। एक बार एक ब्राह्मण का हाथ ही टूट गया था और उसे गुवाहाटी के अस्पताल में दाख़िल करवाना पड़ा था।

अब फिर उसी भोजन दक्षिणा का सिलसिला शुरू हो गया था। इसलिए अब कोई भी ब्राह्मण इधर नहीं आयेगा। बँधुवे और खेतों में काम करने वाले मज़दूर जूठे पत्ते और दोने उठाने में व्यस्त होंगे। इसलिए उनके भी इधर आने की क़तई उम्मीद नहीं है। कमरे के ढेर पर कुत्ते और गौएँ भी अपनी तरह की दावत कर रही थीं।

ढेकी के पास कौन आयेगा? लोहार भी तो दक्षिणा की रस्म देखने में डूबे हुए हैं।

गिरिबाला ने मुख्य बरामदे की ओर झाँककर देखा। एक अधनंगा बूढ़ा गोसाईं के सामने बैठा कालिया[5] बजा रहा था। यह यन्त्र भैंस के सींग से तैयार किया जाता है।

यही समय है, हाँ यही समय है कि वह पालकी वाले कमरे में रखे उस मिट्टी के बरतन पर से केले का पत्ता हटा दे। उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया, लेकिन फिर उसे तुरन्त खींच भी लिया। वह क्या कर रही है? क्या एक दामोदरिया गोसाईं की विधवा के लिए मांस खाना अक्षम्य पाप नहीं है? इससे पहले कभी ऐसा नहीं हुआ। अब वह बरामदे के निकट उस गड्ढे के पास गयी जहाँ बकरी काटी गयी थी। वहाँ थोड़ी दूरी पर उसने दुर्गा को देखा। वह यजमानी ब्राह्मणों द्वारा चूक से छोड़े गये भात पर पानी छिड़क रही थी। उसके हाथ में ताँबे का एक जग था। जिस तरह वह इधर-उधर देखती हुई छोड़े गये भात पर पानी छिड़क रही थी, उससे वह अपने कंकाली शरीर के कारण बिलकुल प्रेतनी दिख रही थी। आह! फिर वही लुभावनी सुगन्ध! निश्चित रूप से उन्होंने अदरक और काली मिर्च के साथ गरम मसाला भी डाला होगा। बेशक, जिस ब्राह्मण ने काली फलियों के साथ इस गोश्त को पकाया होगा, वह ज़रूर बंगरा का रहने वाला होगा। बंगरा के ये ब्राह्मण अच्छी तरह जानते हैं कि घी, काली मिर्च, अदरक और दूसरे मसालों की मात्रा कितनी-कितनी होनी चाहिए।

गिरिबाला ने कुछ लोगों से सुन रखा था कि उसके पति, लाटू गोसाईं को बंगरा के ब्राह्मणों द्वारा पकाया गया खाना बहुत अच्छा लगता था। वह आमतौर पर जात्रा की टोलियों के साथ घूमता रहता और उसे लगभग हर रोज़ मनियारी-किनियारी की वह अफ़ीम बेचने वाली बदनाम औरत पपीते के साथ कबूतर के मांस का शोरबा पिलाया करती। एक बार जब उसे लगा कि उससे कोई भूल हो रही है, तो उसने गुईमारा से एक ब्राह्मण को बुलाकर प्रायश्चित्त किया था। उसके दो बड़े भाई थे। इसलिए उसे यह तो पता ही था कि वह सत्र का अधिकार नहीं बन सकता। वैसे भी उसे यह पद क़ैद की तरह लगता था। उसकी समूची मानसिक संरचना एक आज़ाद पंछी की थी। वह अब जीवित नहीं है। हाँ, वह अब इस दुनिया में नहीं है, लेकिन उसके शब्द हमेशा उसके मन में ज़हर घोलते थे। वह कहता, "अरी तीन सत्रों की बेटी··· जैसाकि कवि कहते हैं, तेरा बदन जवान खजूर के पेड़ की तरह है। पर हमारी शादी क्योंकि पहले ही हो चुकी है, इसलिए तुम्हें एक बात समझ लेनी चाहिए—तुम्हें मेरी कुछ आदतें बर्दाश्त करनी पड़ेंगी। लोग कहते हैं कि वे ख़राब आदतें हैं, लेकिन तुम्हें उन्हें स्वीकार करना होगा।"

वह चुप रही थी। इस पर वह गुस्से से चिल्लाया था, "बताओ मुझे! तुम्हें मंजूर है या नहीं?"

मारे डर के उसके मुँह से निकल गया था, "हाँ, हाँ, मंजूर है···"

वह फिर बोला था, "मुझे औरतें अच्छी लगती हैं। मैं उनके बीच रहना चाहता हूँ। जब मैं बरदवा, समरिया और डाखला जैसी जगहों पर जात्रा वालों के साथ गया था, तो मैंने एक छोटी जात की स्त्री के हाथों से चाय पी थी, और मनियारी चौक की उस स्त्री ने न केवल पपीते के साथ मुझे कबूतर का शोरबा दिया था, बल्कि उसने हिरन के मांस के साथ ओ[6] फल भी पकाया था। लेकिन सुनो, गोसाईं की बेटी! जब-जब मैंने वर्जित चीज़ें खायीं, मैंने हर बार प्रायश्चित्त भी किया। कभी मैं किसी ब्राह्मण पुजारी को बुलवा भेजता, और कभी गायत्री मन्त्र का जाप कर लेता···"

भेंपू! भेंपू! भेंपू! कालिया के इस शोर ने गिरिबाला के कान ही फाड़ डाले। जैसे-जैसे वह कुबड़ा यजमानी ब्राह्मणों के निकट हो रहा था, वैसे-वैसे वह अपने यन्त्र को ज़्यादा से ज़्यादा उत्साह से बजाने लगा था।

क्या उसके पति ने उस स्त्री द्वारा पकाये गये ओ के शोरबे को केवल खाया था या उसके हाथों पर अपनी पकड़ भी कस दी थी? ···पर सभी जानते हैं कि वह उसके साथ सोता रहा है। ···गोसाईं परिवार से सम्बद्ध होते हुए भी वह धीरे-धीरे एय्याशी की सभी हदें पार कर गया था। हे ईश्वर··· हे ईश्वर! ओ फल से तैयार किया गया पकवान और हिरन का मांस! सम्भवतया उसमें से वैसे ही सुगन्ध आती होगी जैसे काली फलियों के साथ पके ग़ोश्त से आ रही है। कहते हैं किसी पकवान की सुगन्ध लेना वैसा ही है जैसे उसे खाना। और शास्त्रों ने तो यह भी लिखा है कि एक गोसाईं विधवा के लिए किसी वर्जित खाद्य पदार्थ की सुगन्ध लेना भी महापाप है।

वह बिलकुल चुपचाप खड़ी थी, लेकिन बहुत ही उद्विग्न थी। कालिया का शोर उसे रुग्ण किये दे रहा था और उसके कान के पर्दों को फाड़ रहा था।

आह, वह मनभावन सुगन्ध। किस तरह ललचा रही थी उसे! उसे लगभग आठ वर्ष पुरानी एक घटना याद हो आयी। इन्द्रनाथ और कलकत्ता से आये उसके दो मित्र माटियापहाड़ पर शिकार खेलने गये थे। उन्होंने अपनी एक पुरानी दुनाली से एक बड़ी-सी मोटी गुई[7] को मार गिराया। फिर उन्होंने उसकी खाल उतारी और उसे साफ़ करके उसके छोटे-छोटे टुकड़े किये। फिर घर के बाहर ही उन्होंने लकड़ियाँ जलाकर उसे पकाया। उसमें उन्होंने सिल-बट्टे पर पीसकर कई तरह के मसाले भी डाले और एक बड़ा-सा विलायती आलू भी डाला। उस समय वह इतनी छोटी थी कि गताला नहीं पहनती थी। गुई के शोरबे की सुगन्ध लगभग वैसी ही थी जैसी उसे अब मिल रही थी। हर कोई तब केले के पत्ते अपने सामने बिछाकर शोरबा खाने के लिए बैठ गया था। इस पकवान को तैयार करने में पतदाई के एक निपुण ब्राह्मण का भी हाथ था। उस दिन उसने प्रसाद जहा[8] किस्म का चावल भी पकाया था। उसका कहना था कि गुई के मांस के साथ प्रसाद जहा चावल का खूब मेल बैठता है। खाने वालों में मोटू शम्भू अमीन भी था। उसके शब्द अब भी उसके कानों में गूँज रहे थे। "हमने

एक बार माइसनपुर में एक गुई को मारा। उस गुई का मांस नन्हे हिरन के मांस की तरह था। थोड़ा खट्टा और नरम।"

वह ब्राह्मण जो शोरबे को गाढ़ा करने के लिए चावल की लेई तैयार कर रहा था, बोला, "तो स्वाद खट्टा था? है न?"

"नहीं, नहीं! वह बराली[9] मछली की तरह होता है।"

किसी ने तब ज़ोर से टोका, "नहीं, बराली मछली की तरह नहीं, साल मछली[10] की तरह। गुई के मांस के टुकड़ों का रंग खुंबी के रंग की तरह था।"

हां, हां! उसे बहुत अच्छी तरह याद है। सब लोग वृत्ताकार बैठे थे और उनके सामने केले के पत्ते बिछे थे। इन्द्रनाथ ने भी अपने सामने नक़्क़ाशीदार काँसे की थाली न रखकर केले का पत्ता ही रखा था। पहली बार वे गुई का मांस खा रहे थे। एक बड़े बरतन में उनके सामने शोरबा रखा गया था। यह शोरबा काफ़ी गाढ़ा था, और उस पर देसी घी तैर रहा था। उसका रंग भूरा-सुनहरी था। उस शोरबे को देखते ही मुँह में पानी भर आता था। हर किसी ने उसे चटखारे ले-लेकर सुड़कना शुरू किया। लेकिन इन्द्रनाथ जैसे कि किसी दुविधा में था। वह शोरबे और भात में अपनी उँगलियाँ फिरा रहा था।

उसके बाकी साथियों ने उस पर हँसना शुरू कर दिया था, "हा, हा, हा! क्या हो रहा है, भाई?"

इन्द्रनाथ ने भरसक कोशिश की कि वह निवाला मुँह में डाल ले, लेकिन वह ऐसा न कर पाया। उसने एक बार नहीं, दो-तीन बार कोशिश की, लेकिन उसे खा नहीं सका। इन्द्रनाथ तो क्या, पतदाई वाला वह ब्राह्मण, जिसने खाना पकाया था, और अमीर का वह लौंठा बेटा, भी इसे खा न सके। उन्होंने केले के पत्ते वहीं छोड़ दिये और कच्चे कुएँ की ओर बढ़ गये, जहाँ उन्होंने अपना मुँह अच्छी तरह साफ़ करने के लिए गरारे करने शुरू कर दिये। साथ-साथ वे कुछ आवाज़ भी करते जा रहे थे।

लेकिन गिरिबाला? ···उसके भीतर तो लोभ की एक अजीब-सी लहर उठ रही थी। उसने गुई और उसके शोरबे को बड़े चाव से खाया था। गुई और उसके शोरबे को ही क्यों, उसने माँ द्वारा इन्द्रनाथ के लिए पकाये गये ऊलचहरा[11] पर भी अपना हाथ साफ़ किया था। माँ उस समय लाल मेखला पहने हुए थी। वह रसोईघर में दाखिल होने को ही थी कि उसने गिरिबाला को देखा था और एकाएक चिल्ला उठी थी, "अरी बेशर्म! क्या कर रही है। तू यहाँ? लड़की के लिए मांस का यह शौक बड़ा अपशकुन माना जाता है।"

वहाँ जो औरतें धान कूटने आयी थीं, और अपने वक्ष को केवल मेखला से ही ढांपे हुए थीं, बोली, "देखो, देखो! वह तो राक्षसी की तरह मांस खा रही है।"

उस दिन इन्द्रनाथ के मित्र ही गुई के मांस को खा सके थे। जो कुछ बचा था,

उसे गाँव के बढ़े हुए पेट वाले बच्चों ने बड़ा स्वाद ले-लेकर खत्म किया था। वे तो उस पर ऐसे झपटे थे जैसे मरी हुई बकरी पर गिद्ध झपटते हैं।

हाँ, हाँ! ज़रूर उसके पति, लट्टू गोसाईं ने उस औरत का हाथ पकड़ा होगा। उसकी ललक तो उस स्त्री की ललक से कहीं ज़्यादा होगी।

आह, वह सुगन्ध! वह चारों दिशाओं में फैल रही थी। सम्भवतया दूर से आने वाले ब्राह्मण जल्दबाज़ी में खा रहे थे। उन सबके मन में मस्त हाथी का डर भी था, और वे अँधेरा होने से पहले घर लौट जाना चाहते थे।

गिरिबाला ने बरामदे से देखा कि दुर्गा के बाल एक बड़े जूड़े में बँधे हैं। कितनी तेज़ और चौकस है वह! उसके कान और आँखें हमेशा खुली रहती हैं और वह जानती है कि कहाँ क्या हो रहा है। शायद अब वह इधर नहीं आयेगी। वह, यानी गिरिबाला बड़ी तेज़ी से पालकी वाले कमरे में गयी और काली सेम के साथ पकाये गये गोश्त के बरतन को उसने उठा लिया। वह सब कुछ भूल चुकी थी··· अपना धर्म, रीति-रिवाज, अपने यहाँ का लोकाचार और दूसरी वर्जनाएँ भी। उसने उसे हड़बड़ी में निगलना शुरू कर दिया। ···जबसे वह विधवा हुई थी, वह केवल भात और उबली हुई सब्ज़ी-मिली दालें ही खाती रही थी। हाँ, वह उसके साथ थोड़ा-सा नमक और थोड़ा-सा गाय का घी भी डाल लेती थी। यह सब खाते-खाते उसकी ज़बान बिलकुल बेस्वाद हो गयी थी। वह इस क़िस्म के खाने से तंग आ चुकी थी।

आह! क्या शानदार ज़ायका है। वह एक के बाद दूसरा निवाला निगलती गयी।

मनियारी-किनियारी वाली उस औरत ने उसके पति के लिए ज़रूर इसी प्रकार का खाना तैयार किया होगा। पकवान इतना स्वादिष्ट होगा कि जब वह उसे अपने हाथों से खिला रही होगी तो वह उसकी उँगलियाँ ही चूसने लगा होगा।

गिरिबाला ने थोड़ा मांस और उसका शोरबा एक बार फिर लिया, काफ़ी मात्रा में। उसके मन में अजीबोग़रीब विचार आ रहे थे। लेकिन उसने खाना बन्द नहीं किया। उसने बरतन को लगभग ख़ाली ही कर डाला। पहली बार किसी गोसाईं की बेटी ने किसी सत्र की एक हवेली में इस तरह का कुकर्म किया था।

एक ज़ोर की चीख़ ने गिरिबाला को चौंका दिया। उसने एकदम अपने सर को झटककर इधर-उधर देखा। उसे यह समझते देर न लगी कि दुर्गा पालकी के निकट गश खाकर लगभग गिर पड़ी है और दरवाज़े के निकट दो यजमानी ब्राह्मण भयाक्रान्त हुए वहाँ जड़वत् खड़े हैं।

किसी ने एकाएक चिल्लाकर कहा, "तो यहाँ भी था गोश्त का बरतन! इसका हाथ ऐसे ही जकड़ लो और इसे घसीटकर कमरे से बाहर ले चलो।"

इस तरह की आवाज़ें सुनकर वे लोग जो श्राद्ध की रस्म पर आये थे, अब पालकी वाले कमरे के बाहर जुटने लगे, और देखते ही देखते वहाँ एक बहुत बड़ा हुजूम लग गया।

जब गोसाइन को इसका पता चला तो वह भी रसोई का काम छोड़कर इधर ही दौड़ी आयी। मारे गुस्से के उसने गिरिबाला को झोंटे से पकड़ लिया और उस पर लातें बरसानी शुरू कर दीं। गुस्से में वह बाघिन बन गयी थी। उसने उसके बालों को तो खींचा ही, उसे दनादन मारती भी गयी और उसे नोंचती भी रही, जैसे कि वह उसे फाड़ डालेगी। सभी देखने वाले बिलकुल स्तब्ध हो रहे थे। उनके मुँह खुले थे।

इस बीच दुर्गा को सभी भूल गये थे। वह पालकी के निकट मृतप्राय-सी पड़ी थी।

एकाएक पुरुष स्वर का जैसे कि हवा में विस्फोट हुआ। जो कोई भी उसके रास्ते में आया, इन्द्रनाथ ने उसे परे धकेल दिया और अपनी माँ की ओर लपका। फिर उसने उसका हाथ पकड़कर ज़ोर से कहा, "क्या तुम उसे मार देना चाहती हो? होश में आओ। उसे शुद्ध करने के कई तरीक़े हैं। प्रायश्चित्त के लिए कई विधियाँ हैं। उसे इतना क्यों मार रहीं हो?"

यजमानी ब्राह्मण ने भी चिल्लाकर कहा, "हाँ, हाँ! उसे प्रायश्चित्त करने दो। हमारे ग्रन्थों में उसके लिए विधि-विधान है।"

थोड़े ही समय में भीड़ दुगुनी हो गयी थी। इस हो-हल्ले और उत्तेजना के बीच एक ब्राह्मण लड़का एकाएक पालकी वाले कमरे की ओर दौड़ा और उसने एक मिट्टी के बर्तन को ज़ोर से ठोकर लगायी। उस मिट्टी के बर्तन में जितना भी गोश्त था, सारे का सारा इधर-उधर उड़कर फैल गया। वहाँ जो ब्राह्मण औरतें पास में खड़ी थीं, वे आतंकित हो चीख़ती हुई दौड़ पड़ीं ताकि उन पर शोरबे का कोई क़तरा न पड़े, वरना उन्हें फिर से स्नान करना पड़ता।

इस बीच हेरामदो की औरतों ने बेहोश पड़ी दुर्गा को उठाया और उसे खड़ाऊँ वाले कक्ष में ले गयीं। फिर उसके मुँह पर उन्होंने पानी के छींटे दिये। लेकिन गिरिबाला अभी तक पालकी वाले कमरे में ही पड़ी थी और भीड़ ने उसे चारों ओर से घेर रखा था।

हेरामदो और बंगरा के यजमानी ब्राह्मण दो गुटों में बँट गये थे और उनके बीच बड़े ज़ोर-ज़ोर से तू-तू, मैं-मैं होने लगी थी··· सवाल यह था कि प्रायश्चित्त की विधि का कौन ज़िम्मा लेगा। जिस ब्राह्मण को इस रस्म की पूर्ति करनी थी, वह मुक्सा[12] और सिद्धा[13] का हक़दार होता और साथ में उसे एक टोकरी में चावल, आलू, हल्दी, नमक और देसी घी की भी कुछ मात्रा मिलती जिससे कुछ दिनों के लिए उसका काम ठीक से चलता। इसके अलावा उसे एक जोड़ा जनेऊ भी मिलता। लेकिन जब मुख्य पुरोहित ने यह फ़ैसला किया कि वह स्वयं ही इस विधि को पूरा करेगा तो ब्राह्मणों के बीच चलने वाला युद्ध खत्म हो गया। इस पुरोहित ने पहले ही गोसाईं के लिए ऐसी रस्में पूरी करके कई बीघे मियादी खिराजी[14] भूमि प्राप्त की थी।

उसने ज़ोर से चिल्लाकर कहा, "कुएँ से पानी लाओ और इसे लगभग भिगो

दो। बाकी लोग यहाँ से हट जायें। जल्दी। थोड़ा चावल, ताँबे का एक सिक्का और कुछ कौड़ियाँ भी। हाँ, और कुछ फूल, तुलसी और दो-चार दाने भी।"

गोसाइन अब तक बरामदे में लौट आयी थी। वह अपने घुटनों के बल, वहीं फर्श पर, जहाँ बकरी की बलि के लिए एक गड्ढा भी था, बैठ गयी थी। उसके घुटने उसके वक्ष से सटे हुए थे और उसका सर उन घुटनों पर टिका हुआ था। वह उन औरतों में से नहीं थी जो आसानी से बिफर पड़ती हैं और लोगों के सामने बड़े-बड़े टसुए बहाती हैं। उसकी साथिन गुईमैनी, जो आमतौर पर एकान्त में उसके साथ तम्बाकू पीती थी, अब एक तरफ़ खड़ी गोसाइन का इस विपत्ति में आचार-व्यवहार देख रही थी।

पुरोहित ने कुश को पानी में भिगोया और संस्कृत के एक मन्त्र के साथ थोड़ी-थोड़ी देर के बाद गिरिबाला पर उसका छिड़काव करने लगा। इस मन्त्र का उच्चारण काफ़ी दोषपूर्ण था जिससे अर्थ का अनर्थ हो रहा था। लेकिन इसका आशय यह था कि यदि कोई विधवा या ब्रह्मचारी जानबूझकर मांस-मछली का सेवन करता है तो उसे आठ बार धानु-प्रायश्चित्त करना होगा। अगर वह मसूर की दाल, पान या सफ़ेद कुम्हड़ा खाता है तो उसे तीन बार धानु प्रायश्चित्त करना होगा, इत्यादि-इत्यादि। ···वहाँ कुएँ के पास तीन ब्राह्मण भी खड़े थे। उन्होंने हाल ही में जनेऊ पहनना शुरू किया था। वे आपस में कह रहे थे, "दक्षिणी तट के विधान को बदला जाना चाहिए।"

एक-दूसरे ब्राह्मण ने इस पर टिप्पणी की, "हाँ, हाँ, इसे बदलना चाहिए। इस पुराने, लचर विधान में तो यह भी शामिल है कि अगर तुम बिना जनेऊ पहने भोजन करते हो तो तुम्हें हज़ार बार गायत्री मन्त्र का जाप करना होगा।"

एक अन्य ब्राह्मण का कहना था, "आज कौन-सा ऐसा ब्राह्मण है जो किसी धोबी या मछुवारे के हाथ से बना हुआ खाना खाकर तीस बार धानु प्रायश्चित्त करेगा?"

एक और ब्राह्मण बोला, "हाँ, आजकल कोई भी गोली से मारे गये हिरन के मांस को खाकर चार बार धानु प्रायश्चित्त नहीं करता। क्या तुमने कभी हमारे इन्द्रनाथ गोसाईं को बन्दूक़ से मारी गयी फ़ाख़्ता या हिरन को खाने के बाद प्रायश्चित्त करते देखा है? और वे चोर जिन्हें गोसाईं के घर में रंगे हाथों पकड़ा गया। क्या वे विधि के अनुसार बारह वर्ष तक अनाहार करते रहेंगे?"

अब भीड़ में से एकाएक कोई चिल्लाया, "देखो, देखो, गिरिबाला काँप रही है। वह यहीं ढेर हो जायेगी। वह गिरने को है। उसे थामो··· कोई उसे थामे!"

शुद्धिकरण और विधिविधान-सम्मत प्रायश्चित का यह नाटक काफ़ी देर तक चलता रहा। और फिर शुरू हुआ परिवार के सदस्यों द्वारा दी जाने वाली नसीहतों, कठोर चेतावनियों और नैतिक प्रवचनों का सिलसिला, ताकि गिरिबाला ऐसा घिनौना पाप फिर कभी न करे। आख़िर शोर-शराबा और उत्तेजना का दौर ख़त्म हुआ और उसकी जगह हेवली में शान्ति ने ले ली।

गिरिबाला को बाद में यह याद नहीं आया कि उसे खड़ाऊँ कक्ष के बगल वाले छोटे से कमरे में कौन लाया था। यह कमरा इतना छोटा था कि समूची जगह एक चारपाई और लकड़ी के एक बक्से ने घेर ली थी। यूरियम लकड़ी के बक्से के ढकने को एकदम खोला गया। उसमें नौकरानी द्वारा ठूँसी गयी वे सब चीज़ें थीं जो एक ब्राह्मण विधवा के लिए ज़रूरी होती हैं। उसमें मेखलाएँ और गताले भी थे। ···वह अब भी बुरी तरह काँप रही थी। उसके कपड़े पसीने और शुद्धिकरण के लिए छिड़के गये पानी से तर हो रहे थे। उसने फ़ौरन उन्हें बदला। उसके बाजुओं, टाँगों, गरदन और चेहरे पर नीले उभार आ गये थे। फिर नाखूनों की खरोंचों के निशान भी पड़ गये थे। ···कहीं-कहीं उसकी ख़ाल में से काले-लाल खून की छोटी-छोटी बूँदें भी टपक रही थीं।···

उसने कमरे के चारों ओर देखा··· सभी दरवाज़े और खिड़कियाँ कसकर बन्द किये हुए थे। उसके सर के ऊपर लकड़ी की छत थी, जहाँ से घुन द्वारा लकड़ी के कुतरे जाने की मद्धिम आवाज़ आ रही थी··· यह आवाज़ निश्चित रूप से विनाश की सूचक थी जो उसके भीतर और अधिक त्रास भर रही थी।

बड़ा गोसाईं और छोटा गोसाईं, दोनों उठ खड़े हुए थे। सभी अनुयायियों ने उन्हें प्रणाम किया और उनसे विदा ली। थालियों में इतने सिक्के जमा हो गये थे कि वे बाहर गिरने लगे थे। अब वे दोनों गोसाईं खड़ाऊँ कक्ष के भीतर चले गये थे।

बातघर से दो यजमानी ब्राह्मण बालकों के बीच बहस सुनाई दी। वे सम्भवतया उन्हें मिले उपहारों की अदला-बदली कर रहे थे या उन्हें बेच रहे थे। हो सकता है यह कोई यूरियम लकड़ी की तिपाई रही हो या पीतल का कोई छोटा घड़ा जिसे वे ज़रूरत न होने के कारण बदल लेना या बेच देना चाहते थे।

इस बीच बामुंडी के गोसाईं और एक यजमानी ब्राह्मण के बीच होने वाली बातचीत के स्वर भी सुनाई दिये। उनमें से एक बोला, "विधि-निर्माता मनु ने ठीक ही कहा है···"

"क्या कहा है उसने?"

"मनु ने कहा है कि जब देवताओं का श्राद्ध हो तो दो ब्राह्मणों को भोजन करा देना पर्याप्त होता है। अगर यह श्राद्ध तुम्हारे पिता या दादा या परदादा का है, तब तीन ब्राह्मणों को भोज देना होगा। लेकिन अगर यह श्राद्ध किसी देवता और तुम्हारे पिता या दादा, दोनों का है, तब एक ही ब्राह्मण को भोजन करा देने से बात बन जायेगी। ···अब इस हवेली के भीतर मची अफरा तफरी को देखो। इतने ब्राह्मणों की भीड़ जुटाना क्या ज़रूरी था?"

एकाएक खड़ाऊँ कक्ष से अधिकार महाप्रभु की आवाज़ आयी—"क्या उसी मनु ने यह नहीं कहा था कि मृत व्यक्ति की आत्मा, चाहे वह व्यक्ति तुम्हारा पिता हो या दादा, उन ब्राह्मणों के शरीर में प्रवेश कर जाती है जिन्हें श्राद्ध के अवसर पर भोज कराया जाता है? इसलिए आमंत्रित ब्राह्मण को चाहिए कि वह ऐसे मामले में अपने पर कुछ अंकुश लगाये और सम्मानपूर्वक बात करे।"

काफ़ी देर तक अब शान्ति बनी रही। गिरिबाला उस छोटे-से कमरे में पड़ी-पड़ी वह सब बातचीत सुन रही थी। वह सोचने लगी—अब मुझसे हुई भूल का विषय उठाया जायेगा और समूचा वातावरण फिर से दूषित हो जायेगा। उसने अपनी आँखें खोलीं और बन्द दरवाज़े की ओर टकटकी लगाकर देखा। उसके कानों में फिर कुछ शब्द पड़े। नहीं, वे उसके बारे में बात नहीं कर रहे थे। वह बातचीत अब उस मस्त हाथी के बारे में थी जो उनकी पकड़ में नहीं आ रहा था।

"वह दुष्ट हाथी अब जिरंग की ओर बढ़ गया है।"

" 'एक विधवा ने वह सब खा लिया है जो उसे नहीं खाना चाहिए था। यह अशुभ लक्षण है।"

"हाँ, हाँ! लेकिन जैसी कि अफ़वाह है, यह बिना दाँत वाला हाथी नहीं है। इसके तो बड़े-बड़े दाँत हैं और यह गोसाईं का सबसे अधिक चहेता भी था। महाप्रभु इसकी सवारी करके न केवल अपने अनुयायियों के पास जाते थे, बल्कि दक्षिणी तट के महाजनों की ब्याह-शादियों में भी पहुँचते थे। आह! क्या दृश्य होता था वह! हाथी की सजधज भी देखने योग्य होती थी।"

"गोसाईं दिल ही दिल में बहुत अप्रसन्न है, हालांकि वह अपना भाव चेहरे पर नहीं आने देता। उसे अपने पर बहुत काबू है। उसने, उसके पिता ने तथा उसके दादा ने, अपने-अपने हाथियों के हौदों में बैठकर ही अपना सारा जीवन बिताया। और अब इस हाथी ने अपना हौदा फेंक दिया है और मस्त हुआ घूम रहा है। वाकई, बहुत बुरा वक़्त आ गया है।"

एक धीमी आवाज़ और आयी, "क्या तुमने ग़ौर किया कि गोसाईं ने अपने पैरों में पड़ी सिक्कों से लबालब भरी थैलियों की ओर एक बार ढंग से देखा भी नहीं? और जब वह खड़ाऊँ कक्ष के भीतर जाने के लिए उठा तो लकड़ी की तिपाई से कर्र-कर्र की आवाज़ आ रही थी। ध्यान रहे यह भी कोई अच्छा शगुन नहीं है।"

शाम के साये लम्बे होते जा रहे थे। जल्दी ही चारों ओर अँधेरा छा जायेगा। एकाएक वे सब सचेत हो गये और उन्हें याद आया कि उन्हें रात होने से पहले घर पहुँच जाना चाहिए। कौन जानता है वह दुष्ट हाथी उन्हें कहीं रास्ते में ही न मिल जाये!

जिस छोटे से कमरे में गिरिबाला पड़ी थी, वह ताबूत के समान हो रहा था। वहाँ कोई मिट्टी के तेल की छोटी-सी कुप्पी लेकर आया···

ओफ! सब कुछ तो उलटा-पुलटा हो गया है। वह अब क्या करे? क्या कर सकती है वह? आत्महत्या? ओह, वह क्रिस्तान? वह क्यों नहीं कुछ कहता? उसने उसकी खातिर दूसरे सब काम छोड़े और वे सब पाण्डुलिपियाँ जुटायीं और फिर उन्हें ढेकी तक भी पहुँचाया।

रात गहरा गयी थी। गिरिबाला खटिया पर बैठी थी, गुड़मुड़ी होकर। उसके घुटने

उसके वक्ष में धँस रहे थे। उसके बाजू उसकी टाँगों को जकड़े हुए थे। वह टिमटिमाती कुप्पी की दिशा में ऐसे ही टुकुर-टुकुर देखे जा रही थी।

एकाएक दरवाज़े पर खट्खट् हुई। वह झटके से उठी और सहमे-सहमे उसने खिड़की को खोला। खुली खिड़की में से चाँद की रोशनी फुदककर भीतर आ गयी और समूचे कमरे को अपने रूपहलेपन से नहलाने लगी। बाहर मार्क खड़ा था। चाँद के दैवी प्रकाश ने उसकी आकृति को निखार दिया था। गिरिबाला को लगा कि उसकी आँखें जगलिया नदी की लालिमा लिए रेत के रंग को प्रतिभासित कर रही हैं। उसने खिड़की में से ही कहा, "आज तुम्हारे साथ जो भी घटा, उससे मुझे कितनी चोट पहुँची है, मैं उसे बयान नहीं कर सकता। मेहरबानी करके मेरी लाचारी को समझो और मुझे क्षमा कर दो।"

गिरिबाला ने कोई उत्तर नहीं दिया। मार्क भी कुछ समय चुप रहा। फिर बोला, "जिस इच्छा का कोई अन्त नहीं है या जिसे पूरा नहीं किया जा सकता, उसके बारे में चिन्ता करने से क्या लाभ! उसे ईश्वर पर छोड़ दो!"

फिर चुप्पी छायी रही। गिरिबाला कुछ भी नहीं बोली।

"कुछ हद तक हम सब गुनाहगार हैं। ईश्वर के मन्दिर में वेदी पर पड़ा पात्र ही शुद्ध है, लेकिन हमने उसे भी उसमें सुरा पीकर अपवित्र कर दिया है। हम सबके पास एक अदृश्य पताका है जो कि हमारे सर के ऊपर फहराती रहती है। उस पर हमारे बारे में सभी फैसले लिखे रहते हैं और हमें जो सज़ा मिलती है, वह भी। जब हम इन्हें ईश्वर के आदेशों के मुक़ाबले में तौलते हैं तो इनका वज़न हमें बहुत कम मिलता है। ···और हम···"

गिरिबाला ने आक्रोश में आकर थूक दिया और बोली, "चुप रहो! चुप रहो, गोरे आदमी! अब सुनो! जो पाण्डुलिपियाँ तुम्हें दरकार हैं, वे ढेकी के ऊपर लकड़ी के तख्ते पर पड़ी हैं। जाओ और उन्हें ले लो।"

फिर वह खिड़की के बिलकुल निकट आ गयी और उसकी सलाखों को उसने दोनों हाथों से कसकर पकड़ लिया। एक क्षण तक वह मार्क को घूरती रही। फिर एकाएक उसने सलाखों में से अपना दायाँ हाथ बाहर किया और उसके गिरेबान को पकड़ लिया। मार्क ने अपने गिरेबान को धीरे-से उसकी उँगलियों की पकड़ से छुड़वाया और उसका हाथ भीतर की ओर कर दिया। फिर उसने बड़ी कोमलता से ये शब्द कहे, "तुम जानती हो हमारे उस रक्षक ने क्या कहा था? तुममें से जो भी मेरा अनुसरण करना चाहता है, अपना क्रॉस लिये मेरे पीछे-पीछे चला आये।"

गिरिबाला का शरीर ढीला पड़ गया। उसके कन्धे भी गिर गये। वह बड़ी बेचैनी-से, बिना एक शब्द कहे, अपनी खटिया की ओर बढ़ी और टूटी डाल की तरह उस पर गिर पड़ी। मार्क काफ़ी देर तक खिड़की के बाहर खड़ा रहा। एकाएक उसे लगा कि कुछ लोग उसे बड़ी बुरी तरह घूर रहे हैं। वह खिड़की से हट गया और पाण्डुलिपियाँ लेने के लिये ढेकी की दिशा में बढ़ गया।

कुछ समय बाद गिरिबाला ने अपनी आँखें खोलीं। उसकी दृष्टि कमरे के एक कोने पर पड़ी। वहाँ एक बड़ा-सा छाता लटक रहा था। उसमें लाल, हरे और गुलाबी रंग का बढ़िया साटिन का कपड़ा लगा था। यह वह छाता था जिसे गोसाईं जगलिया के जल में अपने मृत पूर्वजनों को भोज देते समय इस्तेमाल करता था। साटिन रेशम का वह उम्दा कपड़ा अँधेरे में भी साँप की ख़ाल की तरह चमक रहा था।

उसके मन में एक स्मृति कौंधी···यह वह दिन था जब उसका पति शादी के बाद पहली बार इस घर में खाने पर आया था। बातघर से लेकर हवेली तक इन्द्रनाथ और शम्भू अमीन इसी छाते को उसके सर पर ओढ़ाये उसके साथ-साथ आये थे। लेकिन इस स्मृति से उसके भीतर अपने पति के लिए किसी प्रकार के प्रेम या सम्मान की भावना नहीं उमड़ी थी। वह उस व्यक्ति के लिए उमड़ भी कैसे सकती थी जिसने एक दुश्चरित्र, अफ़ीम बेचने वाली औरत के साथ अपना घिनौना रिश्ता जोड़ लिया था?

यह उसे क्या हो रहा है?

साटिन का वह कपड़ा उसे हिलता हुआ दिखाई दे रहा था। वह ऐसे लकदक चमक रहा था जैसे कि उसकी आँखें चुँधिया देगा। वह आहिस्ता से खटिया से उठी और हलके क़दमों से उसकी ओर बढ़ी। उसने उस पर स्नेह से अपना हाथ फिराना शुरू कर दिया। आह! यह तो मार्क की त्वचा के समान कोमल और चिकना है। ···इतना कोमल··· इतना चिकना! ···उसने उसे अपने गालों पर, अपनी गरदन पर, अपनी छातियों पर··· अपने समूचे शरीर पर, धीरे-धीरे फिराया।

जैसे कि वह उस कपड़े को पूरी तरह अपने पर लपेट लेना चाहती थी··· उसकी कोमलता को आत्मसात् कर लेना चाहती थी···

यह रेशम, यह छाता, जो उसके पति को गोसाईं की हवेली के पवित्र अहाते में इतने सम्मान और इतनी धार्मिकता के साथ लाया था··· अब यही रेशम एक गोरे म्लेच्छ, एक क्रिस्तान की त्वचा में परिवर्तित हो गया है··· क्या यह सम्भव है?··· क्या कभी किसी ने पहले इस जगह पर ऐसा अनुभव किया?

गिरिबाला की आँखें आँसुओं में भर गयीं··· उसके अन्तरतम से एक फुसफुसाहट सुन पड़ी··· "ओह! मुझे इस लकड़ी के ताबूत में से निकालो! मैं तुमसे विनती करती हूँ।"

## दस

अभी तक मस्त हाथी ने किसी इन्सान की जान नहीं ली थी। इसलिए इसे अभी तक गोली मारने का सवाल भी नहीं उठा था, हालांकि उस क्षेत्र के लोगों में काफ़ी अफरा-तफरी हुई थी। लगभग हर किसी के मन में इस जीव के लिए सहानुभूति थी,

क्योंकि अभी कुछ समय पहले तक ही तो इसका व्यवहार इतना अच्छा रहा था। लोग चाहते थे कि वह किसी को हानि न पहुँचाये और जहाँ जाये स्वतन्त्रता से घूमता रहे। उरपुट और पातहल्दिया के गोसाइयों के हाथी भी मस्त हो गये थे और भाग निकले थे, लेकिन कुछ समय बाद वे स्वयं ही जीरंग के घने जंगलों में ग़ायब हो गये थे। इस हाथी को भी ऐसा ही करना चाहिए और ग़ायब हो जाना चाहिए···आह! क्या शानदार हाथी है! अठारह नाखून हैं इसके। ऐसा होना बहुत ही शुभ माना जाता है। इसके घुमावदार लम्बे, नुकीले दाँत सिख सैनिकों की शोभायमान खड्गों की तरह हैं। और इसकी पूँछ के बाल ऐसे फैले रहते हैं जैसे कि मोर के पंख हों। जिस हाथी की पूँछ बहुत लम्बी हो और ज़मीन को छुए तो उसे शुभ नहीं माना जाता। लेकिन इस हाथी की पूँछ इस क़दर लम्बी नहीं है।

पिछले चार महीनों से लगातार यही कोशिश जारी है कि इस मस्त हाथी पर किसी तरह काबू पा लिया जाये। दक्षिणी तट का विख्यात फंदेबाज़, जमालुद्दीन गेरिया, माटियापहाड़ की मचान पर बराबर चौकस रहता है। वह काफ़ी डींगे मारता था कि कैसे उसने दूसरे गोसाइयों के मस्त हाथियों को यों ही पकड़ लिया। लेकिन अभी तक तो उसके हाथ असफलता ही लगी है, और इसी कारण काफ़ी हद तक उसका घमण्ड और हेठी जाते रहे हैं। इस पर भी वह अपनी ज़िद पर अड़ा हुआ है, और उसी मचान से चिपका बैठा है। एक दिन उस सत्र का भगत[1] फ़ीलख़ाने के सामने खड़ा कह रहा था, "यह मस्त हाथी जमालुद्दीन के निकट कैसे जायेगा? इस हरामी ने तो, जब यह जगन्नाथ (मस्त हाथी) अभी बच्चा ही था, इसकी माँ को मार डाला था। इस बात को काफ़ी अर्सा हो गया है। जमालुद्दीन जानता है कि जिस कुंकी[2] पर बैठकर वह जगन्नाथ को पकड़ने जा रहा था, वह बहुत ही ज़िद्दी क़िस्म का हाथी था और वह क्या कर बैठेगा, इसे कोई नहीं जानता था। आख़िर बच्चे को पकड़ने के लिए उसे माँ को मार देना पड़ा।"

वहाँ कुछ और फंदेबाज़ भी थे। उन्हें बड़ी उत्सुकता हो रही थी। उन्होंने पूछा, "उसने माँ को कैसे मारा?"

"ओह! यह बड़ा भयावना दृश्य था। कुंकी ने अपने तेज़, नुकीले दाँतों से माँ को लहूलुहान कर दिया और उसे रौंदने की कोशिश करता रहा, लेकिन माँ बराबर डटकर खड़ी रही और अपने बच्चे की वह, उसे अपने पेट के नीचे छिपाकर, रक्षा करती रही। ओह! मैं वह दृश्य कभी भूल नहीं सकूँगा। आख़िर वह उसके क्रूर आक्रमण के आगे टिक न पायी और गिर गयी। बड़ा गाढ़ा खून चारों तरफ़ फैला हुआ था। मृत माँ के नीचे से बच्चे को बड़ी मुश्किल से निकाला गया।"

"लेकिन क्या यह क़ानून के ख़िलाफ़ नहीं है?"

"जंगल का वह भाग इतना घना है कि उसमें से एक पक्षी भी नहीं निकल सकता। अब कौन वहाँ इतने भीतर जाकर सच्चाई का पता लगायेगा? लेकिन फिर

भी मुझे याद है कि फंदेबाज़ और कुंकी, दोनों के परमिट ज़ब्त कर लिये गये।"

"हाँ, आजकल कौन जंगल के कानून और क़ायदों की परवाह करता है। अभी उस दिन की तो बात है। हमारा बड़ा गोसाईं उरपुट के गोसाईं के साथ माटियापहाड़ के जंगल में शिकार खेलने गया था। वहाँ उनका सामना एक मस्त हाथी से हो गया। उन्होंने अपने हाथों से ही न केवल उसका वध किया, बल्कि उसकी लाश के टुकड़े-टुकड़े करके उन्हें नदी में फेंक दिया। चारों ओर रात का सन्नाटा था।"

इन लोगों की बातें सुनकर बूढ़ा भगत, जिसकी दाढ़ी ढुलक रही थी और जो चीथड़े पहने हुए था, बोला, "तुमने देखा कि इस पागल हाथी ने दिन-दहाड़े क्या किया?"

"क्या किया इस महान् जगन्नाथ ने?"

घटना का वर्णन करने से पहले बूढ़े आदमी ने बताया कि जब जगन्नाथ को लाया गया था तो यह तीन महीने के भीतर ही पूरी तरह सब कुछ सीख गया था। बड़ा होशियार था यह। झट से बात को पकड़ता था। इसने तो बच्चों द्वारा केले के तने से बनायी गयी बाँसुरियों को भी बजाना सीख लिया था। जैसे ही इसे आगेत[3] का आदेश दिया जाता, यह उस पंक्ति से भी आगे बढ़ जाता जो उसके लिए खींची गयी थी। चेई[4] शब्द सुनते ही यह वहाँ जुटे हुए बच्चों के बीच नाचना शुरू कर देता, हालांकि इस शब्द का अभिप्राय तो यह था कि हाथी को अपने दायें या बायें, चित लेट जाना चाहिए। यह वह जानबूझकर करता था और इस प्रकार आदेश का उल्लंघन करता था। और जब बिरि[5] शब्द का प्रयोग किया जाता तो यह···"

वहाँ खड़े दूसरे लोग अब अधीर हो रहे थे। उसकी बात काटते हुए एक ने कहा, "हाँ, हाँ! यह सब तो बहुत रोचक है, लेकिन उस दिन दोपहर में दिन-दहाड़े क्या हुआ था? चलो, झट से बताओ।"

"अरे, हाँ, हाँ··· यह पुरानी हवेली के बातघर के निकट घटा था। 1818 के भीषण भूकम्प के बाद गोसाईं लोग गरैमारी छोड़कर इस सत्र में आ बसे थे। उन्होंने टीन के पत्तरों को चारों तरफ़ से काटकर बड़े आकर्षक नमूने तैयार किये थे और उनसे बातघर को सजाया था। अब इन सब पर जंग चढ़ गया है और वे ऊँट की खाल के समान दिखाई देते हैं। दरअसल, अब यह सब कुछ इस तरह से ऊबड़-खाबड़ हो गया है कि वाकई ऊँट के समान दिखता है। गोसाईं को जब अपने पुराने और नये अनुयायियों के यहाँ जाना था, तथा धार्मिक अनुष्ठान करने और भेंटस्वरूप मिलने वाला धान, पैसा, सोना इत्यादि इकट्ठा करना था, तो उसने हाथी के हौदे को साफ़ करने के लिए भोलागाँव के मुसलमान कारीगरों को बुलवा भेजा। वे तीन-तीन, चार-चार की टोलियों में आये थे और अपने नितम्बों के इर्द-गिर्द गमछे लपेटे हुए थे। हौदे को साफ़ करने का काम शुरू करने से पहले वे पास के कुएँ पर नहाये थे। फिर

उन्होंने हौदे के अलग-अलग भागों की झाड़-पोंछ की थी, उन्हें चमकाया था और लकड़ी पर उकेरे गये बेलबूटों को भी ठीक से साफ़ करके उन पर फिर से रोगन किया था। उस दोपहर, जब यह घटना घटी, तब ये मुसलमान कारीगर हौदे को साफ़ करने के काम में ही जुटे थे।…"

अब सब लोग एकसाथ एकाएक कह उठे, "हाँ, हाँ, कहते चलो। हमें बताओ कि पुरानी हवेली के बातघर में जगन्नाथ ने क्या किया?"

बूढ़ा व्यक्ति अपने ख़यालों में खो गया। उसका सर झुका हुआ था। उसने फिर कहना शुरू किया, "तुम लोग यह तो जानते ही हो कि हाथी दैवी जीव है। वह सब कुछ जानता-समझता है…"

"हाँ, हाँ, लेकिन हुआ क्या?"

"जैसे ही पौ फटी, वह माटियापहाड़ से नीचे आया और जगलिया नदी के तट पर अपने पाँव पटकता हुआ बातघर पहुँचकर हौदे के नज़दीक खड़ा हो गया। वे मुसलमान कारीगर, जो अभी तक हौदे को साफ़ करने और उसकी मरम्मत करने में लगे थे, अपने निकट ऐसी विशाल काया देखकर भयाक्रान्त हो उठे और मारे घबराहट के अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे। इसके बाद क्या हुआ, बता सकते हो? बड़ी अद्‌भुत घटना घटी। जगन्नाथ ने हौदे को अपनी सूँड में लपेट लिया और उसे उठाकर मज़े-मज़े चलने लगा। वह पूरे सत्र में घूमा। जिस किसी ने भी उसे देखा, उसकी हैरानी की सीमा न रही, भयाक्रान्त तो वह हुआ ही।"

'गज़ब! गज़ब!' की आवाज़ें हर किसी के मुँह से निकलने लगीं।

"तब?"

"जगन्नाथ उस हौदे को नदी किनारे ले गया और वहाँ उसे जगलिया की रेत पर पटक दिया… फिर मारे गुस्से के उस पर अपना एक पाँव रखा और उसे कुचलकर उसके हज़ार टुकड़े कर दिये। फिर उन टुकड़ों को उसने चारों ओर रेत पर फेंक दिया। वह उन्हें हवा में इस तरह उछालता था जैसे कि वह उनके साथ् कोई खेल खेल रहा हो, या जैसे कि होली का धूम-धड़क्का मचा रहा हो।"

जो लोग उस बूढ़े भगत की बात सुन रहे थे, वे एकाएक बोल उठे, "लेकिन क्यों? हौदे से वह इस क़दर नाराज़ क्यों था? बात समझ में नहीं आयी।"

"अब यह कौन बताये? ईश्वर ही जानता है! लेकिन मैं तुम्हें एक बात बता सकता हूँ। जब बड़े गोसाईं की मृत्यु हुई तो उस समय तीन पुष्कर या अशुभ ग्रह उच्च में थे। इससे परिवार की अवनति का संकेत मिलता है। तुमने सुना नहीं कि रंगमाटी के कम्युनिस्ट किस तरह से इस बात को लेकर शोर मचा रहे हैं कि गोसाईं या तो भूमि खुद जोतें या अलग हट जायें। कभी ऐसी बात पहले सुनी थी? क्या कोई गोसाईं खेत में जाकर खुद हल चलायेगा। क्या वह गारे-मिट्टी से अपने हाथ गन्दे करेगा?"

गोसाईं के हाथी का एक नाटा-सा, गठीला-सा सहायक महावत, जो हाफ़ पैंट पहने था, अब बोला, "वह हौदा बड़े गोसाईं के दादा के ज़माने का था। उस गोसाईं की खड़ाऊँ अब भी गोपीनाथ मन्दिर में पड़ी हैं। मैं बड़े गोसाईं के दादा के बारे में कई किस्से बता सकता हूँ।"

उसके इर्द-गिर्द खड़े आदमी बोल पड़े, "किस्से? ज़रूर बताओ हमें।"

"उस बूढ़े गोसाईं के मिजाज़ के क्या कहने! उसने बड़े आवेग में आकर अपनी पत्नी को मार-मारकर ख़त्म कर दिया···"

वहाँ खड़े व्यक्ति फिर कह उठे, "क्या? वाकई मार डाला? क्या यह सम्भव है?"

"जब राजा शिव सिंह ने इसके बारे में सुना तो उसने तुरन्त अपने सिपाहियों को हुक्म दिया कि गोसाईं को पकड़कर उसके सामने पेश किया जाये। जब गोसाईं के कानों में यह ख़बर पड़ी, तब वह पलक झपकते ही अपने शेर पर सवार हो गया और जीरंग के जंगलों में जा छिपा। वहाँ उसने एक पत्थर के घर में अपने को बन्द कर लिया। उस घर के दरवाज़े लोहे के थे।"

कुछ लोगों को विश्वास नहीं हुआ। वे बोले, "क्या कहा? अपने शेर पर?"

"कहा तो यही जाता है। हो सकता है यह पालतू शेर हो या उसके घोड़े का नाम शेर हो। शिव सिंह के सिपाही उसे पकड़ नहीं पाये··· और वह हौदा, जिसे जगन्नाथ ने ख़त्म कर दिया था, वास्तव में उस पुराने, बहुत पुराने गोसाईं का था जिसकी ताँबे की खड़ाऊँ आज भी गोपीनाथ के मन्दिर में देखी जा सकती हैं।"

अफ़ीम-निषेध समिति का एक होमगार्ड यह सब बड़ी रुचि से सुन रहा था। उसका चेहरा चौकोर था और उसकी गहरी बरौनियाँ उसकी नाक के ऊपर आपस में मिली हुई थीं। बरौनियों के नीचे उसकी छोटी-छोटी आँखें हर चीज़ को शक़ से देखती थीं। वह बोला, "हाथी यों ही, बिना कारण हौदे को बरबाद नहीं करेगा। इसके पीछे कुछ न कुछ ज़रूर रहा होगा।"

फ़ीलख़ाने से हाथियों के कान फड़फड़ाने की आवाज़ आ रही थी। मोनपुर गोसाईं की एक हथिनी, जिसे दोहार से लाया गया था, बुरी तरह से ज़ख्मी थी और बाड़े में बेहाल पड़ी थी। उसका यातना-भरा क्रन्दन कानों की फड़फड़ाहट के साथ मिलकर हवा पर तैरता हुआ बाहर आ रहा था। सबको भय था कि मस्त हाथी हथिनी को सूँघकर उस पर आक्रमण करने के लिए कहीं यहाँ न आ पहुँचे।

होमगार्ड ने अपनी लाठी को ज़मीन पर पटकने के साथ-साथ अपने शब्दों पर बल देते हुए कहा, "बापू, तुमने अपने जीवन में कई उन्मत्त हाथियों को देखा होगा और उनके बारे में तरह-तरह की कहानियाँ भी सुनी होंगी। हमें बताओ कि इस हाथी के क्या-क्या लक्षण हैं। क्या उसे पकड़ा जा सकता है? या उसे मार देना ही ठीक रहेगा?"

बूढ़ा भगत धरती की ओर देखता हुआ कुछ देर तक सोचता रहा। उसका चेहरा झुर्रियों के जाल से ढका हुआ था, जैसे किसी ने बहुत महीन, घिसा-पिटा कपड़ा ओढ़ रखा हो। उसकी आँखों के आसपास कुछ रेखाएँ उसके विचारमग्न होने के कारण बहुत ही स्पष्ट हो गयी थीं। वह आख़िर बोला, "वृक्कोदर गोसाईं के ज़माने में एक दुष्ट हाथी ने एक आदमी को मार डाला था और फिर जीरंग के जंगल में ग़ायब हो गया था। उसे बाद में कभी नहीं देखा गया। लोगों का कहना है कि वह पहाड़ के समान विशाल था और उसके घुमावदार दाँत उन खड्गों की तरह थे जो कामाख्या मन्दिर में भैंसों की बलि के लिए इस्तेमाल होती हैं। उसके इन दाँतों से दो रस्सों को बाँधकर एक लकड़ी की तिपाई लटकायी जाती थी, जिस पर गोसाईं बैठता था, और वह इसी प्रकार बैठे-बैठे गुवाहाटी तक यात्रा करता था! आह! वे भी दिन थे!"

होमगार्ड बड़ा उत्तेजित होकर बोला, "वृक्कोदर गोसाईं? जिसे उसके अनुयायियों ने ही मार डाला। क्या यह सच है? कितना भयंकर है। ऐसी बात पहले कभी नहीं सुनी गयी···अपने ही अनुयायियों द्वारा।"

ऐसा कहते हुए उसने ज़मीन पर से कुछ मिट्टी उठायी और अपने माथे से छुआयी।

हाथी की लीद की क्षारीय गन्ध का एक झोंका फ़ीलख़ाने से हवा के साथ चला आया और वहाँ जुटे व्यक्तियों पर अपना असर छोड़ गया। बूढ़े व्यक्ति ने अपनी नाक अपने गमछे से ढाँप ली और कहता गया, "कुछ लोगों का कहना है कि उसे पत्थर मार-मारकर वहीं ढेर कर दिया गया। कुछ का कहना है कि मायंगों[6] के तन्त्र-मन्त्र ने उसे खत्म कर दिया। यह घटना बेलतल्ला के निकट घटी थी।"

उसने अपना मुँह गमछे से पोंछा और कुछ देर तक अपने सामने टुकुर-टुकुर देखता हुआ वैसे ही बैठा रहा।

इस बीच कुछ बच्चे, जो ज़्यादातर ऐरम के पौधों के नीचे छिपी छोटी-छोटी मछलियाँ पकड़ने की फिराक़ में तालाब में ही घुसे रहते थे, अब बूढ़े भगत के चारों ओर बैठे लोगों में आ मिले। जब बूढ़े भगत ने अपनी बात कहना एकाएक बन्द कर दिया तो उनमें से कुछ अधीर हो उठे और बोले, "यह बीच-बीच में रुक क्यों जाते हो? हमें सारी बात क्यों नहीं बताते?"

बूढ़े भगत ने बात आगे बढ़ायी, "एक बार वृक्कोदर गोसाईं ने एक व्यक्ति को बहुत ही क्रूर ढंग से दण्ड दिया। उसे ज़मीन पर चित्त लिटा दिया गया और उसकी छाती पर एक बहुत बड़ा पत्थर रखा गया। वह काफ़ी समय तक उसी स्थिति में पड़ा रहा। बेचारा! घोर यातना में उसकी मृत्यु हुई। उस घटना से बाक़ी अनुयायी भड़क उठे। उन्होंने उसे मार डाला।"

श्रोताओं पर अब पूरी तरह चुप्पी छा गयी थी। उस चुप्पी को केवल हाथियों के कानों की फड़फड़ाहट ही तोड़ रही थी। उन्होंने एक बैलगाड़ी की आवाज़ भी सुनी।

वह बैलगाड़ी गोसाईं की हवेली की दिशा से आ रही थी। उस पर फूल-पत्तीदार चंदौसी थी। वह ध्वस्त हौदे के निकट रेत पर रुक गयी। गाड़ीवान और कुछ बंधुवों ने गाड़ी पर हौदे के टुकड़ों को लादना शुरू कर दिया। उन्होंने सुन रखा था कि हाथी अपने दुश्मन का पूरी तरह से सफ़ाया करने के लिए एक बार फिर वापस आता है। इसलिए उन्होंने लदाई का काम और तेज़ी से करना शुरू कर दिया, हालाँकि वे महोगनी लकड़ी के बने इतने शानदार हौदे को टुकड़ा-टुकड़ा हुआ देख दुःख से भरे हुए थे। हौदे के दोनों तरफ़ पक्षियों और जानवरों के अनेक चित्र उकेरे हुए थे। दो चीलें थीं। इन्हें धीरज का प्रतीक माना जाता है। एक घोड़ा था जो गति का प्रतीक है। क्या शानदार हौदा था वह! अब ये तमाम चिह्न चकनाचूर हो चुके थे और रेत में ऐसे पड़े थे जैसे कि धीरज और गति का कोई महत्त्व ही न हो।

एकाएक वह महावत का सहायक जो हाफ पैण्ट पहने हुए था, बड़े अचम्भे से बोला, "हे ईश्वर! इन मुड़े हुए कीलों की ओर देखो!" उसने लकड़ी का एक शहतीर उठाया। वह शहतीर कभी हौदे के पेंदे में लगा था। उसने वहाँ खड़े सभी लोगों को पेंदे से निकले दो मुड़े हुए कीलों को दिखाया। हर कोई कह उठा, "तौबा, तौबा! इन कीलों ने तो हाथी की पीठ पर रगड़ खा-खाकर उसे बेहद तकलीफ़ दी होगी, और किसी को इसका पता भी नहीं चला होगा।"

हवा में अब उस जीव के लिए दुःख और सहानुभूति की आहें भर गयीं। किसी ने टिप्पणी की, "हर किसी ने उस शानोशौकत वाले हौदे को तो देखा और गोसाईं की शानदार रेशमी पोशाकों को भी देखा। वे इस दृश्य को देखकर चकाचौंध से भर गये होंगे, पर ग़रीब हाथी को जो आघात पहुँच रहा था, उसकी उन्होंने रत्तीभर भी परवाह नहीं की होगी।"

एक दूसरे व्यक्ति ने अपनी आवाज़ ऊँची करके कहा, "अब मुझे याद आया। गोसाईं की पालकी को ले जाने वाले एक बंधुवा के कन्धों में कैसे कीड़े पड़ गये थे। हाथी की पीठ की हालत भी वैसी ही हुई होगी।"

होमगार्ड ने अपनी बात पर बल देते हुए कहा, "वह पालकी ढोने वाला बंधुवा मूर्ख ही रहा। उसे चाहिए था कि वह भी अपना गुस्सा इसी तरह उतारता जैसे इस हाथी ने उतारा था। क्यों नहीं उसने पालकी को ठोकरें मार-मारकर रेज़ा-रेज़ा कर दिया?"

"अफ़सोस! वह ग़रीब टेटनस का शिकार हो गया और इस दुनिया से चल बसा। उसका शरीर कमान की तरह दुहरा और शीशम की लकड़ी की तरह कड़ा पड़ गया था।"

बैलगाड़ी अब हौदे के टूटे हुए टुकड़ों से पूरी तरह लद चुकी थी। बंधुवे फुर्ती से उन टुकड़ों के ऊपर चढ़कर बैठ गये। गाड़ीवान ने अपना चाबुक घुमाया और बैलगाड़ी कर्र-कर्र की आवाज़ के साथ आगे बढ़ने लगी।

इन्द्रनाथ ने काफ़ी समय बाद अपनी शीशम की पाइप को बाहर निकाला था। उसने उसमें तम्बाकू भरा, उसे दियासलाई दिखायी और उस पर कश लेने लगा। वह अपने बरामदे के कच्चे फर्श पर इधर से उधर चक्कर काट रहा था। वह भीतर ही भीतर अप्रसन्न था और बेचैन भी। माराभीटा वाली ज़मीन को लेकर काफ़ी गड़बड़ हो गयी थी। यह गोसाईं परिवार के लिए पद और प्रतिष्ठा का प्रतीक भी बन गयी थी, और इन्द्रनाथ के लिए तो यह नासूर के समान हो गयी थी। यह ज़मीन काफ़ी अरसे तक पानी में डूबी रही थी और सोचा यह जा रहा था कि यह बेकार हो गयी है। इसके बावजूद गोसाईं ने लोहारघाट में इसकी कर-अदायगी जारी रखी। फिर धीरे-धीरे पानी कम होता गया और तीन साल के बाद मिट्टी की नयी परत आने के कारण यह काफ़ी उपजाऊ हो गयी। फिर गोसाईं को पता भी नहीं चला और कई ग्रामीणों ने वहाँ बुबाई शुरू कर दी। जैसे कि नदी ने भूमि के इस टुकड़े पर सोना और चाँदी बिखेर दिये हों। यहाँ एक मौसम के बाद दूसरे मौसम में बढ़िया से बढ़िया फ़सल होती गयी। पहले शम्भू अमीन ने इस भूमि की ओर कई सालों तक ध्यान नहीं दिया था, लेकिन अब उसकी आँखें भी धान की सुनहरी बालियाँ और वहाँ बिछे हरियाली के गालीचे देखकर चकाचौंध से भर गयीं। उसने वहाँ खेतों में काम करने वाले सभी लोगों को बुलाया। जब वे वहाँ जुट गये तो वह उन्हें बड़े ठण्डे स्वर में कोसने लगा, "अरे मूर्खो, तुम लोग गोसाईं से आज्ञा लिये बिना इस ज़मीन को जोत रहे हो। इसलिए कि वह बहुत ही नेक और साधु स्वभाव का है? तुम्हारा क्या ख़याल है कि तुम उसे बताये बिना जो तुम्हारे मन में आयेगा, करोगे? यह चल नहीं सकता। मेरी बात सुन रहे हो न? यह चल नहीं पायेगा। गोसाईं इस ज़मीन के लिए बराबर टैक्स देता रहा है। तुम्हें अब कुछ न कुछ करना ही होगा··· या तो तुम सब उसे आधी[7] दोगे या चुकानी[8]।"

पास ही के एक तिकोने खेत में, बाँस के एक डण्डे पर, लाल रंग का कपड़ा फड़फड़ा रहा था। उसके नीचे एक बूढ़ा बैठा था जिसके बाल काफ़ी बढ़े हुए थे और दाढ़ी लम्बी थी। वह खड़ा हो गया और अमीन की ओर तीखी निगाह से देखते हुए बड़े ही कचोटते स्वर में बोला, "अरे हरामी अमीन! तुम्हें यहाँ कौन नहीं जानता? तुम आधी देने को कह रहे हो? हम सब जानते हैं कि हमें क्या माँग करनी है। हमें अपने अधिकारों का पता है। हम अब घूस नहीं लेते और न ही ज़मीन के झूठे काग़ज़ात तैयार करते हैं। मेरी बात सुन रहे हो न? अब नहीं। अब ज़मीन के कच्चे पट्टे को नियत समय के पट्टे में नहीं बदला जा सकता।"

कुछ लोग जो भीड़ में शामिल होना चाहते थे, बूढ़े की बात सुनकर वहाँ से चलते बने। लेकिन एक बूढ़ा किसान, जो सम्भवतया अब भी गोसाईं के प्रति वफ़ादार था, अमीन के पास आया और उससे फुसफुसाते हुए बोला, "गोसाईं से कहो कि वह यहाँ अपने हाथी पर बैठकर आये। उसी पुराने हौदे में। उसका यहाँ आना ही दैवी

काम करेगा! ये सब लोग···", उसने अपना हाथ अर्धवृत्ताकार घुमाया और कहता गया, "ये सब लोग उसके पाँवों पर गिर पड़ेंगे और उस लाल झण्डे की चिंदी-चिंदी हो जायेगी और उसे नदी में फेंक दिया जायेगा।"

वह बूढ़ा किसान कुछ और भी कहना चाहता था, लेकिन ठीक उसी समय मिट्टी के दो बड़े-बड़े ढेले, जिन्हें भीड़ के छोर पर खड़े कुछ व्यक्तियों ने फेंका था, शम्भू अमीन और उस बूढ़े किसान पर आ पड़े। इसके बाद तो ढेलों की वर्षा ही होने लगी। बूढ़ा किसान गिर गया और अमीन भी वहाँ से अपनी जान बचाने की ख़ातिर भाग खड़ा हुआ। बाद में सत्र में यह खबर पहुँची कि बूढ़े किसान की उन घावों के कारण मौत हो गयी है जो उसे उस दिन हुए थे जब शम्भू अमीन उनके यहाँ गया था। जहाँ तक शम्भू अमीन का सवाल था, उसने माराभीटा जाने की फिर कभी जुर्रत नहीं की।

इन्द्रनाथ बरामदे में चक्कर लगाये जा रहा था और बीच-बीच में अपनी शीशम की पाइप पर कश भी लगा लेता था। उस मनहूस ज़मीन के बारे में विचार उसे अब भी खाये जा रहा था। जिस भाँति वह पाइप पर कश लगा रहा था, उससे उसके मन में आने वाले विचारों का उतार-चढ़ाव स्पष्ट देखा जा सकता था। जैसे कि वह पाइप उसके विचारों का साकार रूप बन गयी हो।

गोसाइन भी वहीं बरामदे में ही थी। वह एक लकड़ी की तिपाई पर बैठी थी और उसने अपने वक्ष पर लाल मेखला बाँध रखी थी। वहीं उसके पास ज़मीन पर वह बूढ़ी कुबड़ी देहातन, गुईमैनी भी बैठी थी। वह अपनी पतली टाँगों को सिकोड़े हुए थी और उसे गाँव के बारे में नयी-नयी बातें बताने के साथ-साथ ललचायी-सी तम्बाकू पीने की अपनी बारी का इन्तज़ार कर रही थी। अब समय भी हो गया था कि गोसाइन पकवान घर में जाये और अपने लिए खाना तैयार करे। दरअसल, वह अपना खाना खुद ही तैयार करती थी, लेकिन उससे पहले वह अपने छोटे-से कक्ष में अकेली बैठकर अपनी गुड़गुड़ी पर कुछ कश भी लेने की आदी थी। लेकिन आज उसके मन में पहले से ही कई विचार आ रहे थे। वह भी माराभीटा वाली ज़मीन को लेकर परेशान थी। आख़िर, यह उनकी प्रतिष्ठा का सवाल था। जब कभी वह परेशान करने वाला प्रश्न अपना सर उठाता, वह बिलकुल सन्न पड़ जाती। गुइमैनी के उसके निकट होने से भी कोई फ़र्क़ न पड़ता। वह बिलकुल गुमसुम हो जाती।

एकाएक एक बैलगाड़ी चीं-चीं करती और धूल का बादल उड़ती सहन में आकर रुकी। उसमें से होमगार्ड, महावत और कुछ बंधुवा मज़दूर कूदकर बाहर आये और उन्होंने सहन के एक कोने में हौदे के टूटे हुए टुकड़ों की ढेरी लगानी शुरू कर दी। हवेली से हर कोई बाहर आ गया और हौदे के उन टुकड़ों के इर्द-गिर्द भुतवा चुप्पी साधे खड़ा हो गया। फिर होमगार्ड ने ही उस चुप्पी के दौर को तोड़ा, "आप लोगों

को इतना उदास नहीं होना चाहिए। कुछ-न-कुछ अब भी हो सकता है। वे मुसलमान बढ़ई शायद टूटे हिस्सों की मरम्मत करके उन्हें फिर जोड़ सकते हैं।"

इन शब्दों से प्रोत्साहित होकर महावत ने भी हिम्मत दिखायी और बोला, "वाह! क्या चीज़ था यह! पूरे हिन्दुस्तान में ऐसा शानदार हौदा देखने को नहीं मिलेगा।"

इस पर होमगार्ड ने उसे डपटकर कहा, "ऐसी बातें करना बहुत आसान है। कह सकते हो कि वह बहुत शानदार हौदा था, बहुत कीमती था, लेकिन इसके निचले भाग में जो मुड़े हुए कील थे, उनके बारे में तुम्हें क्या कहना है? तुम्हारा ध्यान पहले भी उधर जा सकता था। क्यों?"

इन्द्रनाथ ने अपने मुँह से पाइप हटायी और बोला, "ये मुड़े हुए कीलों का क्या माजरा है? कैसे मुड़े हुए कील?"

तब होमगार्ड ने बात को स्पष्ट करते हुए कहा, "हौदे के पेंदे पर चौकोर फ्रेम से चार बड़े खूँटियों जैसे कील बाहर आ रहे थे। यह तब देखा गया जब टूटे हिस्सों को इकट्ठा किया गया। ईश्वर ही जानता है कि उन्हें बढ़इयों ने किसी ख़ास उद्देश्य से लगाया था या वे बाद में बाहर आ गये। लेकिन यह सच है कि वे मुड़े हुए कील हाथी की पीठ में धँस रहे होंगे और वहाँ उन्होंने गहरे घाव कर दिये होंगे।"

यह बात सुनते ही गोसाइन ने, जो वहाँ बरामदे में गुइमैनी के साथ गुड़मुड़ी हुई बैठी थी, टोकते हुए अजीब ढंग से कहा, "इसके बारे में ख़ास उद्देश्य क्या हो सकता है? कई उत्सवों में हाथियों पर इसी किस्म के हौदे रखे जाते हैं। वह बूढ़ा कुम्हार भी, जो छोटे-छोटे मिट्टी के खिलौने बनाता है, इसी तरह के हौदे बनाकर मिट्टी के हाथियों की पीठ पर रखता है। तो उन उभरे हुए कीलों के पीछे ख़ास बात क्या होगी? मैं तो समझ नहीं पा रही।"

वह वहाँ से उठी और नीचे आ गयी। फिर वह उन टुकड़ों के ढेर को ग़ौर से देखने लगी। गुईमैनी उसके पीछे-पीछे चली आयी थी।

होमगार्ड को एकाएक कुछ याद आया। एक बार जब वह गारो की पहाड़ियों में उकियम में एक अफ़ीम के तस्कर को पकड़ने के लिए मोटे बेंत और बाँसों के झुरमुट के नीचे छिपा बैठा था तो कम्युनिस्ट विचारों का एक युवक भी उससे आ मिला था। ठीक उसी समय वहाँ से दो हाथी गुज़रे थे। उनकी पीठ पर कुछ लोग बैठे हुए थे। तब उस युवक ने कहा था, "देखो यह कूच-बिहार के कुछ सौदागर हैं। कितने आराम से उन सजे हुए हौदों में बैठे हैं। वे हाथी ख़रीदने आये हैं। तुम्हें इस बात का पता है? वे हाथी तमाम उम्र लोगों का बोझा ढोते रहते हैं जब तक कि वे अधमरे नहीं हो जाते। वे हमारी-तुम्हारी तरह हैं। वे गजमूर्ख[9] हैं और हम भी उनकी तरह गजमूर्ख हैं।"

होमगार्ड यह पूछने जा ही रहा था कि सजाये गये हौदे का प्रतीक क्या है, कि तभी गुस्से से भरे गोसाइन के चेहरे को देखकर वह एकाएक चुप हो गया।

बंधुवे मज़दूरों को देखकर इन्द्रनाथ ने ऊँची आवाज़ में आदेश दिया, "जल्दी करो। उन टूटे हुए टुकड़ों को उठाओ और उन्हें ढेकी के एक कोने में जमा दो। होशियारी से। उन्हें किसी और को छूने मत देना।"

धीरे-धीरे सभी वहाँ से हट गये। उस शाम गोसाइन तम्बाकू पीने के लिए उस छोटे से कमरे में भी नहीं गयी। इसके विपरीत वह सीधे रसोईघर में गयी। गुईमैनी तब तक वैसे ही बैठी रही, इन्तज़ार करती हुई, और आख़िर गहरी निराशा में वहाँ से चली गयी।

इन्द्रनाथ अपनी पाइप पर कश लगाता हुआ हवेली के पिछवाड़े में गया और वहाँ चुपचाप खड़ा रहा। काफ़ी समय तक उस पर भी निराशा छायी रही। वह पूरी तरह झुँझलाया हुआ था। उसने अपनी निराशा पर काबू पाने के लिए काफ़ी कोशिश की। वह कश पर कश लगाये जा रहा था और पिछवाड़े के एक कोने से दूसरे कोने तक गश्त भी लगाये जा रहा था। अचानक उसकी निगाह क्षितिज में भगवती के घर पर पड़ी। उसके मन ने पलटा खाया। उसके माथे को जैसे कि ठण्डी हवा का एक झोंका छू गया। आह! वह सामने कथना के पेड़ में किस तरह सफ़ेद फूल खिल रहे हैं, और उसके तने के इर्द-गिर्द कैसे एक जंगली बेल लिपटी जा रही है। कुछ डालियों से वह शहद के छत्तों की तरह लटक भी रही है। अब उसे गुस्सा आ गया। यह घनी बेल उसकी आँखों के सामने बाधा खड़ी कर रही है। जब ईलीमन बाहर आयेगी और कुएँ के पास खड़ी हो जायेगी तो वह उसे देख भी नहीं सकेगा। किस किस्म की बेल है यह! यह कितनी और बढ़ेगी, कितनी मुरझाकर गिरेगी?

उसने अब ऊपर की ओर देखा। आसमान बिलकुल साफ़ और स्वच्छ था... उसके उजले चेहरे की तरह। जिस दिन उसने अपने आपको समर्पित किया था, तब इन्द्रनाथ को लगा था कि उसने कुछ पा लिया है, कुछ ऐसा जो कि अलभ्य और बहुमूल्य है···

उसने अपनी हवेली के पिछवाड़े में फिर चक्कर लगाने शुरू कर दिये। कुछ देर के बाद उसकी पाइप ठण्डी हो गयी। तम्बाकू जलकर खत्म हो चुका था। अब बड़े गोसाईं को पूजा-पाठ कर लेने के बाद खड़ाऊँ कक्ष से बाहर आ जाना चाहिए। आज उसे उत्तरी तट के अपने अनुयायियों के यहाँ भी वार्षिक अनुष्ठान पर जाना है। पुरोहित भगवती ने जन्त्री देखकर हिसाब लगाया था कि प्रस्थान की उत्तम बेला दिन का दूसरा भाग ही होगी, क्योंकि उत्तरी दिशा में यात्रा करने के लिए यह बहुत ही शुभ घड़ी होगी। सभी बंधुवे अब हवेली की अटारी से उस सब सामान को निकालकर बाहर ला रहे थे जो गोसाईं को अपने साथ ले जाना था—जैसे चन्द्रताप (साटन का एक बहुत बड़ा छाता), पीतल के बर्तन, ताँबे की तश्तरियाँ, मदिरापान के लिए पीतल और चाँदी की नक्काशीदार छोटी तश्तरियाँ, मच्छरदानियाँ, हाथ से बुने शाल, पीतल और ताँबे के चम्मच और अलग-अलग आकार की कलछियाँ, मिट्टी के

तेल वाली लालटेनें, सरसों के तेल से जलने वाले मिट्टी और ताँबे के दीये और छोटी-बड़ी बेंत की चटाइयाँ। इन सब चीज़ों को बैलगाड़ियों पर लादा जायेगा। इन्द्रनाथ खड़ाऊँ कक्ष के दरवाज़े के सामने खड़ा था। वह गोसाईं को भीतर देख सकता था। गोसाईं साफ़-सुथरे, सफ़ेद गमछों में धार्मिक पाण्डुलिपियाँ लपेट रहा था। इन्द्रनाथ खड़ा उसका इन्तज़ार कर रहा था। वह उसे बताना चाहता था कि दुष्ट हाथी ने किस तरह से हौदे को बरबाद कर दिया है।

दुर्गा अच्छी कारीगरी से बनाये गये लकड़ी के एक बक्से में गोसाईं के कपड़ों को ठीक से तह करके रख रही थी। इन कपड़ों में महीन शान्तिपुरी धोतियाँ, बड़े-बड़े शाल (तेलाच[10] और बरकापुर[11]), कई तरह के तौलिये, रेशम की चादरें और जनेऊ शामिल थे। अपना काम पूरा करके वह बाहर कुएँ पर अपना मुँह-हाथ धोने और पानी पीने गया कि एकाएक उसने देखा कि सड़क पर जगन्नाथ पुरी के पण्डों की एक टोली चली आ रही है। उनमें से कुछ छोटे क़द के, कुछ लम्बे, कुछ दुबले और कुछ मोटे थे। लेकिन वे सब भगवे रंग की धोती और चादर में थे। उनके मुण्डे हुए सरों पर चोटियाँ थीं जिनके सिरों से लाल रंग के घण्टाकर्ण[12] नाम के फूल लटक रहे थे।

उन्हें देखते ही दुर्गा के शरीर में से बिजली की कौंध की तरह उत्तेजना की एक लहर दौड़ गयी। आखिर वह समय आ ही गया था जब वह इन पण्डों के साथ जगन्नाथपुरी जा सकती थी। कौन जानता है यह समय फिर कब आये? काफ़ी समय से उसकी छाती में हलकी, सूखी खाँसी उठने लगी थी और वह उसकी तीखी पीड़ा को अपने भीतर छिपाये रही थी। कैसे कहा जा सकता है! हो सकता है यह वह भयंकर रोग क्षय ही हो। उसने अपने बाजुओं और टाँगों पर एक नज़र दौड़ायी। कहीं मांस का निशान तक नहीं था। बस, केवल खाल और हड्डियाँ थीं। गाँव की औरतें अक्सर यह कहकर उसका मज़ाक़ उड़ातीं कि जब वह मेखला और गताला पहनकर बाहर जाती है तो जगलिया नदी के किनारे लगने वाले मेले में वह कुम्हार द्वारा बनायी गयी चुड़ैल-सी लगती है। नहीं, नहीं। यह मौका वह हाथ से कभी जाने नहीं देगी। बस, यही एक इच्छा है उसकी जो उसे बराबर खाये जा रही है। कौन जानता है कि वह आगे प्रयाग भी चली जाये और गंगा की पवित्र धारा में अपने दिवंगत पति की अस्थियाँ प्रवाह आये। उसने तो देवताओं को अपने बालों की भेंट चढ़ाने का भी संकल्प कर रखा था···

"अरे! तुम अपने बालों की भेंट चढ़ाओगी?" एक दिन छोटी गोसाइन ने प्रश्न किया था।

उसकी मेखला और गताला बिलकुल साफ़ हैं और उसके बालों से भीनी-भीनी सुगन्ध आ रही है। लोगों का कहना है कि वह अपने बालों का तेल पलासबाड़ी में ब्रह्मपुत्र के किनारे रहने वाले मारवाड़ी दुकानदारों से लाती है···

अरे, यह क्या! पण्डे तो दूसरी दिशा में जा रहे हैं। हवेली की तरफ़ तो उन्होंने रुख ही नहीं किया। शायद उन्हें पता चल गया है कि दामोदरिया गोसाइनें इस वर्ष तीर्थयात्रा पर नहीं जायेंगी। अब इन पण्डों में और बदनाम जासूसों में, फ़र्क़ भी क्या रह गया है। उन्हें चिकारहाटी तक की गोसाईं परिवारों और ब्राह्मण परिवारों की यात्रा की इच्छुक महिलाओं की माली हालत का पता है। उन्हें हर बात का पता रहता है—कौन जायेगा, कौन नहीं जायेगा और किससे वे ज़्यादा पैसा ऐंठ सकते हैं। सब कुछ उनकी मुट्ठी में रहता है। निश्चित रूप से वे इस अभागी हवेली की हालत भी जान गये होंगे। फिर वे उस उन्मत्त हाथी के बारे में भी जानते होंगे जिसने चारों ओर आतंक फैला रखा है। गिरिबाला ने उस क्रिस्तान मिशनरी के साथ जो छूट ली, वे उसके बारे में भी जानते होंगे। फिर माराभीटा की भूमि को लेकर कम्युनिस्टों की धमकियाँ और इन्द्रनाथ का उस ब्राह्मण लड़की के प्रति आकर्षण। ज़रूर उन्होंने अपने भगवे झोलों में ये सब छोटी-मोटी बातें सँजो ली होंगी। जब वे बातघर के पास से गुज़रे तो उसे एक प्रकार की अपमान की चुभन का एहसास हुआ।

पहले वे सीधे भीतर चले आते थे और सहन में खड़े होकर गुहार लगाते थे, "हम जगन्नाथपुरी और प्रयाग के पण्डे हैं। यह बेनीमाधव का प्रसाद ले लीजिए। हम गंगा, यमुना और सरस्वती के पवित्र संगम से चले आ रहे हैं। महाभारत में कहा गया है कि अकेले प्रयाग में ही साठ करोड़ दस हज़ार तीर्थस्थान हैं।"

यह सब उन्हें तोते की तरह रटा रहता था, और वे अलग-अलग घरों के सहनों में खड़े होकर इसका पाठ करते थे। फिर घरों के भीतर से बैठने के लिए चटाइयाँ आ जाती थीं और पीने के लिए स्वच्छ, निर्मल जल के पीतल के घड़े और ताँबे के चाय से भरे बड़े-बड़े गिलास भी। जब यह औपचारिकता पूरी हो जाती तो ये पण्डे पीतल की एक तश्तरी मँगवाते और उसमें अपने झोलों में से यमुना की बीच धारा के नीचे से लिया गया शुभ कीच उड़ेल देते। इसके अलावा विश्वनाथ बाबा के सूखे फूलों के हार तथा जगन्नाथ मन्दिर के तरह-तरह के प्रसाद भी होते। ये प्रसाद लाई, शक्करदाना और सूखे खुरमा[13] से बने होते।

नहीं, नहीं। आज कोई भी पण्डा बातघर में दाखिल नहीं हुआ। वे सभी ताल्लुकदारपाड़ा और हेरामदो की ओर बढ़े जा रहे हैं। और वह देखो न! वे दो लम्बे पण्डे और तीन नाटे पण्डे दूसरे पण्डों से पीछे रह गये हैं। क्या उन्हें आवाज़ लगाना ठीक होगा? वह बेचैन हो उठी। उसे कुछ न कुछ ज़रूर करना चाहिए। वह बातघर की ओर जल्दी से पहुँची। हाँ, हाँ! अगर वह जानलेवा बीमारी वाकई उसे लग गयी है, तो उसे अब कुछ-न-कुछ करना ही चाहिए। तुरन्त! यदि उसका अन्त जल्दी आता है तो उसे अपने दाह-संस्कार की कोई चिन्ता नहीं है। वह पुण्यात्मा इन्द्रनाथ अपने आप सभी रस्में पूरी कर देगा। और हाँ, चिकारहाटी के गोसाईं भी उसके शरीर को कौओं और गिद्धों से नुचवाने के लिए नहीं छोड़ देंगे। आख़िर, वह दामोदरिया गोसाइयों

की बेटी है और उन्हीं दामोदरिया गोसाइयों की बहू भी है। और फिर उसके अनुयायी भी तो हैं जो उसके पाँवों की रज अपने माथे से लगाते हैं।

उसने सब काम बीच में ही छोड़ दिया और पण्डों का इन्तज़ार करने लगी। कौन जाने वे कब आयें और चले जायें···और वह यह अवसर हमेशा के लिए खो दे?

बड़े गोसाईं की यात्रा शुरू हो गयी थी। वहाँ जुटे उसके अनुयायियों ने उसे सफल यात्रा के लिए शुभ कामनाएँ दीं। वह एक सजी हुई पालकी में बैठ गया और मनियारी-किनियारी की दिशा में यात्रा का पहला चरण पूरा करने के लिए रवाना हो गया। वहाँ से वह एक पुरानी फोर्ड कार में बैठकर उत्तर के लिए रवाना हो जायेगा। इस बार उसके साथ हमेशा की तरह हाथियों की क़तार नहीं थी। केवल एक ही हाथी था, और वह भी बूढ़ा, जो भारी सामान का बोझा ढोता हुआ उनके पीछे-पीछे चल रहा था।

हाँ, इस शुभ यात्रा पर रवाना होने से पहले गोसाईं ने जमालुद्दीन गेरिया को बुलाया था और उसे आशीर्वाद देते हुए बोला था, "अपने पुरखों की शानदार शोहरत को बनाये रखना। वे जबर्दस्त फंदेबाज़ थे और बदमाश हाथियों को पकड़ने में माहिर थे। अगर तुम कामयाब रहे तो मैं तुम्हें उकियम में सात बीघा ज़मीन मियादी खिराज[14] पर दूँगा।"

फिर गोसाईं ने शम्भू अमीन की तरफ़ देखा था। वह अपनी पुरानी एंडी की पंजाबी में और भी मोटा दिखाई दे रहा था। उसे सम्बोधित करते हुए उसने कहा था, "अगर तुम माराभीटा वाली ज़मीन का मामला सुलझा न पाये तो तुम फौरन गुवाहाटी चले जाना। ऊपरी असम के उस जगदीश नाम के वकील ने दक्षिण तट के गोसाइयों के कई ऐसे मामले अपने हाथ में लिये हैं और उन्हें इज़्ज़त के साथ निपटाया है।"

माराभीटा की ज़मीन का ज़िक्र सुनकर पास खड़े लोगों के चेहरों पर भय की छाया मँडराने लगी और उनकी निगाहें तुरन्त नीचे हो गयीं। शम्भू अमीन को याद है माराभीटा में उस पर कैसे पत्थरों के समान ढेले बरसाये गये थे जिनकी वजह से अब भी उसका दर्द गया नहीं है। बल्कि घाव इतने गहरे हो गये थे कि भीतर की नसें दिखने लगी थीं। अब भी कभी-कभी दर्द उसके शरीर में ऐसे उठता है मानो किसी केंकड़े के धारदार और नुकीले पंजे उसके भीतर गड़ रहे हों।

गोसाईं अब इन्द्रनाथ की ओर मुड़ा। उसके चेहरे पर उसके लिए घोर चिन्ता थी। उसने उसे पालकी के निकट बुलाया और धीमे स्वर में बोला, "कुछ लोगों ने मुझे बताया है कि राजापुखरी के पुरोहित को छुड़वाने में तुम्हारा हाथ था। यह सच है कि हम नहीं चाहते कोई ब्राह्मण जेल जाये··· लेकिन उनमें से कुछ पिछले दिनों क़सूरवार पाये गये हैं। आख़िर, जुर्म तो जुर्म ही है। इसलिए यह मामला गम्भीर होता है। ऐसी स्थिति में तुम जात-पाँत के भेदभाव के चक्कर में क्यों पड़ जाते हो? हमारे धार्मिक ग्रन्थों में भी कहा है कि जुर्म में सब बराबर हैं, जात-पाँत कुछ भी नहीं। लेकिन···"

उसने अब जल्दी से इन्द्रनाथ के चेहरे पर एक निगाह डाली, यह देखने के लिए कि क्या वहाँ ग़लती के एहसास का एक-आध चिह्न है या नहीं। कुछ भी तो नहीं है! ···वह कुछ देर तक चुपचाप, स्तम्भित हुआ-सा खड़ा रहा···

यह बूढ़ा गोसाईं, जो अधिकार भी है, अब भी कितना प्रभावशाली दिखता है! सुन्दर तो वह है ही, हालांकि कुछ चर्बी उसकी ठुड्डी के नीचे और कमर के इर्द-गिर्द जमा हो गयी है। उसने जब देखा कि इन्द्रनाथ तो टस से मस नहीं हुआ और मुँह सीये है तो उसका चेहरा सुर्ख़ हो गया। अब उसने मुड़कर पिछवाड़े का मुआयना शुरू कर दिया, ख़ासकर उस जगह का जहाँ कुटाई का काम होता था। हर कोई समझ रहा था कि वह किसे ढूँढ़ रहा है। उनकी आँखें भी उस कुटाई वाले स्थान की ओर मुड़ गयीं। गिरिबाला कहाँ है? आमतौर पर वह भीड़ में सबसे आगे होती है, उसे विदाई देने के लिए।

गोसाइन ने बताया कि मच्छकुची से दो व्यक्ति आये थे और उसे ले गये। उसने वहाँ के गोसाईं की बेटी से मैत्री कर ली है। "लेकिन मैं जानती हूँ कि वह वहाँ क्यों गयी है। उसे पता चल गया था कि मच्छकुची गोसाईं की ढेकी में कुछ पुरानी पाण्डुलिपियाँ पायी गयी हैं। ···वह क्रिस्तान मिशनरी भी वहीं गया है। मैं नहीं समझती कि वह शाम से पहले आ पायेगी।"

गोसाईं की चादर, जिसका किनारा मूगा की फूलपत्तियों से कढ़ा हुआ था, उसके कन्धों से फिसलकर ज़मीन पर आ पड़ी। उसने झुककर खुद ही उसे उठाया। फिर बिना किसी की ओर देखे वह चुपके से मुड़ा और पालकी में जा बैठा। पालकी ढोने वाले शुरी[15] जाति के थे। जिस समय उन्होंने पालकी उठायी, उनके सीने गर्व से फूल गये और वे एक लय के साथ फुदकते हुए आगे बढ़ने लगे। इन पालकी ढोने वालों के पीछे-पीछे बूढ़ा कुम्हार अपनी कालिया[16] ज़ोर-ज़ोर से बजाता हुआ चला जा रहा था। वह केवल एक गमछा ही अपनी कमर पर और जंघाओं पर लंगोट की तरह कसे हुए था। उसके पीछे बाकी के लोग चल रहे थे—हेरामदो के ब्राह्मण रसोइये, केले के पत्तों से दोने बनाने वाले बंधुवे, ओझा लोग और उनके साथ गाने वाले गवैये, अपने वाद्य यन्त्रों के साथ ढोलची (जो कलाबाज़ियाँ भी लगाते थे) तथा अन्य लोग। मनियारी-किनियारी से ये लोग अलग-अलग क़िस्म के वाहनों में बैठकर आगे बढ़ेंगे। उनमें से कुछ बैलगाड़ियों से जायेंगे, कुछ हाथियों से और कुछ पलासबाड़ी से बस लेंगे। केवल गोसाईं ही पुरानी फोर्ड कार में यात्रा करेगा। यह कार ऊपरी असम के उसके अनुयायियों ने विशेष रूप से उसके लिए भिजवायी है।

जुलूस के पीछे-पीछे फीलखाने का एक बिना दाँत वाला हाथी भी चला जा रहा था। मनियारी-किनियारी और पलासबाड़ी के बीच की सड़क बहुत ही ख़राब थी। हाथी इसलिए साथ रखा गया था ताकि जहाँ-जहाँ सड़क बुरी तरह से उखड़ी हुई है, वहाँ

पर कार को खींच लिया जाये। इस बूढ़े हाथी ने पहले कभी इस तरह का काम नहीं किया था।

स्वतन्त्रता के बाद गोसाईं के फीलखाने में केवल दो ही हाथी बचे रह गये थे। एक हाथी तो उन्मत्त हो रहा था, वरना वही गोसाईं के साथ हमेशा जाता और जहाँ कहीं भी कार फँसती, वह उसे खींच बाहर निकाल लाता। यह बिना दाँत वाला बूढ़ा हाथी देखने में बिलकुल अच्छा नहीं था। उसकी सूँड बहुत ही मोटी थी। उसके लम्बे दाँत भी काफ़ी समय से ग़ायब थे, और उसकी खुरदरी ख़ाल कछुवे की कठारे ढाल की तरह दीख पड़ती थी।

गोसाइन के शरीर में कँपकँपी दौड़ गयी। उसे बड़ी बेचैनी होने लगी। इस बार गोसाईं हवेली को उद्विग्न अवस्था में छोड़कर गया था। वह कुछ खफ़ा भी दिखता था। उसने हमेशा की तरह उससे प्यारभरी विदाई भी नहीं ली थी। निश्चित रूप से वह गिरिबाला से खुश नहीं था, ख़ासकर इस वजह से कि वह बिना बताये चली गयी थी। पर उस बेचारी को समय भी कहाँ मिला था? सुबह के वक़्त एक युवा वर-वधू हायहल मन्त्र[17] के लिए आये थे। वे गोसाईं से आशीर्वाद चाहते थे ताकि वधू रसोईघर में प्रवेश कर सके। गोसाईं उनके साथ काफ़ी देर तक व्यस्त रहा था और गिरिबाला को उसके साथ बात करने का अवसर ही नहीं मिला था। लेकिन गोसाईं उस क्रिस्तान मिशनरी पर क्यों अपनी खफगी दिखा रहा है? उसने स्वयं ही तो उसके लिए सहमति दी थी और उसके विशेष गुणों को सराहा था। उसका कहना था कि सन्त महाप्रभु का तमाम बहुमूल्य लेखन, जो पुरानी हवेलियों में इधर-उधर दबा पड़ा है, उसे ढूँढ़ निकालने और व्यवस्थित करने के लिए वही उपयुक्त व्यक्ति है।

जैसे ही गोसाईं की टोली ने जगलिया के पुल को पार किया, काउरिया कुम्हार की कालिया की तीखी ध्वनि धीरे-धीरे लुप्त होती चली गयीं। आख़िर, इन्द्रनाथ अपनी जगह से उठा, उसने अपनी साइकल सँभाली और उस पर पैडल मारता हुआ बारीहाट की ओर बढ़ गया। गोसाइन उसे बराबर देखती रही।

आमतौर पर दिन के उस वक़्त दुर्गा खड्डी पर बैठी होती थी। यहीं बैठकर गोसाइन कपड़ा बुनती थी और तकली पर सूत कातती थी। समूचा वातावरण शान्त और स्थिर होता था। लेकिन जब से दुर्गा यहाँ से अपने ज़ेवरों का बक्सा ले गयी थी और उसे छोटी गोसाइन के यहाँ रख छोड़ा था, तब से सब कुछ बदल गया था और उसके और गोसाइन के बीच एक दीवार खड़ी हो गयी थी।

गोसाइन के चले जाने के बाद दुर्गा बातघर में गयी और वहीं खड़ी रही। गुईमैनी उस समय सहन से बाहर जा रही थी। उसने थोड़ी देर पहले ही तम्बाकू-भरी गुड़गुड़ी पर कश लगाया था और अब उसके पास करने को कुछ नहीं था। वह सत्र के छोटे बच्चों के साथ जगलिया के तट पर जाने और वहाँ अरबी के छोटे पौधों के बीच तैरती

छोटी-छोटी मछलियों को पकड़ने की सोच रही थी। जब उसने दुर्गा को देखा, तो वह घबराकर एकदम रुक गयी। यह यहाँ क्यों है? उसने अपने नितम्बों पर अपने हाथ रखे, अपने कूबड़ को सीधा किया और उससे बोली, "अरी, माईशाना! तुम्हारा गताला तो बिलकुल चीथड़े हो रहा है। तुम्हारी हड्डियाँ भी, देखो, कैसे काँटों समान दिखती हैं? तुम्हें हुआ क्या है? और तुम इस वक़्त यहाँ खड़ी-खड़ी क्या कर रही हो?"

दुर्गा जानती थी कि यह बूढ़ी कुबड़ी बड़ी खुर्राट जासूस की मानिंद है। सत्र में जो कुछ भी होता था, उसकी खबर गोसाइन तक यही पहुँचाती थी। इसके एवज़ में गोसाइन अपने दिल की बिलकुल अन्दरूनी बातें भी इसे बता देती थी और जब कभी वह किसी तरह के मानसिक क्लेश में होती, गुईमैनी विलाप करने लगती।

दुर्गा उत्तर में एक शब्द भी न बोली। गुईमैनी की छठी संज्ञा ने उसे चेतावनी दी कि कुछ असाधारण घट रहा है। वह वहीं बैठ गयी, ज़मीन पर, और उसने अपनी कुबड़ी कमर बातघर के एक लकड़ी के खम्भे से टिका ली।

"शायद तुम चिकारहाटी से किसी रिश्तेदार के आने का इन्तज़ार कर रही हो। क्या यही बात है?"

दुर्गा ने फिर कोई उत्तर नहीं दिया।

"ऐ, माईशाना! कितने ही दिन निकल गये हैं, और वे लोग नहीं आये! क्या वे अब आयेंगे? तुम लज्जा या प्रतिष्ठा के सब विचार एक तरफ़ रख दो और वापस अपनी ससुराल चली जाओ। अपने पति के घर में प्राण त्यागना हमेशा उत्तम होता है।"

दुर्गा ने फिर कोई उत्तर नहीं दिया।

"तुम शमीज़ क्यों नहीं पहनतीं? तुम्हारी छाती की हड्डियाँ साफ़ दिखाई दे रही हैं। तुम उस पुतले के समान दिख रही हो जो खेतों में पक्षियों को भगाने के लिए बाँस पर टाँगा जाता है। यह शरीर और यह चेहरा लेकर तुम कब तक जी सकती हो?"

दुर्गा के मन में कुछ उबाल खाने लगा था। लेकिन जैसे ही उसने सामने से पण्डों को आते देखा, वह शान्त हो गयी—वही तीन नाटे और दो लम्बे व्यक्ति, जिनकी टांड गंजी थी और जो भगवे कपड़े पहने हुए थे। उसे लगा जैसे कि सत्र का इष्टदेव, गोपेश्वर, उसके सामने फूलों का गुलदस्ता लिये खड़ा है। गुईमैनी की उपस्थिति को भूलकर वह चिल्लायी, "वे···! वे···! वे वापस आ रहे हैं।"

वह एकदम तनकर खड़ी थी और सड़क की ओर देख रही थी।

"अरे, वे पंडे ही तो हैं। वे काफ़ी पहले आये थे। हेरामदो में उन्हें एक स्त्री मिल गयी है। वे वहीं से लौट रहे हैं।" ये शब्द गुईमैनी के थे जिनकी ओर उसका बिलकुल ध्यान नहीं गया। उसके भीतर खलबली मची हुई थी। वह पंडों की ओर दौड़ी।

"अरे, क्या करने जा रही हो, माईशाना? तुम सड़क के बीचोंबीच खड़ी हो।"

पंडों ने झुककर दुर्गा का अभिवादन किया। उसने भी अभिवादन का उत्तर अभिवादन से दिया और बोली, "इस बार मैं आपके साथ आपकी शुभ यात्रा पर चलूँगी।"

एक लम्बे, दुबले-पतले पंडे ने, जिसकी नाक तोते की तरह थी, उसे ऊपर से नीचे तक देखा और बोला, "खर्चे का क्या होगा?"

"मेरे पास कुछ पुराने गहने हैं। मैं उन्हें बेचने की सोच रही हूँ।"

गुईमैनी भयाक्रान्त हुई-सी चीख़ पड़ी, "क्या! अपने गहने बेचोगी?"

पण्डे भी हतप्रभ रह गये और दुर्गा की ओर विमूढ़ से हुए देखने लगे। कुछ देर बाद दोनों नाटे पण्डे एक साथ बोले, "वाह! यह तो बड़ा शानदार विचार है। इन्हें और पहनेगा भी कौन? तुम तो एक अभागी, निःसन्तान विधवा हो। तुम्हारे मरने के बाद तुम्हारे ज़ेवर सात प्रेत खा जायेंगे।"

गुईमैनी का एक हाथ अपनी कमर पर था और दूसरा दुर्गा की ओर उठा हुआ था। वह आदेशपूर्ण स्वर में बोली, "माईशाना! तुम इस तरह कैसे बोल रही हो! तुमने उनसे सलाह ली जिन्होंने तुम्हें आश्रय दिया है, जिन्हें तुम्हारी भलाई का हर वक़्त ख़याल रहता है?"

दुर्गा ने गुईमैनी के शब्दों की फिर अवहेलना की। एक पण्डे ने विधवाओं के बारे में एक असमिया कहावत का उल्लेख किया—ये बूढ़ी, लोभी गोसाईं विधवाएँ और उनकी दौलत! न ये स्वयं उसे भोगती हैं और न ये किसी को देती हैं। बस, ये केवल उसका हिसाब-किताब लगाती रहती हैं और उसे देख-देखकर खुश होती रहती हैं।

दुर्गा ने इन शब्दों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और वह छोटी गोसाइन के बातघर की ओर बढ़ गयी। पण्डे भी उसके पीछे-पीछे हो लिये, और गुईमैनी भी उनके पीछे-पीछे चलती रही।

छोटी गोसाइन अपनी स्वच्छता के लिए विख्यात थी। इस स्वच्छता की झलक उसके सहन से ही मिल जाती थी। यह बिलकुल साफ़-सुथरा दिखाई देता था जिस पर जगलिया के तट से लायी गयी सफ़ेद मिट्टी का लेप हुआ रहता था। अपनी सफ़ेदी में यह सारस के परों जैसा लगता। सभी लोग सहन के बीच पहुँचकर खड़े हो गये।

छोटी गोसाइन उस समय पिछवाड़े से लगे खुले में शौच के लिए बैठी थी। यहाँ खैरा[18], पाबा[19] और हिस्सल[20] के वृक्षों और लंटना की झाड़ियों का जमघट था। जब उसने दुर्गा की आवाज़ सुनी तो वह जल्दी से शौच से निबटकर और अपने शरीर पर पानी उड़ेलकर सामने सहन में आ गयी। लेकिन वह आगंतुकों की टोली से थोड़ी दूर ही खड़ी रही और बोली, "ढेकी में चटाइयाँ रखी हैं। आप लोग उनको ले आइए और उन पर बिराजिए।"

पण्डे एकाएक कह उठे, "नहीं, नहीं! चटाइयों की ज़रूरत नहीं। हम बहुत जल्दी

में हैं। हमें जगलिया को पार करके खटियामारी जल्दी से जल्दी पहुँचना चाहिए। हमें पता चला है कि वहाँ की दो गोसाइनें हमारे साथ यात्रा पर चलना चाहती हैं…"

छोटी गोसाइन आगे नहीं आयी। जंगली बेरों के पेड़ के नीचे खड़ी होकर उसने कहा, "दुर्गा, क्या कोई ज़रूरी बात थी? कहो, क्या कहना चाहती थी?"

"मैं अपना बक्सा वापस लेने आयी हूँ।"

"यह तो अच्छी बात है। वह खटिया के नीचे पड़ा है। उस छोकरे बिरोहू को बुलाओ। वह उसे खींचकर बाहर निकालेगा।"

दुर्गा एकाएक खड़ी हो गयी और आगे की ओर बढ़ी। सहन के एक कोने में कुछ फाख़्ताएँ रबाबटेंगा[21] के पेड़ों पर बैठी थीं। वे उसकी आवाज़ सुनकर डर गयीं और एकदम उड़ गयीं। ठीक उसी समय माटियापहाड़ की दिशा से एक हाथी की कानफाड़ू चिंघाड़ सुन पड़ी। हर कोई भयभीत हुआ वहीं का वहीं खड़ा रह गया। उन सबके मन में एक ही ख़्याल आया। हो न हो, जमालुद्दीन ने दुष्ट हाथी को पकड़ लिया है। और वह पकड़ेगा भी क्यों नहीं? उसे हाथी-सम्बन्धी सभी मन्त्र तो याद हैं। एक ख़ास मन्त्र पढ़कर तो वह घने से घने जंगल में से भी हाथी को बाहर निकाल सकता है! बेशक, वह दक्षिणी तट का सबसे होशियार फंदेबाज़ है।

छोटी गोसाइन का सोने का कमरा छोटा तो है ही, कुएँ की तरह अँधियारा भी है। इसके एक कोने में उसके दिवंगत पति की खड़ाऊँ पड़ी रहती हैं और सरसों के तेल का एक दीया भी वहाँ हमेशा जलता रहता है।

दुर्गा उस कमरे में झुँझलायी-सी दाख़िल हुई। वह खटिया के पास गयी, नीचे झुकी और उसने अपने बक्से को खींचकर बाहर निकाला। एकाएक दो छोटे चूहे, कटहल के अंकुर के आकार के, कूदकर उसके गालों को छूते हुए निकल भागे। एक छिपकली भी वहीं पास में आ गिरी और अँधेरे में ग़ायब हो गयी। दुर्गा, मारे डर के, उछलकर पीछे हट गयी। फिर वह बक्से को सहन में लायी। वह बक्सा मज़बूत रस्से से बँधा था। आमतौर पर ऐसे रस्से से गाय-बैल बाँधे जाते हैं। पण्डों की मदद से उसने रस्से को खोलना शुरू किया।

एक पण्डे ने टिप्पणी की, "क्या बात है? इतना कसकर क्यों बाँधा हुआ है? तुमने इस पर ताला भी नहीं लगाया?"

दुर्गा ने उत्तर दिया, "मैं बार-बार ताले के लिए मिन्नत करती रही, लेकिन इस घर में मेरी कौन सुनता है!" फिर उसने थोड़ी कोशिश करके उसके ढक्कन को खोला और उसमें से अपने पुराने कपड़े—गताला, मेखला, बरकापुर इत्यादि निकाल-निकालकर उन्हें ज़मीन पर साफ़ करके रखती गयी। इन कपड़ों ने अब बाँसों के खोल में रखे घी का रंग ले लिया था। उन कपड़ों से केतकी के फूल की कुछ पत्तियाँ भी गिरीं। वे सूखकर तिलचट्टों के समान हो रही थीं। पण्डे बहुत ही खुश और उत्सुक थे। वे उसके हाथों की गति को बड़े ग़ौर से देख रहे थे।

एकाएक दुर्गा सन्न-सी रह गयी। एक दीर्घ, निःशब्द क्षण, ऐसे ही निकल गया। फिर उसके गले से एक यातना-भरी चीख़ निकली, और वह वहीं बेहोश होकर गिर पड़ी।

"पानी! पानी! कृपा करके कोई पानी लाओ।"

"उसे पकड़े रहो। हाँ, यह ठीक है।"

दुर्गा के बाल बिखर गये थे। उसका छोटा, चीथड़े हो रहा गताला भी खिसक गया था और कच्चे फ़र्श पर पड़ा था।

एकाएक वह उठकर खड़ी हो गयी और चीख़ उठी, "मैं बरबाद हो गयी। मुझे खा गये! खा गये मुझे! ···हाय! उन क्रूरों ने मेरा खून चूस लिया है। हाय! मुझे खा गये वे!"

पण्डे भी उत्तेजना में आ गये थे। उन्होंने उसके बाजुओं को पकड़ने और दिलासा देने की कोशिश की, लेकिन सब बेकार हो गया।

"धीरज रखो, गोसाइन, धीरज रखो। हमें बताती क्यों नहीं कि क्या हुआ है?"

अपने बालों को नोचते हुए और मानसिक पीड़ा में अपनी छातियों को पीटते हुए दुर्गा ज़ोर-ज़ोर से और बुरी तरह रोयी। देखते ही देखते सहन में अफरा-तफरी मच गयी और भारी भीड़ इकट्ठी हो गयी। छोटी गोसाइन कुएँ पर स्नान कर रही थी। वह दौड़ती हुई आयी और उसने दुर्गा को थामने की कोशिश की। दुर्गा उस समय कच्चे फर्श पर लेट रही थी और ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रही थी··· उसमें जैसे कि अमानवीय शक्ति आ गयी थी। उसने उसे ज़ोर से पीछे धकेला। इससे उसका सन्तुलन बिगड़ गया और वह कुछ क़दम पीछे रंबाबटेंगा वृक्ष से जा टकरायी। लड़कों की एक टोली मछली पकड़ने के बाद जगलिया नदी से लौट रही थी। वे सब कीचड़ से लथपथ थे। उन्होंने सर्दी के मौसम में जगलिया के तट पर बड़े-बड़े गड्ढे बना रखे थे। वे मानसून में बाढ़ के पानी से भर जाते थे और उनमें छोटी-छोटी मछलियाँ आ जाती थीं। जब उन्होंने सहन से चीख़ो-पुकार सुनी, तो वे भी दुर्गा को घेरे भीड़ में शामिल हो गये।

पण्डों की समझ में नहीं आ रहा था कि वास्तव में हुआ क्या है। उन्होंने हर किसी को शान्त करने की कोशिश की।

"गोसाइन के सोने के ज़ेवर चोरी हो गये हैं। रुपयों में उनकी कीमत आँकी नहीं जा सकती।"

यह सुनकर वे लड़के चिल्ला उठे, "गोसाइन के घर में कौन आता है? यह सम्भव कैसे है?"

किसी ने भीड़ में से आवाज़ लगायी, "केवल एक ही आदमी घर में आता-जाता है। वह हेरामदो का महीधर बापू है।"

"राजाबाहा से झाड़ू-पोंछा करने के लिए हर रोज़ एक नौकरानी भी आती है।"

"ज़रूर यह किसी जानकार की करतूत है। दीवारों में भी तो कहीं सुराख दिखाई नहीं देता।"

अब एक जोशीले युवक ने गरजते हुए कहा, "उस ब्राह्मण चोर को हेरामदो से लेकर आओ। उसे उसके बालों से यहाँ खींचते हुए लाओ।"

हे ईश्वर! छोटी गोसाइन को ऐसे लगा जैसे कि कोई उसकी खाल छील रहा हो। उसके गीले कपड़े उसके बदन से चिपके हुए थे। उसका चेहरा आग की तरह लाल था। उसने टूटी हुई आवाज़ में कहा, "मैंने बिलकुल देखा भी नहीं कि बक्से में क्या था। आप लोग पूछिए इससे कि क्या इसने यहाँ बक्सा रखने से पहले मुझे उसके भीतर रखी चीज़ें दिखायी थीं। जब वह यह बक्सा मेरे घर पर लेकर आयी थी, तो उससे पहले ही किसी ने उसमें से ज़ेवर निकाल लिये होंगे।"

थोड़ी देर के लिए एकदम चुप्पी छा गयी। छोटी गोसाइन की बात में दम था। पण्डों की उस टोली ने, जिसमें जवान और बूढ़े, लम्बे और नाटे, मोटे और पतले, सभी क़िस्म के लोग शामिल थे, अब दुर्गा पर उँगली उठायी और उसे भला-बुरा कहते हुए बोले, "यह! तुमने बक्से की चीज़ें दिखायी नहीं थीं? यह तो तुम्हारी भयंकर भूल थी, देवीजी!"

दुर्गा ज़ख्मी बाघिन की तरह गरज उठी, "यह सच नहीं है। देखो, देखो! कैसे इसका ख़ून उस कुतिया के बच्चे ब्राह्मण को बचाने के लिए जल रहा है। अभी दो दिन पहले ही तो मैंने बक्सा खोला था। सब कुछ अपनी जगह पर था। केवल दो दिन पहले। ओह! मेरा सत्यानाश हो गया। हाय रे! मुझे खा गये!" वह साँस लेने के लिए रुकी और फिर चीख़ी, "वह डुगडुगी, ढोलक की शक्ल का पेंडेंटे, जिसमें माणिक जड़े रहते हैं, हमें कूच-बिहार के अनुयायियों से मिला था और अनार के फूलों की शक्ल की वे सोने की माणिक-जड़ी बालियाँ! यह सब कुछ बक्से में था। मैंने अपनी आँखों से देखा था।"

"…मर जाओ! मर जाओ…"

"तुम्हारी सातों पीढ़ियाँ नरक में जायें!…"

गुईमैनी दोनों समूहों के बीच, उत्तेजना से भरी हुई, इधर-उधर दौड़ रही थी। वह ज़ोर से चिल्लायी, "हाय! हाय! कौन है वह चुड़ैल जो उसका सब कुछ हड़प गयी?"

छोटी गोसाइन को लगा कि वह बिलकुल अलग-थलग पड़ गयी है और निरुपाय है। वह बरामदे में गयी और घुटने समेटकर फर्श पर बैठ गयी। वह अब पूरी तरह हताश थी। उसने रोना शुरू कर दिया। पण्डे अब उसकी ओर बढ़े और उसे दिलासा देने लगे, "माँ! आप पर भारी संकट आ पड़ा है। अच्छा हो आप इन्द्रनाथ गोसाईं को बुलायें। दूसरे, आप नहीं चाहेंगी कि पुलिस या होमगार्ड आपके निजी कमरे में जायें। इन्द्रनाथ गोसाईं निश्चित रूप से आपकी मदद करेगा।"

छोटी गोसाइन बुदबुदाने लगी, "पुलिस···"

"वे आबकारी अधिकारी अफ़ीम के चोरों की तलाश में एक गाँव से दूसरे गाँव जा रहे हैं। उनके साथ पुलिस भी है। आप गोसाईं परिवार की एक सम्मानित महिला हैं। आपको दुनियावी बातों की ख़बर नहीं। आप चोर को कैसे पकड़ेंगी। आपको पुलिस की मदद लेनी चाहिए।"

छोटी गोसाइन सर से पाँव तक काँप उठी। उसे फिर ऐसे लगा जैसे कि कोई उसके समूचे शरीर की ख़ाल उतार रहा है···

पण्डों के पास इतना समय नहीं था कि वे नाटक के अन्त तक वहाँ बने रहें। उनमें से एक ने कहा, "हमारे पास बहुत कम समय है। हमें जगलिया को भी पार करना है और आप उस उन्मत्त हाथी के बारे में जानती ही हैं कि वह कैसे इधर-उधर घूम रहा है। हमें अब चलना चाहिए। आप कृपया इसे अन्यथा न लें!"

पण्डे तो वहाँ से चले गये थे, लेकिन भीड़ ज्यों की त्यों बनी हुई थी। जैसे कि वह दो लाशों पर—एक दुर्गा की और दूसरी छोटी गोसाइन की—निगरानी रखे हुए थी। छोटी गोसाइन इन्द्रनाथ का बड़ी बेसब्री से इन्तज़ार कर रही थी। उसे बड़ी उम्मीद थी कि उसके यहाँ होते ही सब कुछ पलटा खा जायेगा और उसके नाम पर आयी आँच साफ़ हो जायेगी।

चमचमाता सूरज अब धीरे-धीरे पीला पड़ता जा रहा था और उसका रंग छोटे ऊँट की खाल जैसा होता जा रहा था।

कुछ देर के बाद इन्द्रनाथ बारीहाट से लौट आया। बड़ी उत्कण्ठा के साथ छोटी गोसाइन ने उसके साइकल की घण्टी की आवाज़ सुनी। वह जब जगलिया के पुल को पार कर रहा था तो वहीं पर उसको किसी ने दिन में होने वाले काण्ड के बारे में खबर दे दी थी। उसने लगभग दौड़ते हुए बातघर को पार किया और दोनों महिलाओं के इर्द-गिर्द खड़ी भीड़ को एक तरफ़ धकेलकर अपना रास्ता बनाया। उसकी उपस्थिति मात्र ने ही वहाँ के तमाम जमघट को, जिसमें मछली पकड़कर लौटे वे छोकरे, खेतों में काम करने वाली औरतें और गुईमैनी भी शामिल थी, शान्त कर दिया था।

दुर्गा अब भी अपने उस बड़े से काले बक्से के पास बैठी थी। उसकी तरफ़ अपनी उँगली से इशारा करते हुए इन्द्रनाथ कह उठा, "इस बक्से को यहाँ लायी ही क्यों थी?"

फिर उस जर्जर घर की दीवार की हालत की ओर अपने बढ़े हुए हाथ से इशारा करते हुए वह गरजा, "क्या ये टूटी हुई दीवारें तुम्हें दीख नहीं पड़ी थीं? वहाँ, हमारे यहाँ यूरियम लकड़ी की मज़बूत अटारी है। बक्से को वहाँ रखने की बजाय तुमने इसे यहाँ क्यों रखा?"

गुईमैनी को भी अब अपनी बात कहने का मौका मिल गया था। वह चीखती हुई बोली, "उबलते भात की भाप से इसकी आँखें धुँधला गयी थीं।"

छोटी गोसाइन धीरे-से उठी और उसके निकट आकर उसने उसके बाजू को अपनी गिरफ्त में ले लिया। उस समय उसके गालों पर आँसू ढुलक रहे थे। उसने टूटी हुई आवाज़ में अपनी सफ़ाई पेश की, "मेरा विश्वास करो, बापा[22]। जब यह बक्सा यहाँ लायी थी तो मैंने इसके भीतर झाँककर नहीं देखा था। सच्चाई यही है। मेरा विश्वास करो।"

पर इन्द्रनाथ बोला, "जब से इस सत्र में अफ़ीम का ज़ोर हुआ है, हर कहीं डाकाज़नी होने लगी है। हमारी अटारी में से भी हाथी के दाँत चुरा लिये गये हैं।" यह कहते हुए वह दुर्गा के निकट आया। दुर्गा बक्से के पास ढेरी हुई पड़ी थी। उसने उसे बाजू से पकड़ा, अपने पाँवों पर उसे खड़ा किया और अपनी मज़बूत पकड़ से उसे सहारा देते हुए धीरे-धीरे बातघर की ओर ले चला।

लेकिन वहाँ से चलने से पहले दुर्गा ने ज़हर में बुझे कुछ और ताने भी कसे और जमकर गालियाँ दीं। "ईश्वर ऊपर गवाह है। मैं चिकारहाटी के गोसाईं की विधवा हूँ और अब इसी ग़म से मर जाऊँगी कि मैं अपने पति की अस्थियाँ पवित्र नदी में बहा न सकी। जिन्होंने मुझे यह चोट पहुँचायी है, उन पर मेरा शाप वज्र की तरह गिरेगा।"

लेकिन अपनी बात वह अभी पूरी कर भी न पायी थी कि इन्द्रनाथ उसे घसीटता हुआ बातघर की ओर ले गया। गुईमैनी भी शान्त न रह सकी। वह प्रलाप करती हुई-सी चीखी, "हाय! हाय! जब इसका पति ज़िन्दा था तो यह दही के मटकों की मलाई पर पलती थी। इसके दिल में यह गहरा ज़ख्म किसने दिया है?"

गाँव के लड़कों ने तनकर कहा, "आने दो उस लफ़ंगे ब्राह्मण को यहाँ हेरामदो से। हम उसे बिजुली बाँसों की चिमटियों से मज़ा चखायेंगे।"

एक-एक करके वे अब सहन से जाने लगे थे। छोटी गोसाइन को फिर लगा जैसे कि कोई उसकी खाल छील रहा है। उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं। गुईमैनी, वैसे तो वहाँ से चलने के लिए उठ खड़ी हुई थी, लेकिन अब वह उसके सामने अपनी विशिष्ट मुद्रा में खड़ी थी। उसके हाथ उसके कूबड़ पर थे और वह थोड़ा-सा आगे झुकी हुई थी।

उसे घूरते हुए वह बोली, "गोसाइन, तुम इन सड़े हुए पुरुषों की नस्ल पर कैसे विश्वास कर सकती हो? ये हरामी! ये दुहरा जीवन जीते हैं। कभी-कभी ये पहुँचे हुए सन्त-महात्मा के समान दीखते हैं··· लेकिन असलियत में ये घोर नारकीय जीव हैं। ये पूरे शैतान हैं। तुम उस पर कैसे यक़ीन कर पायी? लेकिन मुझे अब एक बात बताओ। अगर पुलिस आती है तो क्या तुम उन्हें अपने पवित्र खड़ाऊँ कक्ष में घुसने की अनुमति दोगी?"

छोटी गोसाइन चुप रही। फिर थोड़ी देर बाद वह बोली, "मैं जानती हूँ। मेरी छठी इन्द्रिय कहती है कि वे स्वयं ही उस कक्ष में नहीं जायेंगे। उन्हें आने दो।"

अब तक भीड़ छँट चुकी थी। वह बड़ा-सा काला बक्सा वहीं, वैसे ही, पूरी तरह खुला पड़ा था। छोटी गोसाइन को लगा कि यह कफ़न को दफ़नाने के लिए किसी कब्रिस्तान में खोदा गया एक गड्ढा है। पर यह हुआ क्या है? क्यों? किसने यह काली करतूत की? क्या यह वाकई सम्भव है कि उसके कमरे से वे चीज़ें चोरी हो गयीं? नहीं, नहीं! कभी नहीं? यह सम्भव नहीं है। महीधर बापू ही एक ऐसा व्यक्ति था जिसे खड़ाऊँ कक्ष के नज़दीक जाने की इजाज़त थी। तब क्या यह सम्भव है कि वह···? नहीं, नहीं! यह नहीं हो सकता!

छोटी गोसाइन के भीतर फिर वैसी ही पीड़ा जगी जैसे कि कोई उसकी खाल छील रहा हो··· उस ब्राह्मण ने तो कभी उसकी चारपाई की ओर आँख भरकर देखा तक न था, हालांकि उसके अपने विचार··· नहीं नहीं। यह पाप है। नरक जाने का यह सीधा और पक्का रास्ता है! ···अभी उस दिन ही तो वह पातहल्दिया भूमि का लगान लाया था और समूची रकम उसने उसके हाथों में रखने से पहले एक-एक पाई का हिसाब दिया था। और वह पातहल्दिया की भूमि! ज़बर्दस्त सरदर्द है वह उसके लिए! फिर कितनी मुश्किल है उसकी सार-सँभाल! लेकिन जैसे ही महीधर बापू ने इसकी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ली, ···वह हर समस्या से स्वयं ही निपटा··· और वह मियादी-खिराजवाली मिर्ज़ा, नरगाँव और रानी की भूमि! धान का हिसाब-किसाब तो पूरी तरह उलझा हुआ ही था। उसने हर गुत्थी को सुलझाया और सब कुछ ठीकठाक किया। नहीं, नहीं! वह ऐसी हरकत नहीं कर सकता! ···या राजबाहा वाली वह नौकरानी है! पर वह तो उसकी (गोसाइन) अनुयायी है। उसने तो उससे हायहल मन्त्र भी लिया था। वह कैसे यह हरकत कर सकती है? ···तब···?

सूरज का लाल गोला रबाबटेंगा पेड़ की घनी पत्तियों के पीछे धीरे-धीरे लुप्त होता जा रहा था। अभी तक उस बक्से को लेने कोई नहीं आया था। राजाबाहा वाली वह नौकरानी अपना काम ख़त्म करके जा चुकी थी। जाने से पहले वह बोली थी, "गोसाइन, चलो उठो! अब अपने लिए चावल पकाओ। आज तो तुमने अपने पति की खड़ाऊँ पर फूल और तुलसी के पत्ते भी नहीं चढ़ाये। ऊपर वाला सब कुछ देखता है। जाओ, रसोई में जाओ।"

लेकिन गोसाइन उठी नहीं थी। उसके गीले कपड़े उसके शरीर पर ही सूख गये थे। इस बीच शायद उसे झपकी भी आ गयी थी। अपनी अर्धमूर्च्छित अवस्था में उसने एक सपना देखा था··· कि वह उसके सामने नंगा पड़ा है और उसके मुँह से खून बह रहा है। ···किसी ने उसके समूचे बदन पर तेज़ हथियार से वार किये हैं। ···

ओह! वही लड़के होंगे जो किसी का भी सम्मान नहीं करते, न अपने गुरु का, न गोसाईं का, न किसी और का। वे उधर खड़े हैं, अपने हाथों में मछली मारने वाले भाले लिये हुए।

···वह चौंककर जागी। वह बौरा रही थी, और भयभीत हुई-सी इधर-उधर देख रही थी। उसका समूचा शरीर काँपने लगा। फिर भी वह बरामदे से हटी नहीं। वह बड़ा-सा, काला बक्सा अब भी वहीं पड़ा था। उसका ढकना खुला था और वह एक वृहद काले विवर की तरह दिख रहा था।

उसे जैसे कि किसी विपत्ति का पूर्वाभास हो रहा था। ज़रूर कुछ-न-कुछ अशुभ होकर रहेगा। अगर महीधर को उसके जीवन से निकाल दिया गया तो क्या वह जीवित रह पायेगी? क्या यह सम्भव है? नहीं, नहीं! वह अपनी कल्पना को इतनी दूर तक विचरने नहीं दे सकती। लेकिन दुर्गा ने अपनी दुर्भावना दिखाते हुए किस बात की ओर इशारा किया था? शायद उसके मन के किसी अँधियारे कोने में कोई अनैतिक विचार घुस गया हो और उसने वहाँ अपनी जड़ें पकड़ ली हों। क्या वह इतना नीचे गिर सकती है? यह गोसाइन, जो अपने अनुयायियों को मन्त्र देती है और बड़े गर्व से अपने माथे पर सदाचार का मुकुट पहनती है, वह ऐसा पाप भी कर सकती है? क्या यह सम्भव है? और आज··· यह पाप की पोथी सबके सामने खुली पड़ी है। जो भी इसे चाहे, पढ़े। हे ईश्वर! तू ही बचा, तू ही बचा।

यह सच नहीं हो सकता। उसने अपने आपको विश्वास दिलाना चाहा। उसने गलत किया भी क्या है? पिछले दो वर्षों से वह इसी जीर्ण-शीर्ण कमरे में अकेली सोती रही है। और लगभग दस गज़ की दूरी पर वह ब्राह्मण··· नहीं, नहीं! उसने कोई भी अनाचार नहीं किया। क्या वह कभी उसके बिस्तर के निकट भी गयी? वह जो उसे कष्ट में देखकर परेशान हो उठता है और उसे खुश देखकर खुश हो जाता है। क्या आधी रात के समय अपने हाथ में दीया लिये उसकी ओर कभी गयी?

···इस प्रश्न ने एक विचित्र रूप धारण कर लिया था। दरअसल, वह उसके हृदय में कहीं दफ़न हुआ पड़ा था। कभी-कभी वह सच्चाई की सूर्यकिरण जैसा दिखता था और कभी-कभी अँधेरी रात के फरेब की तरह भी। कई दिन से उसके मन में यह अन्तर्द्वन्द्व चल रहा था, चले ही जा रहा था, युद्ध के मैदान से भागे ज़ख्मी घोड़े की तरह और रुकने का नाम नहीं ले रहा था।

···महीधर के उसके प्रति लगाव के कई उदाहरण उसके मन में कौंधे। एक बार पातहल्दिया से लौटते समय उसने कहा था, "उकियम में आपकी कुछ साँझी ज़मीन है जिसे आपकी अनुमति के बिना बंगरा और चापाधुरी के गोसाइयों ने जोतना शुरू कर दिया है। किसी ने भी आपको इसके बारे में बताने की ज़हमत नहीं उठायी। लेकिन इस बार हमें कुछ कार्यवाही करनी ही होगी और इस ज़मीन को खुद जोतना होगा। अगर आपकी रज़ामन्दी हो तो!" फिर उसने अपने छोटे से डोरी वाले बटुवे से कुछ

सिक्के निकाले थे और उसके पाँव के पास रखते हुए बोला था, "पिछले चार सालों से उकियम के इन दोनों परिवारों ने आपका आधा हिस्सा अदा नहीं किया था। मैंने तीन दिन और तीन रातें उस निर्जन, मच्छरों से भरे, स्थान पर काटीं। जो मैंने नक़द वसूली की, वह यह है। ···एक बार आपने मुझसे कहा था कि आपके पास नक़द पैसा नहीं है। आपको याद है? आपकी यह बात सुनकर मेरा दिल दुःख गया था।"

गोसाइन ने वह रक़म उठायी थी और भीतर चली गयी थी। बाद में जब वह बाहर आयी थी तो चाँदनी रात का साम्राज्य था। उसने ढेकी की जर्जर, कच्ची दीवार की झिर्रियों से देखा कि महीधर टिमटिमाते दीये के प्रकाश में एक पाण्डुलिपि देख रहा है। कुछ देर के बाद उसने दीया बुझा दिया था और कमरे के एक कोने में पड़ी चारपाई पर सो गया था।

गोसाइन ने अब बरामदे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक चक्कर लगाने शुरू कर दिये। पास की नींबू की झाड़ियों से बड़ी सोंधी-सोंधी खुशबू आ रही थी। इस घर से माटियापहाड़ की ओर एक रास्ता जाता था। अगर वह दुष्ट हाथी उस इलाके में बिना किसी रोक-टोक के घूम रहा न होता तो वह ज़रूर उस रास्ते से ऊपर पहाड़ की ओर जाती और सैर का आनन्द लेती! वहाँ से उस समूचे प्रदेश का इस चाँदनी रात में दृश्य कुछ और ही होता। अद्भुत! वह इसका आनन्द पहले प्रायः लेती रही है।

···उसने ऊपर आकाश की ओर देखा। आकाश में सफ़ेद बादल बिखरे थे। वे बहुत ही झीने और पारदर्शी थे। लगता था जैसे कि चाँद रेशम के ढेर में उलझ गया है। ···उसकी आँखें फिर ढेकी की ओर घूमीं··· हाँ, वह सो रहा है, बड़ी गहरी नींद में सो रहा है, जैसे कि उसे किसी प्रकार की कोई चिन्ता न हो। वह धीरे-धीरे रबाबटेंगा के पेड़ की ओर बढ़ी। वहाँ से उसने उसे चोरी-चोरी देखा··· कैसी पुष्ट देह है उसकी! सुतवाँ नाक और पौरुषपूर्ण मांस-पुट्ठे!···

···धिक्कार है! धिक्कार है उसे! क्या हो रहा है यह! एक सोये हुए आदमी को देखना··· जो लगभग अधनंगा पड़ा है, टूटी हुई कच्ची दीवार के पीछे से··· क्या ऐसे विचार एक तीस वर्षीय विधवा के मन में फड़फड़ाने चाहिए?

छोटी गोसाइन की गोरी चमड़ी, जोकि दूसरे विश्व युद्ध के दौरान असम में आये आस्ट्रेलियाई सैनिकों की चमड़ी से मेल खाती थी, लाल हो गयी। उसके उरोज़ों की घुण्डियाँ कड़ी पड़ गयीं। उसके साथ यह, ठीक ऐसे ही, तब भी होता था जब गोसाईं उसके निकट आता था··· क्या यह एक तीस वर्षीय विधवा के साथ हो सकता है?

···वह नींबू की सोंधी सुगन्ध और शान्ति से परिपूर्ण चाँदनी रात के बारे में सब कुछ भूल गयी। रेशम के ढेर में उलझा चाँद भी टुकड़े-टुकड़े होकर छिटक गया था। वे टुकड़े अब शीशे के तीखे टुकड़ों में परिवर्तित हो गये थे जो उसके वक्ष को चीर रहे थे। वह दौड़ती-सी अपने कमरे में घुसी और अपने दिवंगत पति की खड़ाऊँ के पास ढेर हो गयी।

···पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था कि अनाचार की भावना उसके विचारों या कृत्यों को इस क़दर प्रभावित करती। जब महीधर घर में भी नहीं होता था, तब भी वह उसकी चारपाई को कभी नहीं छूती थी, उस पर बैठना तो दूर रहा। रोज़मर्रा की दिनचर्या में उसने अपने आपको खूब कस लिया था और इस क्रम को कभी टूटने नहीं दिया था। तब दुर्गा ने इतना बड़ा लांछन उसके मत्थे कैसे मढ़ दिया? ···और उसके वे द्वेषपूर्ण शब्द! ···और, किसी ने उसे रोकने की कोशिश भी तो नहीं की!

उसका अगला क़दम अब क्या हो? क्या उससे वह कहे कि वह चला जाये? हाँ, उससे कहा जाये कि वह पातहल्दिया या चक्रद चला जाये और वहाँ उसकी भूमि की देखभाल करे।

लेकिन तुरन्त उसके मन में भय का साया उमड़ा। उसका समूचा शरीर थरथरा गया। नहीं, नहीं! वह इस आदमी को छोड़ नहीं सकती। उसका समूचा अस्तित्व उससे जुड़ा हुआ है। यह तो ऐसे ही होगा जैसे वह अपने शरीर का कोई अदृश्य भाग काटकर फेंक दे। नहीं, नहीं, वह ऐसा नहीं कर सकती! ···और वह सदा मँडराता भय! चक्रद, गराल और उकियम के वे असामी! वे हमेशा रियायती पट्टे को मियादी में बदल देने की धमकी देते हैं।

···जैसे कि हमेशा उनके कान में कोई फुसफुसाता रहता है—तुम्हारे पास इतनी दौलत या रुतबा नहीं है जिससे तुम गाँव के उन पुराने गिद्ध-समान पटवारियों को घूस दे सको! और फिर वे ज़मीन को मापते भी तो ऐसे हैं कि कहीं रत्तीभर की कसर नहीं छोड़ते। जैसे उनकी हथेली में तमाम लेखा-जोखा समाया हो···अब तुम्हें अनुयायियों के यहाँ ले जाने के लिए तुम्हारे दरवाज़े पर पालकी तो आयेगी नहीं··· उनके बेटे स्कूल और कॉलेज में पढ़ने के लिए गुवाहाटी चले गये हैं। वे अब इन्स्पेक्टर और पुलिसकर्मी बन गये हैं। अब तो तुम्हें फटे-पुराने गताले ही पहनने पड़ेंगे।

···भूमि परिसीमन आ ही रहा है। सरकार यह निर्धारित करेगी कि किसके पास कितनी भूमि रहे··· और इस परिसीमन के अन्तर्गत जितनी भूमि तुम्हें मिलेगी··· फ़र्ज करो कि तुम पटवारी के चंगुल से इसे बचा न पाओ! ···तब क्या होगा? ···नहीं, नहीं, महीधर यहीं रहेगा। उसे कहीं नहीं जाना चाहिए···

उसके सीने से एक गहरी साँस बाहर आयी, जैसे कि उसका दिल दो हिस्सों में बंट गया हो। वह अब भी बरामदे के एक कोने में बैठी हुई थी। उसका गीला गताला और मेखला कब के उसके शरीर पर सूख चुके थे और कलफ़ लगे कपड़े की तरह ऐंठ गये थे। दुर्गा का बक्सा अब भी मुँह बाये खुला पड़ा था और उसका गताला, मेखला, तेलाच और दूसरे कपड़े बकरी की सूखी ख़ाल की तरह इधर-उधर बिखरे पड़े थे।

वह उठकर खड़ी हो गयी। उसने एक-एक करके उन कपड़ों को इकट्ठा किया और वापस बक्से में रखा। फिर वह बक्से को धीरे-धीरे खींचकर बरामदे के एक तरफ़

ले गयी। उस अँधेरे में उसे लग रहा था जैसे कि वह कोई डायन हो जो किसी का अनिष्ट करने के लिए निकली हो।

एकाएक उसे माटियापहाड़ की दिशा से किसी हाथी की ज़ोर की चिंघाड़ सुन पड़ी। आह! वह उन्मत्त हाथी ज़रूर अब तक जमालुद्दीन की पकड़ में आ चुका होगा! आह! सत्र का वह शुभ शगुन वाला हाथी, जिसकी पीठ पर हौदा डालकर गोसाईं विशाल ब्रह्मपुत्र को पार करता था। वह अपने घर के भीतर गयी और उसने दरवाज़े पर लकड़ी का अड़ंगा लगाकर उसे बन्द कर दिया।

## ग्यारह

एक छाजन वाली बैलगाड़ी बलखाती पहाड़ी सड़क पर धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। उसमें गिरिबाला बैठी थी। वह मारकीन की शमीज़ पर सफ़ेद रेशम का गताला और मेखला पहने हुए थी। उसके अनावृत्त बाजू और टाँगें अपनी ही तरह की आभा लिये हुए थीं और बहुत सुन्दर दिख रही थीं।

गाड़ीवान की बगल में गठीले बदन का एक बंधुवा बालक बैठा था। गिरिबाला अपनी एक सहेली के यहाँ मझकुची गयी थी। उसकी सहेली उसे अकेला वापस भेजने से डर रही थी। इसलिए उसने इस बालक को उसकी हिफ़ाज़त के लिए भेजा था। वहाँ के समूचे प्रदेश में लोगों के दिलों में उन्मत्त हाथी का आतंक था। खबर ऐसी भी मिल रही थी कि सड़क के उस ख़ास हिस्से पर उसने कई यात्रियों पर हमला किया है।

गाड़ी अब दुधखादी[1], गहरा[2] और पमा[3] के पेड़ों वाले घने जंगल में दाखिल हो रही थी। वहाँ ज़मीन पर बेतरतीत झाड़ियाँ और लताएँ फैली हुई थीं। गाड़ी के पीछे-पीछे, अपनी साइकल पर, विचित्र दिखने वाले झोले लादे, मार्क महोदय चले आ रहे थे।

मार्क जानता था कि गिरिबाला मझकुची क्यों गयी थी। उसे यह भी पता था कि वहाँ उसने गाँव-गाँव घूमकर पुरानी, दीमक-खायी पाण्डुलिपियों को इकट्ठा किया है। अब वह गाड़ी के बराबर चल रहा था। गिरिबाला गाड़ीवान के कंधे की ओट से मार्क के सुनहरे बालों को देख सकती थी। पर जब उन दोनों की आँखें आपस में मिलीं तो मार्क गाड़ी के पहिए के निकट हो गया। गिरिबाला उस पर से अपनी आँखें हटा नहीं पा रही थी। मार्क खुले में गर्मी और धूल झेलता हुआ, बराबर घूमता रहता था, जिसकी वजह से उसका रंग चमकीली लाली पकड़ गया था, वैसे ही जैसे यज्ञ की अग्नि के पास बैठने से हेरामदो के ब्राह्मण बालकों का हो गया था। वह बोला, "गिरबाला, उस सीलन-भरे काठ के कमरे में सड़ते रहने की बजाय तुम्हें मैं इस तरह

से घूमता देखकर बहुत खुश हूँ। एक दिन मैं तुम्हें हेरामदो के अफ़ीमचियों के सुधार शिविर में ले चलूँगा। वहाँ आदमियों और औरतों को उनकी अफ़ीम की लत छुड़वाने के लिए रखा जाता है…"

एकाएक गिरिबाला ने गाड़ी के पीछे का फूलदार पर्दा हटाया और बोली, "देखो, देखो! यही वह जगह है जहाँ एक बार एक धनी महाजन ने अपना घर बसाया था। वहाँ चारों ओर बिखरे खण्डहरों को देखो। गिलमिल साहिब के समय यह महाजन तथा उसके परिवार के लोग जीवित थे।"

मार्क ने उस रहस्यमय स्थल और वहाँ के खण्डहरों को देखा। हर कहीं झाड़ियाँ और बेलें थीं। ध्वस्त ड्योढ़ी के बड़े-बड़े लकड़ी के खम्भों को हाडकटा[4] पेड़ों के घनत्व ने पूरी तरह लील लिया था। बरामदे की लकड़ी से बनी रोक को दीमक चाट गयी थी और वह कई जगह से, और अजब ढंग से, लटक रही थी। टूटी हुई दीवारों पर हर कहीं बेलों का साम्राज्य था। एक जगह उन बेलों ने आपस में लिपटकर क्रॉस की शक्ल ले ली थी।

मार्क ने उस स्थल की ओर सम्मोहित भाव से देखा। एक दूसरी जगह मोहलता की बेलों ने घड़ियाल की शक्ल ले ली थी और उन पर छोटी-छोटी पत्तियाँ इस तरह फैली हुई थीं मानो वे मछली पकड़ने का जाल हों। बड़ी उत्तेजना में वह गिरिबाला को सम्बोधित करते हुए बोला, "तुम गाड़ी को रोककर नीचे क्यों नहीं उतरतीं? आओ, इस जगह को ठीक से देखें।"

गिरिबाला इस निमन्त्रण के लिए जैसे कि पहले से ही तैयार थी। उसने गाड़ीवान को गाड़ी फ़ौरन रोकने के लिए कहा। गाड़ीवान भय और अचम्भे से भरकर बोला, "आप यहाँ क्यों रुकना चाहती हैं? आप जानती नहीं हैं कि हर किसी ने पागल हाथी के डर से अपने दरवाज़े और खिड़कियाँ बन्द कर रखे हैं। ऐसी वीरान जगह पर रुकने से आपको क्या मिलेगा? मैं आपको सलाह नहीं दूँगा कि आप यहाँ घूमें। किसी वक़्त भी वह पागल हाथी आ सकता है।"

इस पर बंधुवा बालक बोला, "ओझा[5] लोगों का कहना है कि इस जगह महाजन के परिवार के लोगों के प्रेत घूमते रहते हैं। इसलिए कृपा करके वहाँ मत जाइए।"

लेकिन गिरिबाला और मार्क ने उनकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया और वहीं कुछ देर खड़े रहे। मार्क ने अपनी साइकल सिलिखा के एक पेड़ के साथ खड़ी कर दी और फिर वे दोनों उस अँधियारी गुफा जैसी जगह में दाख़िल हो गये।

गाड़ीवान हतप्रभ रह गया। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। ऐसे घने जंगल में एक ऊँचे, सम्मानित परिवार की विधवा एक नीच जाति के म्लेच्छ के साथ इस तरह से अकेली विचरण करे। वह स्वयं एक कुम्हार था और उसे अब भी याद था कि कैसे, जब गिरिबाला अभी बच्ची ही थी और उसने उसके साथ खेलने के लिए उसे अपनी गोदी में ले लिया था, तो गिरिबाला की माँ ने गिरिबाला को

खींचकर उससे अलग किया था, और उसे मजबूर किया था कि वह अपने आपको शुद्ध करने के लिए स्नान करे।

खण्डहरों के पास पहुँचकर गिरिबाला और मार्क ने उस धनी महाजन का पुराना, सूखा ताल देखा। कोई समय था जब वह ताल पानी से लबालब भरा रहता था और छोटी-बड़ी मछलियों के झुण्ड के झुण्ड इसमें तैरते रहते थे। अब वह सब कुछ लुप्त हो चुका था और उन्हें अब मगरमच्छ की ख़ाल जैसा उस ताल का सूखा तला ही दिखाई दे रहा था।

मार्क धूप और बारिश से सफ़ेद हुई एक चट्टान पर बैठ गया और उसने अपने पैंट के पायंचों को टखनों से ऊपर मोड़ लिया। उस समय जंगली फूलों की मीठी सुगन्ध उसके नथुनों को छू गयी।

गिरिबाला बोली, "यह कभी भोगी महाजन की ढेकी थी। यहीं पर कूच-बिहार और दरभंगा के दो सौदागरों को बंधुवों ने महाजन के कहने पर मार डाला था···"

अपने शहद के रंग के बालों से मिट्टी झाड़ते हुए मार्क ने प्रश्न किया, "क्या उन्हें लाठियों से पीट-पीटकर मारा गया था?"

"हाँ, मेरी दादी ने हमें बताया था कि वे सौदागर कम उम्र के मज़बूत हाथी खरीदने के लिए अपने पटसन के बारीक थैलों में विक्टोरिया के चाँदी के सिक्के छिपाकर लाया करते थे। उस वर्ष भोगी का मिजाज़ ठीक नहीं था। जंगल से उसने जो दो हाथी पकड़े थे, वे ज़ख्मों में पीप पड़ जाने के कारण ख़त्म हो गये थे। एक-एक हाथी के लिए उसे दो-दो सौ रुपये का जुर्माना देना पड़ा था। उस वर्ष उसके पास केवल तीन हाथी ही थे। एक गनेशा था जिसका केवल एक ही लम्बा दाँत था। इस हाथी को शुभ माना जाता था। उन दिनों सौदागरों की ललचायी आँखें उस पर टिकी रहती थीं। वे उसे ख़रीदने के लिए विक्टोरिया के सिक्कों के साथ कूच-बिहार और दरभंगा से घूमते-घूमते, बड़े अजीबोगरीब रास्तों और पगडण्डियों से आये थे···"

मार्क ने अब पास ही की एक और चट्टान की ओर इशारा किया और गिरिबाला से कहा कि वह उस पर बैठ जाये। उनके सरों पर धकर[6] नाम के एक पक्षी ने एक अजीब-सी, चीं-चीं की, आवाज़ की और वहाँ से उड़ गया।

मार्क ने कहा, "यह धकर पक्षी आमतौर पर पानी के निकट ही पाया जाता है। शायद इसे यहाँ कुछ पानी का आभास हुआ हो। यहाँ कभी तालाब तो था ही।"

"···उन विक्टोरिया के सिक्कों से भरे थैलों के लालच में आकर भोगी बड़ी चालाकी से उन दोनों सौदागरों को ढेकी में ले गया, जहाँ उन्हें गऊओं को बाँधने वाले रस्सों से कस दिया गया और फिर बंधुवों द्वारा ख़त्म करवा दिया गया।"

मार्क की आँखें अब फैल रही थीं। उसने फिर पूछा, "क्या यह सच है? क्या यह वास्तविकता है?"

"हाँ, हाँ! यह बिलकुल सच है। रात के वक़्त उनकी लाशें गाय के बाड़े में रखी गयीं। फिर जैसे ही पौ फटी, उन्हें दूर जंगल में बाँसों के झुरमुट के नीचे दफ़ना दिया

गया। जब सुबह हुई तो लोगों ने गाय के बाड़े के पास खून के निशान देखे और उनसे पूछताछ करने पर उन्हें बताया गया कि पिछली रात एक गाय ने एक बछड़े को जन्म दिया है।"

मार्क ने एकाएक ऊपर की ओर देखा और बोला, "कौन जानता है? हो सकता है उन्हें इन्हीं डल[7] बाँसों के झुरमुट के नीचे दफ़ना दिया गया हो?"

दोनों ने अब डल बाँसों के उस झुरमुट की ओर टकटकी लगाकर देखा। जिस स्थल पर वे बैठे थे, उसके निकट केवल एक ही बाँस दिखाई दे रहा था।

"ध्यान से देखो। हो सकता है, तुम्हें वध किये गये व्यक्तियों की हड्डियाँ यहाँ मिल जायें।"

गिरिबाला ने मार्क की ओर कुछ झिझकते हुए देखा और फिर उसके पास सरक गयी। दोनों को एक-दूसरे के शरीर की गन्ध का एहसास हुआ और उन्हें उस दैहिक निकटता की अनुभूति का भी एहसास हुआ जो उन्हें पहले कभी नहीं हुई थी।

अपने पर नियन्त्रण बनाये रखने के प्रयास में गिरिबाला कुछ बुदबुदायी, "भोगी महाजन ने उन्हें विक्टोरिया के सिक्कों के लालच में ख़त्म कर दिया था। फिर वे प्रेत बन गये और उन्होंने उसके समूचे परिवार और इस स्थल को नष्ट कर दिया। दो या तीन सदस्य, जो बचे रह गये थे, वे भय से आक्रान्त यहाँ से भाग गये और जगलिया के पूर्व में नाहिरा में बस गये।"

मार्क बोला, "मैंने तो कहीं सुना था कि उन सबकी मौत काला आज़ार और मलेरिया से हुई थी। कामरूप और ग्वालपाड़ा के ज़िलों में उस समय चौथाई जनसंख्या इसी महामारी से खत्म हुई। तुम्हें रेत की मक्खियों के आतंक की कुछ याद है। इन जगहों पर इन मक्खियों के जैसे कि बादल ही छा गये थे। वे बिलकुल चुपचाप, झुण्ड के झुण्ड, लोगों के शरीर पर आ बैठती थीं और उनको खबर हुए बिना उनका खून चूस लेती थीं और फिर आसपास के पेड़ों के पत्तों पर आराम करती थीं। वे अपना तमाम काम, चुपके से, पिशाची सर्पों की तरह करती थीं!"

मार्क अब झुककर गिरिबाला के और निकट हो गया था और अपनी बात कहे जा रहा था, "इन सौदागरों के वध की कहानी का एक अन्य रोचक पहलू भी है। अफवाह यह उड़ी थी कि दोनों सौदागरों के गलों में सोने की ज़ंजीरें थीं। लोगों ने इधर-उधर उनके अवशेष ढूँढ़ने के लिए खुदाई करनी शुरू कर दी थी। जिन गड्ढों को उन्होंने खोदा था, वे मैं तुम्हें अभी दिखाता हूँ।"

अब वे थोड़ा आगे बढ़े और एक नीम के पेड़ के नीचे खड़े हो गये। नीम की पत्तियों में से छनकर आती सूरज की रोशनी अपनी ही तरह के आकार बना रही थी और उन पर पसरी हुई थी।

मार्क बोला, "तुम जानती हो तुम कितनी सुन्दर हो। इस खुली जगह पर, जहाँ चारों ओर प्रकृति का विस्तार है, तुम बिलकुल दैवी लगती हो।"

गिरिबाला ने अपने पाँवों के नीचे की भूमि को देखा। उस समय उसका रंग सूरज की रोशनी की तरह जगमगा रहा था। शायद जब कोई स्त्री अपने प्रेमी का नैकट्य पाती है तो उसका रंग ऐसे ही जगमगा उठता है। उसने अपनी सुन्दर आँखों को उठाया और बोली, "कितनी देर और यहाँ रुकने का इरादा है?"

मार्क कुछ देर तक सोच में पड़ा रहा। फिर वह बोला, "मैं कुछ समय तक अफ़ीमचियों के सुधार शिविरों में काम करना चाहता हूँ। फिर मैं उस जर्मन महानुभाव, गिलमन की जीवनी पूरी करना चाहता हूँ। इसके अलावा तुम्हारे पिताजी की इच्छा है कि मैं अंग्रेजी में सन्तदेव महाप्रभु का जीवन-वृत्त तैयार करूँ। इस काम के लिए कुछ सामग्री जुटाने के उद्देश्य से मुझे खमार और धूबीजानी जाना होगा।"

"लोगों का कहना है कि जो दो या तीन पादरी तुम्हारे साथ रहते हैं, उन्होंने गारो की पहाड़ियों और तुरा में कई पुरुष और स्त्रियों को ईसाई बना लिया है। क्या तुमने भी कभी ऐसा ही किया? बताओ मुझे!"

मार्क ने सीधे गिरिबाला के चेहरे पर अपनी निगाहें टिका दीं। उसकी यह निर्मल चितवन गिरिबाला के दिल में गहरे उतर गयी। वह बोला, "मुझमें जो भी थोड़ी-बहुत शक्ति है, मेरी कोशिश है कि उससे मानवता की पीड़ा और कष्ट दूर हो। धर्म-परिवर्तन मेरा एकमात्र उद्देश्य नहीं। वे लोग जो इसे अपने जीवन का उद्देश्य बना लेते हैं, वे वास्तव में कोई बहुत बड़ा काम नहीं करते।"

"मेरे दादा कहा करते थे कि वह मिशनरी लोग अधिकारों से ख़फा थे, क्योंकि वे मिकिर जनजाति के केवल एक हज़ार स्त्री-पुरुषों को ही ईसाई बना पाये। ये मिकिर लोग अब पुराने लकड़ी के लट्ठों का व्यापार करने आते हैं। लेकिन ऊँची जाति के किसी भी हिन्दू का यह मिशनरी लोग धर्मपरिवर्तन नहीं कर पाये। अधिकार लोगों का उन पर पूरा नियन्त्रण था।"

वह कुछ देर के लिए रुकी और फिर टूटी आवाज़ से कहती गयी, "मैं तुम्हारे दिल की गहराई को नहीं छू सकती। और धर्म! वास्तव में मैं नहीं जानती कि यह क्या है। लेकिन अगर··· अगर मैं क्रिस्तान बनकर भी तुम्हारे साथ हमेशा रह सकूँ तो···"

मार्क के मुँह से एकाएक निकला, "क्या?" लेकिन तुरन्त ही उसने अपनी भावनाओं पर काबू पा लिया और उसके स्वर में कोमलता आ गयी। "मैं स्वयं भी उत्तर-पूर्वी बैपटिस्ट चर्च का सदस्य नहीं हूँ। लेकिन मैं उन चर्च वालों के साथ घूमता ज़रूर हूँ। उन्हीं से मैंने असमिया भाषा सीखी है। उनका मुख्यालय उकियम और दमाराह में है। मैंने उस नेत्रहीन मछुवारे के बेटे, कंदुरा के बारे में विस्तार से लिखा है जो धर्मपरिवर्तन के बाद रोनाल्ड स्मिथ बन गया। इस सत्र में आने के पीछे वास्तव में मेरा कोई उद्देश्य और ध्येय भी है··· मेरा विश्वास करो। मेरा वास्तव में कुछ उद्देश्य है।"

अचानक उसकी नज़र गिरिबाला के चेहरे पर पड़ी। उसे यह देखकर धक्का लगा कि गिरिबाला के गालों से आँसू ढुलके रहे हैं। "सुनो, सुनो! तुम रो रही हो! क्या हुआ तुम्हें? क्या यह वाकई सच है कि हम एक-दूसरे के निकट आ गये हैं?"

गिरिबाला की आँखें तेल लगे काँच के दो टुकड़ों की तरह हो रही थीं। वह फ़ौरन उत्तर न दे सकी। उसने अपने दाँतों के बीच चादर का एक कोना भींच लिया और अपने आँसुओं को रोकने की क़ोशिश करते हुए बोली, "मुझे डर है कि तुम इस सत्र से जल्दी ही चले जाओगे।"

मार्क चुप रहा। गिरिबाला कहती गयी, "तुम जानते हो साहिब, एक अजीब तरह का भाव मेरे भीतर घुस आया है··· यह बड़ा ही विचित्र है और मेरी पकड़ में भी नहीं आ रहा। मुझे ऐसा लगता है जैसे कि इसका ताल्लुक उस दुष्ट हाथी से है। अगर जमालुद्दीन अपने मन्त्र-विशेष से उसे पकड़ने में सफल रहा तो··· तो इस सत्र के आसपास होने वाली सभी अशुभ घटनाएँ रुक जायेंगी··· कल रात मुझे एक सपना आया। मैंने देखा कि वह अद्‌भुत हाथी अपनी पीठ पर शानदार हौदा लिये फीलखाने में खड़ा है। और उस सपने ने मुझे मेरे कान में बताया कि तुम इसी सत्र में रह गये हो और गुवाहाटी तथा ऊपरी असम के लिए रवाना नहीं हुए। मैंने यह भी देखा कि माराभीटा से लाल झण्डा गायब हो गया है और उसकी जगह ठण्डे बयार में सुनहरी धान लहलहा रहा है। मैंने इन्द्रनाथ को धान के उन खेतों में टहलते हुए देखा। फिर मैंने यह भी देखा कि उस सुन्दर हौदे के दो सुनहरे पर निकल आये हैं···"

मार्क एकाएक बोला, "सुनहरे पर?"

गिरिबाला ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया और कहती गयी, "सुनो साहिब! फिर मैंने देखा कि मेरे सीने में क्रॉस का चिह्न गहनता से अपनी जगह बनाये हुए है, और यह वही क्रॉस है जो हमेशा तुम्हारे पास रहता है।"

मार्क की भेदती नज़र गिरिबाला के चेहरे पर फिर पड़ी। गिरिबाला कहे जा रही थी, "बस, थोड़ा और इन्तज़ार करो। जमालुद्दीन उस हाथी को पकड़ लेगा और फिर सब कुछ पहले की तरह व्यवस्थित हो जायेगा! ···हाँ, सब कुछ आसान हो जायेगा और मैं तुम्हारे लिए पाण्डुलिपियाँ जुटाने में और जमकर लग जाऊँगी। मैं बंगरा, चिकारहाटी, उकियम तथा दूसरी जगहों पर भी जाऊँगी। अरे संन्यासी साहिब, मेरा यकीन करो!"

मार्क कुछ देर तक फिर चुप रहा। गिरिबाला कहे जा रही थी, "मेरे ख़याल में इस क्रॉस भगवान ने, जो तुम अपने गले में पहने रहते हो, तुम्हें इस सत्र का रास्ता दिखाया है। यह मेरे दिल में भी उतर चुका है, यहाँ।"

मार्क हक्का-बक्का रह गया। लेकिन साथ ही गिरिबाला के उस अकलुषित विश्वास ने उसके दिल में कोई तन्त्री झंकृत कर दी। वह बोला, "तुम मुझे वे पुरानी पाण्डुलिपियाँ पढ़कर सुनाती रही हो। शायद इन्हीं की वजह से तुम्हारे मन में ये ख़याल

आने लगे हैं। इन्द्रनाथ चाहता था कि मेरे साथ-साथ तुम्हें भी इन पुरानी पाण्डुलिपियों से कुछ ज्ञान अर्जित करना चाहिए। सुनो, गिरि! तुम चाहे कुछ भी सोचो, हूँ तो मैं एक विदेशी ही न, एक बाहर का व्यक्ति। अगर ऐसा ही चलता रहा तो मेरे लिए तुम्हें सही रास्ता दिखाना और-और दूभर होता जायेगा। तुम मेरी बात समझती हो न, गिरि?"

एकाएक सूखे पत्तों में कुछ खड़खड़ हुई। उन्होंने देखा कि बिजली की कौंध की तरह उनके पाँवों पर से एक शालीकि थूटिया सर्प[8] निकल गया है। उसे देखकर वे स्तम्भित रह गये। इसके साथ ही मार्क की निगाह एक टूटे हुए नींव के पत्थर पर पड़े पुराने कागज़ात के एक पुलिंदे पर पड़ी। वह एक जिज्ञासु बालक की तरह उस पर लपका और उसे उठा लिया। वे बड़े पुराने कागज़ात थे, जिनका रंग बदल चुका था। वे बहुत खस्ता भी थे और दो जगह रस्सी से बड़ी सफ़ाई से बाँधे गये थे। वे भोगी महाजन द्वारा हाथीमहल में हुए किन्हीं सौदों से सम्बन्धित दिखते थे। मार्क को यह देखकर हैरानी हुई कि कुछ काग़ज़ात हाथियों के मेला-शिकार[9] और उससे जुड़े सरकार की 1920 तक की नियमावलि से सम्बन्धित थे। उसने उन पुराने काग़ज़ात को पढ़ना शुरू किया।

मेला शिकार के माध्यम से जंगली हाथी पकड़ने के लिए लाइसेंस : मैं निम्नलिखित शर्तों पर गारो हिल्स के ज़िले में जंगली हाथी पकड़ने के लिए लाइसेंस प्रदान करता हूँ—

(1) कि यह लाइसेंस हाथी संरक्षण अधिनियम 1879 (1879 का VI) के प्रावधानों तथा उनके तहत बनाये गये नियमों के अन्तर्गत है;

(2) कि यह लाइसेंस व्याख्यायित क्षेत्र, यानी गारो हिल्स ज़िले तक सीमित है;

(3) कि यह 1 अक्तूबर, 1933 से 15 मार्च, 1934 तक की अवधि के लिए वैध रहेगा;

(4) कि आप मेला शिकार विधि से ही हाथी पकड़ेंगे;

(5) कि आप पकड़े गये सभी हाथी डी.सी. द्वारा निर्धारित समय-सीमा में डिपो में लायेंगे;

(6) कि आप हाथियों के डिपो में पहुँचने के 24 घण्टे के भीतर हाथियों का प्रशिक्षण शुरू कर देंगे और इस बात का भी ख़याल रखेंगे कि प्रशिक्षण के दौरान उन्हें पर्याप्त मात्रा में चारा और पानी उपलब्ध कराया जाये और यह प्रशिक्षण दयालुतापूर्वक सम्पन्न किया जाये;

(7) कि आप डी.सी. तथा फॉरेस्ट डिपो ऑफीसर को हर उस हाथी के बारे में रिपोर्ट देंगे जो उनके पकड़े जाने के दौरान या प्रशिक्षण के दौरान या उसके बाद मर जाता है या मारा जाता है।

(8) कि आप प्रत्येक पकड़े गये हाथी के लिए, चाहे वह मर गया है या ज़िन्दा है, दो सौ रुपये की दर से रॉयल्टी देंगे। इसमें छूट सिर्फ उसी सूरत में होगी जब सरकार खण्ड II के अन्तर्गत हाथी की मृत्यु होने या उसके डिपो में पहुँचने के 14 दिन के भीतर ढूवरी, तूरा या फॉरेस्ट ऑफिस के लिए उसे छुड़वा देती है या अपने अधिकार में ले लेती है।

(9) ----------

(10) कि आप डिपो से किसी भी हाथी को नहीं हटायेंगे या तत्सम्बन्धी अनुमति नहीं देंगे जब तक कि आपने उसे ले जाने के लिए पास प्राप्त नहीं कर लिया है। यह पास आपको डिवीज़नल फॉरेस्ट ऑफीसर तभी जारी करेगा जब आप उसे मालखाने से प्राप्त यह रसीद दिखायेंगे कि आपने रॉयल्टी की रकम अदा कर दी है…

(11) कि यदि सरकार आपके द्वारा पकड़े गये हाथी को अपने अधिकर में लेने का निर्णय लेती है, तो यह कार्य एक प्रतिनियुक्त अधिकारी द्वारा ही सम्पन्न होगा… इसके बाद आप हाथी की देख-रेख और उसके प्रशिक्षण के लिए ज़िम्मेदार होंगे, और उसे सरकार को तभी सौंपेंगे जब तक कि वह कुंकी की मदद के बिना किसी व्यक्ति को ले जाने के लिए पर्याप्त ढंग से प्रशिक्षित नहीं हो जाता और अपना चारा स्वयं नहीं लाता… आपको डी.सी. के साथ आपसी रज़ामन्दी के आधार पर उसकी कीमत अदा की जायेगी…

मार्क उत्साहित था। बोला, "यह तो एक तरह का हमें ख़ज़ाना मिल गया! हम भाग्यशाली हैं कि यह हमारे हाथ लग गया।"

बाकी के कागज़ात भी गिरिबाला और मार्क ने बड़ी रुचि से पढ़े…

यह जीवन कितना क्षणभंगुर है, वे सोच रहे थे। थोड़े से समय में ही यह विशाल सम्पत्ति—घर, ज़मीन, अनगिनत हाथी, इत्यादि—भरभराकर नीचे आ गयी और टुकड़े-टुकड़े हो गयी। अब यह सिवाय खण्डहर के और कुछ नहीं है। जिसमें बेशुमार झाड़ियाँ हैं, लताएँ और पेड़ हैं और उनमें सर्प और सरीसृप भरे पड़े हैं।

गिरिबाला की मेखला और गताले से केतकी के फूलों की सुगन्ध आ रही थी। शायद उसने अपने कपड़ों की तहों में, उन्हें बक्से में रखते समय, केतकी की पत्तियाँ रख छोड़ी थीं। एकाएक उन्हें ध्यान आया कि जंगल की भूमि पर चीते की ख़ाल की तरह फैली चकत्तों वाली धूप अब हट गयी है और उसकी जगह गहारा, दुधखादी और बोकुल के पेड़ों के गहरे सायों ने ले ली है।

गिरिबाला मार्क के और निकट आ गयी और बोली, "ऐ साहिब, मेरा दिल तो भर चुका है। दुर्गा बुआ का कहना है कि मैं अपने दिवंगत पति की खड़ाऊँ की अवहेलना कर रही हूँ और एक शुद्ध आचरण वाली विधवा की तरह उन पर पुष्प

और तुलसी के पत्ते नहीं चढ़ाती। फिर उसका यह भी कहना है कि मैंने अपने दादा के श्राद्ध वाले दिन बकरी का मांस चखा। उसके शब्दों में मैं पापिन हूँ। वह मेरे हाथ से पानी तक नहीं लेती। और जिस समय वह खड़ाऊँ कक्ष में पूजा कर रही होती है, उस समय उससे मेरी उपस्थिति भी बर्दाश्त नहीं होती…"

उस अमरीकी युवक की नीली आँखें उस सुन्दर, अवसन्न युवती के लिए सहानुभूति से भर आयीं। गिरिबाला फिर बोली, "लेकिन साहिब, कितनी अजीब बात है। मुझे बिलकुल नहीं लगता कि मैंने किसी प्रकार का कोई पाप किया है। उस दिन बकरी का मांस खाने के बाद भी। मुझे उससे रत्ती भर भी ग्लानि नहीं हुई।"

वह एक क्षण के लिए रुकी। मार्क उस टूटे खम्भे के पास से थोड़ा हिला और उसे सांत्वना देने के विचार से उसने उसके बाजू को छूने की कोशिश की। लेकिन गिरिबाला थोड़ी झिझकी और पीछे हट गयी ताकि वह उसे स्पर्श न कर सके। साथ ही उसने उसकी नीली आँखों में भी देखा। उसे लगा कि उन आँखों के नीले और अविचल आकाश के नीचे रहना कितना सुखकर होगा! …वह फिर बोली, "ओ साहिब, तुम मेरी बात समझ रहे हो न? मैं दुर्गा बुआ और छोटी गोसाइन की तरह केवल ज़िन्दा रहने के लिए जीना नहीं चाहती। मेरे पिता, अधिकार, का कहना है कि मेरा भविष्य और दुर्गा का भविष्य एक-दूसरे से अब जुड़ गये हैं। दुर्गा ने अपना रास्ता खोज लिया है और तुम्हें भी खोजना होगा। तुम्हें सब रीति-रिवाज़ निभाने होंगे। तुम्हें अपने दिवंगत पति की खड़ाऊँ पर हर रोज़ पुष्प, तुलसी और जल चढ़ाना होगा। तुम्हें जानना होगा कि एक हिन्दू स्त्री के लिए उसका पति ही उसका सब कुछ है, जीवन-रक्त की तरह।"

वह एकाएक रुकी और उसने हँसने की कोशिश की। थोड़ी देर बाद उसने अपनी बात फिर कहनी शुरू की, "तुम जानते हो, मेरा वह पति उस अफ़ीम बेचने वाली दुष्ट स्त्री के साथ रंगरलियाँ मनाता था। वह उसके साथ सोता भी था। जानते हो पहली रात उसने मुझसे क्या कहा? मेरे गताले को हटाकर बोला, 'शादी में जो औरत आयी हो, उसके साथ बिस्तर में कोई आनन्द नहीं मिलता। एकदम नहीं।'—फिर भी मैं उसकी खड़ाऊँ पर पुष्प और पत्ते चढ़ाने की कोशिश करती हूँ, लेकिन अगर ऐसा ही चलता रहा तो मुझे लगता है मैं प्रेत बन जाऊँगी…"

इस पर मार्क एकाएक कह उठा, "नहीं, नहीं! इस तरह अपना दिल छोटा मत करो। मानव जीवन ईश्वर की सबसे बड़ी देन है और वह हमारे शरीर में निवास भी करता है। हमारे पापों के कारण उसे सूली पर चढ़ना पड़ा। उसके रक्त ने हमें पवित्र किया। उसके घाव के चिह्न हमें शान्ति देते हैं।"

गिरिबाला उठकर खड़ी हो गयी और उससे थोड़ा हटकर एक पेड़ के ठूँठ पर बैठ गयी। वास्तव में उस क्षण उसके मन में उस क्रिस्तान युवक से ईसा सम्बन्धी कोई प्रवचन सुनने की इच्छा नहीं थी। इसलिए बोली, "यह प्रवचन तुम दुर्गा को सुनाना।

उसे आजकल इस तरह की बातें सुनना अच्छा लगता है। और इधर तो वह पूरी तरह से टूट चुकी है और बिस्तर से लगी है। लेकिन एक वक़्त जानते हो, वह क्या करती थी?"

वह मार्क के फिर निकट आ गयी। मार्क को उसके कपड़ों से फिर उसी अस्पर्शी सुगन्ध का अहसास हुआ। क्या यह केतकी के फूलों की सुगन्ध है···या कि पेरे गये गन्ने की?···

"मेरे विधवा होने के बाद मेरे पिता ने हुक्म जारी किया कि मेरा बिस्तर उसके बिस्तर के साथ लगेगा। वह चाहते थे कि मैं उसका साया बनकर रहूँ। आधी रात के वक़्त मैं अक्सर उसे देखती कि वह अपने बिस्तर से उठी है, अपने दिवंगत पति की खड़ाऊँ को उसने उठाया है और उन्हें लिये-लिये वापस बिस्तर पर आ गयी है ताकि वह अपनी नंगी छाती के साथ उन्हें सटाकर सो सके। ···सोलह वर्षों तक उसका विवाहित जीवन खूब बढ़िया चला। पति-पत्नी, दोनों एक-दूसरे का साया बनकर रहते थे। लेकिन मार्क साहिब, रात के उन क्षणों में वह मुझे एक प्रेत के समान दिखती। और अब जबकि उसके ज़ेवर चले गये हैं, उसका चेहरा बुरी तरह विकृत हो गया है, और वह भयंकर दिखती है। आधी रात के समय जब वह जगती है··· अब उसकी तमाम भावनाएँ मुर्दा लकड़ी की तरह हैं, क्योंकि अब वह पवित्र नदी में अपने पति की अस्थियाँ नहीं बहा सकती। मैं उसे बराबर देखती रही और फिर एक दिन मैंने उससे कहा—'मेरे ज़ेवर ले लो। वे मेरी माँ के पास पड़े हैं। मेरे लिए वे किसी काम के नहीं। मुझे अपने पति की अस्थियाँ पवित्र जल में विसर्जित करने की भी कोई इच्छा नहीं।' मेरी बात सुनकर दुर्गा ने मेरी ओर ऐसे देखा जैसे कि वह किसी वजह से आक्रान्त हो। उसकी आँखें भयंकर दिख रही थीं। वे मेरे भीतर धँसती गयीं। फिर एकाएक उसने भूमि पर थूका और बड़ी हिकारत से बोली, 'तुम्हारे जैसे व्यक्ति से, जिसकी ज़बान से इस तरह के शब्द निकलते हैं, कुछ भी लेना पाप होगा'।"

गिरिबाला फिर एकाएक रुकी और अपना चेहरा अपने घुटनों के बीच छिपाकर सुबकियाँ लेने लगी। मार्क उसके बहुत निकट आ गया था। उसने उसके बाल छूने के लिए अपना हाथ बढ़ाया, लेकिन ऐसा करने का वह साहस नहीं जुटा पाया। बैलगाड़ी और उसका चालक केवल बीस गज़ की दूरी पर उनका इन्तज़ार कर रहे थे। चालक शायद उन पर आँख भी रखे हुए था। या हो सकता है उनकी बातें भी सुन रहा हो।

मार्क वहीं, उसके निकट, अपने घुटनों के बल हो गया और बड़ी कोमलता से बोला, "शान्त हो जाओ, गिरि! धैर्य रखो। मुझे खेद है कि मैं तुम्हें ठीक से सांत्वना नहीं दे सका। मैं तुम्हारे प्रति कृतज्ञ हूँ कि तुमने अपनी भावनाएँ मेरे सामने प्रकट कीं। मुझे ऐसा लगने लगा है जैसे कि मेरी तुम्हारे प्रति एक प्रकार की ज़िम्मेदारी है। जानती हो?"

जाने क्यों, धकर पक्षियों का कलरव उस समय बढ़ गया था!

एकाएक उन्हें जंगल से आतीं अजीबो-गरीब आवाज़ें सुन पड़ीं। कभी शोर, कभी चीख़ोपुकार, और कभी उलटे-सीधे स्वर। वे आवाज़ें उनके और-और नज़दीक आती जा रही थीं। गिरिबाला और मार्क उठकर खड़े हो गये। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब क्या है। गाड़ी के चालक ने ज़ोर-ज़ोर से अपने हाथ हिलाये और घबराई आवाज़ में चिल्लाया, "चलिए! जल्दी! पागल हाथी ने एक आदमी को मार डाला है। वह अब इधर ही आ रहा है। बड़ी तेज़ी से दौड़िए! दौड़िए, अगर अपनी जान की ख़ैर चाहते हैं तो!"

गर्जना का वह स्वर और-और निकट आता जा रहा था। गाड़ीवान ने अफरातफरी में बैलों को गाड़ी से खोल दिया और उन्हें दौड़ा दिया। वे दोनों बैल खेतों की ओर बढ़ गये। गाड़ीवान भी उनके पीछे दौड़ता रहा और बार-बार चिल्लाता रहा, "माईशाना! इधर से आइए! तेज़ी से दौड़िए! साहिब को भी अपने साथ ले आइए। दौड़िए! हाथी ने एक आदमी को मार डाला है···हाथी···दौड़िए!"

ऐसे लगा जैसे कि उनकी ओर एक ज़बर्दस्त तूफ़ान बढ़ता चला आ रहा है ··तड़! तड़! भूम··· धाम! ···वह! वह! हाथी की सूँड अब कुछ दिख रही है! वह! उसके वे खून से सने दो लम्बे भयंकर दाँत भी दिखने लगे हैं। उनमें लताएँ और जंगली घास फँसी हुई है। अब वह विशाल, उन्मत्त हाथी पूरी तरह से दिख रहा है। वह बिना बैलों के, लावारिस छोड़ी गयी गाड़ी को ज़ोर की एक ठोकर मारता है और उसके टुकड़े-टुकड़े कर देता है। गाड़ी का फूलदार पर्दा गिरिबाला और मार्क के पास आकर गिरता है।

गिरिबाला पूरी तरह से भयाक्रान्त है। उसकी घिग्घी बँधी हुई है और वह उसी अवस्था में मार्क को कसकर भींच लेती है। साक्षात् मृत्यु उनसे केवल पाँच गज़ की दूरी पर खड़ी है, लाल आँखों वाली मृत्यु! वह! वह!

गिरिबाला के गले से एक तनावपूर्ण, पीड़ायुक्त फुसफुसाहट-सी निकलती है, "मुझे मार डालो! मार डालो मुझे, अभी! जबकि मैं इस साहिब को अपनी भुजाओं में लिये खड़ी हूँ। ख़त्म कर दो मुझे अभी! तुरन्त! मुझे बेहद खुशी होगी। तुम्हें याद नहीं मैं तुम्हारी पीठ पर बैठकर नदी पर जाती थी। मैं तुम्हारी पीठ से जोंकें उतारकर फेंकती थी। तुम्हें वह कुछ भी याद नहीं? तुम मेरे नंगे शरीर पर कीचड़ और पानी की बौछार किया करते थे। तब मैं महावत के अंकुश से हुए तुम्हारे घावों को अपनी हथेलियों से सहला-सहलाकर तुम्हारी पीड़ा को हलका किया करती थी। नहीं याद? तब मार दो मुझे! अभी! मैं वही लड़की हूँ जो अधिकार महाप्रभु के शुभ हौदे में बैठा करती थी। अब मैं इस म्लेच्छ की भुजाओं में हूँ। ख़त्म करो, ख़त्म करो मुझे!"

"ख़त्म करो, ख़त्म करो," शब्दों के साथ ही गिरिबाला लुढ़क-सी पड़ी और मार्क की भुजाओं में बेहोश हो गयी।

बूम! बूम! ढम! ढम! ढोल पीटे जा रहे हैं और उनकी आवाज़ और-और निकट आती जा रही है। लगभग बीस आदमियों की एक टोली, जिनके हाथों में जलती मशालें हैं, उनकी तरफ़ आ रहे हैं। उनकी मशालों की फड़फड़ाती रोशनी उनके चमचमाती, पसीने से तर-ब-तर, नंगी पीठों पर पड़ रही है।

दो कहार एक पुरानी पालकी को उठाये लिये जा रहे हैं। बाकी वे लोग हैं जिन्हें जंगली या उन्मत्त हाथियों को काबू में लाने की कला सिखायी गयी है। जैसे-जैसे वे आगे बढ़ रहे हैं, वे हाथी को दुलारने-पुकारने वाला एक गीत भी गाये जा रहे हैं। गीत का अर्थ इस प्रकार है :

ऐ मेरे राना! आहिस्ता-आहिस्ता, धीरे-धीरे चल
ऐ मेरे राना! धीरे-धीरे अपने कोमल पाँव बढ़ा
आ! ई! धत्!
आ! ई! धत्!

वह टोली पागल हाथी द्वारा चकनाचूर की गयी उस बैलगाड़ी के पास आकर खड़ी हो गयी। बैलगाड़ी एक टूटे पिंजर की तरह पड़ी थी। किसी ने एकाएक कहा, "लगता है माईशाना किसी तरह बच निकली है। पागल हाथी अब जिरंग पर्वत की ओर चला गया होगा।"

एकाएक भोगीराम महाजन की उस खण्डहर बनी हवेली में से मार्क प्रकट हुआ। उसे देखकर टोली के लोग खुशी से उछल पड़े।

"वो! वो! वह रहा गोरा साहिब! उसकी साइकल अब भी सही-सलामत है।"

"शायद वह हमें माईशाना के बारे में कुछ बता सके!"

मार्क उनके निकट आ गया। कुछ समय पहले उसे जो पूरी तरह झकझोर देने वाला अनुभव हुआ था, उससे वह अब भी सकते में था। वह रुकते-रुकते बोला, "आप लोग··· गिरिबाला··· को ढूँढ़ रहे हैं? वह रही! वह! सो रही है··· उसे धीरे से उठाकर पालकी में लिटाना··· उसे हवेली में ले जाओ···"

वे उसे उठाकर पालकी तक ले आये। उसने अभी तक अपनी आँखें नहीं खोली थीं। वह अब भी बेहोश थी।

कहारों ने पालकी उठायी और सभी लोग पहले से तेज़ क़दमों पर, जिस रास्ते से वे आये थे, उसी रास्ते से लौट पड़े! अब वे एक दूसरा गाना गा रहे थे!

जमालुद्दीन ख़त्म हो चुका था। उसकी लाश माटियापहाड़ पर मचान के नीचे जामुन के एक पेड़ की शाखाओं में अटकी पड़ी थी··· एक-एक करके कई लोग सत्र में आये और उस लाश के इर्द-गिर्द जुटने लगे। अँधेरा हो चुका था। उनके हाथों में जलती मशालें थीं। वे बड़े बेचैन दिखते थे और डर के मारे उनके दिल सिकुड़े हुए थे, लेकिन साथ ही वे चौकन्ने भी थे··· वह जानलेवा, उन्मत्त हाथी कहाँ है?

अब तक इन्द्रनाथ भी वहाँ पहुँच गया था। वह जमालुद्दीन की क्षत-विक्षत लाश को देखकर बुरी तरह से हिल गया था। उसने अपना रूमाल निकाला और बार-बार उससे अपने चेहरे को पोंछा। फिर बड़ी मुश्किल से उसने अपने को प्रकृतिस्थ किया और बोला, "यह लाश इस तरह यहाँ नहीं पड़ी रहनी चाहिए। चलो, तैयार हो जाओ। इसे उठाओ और बातघर ले चलो।"

हेरामदो के एक ब्राह्मण युवक के मुँह से निकला, "हम मुसलमान को नहीं छुएँगे। अच्छा हो भोलागाँव से कुछ मुसलमानों को बुलवा लो।"

इस पर दूसरे लोग बोल उठे, "इस वक़्त भोलागाँव कौन जायेगा, जबकि चारों ओर पागल हाथी का आतंक फैला हुआ है?"

उस ब्राह्मण युवक ने इन्द्रनाथ को आगाह किया, "छोटे गोसाईं। उस लाश से अपने को सात हाथ की दूरी पर रखना, वरना तुम्हें चन्द्रायण प्रायश्चित्त करना होगा। इस बात का ख़याल रहे।"

इस पर एक और ब्राह्मण ने सुझाया, "उस अफ़ीमची कल्टू के बेटे यहाँ मौजूद हैं। अगर वे इस लाश को ले चलें तो उन्हें केवल धानु प्रायश्चित्त ही करना होगा।"

कुछ युवक वहाँ और भी थे। वे आपस में फुसफुसाने लगे, "वह हम से क्या उम्मीद करता है? क्या हम एक मुसलमान की लाश को छू सकते हैं?"

इन्द्रनाथ मारे गुस्से के फट पड़ा, "चुप रहो। चुप रहो। अगर कोई भी आगे नहीं आया तो मैं ख़ुद इस लाश को ले चलूँगा। हम इसे तमाम रात यहीं पड़े रहने देना नहीं चाहेंगे।"

भीड़ में अविश्वास की एक लहर-सी दौड़ गयी और दबी-दबी ज़बान में टिप्पणियाँ होने लगीं, "वह क्या चाहता है? ···उसका मतलब क्या है? ···यह छोटा गोसाईं अपने होश में तो है?"

जलती मशालों की फड़फड़ाती रोशनी में जमालुद्दीन की क्षत-विक्षत लाश, जो काले कपड़ों में थी, पंख फैलाये एक चमगादड़ की तरह दिख रही थी। उसका माथा, नाक और गालों की हड्डियाँ कुचली गयी थीं और उसका पेट खुल गया था। उसकी अंतड़ियाँ और दूसरे अंग खून में सने एक तरफ़ पड़े थे।

इस बीच एक टूटी-सी आवाज़ सुनने में आयी, "बेचारा जमालुद्दीन! उसने दुष्ट हाथी को हर तरह से पकड़ने की कोशिश की। उसने इतने दिन और रातें उसी मचान पर बितायीं और वहाँ से हिला तक नहीं।"

एक और आवाज़ आयी, "दक्षिणी तट में अब कोई ऐसा फन्देबाज़ नहीं रहा जो जमालुद्दीन की तरह कुंकी की सवारी कर सके। कोई मुक़ाबला नहीं था इसका।"

एक और व्यक्ति की आवाज़ भी सुन पड़ी, "रानी के फीलखाने में जिस फन्देबाज़ ने ऐसा साहस दिखाया था, उसे अंग्रेज़ सरकार से सोलह सौ रुपये का पुरस्कार मिला था। जमालुद्दीन जंगली हाथियों के सभी रास्तों को वैसे ही जानता था,

जैसे कि अपनी हथेली की लकीरें। उसे पता था कि कहाँ भूमि में नमक है, क्योंकि जंगली हाथी ऐसी जगहों के तो दीवाने होते हैं। जंगली हाथियों से उसका एक प्रकार का रहस्यमय, लगभग अलौकिक रिश्ता था।"

एक व्यक्ति बोला, "डाखला, चक्रद और उकियम के गोसाईं के सभी कुंकी उसे अच्छी तरह जानते थे। कौन कुंकी चंबईत[10] कहने पर अपने ही ढंग से अपने घुटनों के बल हो जायेगा या खोलबुक[11] कहने पर कौन कुंकी कैसे व्यवहार करेगा, यह सब जमालुद्दीन के मस्तिष्क पर किसी पुस्तक के पृष्ठ की तरह अंकित था।"

एकाएक कहीं से बड़ी ज़ोर से रोने जैसी आवाज़ आयी। यह कल्टू महावत था। वह विलाप कर रहा था, "अरे मेरे भइया! कहाँ चले गये तुम? तुम्हें याद नहीं तुमने मेरी जान कैसे बचायी थी जब मैंने जगन्नाथ को पकड़ा था? नहीं याद? तुम्हारे हाथ में आधे मन का जूट का फन्दा था जिसे तुमने शनिवार को तैयार किया था। जैसे ही हमने तेज़ी बरती, मेरे हाथों से गलसी जरी[12] और मिदाओत[13] फिसल गये थे और उस जंगली हाथी के पाँव के पास जा गिरे थे। लानत है मुझ पर! मैंने बहुत ज़्यादा अफ़ीम ले रखी थी! मेरे हाथ काँप रहे थे। ओह, नशे की ऐसी हालत में मैं हाथी के शिकार पर क्यों निकला? मेरे कुंकी ने अपनी सूँड उठायी और उससे जंगली हाथी पर पिल पड़ा, और इधर मैं बिलकुल निहत्था! लेकिन तुमने बड़ी फुर्ती दिखायी और अपने कुंकी पर बैठे-बैठे बड़ी होशियारी से मेरी जान बचायी। आह, मेरा कुंकी! वह भी बड़ा बदमाश था। दातिया के भिखारू गोसाईं के यहाँ से आया था। अपने नुकीले, लम्बे दाँतों से वह जगन्नाथ की माँ को तब तक लहूलुहान करता रहा, जब तक कि वह गिर नहीं गयी। बेचारी! वह तो अपने बच्चे को बस किसी तरह बचाना चाहती थी। धिक्कार है मुझ पर! मुझे अपने कुंकी के दाँत काट देने चाहिए थे। अफ़ीम के नशे में मैं हाथी के शिकार का यह बुनियादी उसूल भूल ही गया था। धिक्कार है, धिक्कार है मुझे! ओह! मुझे कितने जुर्माने देने पड़े। दो सौ रुपये शिकार करते समय एक जंगली हाथी को मारने के। इसके अलावा कुछ और भी, कुंकी के दाँत न काटने के लिए। बुरा हो मेरा। मेरा कुंकी फंदी लाइसेंस भी चला गया। लेकिन मैं तुम्हें झुककर सलाम करता हूँ··· तुमने उस दिन मेरी जान बचायी।"

हेरामदो के एक ब्राह्मण युवक ने इस पर टिप्पणी की, "हाथी सब कुछ समझते हैं। उन्हें बात आसानी से भूलती नहीं। वह बच्चा हाथी, जगन्नाथ, अपनी माँ की हत्या को कभी नहीं भूला। अब उसने अपना बदला ले लिया है। वह चुपके से एक चोर की तरह आया और उसने मचान पर से जमालुद्दीन को नीचे घसीटकर मार डाला।"

एक दूसरे ब्राह्मण लड़के ने टिप्पणी की, "ताज्जुब है कि वह असफल रहा और इस तरह मारा गया। बड़ा ताज्जुब हो रहा है··· हंफी, बोर और मिलरॉय जैसे गोरे साहिब भी उससे सलाह लिया करते थे कि कुंकी की सवारी कैसे की जाये। उसने उन्हें जो कुछ बताया, उन्होंने उस पर विस्तार से लिखा··· बदला! ···यह सीधा-सीधा

बदला है! ···इतने सालों तक इसके मस्तिष्क से यह चित्र मिटा नहीं था कि जब वह बच्चा था तो जमालुद्दीन ने उसकी माँ को कैसे मारा था···!"

कई और लोग भी एक साथ बोल पड़े, "हाँ, हाँ! हमने अपनी आँखों से देखा है। देर रात तक धान की भूसी की आग के निकट हंफी साहिब जमालुद्दीन के सामने बैठकर हाथी की बीमारियाँ, जैसे ज़हरबाद, मितखरा, चूरंगी, करीह और कई दूसरी चीज़ों के बारे में लिखे जाते थे···उसने उन गोरे साहिबों को जड़ी-बूटियों से इन बीमारियों के इलाज के बारे में भी सब कुछ बताया था। लेकिन ज़्यादा बुरी बात यह है कि इन बीमारियों की रोकथाम के लिए उसने उन्हें सभी मन्त्र भी बता दिये।"

एक अन्य व्यक्ति की आवाज़ आयी, "उन गोरे साहिबों ने उसे कोट-पतलून दिया था, और वह ख़ास-ख़ास मौक़ों पर उसे बड़े गर्व से पहनता था। हर कोई जानता था कि वह पहले हिन्दू था। लेकिन उसके माता-पिता स्त्री-पुरुष सम्बन्धी किसी जुर्म में फँस गये थे और उन्हें गोरखिया गाँव में धकेल दिया गया था जहाँ वे मुसलमान बन गये।"

···अब तक इन्द्रनाथ चुपचाप, बुत बना, मृत व्यक्ति की लाश के पास खड़ा रहा। दुःख और भय उसके मन में आ-जा रहे थे और उसकी आत्मा को परेशान किये हुए थे। बाँसों का एक चौखटा-सा तैयार किया गया और मछुवारों के गाँवों, हीरापाड़ा और डोमपाड़ा के निम्न जाति के कुछ आदमियों और लड़कों ने खून से लथपथ उस लाश को उठाया और उस चौखटे पर रख दिया।

इन्द्रनाथ जानता था कि जब भोलागाँव में जमालुद्दीन के मज़ार पर नमाज़ पढ़ी जायेगी, तब गाँव के सभी कोनों से लोग उसे ख़िराज देने के लिए इकट्ठे हो जायेंगे···

आखिर, चार आदमियों ने उस लाश को अपने कन्धों पर उठाया और बाकी लोग उनके पीछे-पीछे जुलूस की शक्ल में पहाड़ से नीचे आने लगे। पागल हाथी का डर उन सबको एक-दूसरे के निकट किये हुए था, और अपना मनोबल बनाये रखने के लिए वे ढोल बजाये जा रहे थे··· इन्द्रनाथ उस जुलूस की अगवानी कर रहा था। जैसे-जैसे वह नपे-तुले क़दमों से नीचे की ओर आ रहा था, उसके दिल की धड़कन ढोल की थाप के साथ एकलय होती जा रही थी··· आखिर, यह हो ही गया। जैसे कि एक युग बीत गया हो। अब फीलखाने में केवल एक ही, बिना लम्बे दाँत वाला हाथी, रह गया है। वह कुंकी बनने के क़ाबिल नहीं है। वह तो नाव को भी नहीं खींच सकता, और न ही जिरंग में लकड़ी के लट्ठे उठा सकता है। उसकी सूँड ज़रूरत से ज़्यादा मोटी है और अनुपात में भी नहीं है। उसकी पीठ पर हौदा बड़ा बेहूदा लगेगा—आह! वह हौदा! उस पागल जगन्नाथ ने उसका छोड़ा ही क्या है! क्या गोसाईं इस बिना दाँत के हाथी से मेल खाता नया हौदा तैयार करवा सकता है?

···ढुक! ढुक! ढुक! उसका दिल ढोलों की आवाज़ के साथ-साथ धड़क रहा था। उसे रानी जाकर फॉरेस्ट ऑफीसर को इसकी रिपोर्ट करनी होगी। आख़िर गोसाईं के

हाथी, जगन्नाथ ने एक आदमी को मार डाला है! ···चक्रद का वह शिकारी जिसने जंगली और दुष्ट हाथियों को मारकर उनके दाँत इकट्ठे किये हैं और हाथी नियन्त्रण लाइसेंस भी प्राप्त कर लिया है, वह जगन्नाथ का शिकार करने और उसके शानदार दाँत हथियाने की ताक़ में है। अब गुवाहाटी से डिप्टी कमिश्नर जल्दी ही यह वारण्ट जारी करेगा कि इस हाथी को गोली मारकर ख़त्म कर दिया जाये। इसने एक आदमी को मार डाला है।

···गोली से ख़त्म कर दिया जाये! ख़त्म कर दिया जाये! उसकी मौत का परवाना आ गया है। इतने बड़े शरीर के साथ बेचारा जगन्नाथ कहाँ छिपेगा? ···कहाँ? उसे हमेशा बातघर के सामने बोकुल के पेड़ से बाँधा जाता था··· ओह, अगर उसे उस पेड़ के निकट गोली मारकर ख़त्म कर दिया गया···। इन्द्रनाथ और उसके परिवार से यह यातना कैसे बर्दाश्त होगी? कैसे सहेंगे वे इसे? और वह भयानक दृश्य, जब उसके निस्पंद शरीर से काटकर लम्बे दाँत निकाले जायेंगे। ऐसा भयावह दृश्य वह कैसे देख पायेगा? जगन्नाथ उसके अपने शरीर का एक हिस्सा था। वह उसके परिवार का एक सदस्य था। ऐसा क्रूर दृश्य वह कैसे सहन करेगा? और नियति का यह हृदयहीन खिलवाड़ तो देखो। स्वयं उसी को, जो उसका स्वामी और मित्र रहा है, उसकी मृत्यु के आदेश वाले काग़ज़ात पर हस्ताक्षर करके उन्हें प्राप्त करना होगा।

···इन्द्रनाथ की आँखें आँसुओं से भर आयीं···ढुक-ढुक! ढुक-ढुक! उसके दिल की धड़कन के कारण उसकी छाती में पीड़ा की लहरें दौड़ने लगीं। वह जुलूस के साथ पहाड़ से नीचे की ओर चलता रहा।

## बारह

छोटी गोसाइन स्नान कर चुकी थी। साफ़-सुथरा गताला और मेखला पहने वह अपनी प्रतिदिन की पूजा करने और सूर्य को प्रणाम करने के लिए सहन में आयी। सहन में कुछ ही समय पहले मिट्टी और गोबर से लिपाई की गयी थी। वह एक युवा और स्फूर्ति से भरपूर हिरण की ख़ाल की तरह चमक रहा था। गोसाइन की मेखला थोड़ी ऊँची थी, जिससे सुबह की रोशनी में उसके सुन्दर टखने और पाँव चमचमाते लग रहे थे। सूर्य को प्रणाम करने के बाद वह धीरे-धीरे सहन के उस स्थल पर पहुँची जहाँ बाँस के अड़ंगे से प्रवेशद्वार का काम लिया जाता था। वहाँ वह थोड़ी देर तक खड़ी रही। नवम्बर का महीना था। माटियापहाड़ पर बाँसों के झुरमुट काफ़ी घने और हरियाली से ढके हुए थे। प्रातःकाल की धुन्ध उन बाँसों पर छायी हुई थी। हर झुरमुट इस तरह दिखता था जैसे कि वह मछली पकड़ने वाले जाल में लिपटा हो। धुन्ध भी एक समान नहीं थी। कहीं गहरी थी, कहीं पारदर्शी और कहीं हीरापाड़ा की साँवले

रंग की सुन्दर, ग़रीब लड़कियों द्वारा पहने गये चीथड़े हो रहे गतालों की तरह। गोसाइन ने देखा कि तिनकों की ढेरियाँ, जो कभी कंकाल की तरह दिखती थीं, अब ऊँची तो हुई ही थीं, फैल भी गयी थीं। छोटे-छोटे बच्चे उनकी चोटी पर चढ़ जाते और फिर ही-ही करते उनसे फिसलते हुए नीचे आ जाते। सुबह की हवा उनकी किलकारियों से ओत-प्रोत थी। आह! पतझड़ के धान की मीठी सुगन्ध! छोटी गोसाइन ने उस नशीली सुगन्ध को अपने भीतर भर लिया और फिर ताज्जुब करने लगी कि यह किस किस्म के चावल की सुगन्ध होगी। हाँ, हाँ! यह बतेश्वरीशाली[1] चावल होगा। बहुत पहले की बात है एक बार उसने इस चावल की फसल पर टिड्डियों के झुण्ड को आग की चिनगारियों की तरह उतरते देखा था। उस अनुभव से वह जानती थी कि जहाँ भी बतेश्वरीशाली की फ़सल बढ़िया होती, वहाँ ये टिड्डियाँ आ जातीं। इस फ़सल को भोर[2] और गांधी[3] नाम के कीड़े भी लग जाते थे और उनकी रोकथाम के लिए गोसाईं के घर के बंधुवा मज़दूरों ने पचतिया[4] पेड़ों की टहनियाँ काट डाली थीं और उन्हें वहाँ से हटा दिया था। सब कुछ ठीक-ठाक लगता था। बहुत तगड़ी फसल हुई थी। चारों तरफ़ धान के गाहने और उसे ओसाने की आवाज़ आती थी। ढेकी से खूब काम लिया जा रहा था। हाँ, सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था। लेकिन उसकी अपनी खत्ती अब भी खाली पड़ी है। पिछले एक हफ्ते से वह बाँस के फाटक के पास खड़े-खड़े बैलगाड़ी के पहियों की आवाज़ सुनने को तरस रही है, लेकिन उसके खेतों से धान से लदी गाड़ियाँ आ ही नहीं रहीं। अजीब है यह! बड़ा अजीब है। कुछ समय तक, उसके पति के देहावसान के बाद, सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा, लेकिन फिर धीरे-धीरे बिगड़ने लगा और अब तो हर किसी चीज़ की लगभग छुट्टी हो रही थी। और ये पातहल्दिया, गरहल तथा धारपुर के अनुयायियों को क्या हो गया है? उन्होंने भी चावल से भरी टोकरियाँ अभी तक नहीं पहुँचायीं। गड़बड़ क्या है? वे तो फूल की पंखुड़ियों की तरह दिखने वाले मुक्से[5] और पके कटहल की भेंट लेकर भी नहीं आये। और न ही उन्होंने उसे अपने यहाँ आने का निमन्त्रण दिया है। उसके पति के दिवंगत हो जाने के काफ़ी समय तक अनुयायियों की टोलियाँ ढोल और तुरही बजाते हुए उसे अपने गाँव लिवाने के लिए आती रही थीं। टोलियों के लोग कई दिनों तक उसके प्रार्थना कक्ष में अपना डेरा डालते और उसे को पालकी में बिठाकर अपने गाँव पहुँचते। गाँव पहुँचकर वे वहाँ के प्रार्थना कक्ष के सामने पालकी उतार देते और पालकी से उस कक्ष के द्वार तक एक लम्बी, सफ़ेद चादर बिछा देते। तब गोसाइन अपना कदम बाहर रखती और उस वस्त्र पर चलकर प्रार्थना कक्ष में पहुँचती।

तब से अब तक कितना ही समय बीत गया है! गरहल और पातहल्दिया के गाँवों में हैज़े और कालाआज़ार की महामारी भी फैली थी। कई पुराने अनुयायी इन महामारियों की चपेट में आ गये थे। अब लगता है जैसे कि अनुयायियों की वह पीढ़ी, जो उसे बेहद सम्मान देती थी और उसके चरणों की धूलि अपने माथे से लगाती थी, हमेशा के लिए ग़ायब हो चुकी है।

देश आज़ाद हो चुका है। लेकिन छोटी गोसाइन की नज़रों में सब कुछ गड्डमड्ड हो रहा है। पुराना सिलसिला तो अब रहा ही नहीं। अपनी मृत्यु से पहले उसके पति गोसाईं ने उससे कहा था, "देखो, डरना नहीं। देश को आज़ादी मिलने के साथ ही हमारे सभी लोग, बूढ़े और जवान, अपने अधिकारों के प्रति सजग हो जायेंगे। यहाँ भी, देश के इस दूर-दराज़ हिस्से में, हमारे लोगों में काफ़ी सजगता आयेगी। पर मेरे चले जाने के बाद यदि तुम अकेली भी हुईं, हमारे अनुयायी तुम्हारे प्रति और अधिक सरोकार दिखाने लगेंगे और तुम्हें वही सम्मान देंगे और वही भक्तिभाव दिखायेंगे…"

लेकिन अब, अब क्या हो रहा है? ज़मीन को लेकर ही कितनी तरह की समस्याएँ उठ खड़ी हुई हैं। कहीं परेशान किया जाना, कहीं झगड़े। लगता है जैसे कि अनुयायी उसे गुवाहाटी की कचहरियों में घसीटकर ही दम लेंगे। उसी गोसाइन को जिसने कभी अपने सर के ऊपर के आकाश तक को नहीं देखा था…!

बाँस के फाटक से, जहाँ गोसाइन खड़ी थी, उसने बातघर के निकट भैंस के सींग से बना, अपना कालिया लिये काउरिया को देखा। कूबड़ के कारण उसकी गरदन ऐसी दिखती थी जैसे कि वह आगे की ओर झुकी हुई है। सम्भवतया गोसाइन की हवेली में कोई अनुष्ठान चल रहा था। बातघर से थोड़ा ही आगे उसने केले के पेड़ की छाल से, मुंडे सर वाले कुछ लड़कों को दोने बनाते देखा। शायद गोसाईं के यहाँ उससे उसके पापों का प्रायश्चित करवाने कोई व्यक्ति आया हुआ था। आजकल गोसाईं ने परिस्थितियों और सुविधा को देखते हुए पुराने धार्मिक ग्रन्थों के परम्परागत नियमों को भी बदलना शुरू कर दिया है। छोटी गोसाइन को इससे बहुत हैरानी होती है। लेकिन गोसाईं ही क्यों, उसके सुनने में तो यह भी आया है कि गोसाईं के अपने असामी पुजारी, पुरुषोत्तम भगवती, ने अपना उल्लू सीधा करने के लिए धार्मिक ग्रन्थों के साथ छेड़खानी करनी शुरू कर दी है। तुरन्त पैसा बनाने का यह एक अच्छा तरीका था। पर हाँ, वह स्वयं थोड़ा-सा परिवर्तन करने के विरुद्ध नहीं थी, यदि उससे मानवता का कुछ भला होता हो। एक बार भिखारू गोसाईं का महावत उसके यहाँ आया था। उसकी पत्नी और एक बच्चा भी उसके साथ थे। यह महावत कचारी[6] था और नीच जाति का समझा जाता था, लेकिन उसने बड़ी कठिन पूजा-अर्चना करके उसे उच्चतर सामाजिक प्रतिष्ठा दिलायी थी। महावत ने उसके यहाँ एक आदमी भेजा था, उसकी सलाह लेने के लिए कि कैसे धार्मिक ग्रन्थों में दिये गये नियमों के अन्तर्गत एक महावत दूसरी औरत भी रख सकता है। लेकिन इसके साथ-साथ महावत की पत्नी भी, जो अपनी छाती बच्चे के मुँह में दिये हुए थी, आयी थी और छोटी गोसाइन के पाँव पर गिर पड़ी थी। उस दिन तो उसने धार्मिक ग्रन्थों पर भी नज़र नहीं डाली थी। वह जानती थी कि करना क्या है। उसने महावत द्वारा भेजे गये आदमी को उपयुक्त उत्तर दिया था, "जो स्त्री जान-बूझकर किसी दूसरी स्त्री के घर की खुशी बरबाद करती है, उसे केवल घृणा मिलनी चाहिए, और मैं उसे ऐसा शाप दूँगी जिससे उसकी पीढ़ियाँ की पीढ़ियाँ नष्ट हो जायें…"

गोसाइन के ऐसे शब्द सुनकर महावत की हिम्मत नहीं हुई थी कि वह किसी दूसरी स्त्री को अपने घर में ले आये। सब मामला ठीक से तय हो गया था, हालांकि धार्मिक ग्रन्थों में एक से ज़्यादा पत्नियाँ रखने का प्रावधान है। दरअसल, इसी नियम के अन्तर्गत गाँवों के कई लोगों की एक से अधिक पत्नियाँ थीं। उधर सत्र में कई तरह की खुराफ़ातें चल रही थीं। घर का मालिक सामने के दरवाज़े से एक औरत का स्वागत करता और पिछले दरवाज़े से अपनी ब्याहता को धक्का मारकर बाहर भी कर देता। और वह ग़रीब औरत! उसका क्या हुआ, वह कहाँ गयी, यह जानने की किसी को चिन्ता नहीं थी··· उत्तरी और दक्षिणी तट के इलाक़ों में तो ऊँची जाति के लोगों में भी बिना ब्याह किये औरत-मर्द का साथ-साथ रहना एक आम बात हो गयी थी।

माटियापहाड़ के निकट एक पुराना कुआँ था। वह अब इस्तेमाल में नहीं आता था। कहा यह जाता था कि वहाँ भूत-प्रेतों का वास है। जब अफ़ीम-निषेध समिति के कार्यकर्ताओं ने उस कुएँ को साफ़ किया और उसमें से वर्षों से पड़े कचरे को निकाला तो उन्हें वहां कई औरतों के कंकाल भी मिले··· अभी पिछले दिन ही तो भूख से बेहाल एक औरत, जोकि लगभग कंकाल हो रही थी, छोटी गोसाइन के यहाँ आयी थी। गोसाइन ने उसे अपने सहन में बिठाया था और उसे कुछ मुरमुरे और राब खाने को दी थी। वह ग़रीब औरत कृतज्ञता से भरी उन मुरमुरों और राब को निगल गयी थी और सिसकियाँ भरते हुए उसने अपनी कहानी सुनायी थी, "यह सब उस नामुराद अफ़ीम की मेहरबानी है। सत्र में इसका प्रचलन होने के कुछ समय बाद ही हम अभागी औरतों पर डण्डे बरसने शुरू हो गये हैं। वक़्त अब बहुत ख़राब है। इस तरह से अकेले रहने में कोई बुद्धिमत्ता नहीं है। आपको अपने साथ किसी-न-किसी को रखना चाहिए।"

मुंडे सर वाले युवकों ने दोने बनाने का काम ख़त्म कर लिया था। वे अब पिछवाड़े में चले गये थे जहाँ बकरियाँ काटने के लिए ख़ास जगह बनायी गयी थी। छोटी गोसाइन की अब समझ में आ रहा था। वे लोग जिरंग या हाथीमारा धुली की कचारी जनजाति के थे। ज़रूर वे कोई पाप करने के कारण धार्मिक सीख लेने या प्रायश्चित्त करने यहाँ आये होंगे। हाँ, धार्मिक रीतियाँ बड़ी सोच-समझ से बनायी गयी हैं। जो शूद्र अपनी धार्मिक सीमाओं के भीतर रहते हैं और अपने हाथ से बनायी गयी शराब पीते हैं, उन्हें चार बार धानु प्रायश्चित्त करना होता है। यदि वे शूरी जाति द्वारा तैयारी की गयी शराब पीते हैं तो उन्हें छः बार धानु प्रायश्चित्त करना होगा···कौन जाने उन्होंने क्या कर डाला है? हो सकता है उन्होंने गाय का वध किया हो या अपने घर में ग़ैर-जाति की या कोई ऐसी-वैसी औरत ले आये हों। जबसे उस उन्मत्त हाथी ने जमालुद्दीन को मारकर ख़त्म कर दिया है और जिरंग चला गया है, तब से कचारी जनजाति के लोग धार्मिक कामकाज के लिए केवल दिन में ही आते हैं। ये बड़े सीधे-सादे लोग हैं। जब वे अपनी राह चल रहे हों, उनकी आँखें ज़मीन से चिपकी

रहती हैं। वे अपने बाग़ों से गोसाईं के लिए वे ही सब्ज़ियाँ लाते हैं, जो सबसे बढ़िया होती हैं।

एकाएक गोसाइन को बैलगाड़ियों के पहियों की कर्र-कर्र सुनायी दी। उसके कान खड़े हो गये··· नहीं, नहीं, वह आवाज़ इधर नहीं आ रही, गोसाईं के यहाँ जा रही है। उसे अपने सीने में एक दबी-सी पीड़ा का एहसास हुआ। अगर उकियम और पातहल्दिया के असामी जल्दी नहीं आये तो उसके लिए गहरा संकट पैदा हो जायेगा। दामोदरिया गोसाईं के सत्र में पहली बार किसी गोसाइन को फटे-पुराने कपड़े पहनने होंगे और बिना ठीक खाना खाये रहना होगा। जहाँ तक उसकी याद्दाश्त काम करती है, ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। अभी उस दिन की ही तो बात है, जब राजाबाहा के अनुयायी अपनी-अपनी भेंट लेकर आये थे, और वह उनकी टोकरियों में रखे बरतनों में तेल की बहुत थोड़ी-सी मात्रा देखकर सन्न रह गयी थी।

हर घर में अफ़ीम का अड्डा है और हर किसी के यहाँ अभाव आता जा रहा है। जब गोसाईं ज़िन्दा था तो भेंट में इतना तेल आता था कि उसे रखने की जगह नहीं होती थी। कुछ तेल तो वह अपने नौकरों में बाँट देती थी। इस भेंट के कई अवसर आते थे, जैसे शादी-ब्याह, लड़की का यौवन में पदार्पण और नयी दुल्हन का पहली बार रसोई घर में प्रवेश करना। और जब किसी बूढ़े अनुयायी की मृत्यु होती थी तब उसकी गौएँ भी भेंट में चली आती थीं। हाँ, वे भी दिन थे। गोसाईं अपने सहन की उष्णता में बैठा धूप का सेवन करता हुआ धीरे-धीरे अपने शरीर पर सरसों के तेल की मालिश किया करता था। उसकी त्वचा इतनी सुन्दर थी कि वह गोरा साहब लगता था। उसके बाल इन्द्रनाथ के बालों की तरह काले और घुँघराले थे। फिर इन्द्रनाथ की तरह ही वह छरहरा और लम्बे क़द का था। वह उससे कहा करता, "आओ, छोटी, अपने नरम-नरम हाथों से कुछ तेल लगा दो। आओ! शरमाओ नहीं। कोई हमें देख नहीं रहा है।" उसकी आँखों में आँसू तिर आये। वह फाटक के पास चुपचाप खड़ी थी। आह! वे दिन कैसे गज़ब के थे। उसमें कहीं कोई खामी नहीं थी। दक्षिणी तट के दूसरे कई गोसाइयों की तरह वह छोटी जाति की युवतियों को सोने की बालियाँ देकर फुसलाता नहीं था। उसके लिए वही सब कुछ थी और वह अपना समूचा खाली समय केवल उसी के साथ बिताता था। उसने अपने गताला के सिरे से अपनी भर आयी आँखों को पोंछा।

अफ़ीम निषेध टुकड़ी के खाकी कपड़े पहने होमगार्ड गोसाईं की हवेली के बातघर की तरफ़ बढ़े और वहाँ अनुशासित ढंग से खड़े हो गये। वे उन सिपाहियों की तरह दिखाई दे रहे थे जो लगान की वसूली के लिए आते थे। कहा जा रहा था कि हेरामदो में अफ़ीमचियों का पुनर्वास शिविर शुरू हो चुका है और गोसाईं ने उस शिविर को खड़ा करने के लिए बाँस और लकड़ी, जितनी भी दरकार हुई, बिना कोई दाम लिये उपलब्ध करायी है। यह भी कहा गया कि शिविरार्थियों के लिए सोने की

व्यवस्था बाँस की चपटी खपच्चियों से की गयी है। अफ़ीमची औरतों के लिए अलग व्यवस्था थी। गोसाइन को याद था कि उसने सड़क पर जाती तीन-चार औरतों को देखा था। वे ज़ोर-ज़ोर से विलाप कर रही थीं, "अरे भाइयो! अरे साहिबो! हम पर दया करो। हमने तो अपनी कमर के दर्द से कुछ राहत पाने के लिए यह अफ़ीम ली थी। वरना हम ढेकी पर कैसे काम करतीं या कैसे खेतों में धान बोतीं? जिन्होंने हमारे बारे में पुलिस को ख़बर दी है, उन पर क़हर टूटे। हम तुमसे विनती करती हैं कि हमें बचा लो।"

उसने उन औरतों की आवाज़ को पहचान लिया था। वे अक्सर उसके यहाँ धान कूटने और दूसरे काम करने के लिए आती थीं। जब वे काम कर रही होतीं तो कुएँ के पास थोड़ी देर के लिए सुस्ता लेतीं और साथ-साथ जंगली बेर और गुड़ भी खाती रहतीं। जब आम का मौसम होता और समूचा सत्र हरियाली से भर जाता, तो वे तेज़, हरी मिर्चों के साथ पिसे हुए कच्चे आम का मज़ा लेतीं।

बतेश्वरीशाली चावल की खुशबू फिर गोसाइन की ओर तैरती हुई चली आयी। उसके शरीर में से एक प्रकार की उदासी और बेचैनी की लहर गुज़र गयी। गाड़ी के पहियों की आवाज़ सुनने को नहीं मिल रही थी। केवल लोगों के घरों से धान कूटने की आवाज़ आ रही थी जो उसके दिल की धड़कनों को ही गुँजा रही थी।

धारपुर, पातहल्दिया और गराल तक किसे भेजा जाये? महीधर ओझा लोगों के साथ है और उनका खाना बनाता है। वह तीन दिन से पहले लौट नहीं पायेगा। इस बार ये ओझा लोग दक्षिणी तट के लगभग सभी स्थानों पर जायेंगे। महीधर ग़रीब भी तो कितना है! उसे इन ओझा लोगों से कम से कम मुफ़्त खाना, गमछे और कुछ रक़म तो मिल ही जायेगी। इसका भी अपना महत्त्व है। उसने स्वयं ही तो उसे जाने के लिए कहा था। उसे इन ओझा लोगों का चुम्बकीय व्यक्तित्व और उनकी मुस्तैदी पसन्द थी, बल्कि उसके भीतर उनके लिए एक प्रकार का तीखा भाव था।

जब वह पहली बार अपनी शादी के बाद पातहल्दिया से इस सत्र में आयी थी तो उन दिनों यहां जात्रा-टोली भी आयी हुई थी, और टोली ने अपना कार्य शुरू कर दिया था। स्त्री और पुरुष अलग-अलग बैठे हुए थे। उनके बीच एक कपड़ा लटका दिया गया था, जो परदे का काम कर रहा था। छोटी गोसाइन को दूसरी महिलाओं के साथ बिठाया गया था। पहली बार वह इस जगह के ओझाओं को देख रही थी। हेरामदो के विष्णु ओझा का अभिनय, और उसका नृत्य करने का ढंग, वह पहली बार ही देख रही थी। पास ही एक पेट्रोमैक्स जल रहा था, जिसकी रोशनी तो काफ़ी तेज़ थी, लेकिन वह बीच-बीच में फड़फड़ाते हुए सी-सी की आवाज़ भी करता था। उससे सटी हुई एक वयोवृद्ध महिला बैठी थी। वह उन स्त्रियों में से थी जो उसके गाँव में नयी दुल्हन देखने आयी थीं। उसने उसके बाल खोले थे और उनकी लम्बाई मापने के साथ-साथ उनकी बनावट पर भी ग़ौर किया था। फिर उसने उसे यहाँ से वहाँ और

वहाँ से यहाँ चलने के लिए भी कहा था और उसके सौष्ठव को परखना चाहा था। इस महिला ने अब उसके हाथ को अपने हाथ में लिया था, उसे खड़ा किया था और फिर उसे लैम्प के शोर से परे मंच के निकट एक स्थल पर ले गयी थी। पर छोटी गोसाइन विष्णु ओझा को देखती रही थी। उसकी आँखें उसी पर गड़ी हुई थीं। उसके बाजुओं और शरीर की गरिमापूर्ण और मोहक भंगिमाएँ उसे बांधे हुए थीं। उसे लगा था जैसे कि उसके भीतर एक प्रकार की फुरफुरी-सी हो रही है। उसके शरीर में से यौनता से भरी उत्तेजना की एक लहर गुज़र गयी थी। नंगे पिण्डेवाले ढोलचिये, जो फूलों के हार पहने हुए थे, नृत्य करते हुए अपने ढोलों को मस्ती से पीटे जा रहे थे। विष्णु ओझा ने सोने की कढ़ाई वाला एक लम्बा-चौड़ा घाघरा-सा पहन रखा था जो उसके बदन के इर्द-गिर्द लहरा रहा था। उसके सर पर सफ़ेद पगड़ी थी और उसके कानों में सोने की मुरकियाँ चमचमा रही थीं। वह नृत्य करते-करते बिना एक क्षण रुके ढोलचियों के बीच से निकल जाता था और साथ में एक गाना भी गाता जा रहा था जिसका अर्थ था :

ओठों पर गाना
हाथों का इशारा
पग में लय
गरुड़-सी चाल
ऐसा ही ओझा
सर्वोत्तम होता है।

…हाँ, हाँ! विष्णु ओझा सर्वोत्तम है। उसके वक्षोजों में से एक उष्ण लहर-सी गुज़र गयी थी। उनकी घुण्डियाँ कड़ी पड़ गयी थीं। ओझा के शब्द पुष्प बन गये थे और उस पर बरसने लगे थे। उसकी आँखें कटारें बन गयी थीं और उसे बींधने लगी थीं। पुष्पों और कटारों का यह खेल काफ़ी देर तक चलता रहा था।

जगलिया के किनारों पर रहने वाले लोगों का कहना है कि मदन सावन[7] बगुला सावन[8], नेवला सावन[9] और अन्य भाव-भंगिमाओं में दक्षिणी तट का कोई भी ओझा इस ओझा नर्तक को मात नहीं दे सकता। दक्षिणी कामरूप के लोगों का कहना था कि ओझाओं के एक ग्रन्थ, तौजत्तिका सार[10], की एक प्रति जो असम से लगभग ग़ायब हो चुकी थी, इस ओझा के हाथ लग गयी थी और इसने इसी ग्रन्थ से इस कला को परवान चढ़ाया। पातहल्दिया के माघा ओझा तथा जंबूरी के कृष्ण ओझा ने विष्णु ओझा से यह ग्रन्थ हथियाने की पूरी कोशिश की थी। उन्होंने उसके सहायकों को रिश्वत भी दी और काले जादू का सहारा भी लिया, लेकिन उनकी कोशिशें नाकाम ही रहीं।

खटियामारी, माचकुची, खोरू हेरामदो, बोर हेरामदो और दूसरी जगहों से आयीं दामोदरिया गोसाईं परिवारों की महिलाओं के साथ छोटी गोसाइन भी बैठी परदे के एक बड़े छिद्र में से विष्णु ओझा की अद्‌भुत कला का प्रदर्शन देख रही थी। उसकी

लयमयता और नृत्य-गायन का सौष्ठव तथा बेहूला[11] के कष्ट-सम्बन्धी हृदयस्पर्शी वार्तालाप उसको पूरी तरह बाँधे हुए थे। उसने अपने रूमाल के एक कोने से अपनी आँखों में ढुलक आये आँसुओं को पोंछा। उस समय गिरिबाला अभी बच्ची ही थी। वह फूलों वाली अपनी सबसे बढ़िया मेखला पहने हुए थी। उसे छोटी गोसाइन ने खुद बुना था। वह फूली आस्तीनों वाला ब्लाउज़ भी पहने हुए थी। उसके बदन पर कोई गताला नहीं था, क्योंकि वह अभी इतनी बड़ी नहीं हुई थी। जब उसने छोटी गोसाइन को आँसू पोंछते हुए देखा था तो उसने असमंजस में पड़कर पूछा था, "मेरी सुन्दर चाची, तुम रो क्यों रही हो?" उन दिनों वह सुबह-सुबह उठकर पिछली रात के प्रदर्शन के बाद मंच पर पहुँचकर वहाँ से बिखरे हुए मनके, फूल और फीते इकट्ठे किया करती थी।

धम, धम, धम! छोटी गोसाइन एकाएक अपने दिवास्वप्न से लौटी। सड़क के दूसरी तरफ़ से एक बैण्ड पार्टी चली आ रही थी··· किसकी शादी है यह? शायद मिर्ज़ा के मिलिटरी कैम्प के किसी अमीर ठेकेदार की बेटी की हो या हेरामदो के किसी धनी परिवार के बेटे-बेटी की। वह फाटक के निकट गुलछ के एक पेड़ के पीछे खड़ी हो गयी और वहाँ बेलों में से वह दृश्य देखने लगी। जब बारात गोसाईं की हवेली के बातघर के निकट आयी तो बैण्ड का बजना बन्द हो गया और दुल्हन पालकी में से उतरकर, पुरानी प्रथा के अनुसार, गोसाईं का आशीर्वाद लेने, दूसरों के साथ-साथ चलने लगी। उस पर गोसाइन मुस्करा दी। उसे यह देखकर खुशी हुई कि अब भी सत्र के कुछ लोग पुराने रीति-रिवाज़ का पालन करते हैं। उसे याद था कि एक बार बड़े गोसाईं ने नीची जाति के एक व्यक्ति को अपने हाथ से खजूर के पत्ते से बने पंखे से पीट दिया था क्योंकि वह गोसाईं के घर में एक लकड़ी की तिपाई पर बिना किसी की परवाह किये बैठा रहा था। उस समय तक परिवार का पुजारी और दूसरे लोग भी फ़र्श पर बिछायी गयी हाथ से बुनी चटाइयों पर ही बैठ सकते थे।

अब समय बदल गया है। इन्द्रनाथ जोकि एक दिन अधिकार बनेगा, बोलो के जुए के अड्डे पर जाता है, वहाँ चाय पीता है और बोलो के हाथ से पान और सुपारी खाता है। बोलो तो निचले तबके का व्यक्ति है न! इस तरह-की बातें उसने पहले कभी नहीं सुनी थीं।

शादी के बैण्ड की आवाज़ अब काफ़ी मद्धिम थी। बारात गोसाईं की हवेली के पास से जल्दी से निकल गयी थी और लोहारघाट की ओर बढ़ गयी थी।

सूरज की किरणों में कुछ-कुछ गर्मी थी। गोसाइन ने देखा कि दुधखादी का पेड़ काफ़ी जल्दी बड़ा हुआ है, उसके हरे पत्ते चमचमा रहे हैं और सूरज की किरणें उन पर नृत्य कर रही हैं। उसने चारों ओर अपनी नज़र दौड़ायी। सूरज बड़ा दक्ष मछुआरा है, उसने सोचा। उसने अपना जाल दूर-दूर तक फैला रखा है और उसमें सुनहरी फसल इकट्ठी कर ली है। उस सुनहरी जाल ने बेर के पत्ते, सुपारी की बल खाती बेलें, फूस के पहाड़ और हाथी की लीद के इधर-उधर बिखरे ढेर··· जो कुछ भी सत्र में था, सब कुछ अपने में समेट लिया था!···

एकाएक छोटी गोसाइन को लगा कि कोई उसे पुकार रहा है। उसने मुड़कर देखा। पिछवाड़े में खड़ी उसकी नौकरानी थी। कह रही थी, "ओ गोसाइन, देखो एक कुत्ता तुम्हारी रसोई में घुस गया है। जल्दी आओ! जल्दी।"

वह खुले दरवाज़े में से रसोईघर में पहुँची। उसकी साँस फूली हुई थी। जो कुछ उसके हाथ लगा, उसने कुत्ते पर दे मारा। साथ ही उसके मुँह से निकला, "शू, शू, शू! बाहर निकल! शैतान कहीं का। शू! ···"

एक गन्दा-सा, कीड़ों-खाया कुत्ता, जिसकी पसलियाँ नुमायां थीं और जिसकी दुम पिछली टाँगों के बीच दबी थी, उसके पास से दौड़कर बाहर की ओर भागा। वह बड़ी मुश्किल से ही पीछे हट सकी ताकि उससे छुए नहीं। नौकरानी उलटा-सीधा बोलने लगी, "माँ, माँ! तुमने दरवाज़ा खुला क्यों छोड़ा? सूरज देवता तुम्हारे सर पर आया हुआ है। अब तुम्हें सभी बरतन बाहर निकालने होंगे और उन्हें आग में डालकर धोना होगा। तुमने अपना काम कितना बढ़ा लिया है।"

छोटी गोसाइन ने अपनी मेखला को सँभाला और रसोईघर में दाखिल हो गयी। उसने नौकरानी के लिए एक बरतन में कुछ बचे हुए चावल भिगोकर रखे हुए थे। उन्हें वह कुत्ता चट कर गया था। वह परेशानी में वहीं बैठ गयी और अपनी चादर से अपने माथे का पसीना पोंछने लगी। इस बीच नौकरानी ने बाहर लकड़ियों को जुटाकर आग जला ली थी ताकि अशुद्ध हो गये बरतनों को शुद्ध किया जा सके। छोटी गोसाइन को वह काम अब करना ही पड़ेगा। उसने चावल वाला बरतन, कड़ाही, चम्मच और दूसरे खाना बनाने के बरतन, जो समय के साथ काले पड़ गये थे, बाहर निकाले और उन्हें आग में डाल दिया। नौकरानी वहीं पास में ही थी। वह बोली, "तुम फाटक पर खड़ी महीधर बापू का इन्तज़ार कर रही थीं न?"

"हाँ! अब तक भी धान की गाड़ियाँ पहुँची नहीं हैं। तुम्हे दूसरे घरों से बटेश्वरीशाली चावल की सुगन्ध नहीं आ रही? और धान कूटने की आवाज़ भी? अगर महीधर आ जाता तो मैं उसे पता लगाने के लिए उकियम और पातहल्दिया भेजती।"

इस पर नौकरानी बोली, "पिछले साल इस वक़्त तक हेरामदो से भुने चावल कूटने के लिए ब्राह्मण लड़कियाँ आ गयी थीं।"

छोटी गोसाइन ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह बरतनों को साफ़ करती रही। उसने एक-एक करके उन्हें आग में से निकाला और फिर राख और फूस से उन्हें माँजा। राजाबाहा से आयी यह नौकरानी चुपचाप अपनी मालकिन को देखती रही और उसके लिए उसे दुःख भी हुआ। यह देखो, इतनी ऊँचे कुल की यह महिला तपती दुपहरी में बरतन साफ़ कर रही है और उसका कुलीन रक्त पसीना बनकर बहे जा रहा है। नौकरानी अच्छी तरह जानती थी कि अगर धान की गाड़ियाँ समय से नहीं आयीं तो उसकी हालत कितनी पतली हो जायेगी। उसे महीधर के प्रति उसकी कमज़ोरी का भी एहसास था। अगर किसी कारण उसे लौटने में देर हो जाती तो

गोसाइन का मन पिंजरे में बन्द तोते की तरह फड़फड़ाने लगता। वह यह सब कुछ जानती थी और इसीलिए कुछ दुःखी-सी थी। वह थोड़ा रुकते-रुकते बोली, "माँ, वह विष्णु ओझा के साथ गया है और विष्णु ओझा केवल उत्तरी तट के इलाके में ही अपना नृत्य करता है, क्योंकि उसे यहाँ पागल हाथी का डर है।"

गोसाइन का धैर्य जैसे कि चुक रहा था। वह बोली, "वह हाथी जमालुद्दीन को ख़त्म करने के बाद जिरंग के जंगल में दाख़िल हो गया है। क्या महीधर को इसकी खबर नहीं?"

"कौन जानता है कि हाथी जिरंग में गया भी है या नहीं? हो सकता है वह मिर्ज़ा के जंगलों में ही घूम रहा हो!"

"वह वहाँ गया है। गया है! मैं जानती हूँ! इन्द्रनाथ जमालुद्दीन के शव को लेकर ठीक भोलागाँव तक गया था। रास्ते में कुछ नहीं हुआ।"

"हाँ, हाँ, मुझे सब कुछ याद है। इन्द्रनाथ गोसाईं ने काफ़ी हिम्मत का काम किया है। उसे हाथी का बिलकुल ख़ौफ़ नहीं था और वह एक मुस्लिम गाँव में भी लाश ले जाने से नहीं झिझका। क्या कभी किसी गोसाईं के बारे में ऐसा करते सुना है?"

छोटी गोसाइन के लम्बे बाल एकाएक खुल गये और नीचे की ओर ढुलक गये। उसकी गोरी त्वचा, जिस पर पसीना तिर आया था, धूप में चमचमा रही थी। वह बरतनों को कुएँ पर ले गयी। यह एक मामूली कुआँ था जिस पर घिरनी भी नहीं थी। उसने रस्से के सहारे एक ज़ंग लगी बाल्टी उसमें लटका दी और पानी बाहर खींच लिया। उसने हर बरतन पर से मैल और चिकनाई को भी धोया और उन्हें एक टोकरी में रखती गयी। जब सब बरतनों को धो लिया तो वह रसोईघर में कुछ गोबर और मिट्टी ले गयी और दीवारों तथा फ़र्श पर लिपाई शुरू कर दी। जब यह भी काम पूरा हो गया तो वह फिर कुएँ पर गयी और नहाने की तैयारी करने लगी। साथ में वह साफ़ कपड़े ले गयी थी। उसने आहिस्ता-आहिस्ता पानी खींचा और मज़े-मज़े नहाने लगी। पर उसके मन में यह विचार तो था ही कि यदि वह खाना थोड़ा रुककर शाम को बनाती है तो हो सकता है तब तक महीधर लौट आये और उसे गरम खाना खाने को मिल जाये। आज बारीहाट में नाटक होने वाला है। वह ज़रूर वहाँ ओझा टोली के साथ आयेगा। टोली वाले नाटक से पहले कुछ और प्रदर्शन भी करते हैं। उसके लौटने की कल्पना भर से उसे बेहद खुशी होती है। उसे जब-जब उसकी याद आती है, उसे लगता है जैसे कि वह सूर्य की सुनहरी किरण देख रही हो···

छोटी गोसाइन स्नान कर चुकी थी। वह निचुड़ते कपड़ों के साथ अपने दिवंगत पति के खड़ाऊँ कक्ष में दाख़िल हुई। वह कक्ष एक छोटा-सा अँधियारा कमरा था। सहन के एक कोने में नींबू का पेड़ था जहाँ सूर्य की रोशनी बड़ी मद्धिम थी। नौकरानी वहीं बैठी इमली चबा रही थी। जब उसने गोसाइन को रसोईघर की ओर जाते देखा,

तो उसने पूछा, "माँ! बिहू त्योहार के लिए भुने हुए चावल के चूरे के लिए क्या करना है? दूसरे घरों में तो कुटाई का काम शुरू भी हो गया है।"

"हाँ, हाँ! मैं नानीचम्पा और भूमिचम्पा को बुला लूँगी। उनका पिता अब भी हेरामदो के उस स्कूल में पढ़ाता है। उनकी शादी यजमानी ब्राह्मणों से हुई है। जब वे यहाँ भुना चावल कूटने आती हैं तो यह घर उनकी किलकारियों से गूँजने लगता है। मुझे यहाँ उनका आना बहुत अच्छा लगता है। वरना तो गोसाईं के चले जाने के बाद यह घर भुतवा घर जैसा हो गया है।"

वह रसोईघर में से एक बाँस की टोकरी लिये बाहर आयी। उसमें कुछ सफ़ेद कद्दू और आलू थे। उसने बैठकर उन्हें छोटे-छोटे टुकड़ों में काटना शुरू कर दिया।

नौकरानी कहती रही, "तुम जानती हो, माँ? मिर्ज़ा के वे गोरे सिपाही इन दोनों बहनों पर लट्टू थे। समूचे दक्षिणी तट में यह बात फुसफुसायी जाती थी।"

"हाँ, यह सच है। उस दिन उनके भाई को पहली बार अपनी ससुराल जाना था और उस सिलसिले में एक रस्म भी की जानी थी। वे उसके साथ पलासबाड़ी तक गयीं। दोनों यौवन में क़दम रख चुकी थीं। दोनों के चेहरों पर ललाई थी। दोनों बड़ी स्वस्थ दिख रही थीं। वे एक बैलगाड़ी में जा रही थीं और बैलगाड़ी का पिछला हिस्सा पर्दे से ढका हुआ था। उस दिन बादल छाये हुए थे और वर्षा हो रही थी। जब वे मिलिटरी के बेस कैम्प के पास से गुज़रे, तो दुर्भाग्यवश बारिश तेज़ हो गयी। दिन के वक़्त भी रात जैसा लग रहा था। एकाएक गाड़ीवान ने गाड़ी रोकी और ज़ोर से बोला, "माईशाना! सड़क में बाँसों का एक गट्ठर पड़ा है। पता नहीं वह वहाँ कैसे गिरा। हमसे यह हटेगा भी नहीं। बहुत भारी है। हे ईश्वर! अब क्या करें?"

दोनों बहनें एकसाथ कह उठीं, "यह तो बीरा[13] है, बाँसों की भुतनी! यह इसी तरह हमेशा सड़क को रोकती है। जल्दी मिट्टी के कुछ ढेलों पर पेशाब करो और उन्हें इस बीरा पर फेंको। इसे हटाने का यही एक तरीका है। चलो! चलो!…"

गाड़ीवान गाड़ी से नीचे कूदा। कम रोशनी में उसने एकाएक देखा कि तीन गोरे सिपाही बाँसों के पीछे से अपनी बन्दूक़ों के साथ उनकी ओर लपक पड़े हैं। उन लड़कियों की निगाह भी उन सैनिकों पर पड़ी। भयभीत हुई-सी वे चिल्लायीं, "हे देवी माँ! हमें बचा… इन सिपाहियों से हमें बचा!"

बीरा को हटाने के लिए गाड़ीवान गाड़ी से नीचे तो उतरा था, लेकिन वह इतना डर गया था कि उसकी धोती में ही उसका पेशाब निकल गया।"

(इस बिन्दु पर पहुँचकर गोसाइन और राजाबाहा से आयी वह नौकरानी, दोनों ही ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगीं।)

गोरे सिपाही गाड़ी की पिछली ओर गये और धमकी भरी आवाज़ में बोले, "कौन है अन्दर? बाहर आओ! क्या तुम्हें सायरन सुनाई नहीं दिया? निकलो बाहर! जल्दी ही जहाज़ आ आयेंगे और फिर बम गिरने शुरू हो जायेंगे।"

दोनों लड़कियाँ थर-थर काँपती गाड़ी से बाहर कूद पड़ीं और सीधे सिपाहियों की भुजाओं में जा गिरीं। वे इतनी भयभीत थीं कि उन्हीं से पूरी तरह चिपटी रहीं। जहाज़ आये और आसमान में ग़ायब हो गये। लेकिन लड़कियाँ अब भी अपनी जान की ख़ैर चाहती उनसे चिपटी हुई थीं।"

नौकरानी के मुँह से एकाएक निकला, "धत् तेरे की! शरम नहीं आयी। क्या उनका कुँआरापन भी लुट गया?"

"नहीं, नहीं! यह मैं नहीं जानती। झूठ बोलना पाप है, लेकिन इतना मैं जानती हूँ कि वे दो गोरे सिपाही माटियापहाड़ के छोटे रास्ते से हेरामदो की ओर जाते हुए अक्सर देखे गये। सुनने में यह भी आया है कि उन्होंने नानीचम्पा और भूमिचम्पा के पतियों को कई चीज़ें भेंट कीं—जैसे मारकिन, पानी उबालने भगौना और टीन का एक डिब्बा जिसके ऊपर वाले हिस्से पर मेंढक बना था···"

"गोसाइन, वह मेंढक वाला टीन का डिब्बा कैसा था?"

छोटी गोसाइन ने उत्तर दिया, "उन सिपाहियों ने उनके पतियों को बताया कि इसमें महारानी विक्टोरिया के रसोइयों द्वारा तैयार किया गया एक ख़ास पदार्थ है। इस पर यजमानी ब्राह्मणों ने सिपाहियों से पूछा कि क्या वे रसोइए ब्राह्मण थे, क्योंकि वे ब्राह्मणों द्वारा तैयार की गयी ही कोई चीज़ छूते थे। सिपाहियों ने उन्हें विश्वास दिलाया कि वे ब्राह्मण रसोइए ही थे। नानीचम्पा और भूमिचम्पा भोज करने के लिए अपने सामने केले के पत्ते बिछाकर अपने पतियों के साथ बैठ गयीं। उन्होंने उस डिब्बे को बट्टे से ठोंक-ठोंककर, चाकू से, काटकर खोला। फिर बड़ी आशाओं के साथ उन्होंने डिब्बे के पदार्थ को चम्मच से बाहर निकालकर केले के पत्ते पर रखा···"

अब गोसाइन ने हँसना शुरू कर दिया। वह कुछ देर तक कुछ भी न बोल पायी। फिर अपनी बात को जारी रखते हुए बोली, "जानती हो उसमें से क्या निकला? एक बड़ा-सा मेंढक! हा-हा-हा! किसी सूप में उबाला गया था। हा-हा-हा! वे सब टिड्डे की तरह उछल पड़े और वहाँ से उठ भागे।"

नौकरानी ने इस पर टिप्पणी की, "पता नहीं महारानी विक्टोरिया के रसोइयों को इतने बड़े मेंढक कहाँ से मिले! ऐसे मेंढकों को खाकर ही महारानी भारत देश पर राज कर सकती है। बेशक!"

छोटी गोसाइन मुस्करायी और बोली, "वास्तव में तुम बुद्धू ही रहीं! महारानी को मरे तो कितने ही साल हो गये। तब तो तुम्हारा और मेरा जन्म भी नहीं हुआ था। अब हमारा देश आज़ाद है और हमारे अपने लोगों का ही राज है। क्या इन दिनों तुम अपने सिक्कों पर महारानी का बुत देखती हो? इसे हटे मुद्दत हो गयी। तुम्हें गांधी महाराज की कोई याद नहीं? और वे स्वयंसेवक जो चंदा इकट्ठा करने आते थे? महारानी विक्टोरिया के बाद तो तीन-चार महाराजा हुए, और वे मर भी गये। फिर गांधी महाराज आये और उन्होंने हमारे भारत देश को आज़ाद करवाया!"

नौकरानी उठकर खड़ी हो गयी। उसने अपनी मेखला को खोला और फिर कसकर उसे अपने वक्ष के चारों ओर लपेट लिया। गोसाइन की नज़र उसके ढुलकते मांस पर पड़ी। उसकी मेखला पर तीन इंच की चौड़ाई वाला फूलों का डिज़ाइन भी था और उस पर बेलें भी कढ़ी हुई थीं। उसका कपड़ा इतना गन्दा हो चुका था कि वह भेड़ की ख़ाल जैसा हो रहा था। उसने उस पर कोई गताला भी नहीं ओढ़ा हुआ था। वह बोली, "हाँ गोसाइन, मुझे उन स्वयंसेवकों की याद है। वे पैसा इकट्ठा किया करते थे, गाना गाते थे और इंकलाब-ब्रिंदाबून[14] के नारे लगाते थे। अब भी कुछ स्वयंसेवकों को अफ़ीम के शिविरों में देखा जा सकता है।"

गोसाइन ने कद्दू के टुकड़ों को टोकरी में डाला और उन्हें रसोईघर में ले गयी। लेकिन उसकी आँखें अब भी सड़क पर लगी हुई थीं। महीधर अब आ ही रहा होगा। वह थका होगा और भूखा भी। गरम-गरम खाना खाने से उसकी थकावट जाती रहेगी। वह जब कभी इस व्यक्ति को देखती है, पता नहीं कहाँ से उसके शरीर और मस्तिष्क में नयी शक्ति आ जाती है। उसे हमेशा उसके साथ साये की तरह बने रहना चाहिए। बेचारा! अभी पिछले दिन ही तो उसने उसे सलाह दी थी कि वह सांझी भूमि पर हल चलवा दे, चाहे कुछ और गोसाइनें भी उसकी हिस्सेदार हैं और अब जबकि वह यह सुनेगा कि पातहल्दिया और गराल से धान की गाड़ियाँ नहीं आयी हैं तो वह खाना बीच में ही छोड़कर यह देखने के लिए बाहर की ओर दौड़ेगा कि गाड़ियों को हुआ क्या है। महीधर जैसे व्यक्ति का उसके यहाँ होना कितना बड़ा सहारा है। जब तक उसमें ताक़त है, कोई उसकी ज़मीनें थोड़े समय के लिए भी हड़प करने की जुर्रत नहीं कर सकता। कोई भी उसके रैयती पट्टे को मियादी पट्टा नहीं बना सकता। वह चालाक पटवारी उसके सामने कैसे भीगी बिल्ली बन जाता है। लेकिन वे कम्युनिस्ट! वे माराभीटा तक तो पहुँच ही चुके हैं। अगर वे उसकी ज़मीनों तक भी पहुँच गये, तो?

उस दिन विष्णु ओझा की टोली के साथ उनका रसोइया बनकर चलने से पहले महीधर नींबू के पेड़ के साये में खड़ा होकर बोला था, "मैं तीन-चार दिन में लौट आऊँगा। जहाँ मैं जा रहा हूँ, वहाँ यूरियम की बढ़िया लकड़ी भारी मात्रा में मिलती है। मैं इस मकान की मरम्मत के लिए उस लकड़ी के चार लट्ठे लेता आऊँगा।"

फिर उसने अपना सर उठाया था और छोटी गोसाइन की ओर देखा था। वह एक सुन्दर सपने के समान थी। अभी-अभी स्नान करके वह आयी ही थी और अपने वक्ष पर केवल एक छोटा गताला ओढ़े हुए थी। उसका समूचा शरीर, उसका रंग, एक प्रकार के रहस्यमय प्रकाश को प्रतिभासित कर रहा है। महीधर ने अपनी दृष्टि तुरन्त हटा ली थी। नहीं, वह यह कभी नहीं जान पायेगी कि वह उसकी आँखों में सीधे क्यों नहीं देख पाता! क्या उसके मन में भी वही द्वन्द्व चलता रहता है जिसे वह हर दिन और हर रात अनुभव करती है?

भात वाले बरतन में उबाल आ रहा था। उसने उसे आग पर से उतारा और एक दूसरे बरतन में भाप देती माड़ को उँड़ेल दिया। पके हुए भात से उठती भाप ने उसके कोमल और सुन्दर चेहरे को ढक लिया था। उसने चूल्हे में कुछ और लकड़ियाँ डालीं और उस पर एक बड़ी-सी, कालिख पुती कड़ाही रख दी। फिर उसने पास ही के एक खम्भे से लटकती सरसों के तेल की बोतल उतारी और उस बोतल को कड़ाही में पलट दिया। लेकिन उसे यह देखकर निराशा हुई कि बोतल में बहुत कम तेल था ···अगर धान वाली गाड़ियाँ समय पर नहीं पहुँचीं तो वह तेल खरीदने के लिए कहाँ से पैसा लायेगी? ऐसी स्थिति का उसने जीवन में पहले कभी सामना नहीं किया था।

महीधर को वापस आना ही होगा। वह अपने आपको दुर्गा और अन्य गोसाईं विधवाओं की हालत में नहीं आने देगी। नहीं, कभी नहीं! ···महीधर ज़रूर उरियम लकड़ी के चार लट्ठे लायेगा। निश्चित रूप से उसके सपने भी उसी के सपनों की तरह हैं। वह भी उरियम लकड़ी के उन स्थायी चार खम्भों के नीचे रहना चाहेगा, वही महीधर जिसका जीवन भरपूर जवानी में पत्नी के दिवंगत हो जाने से छिन्न-भिन्न हो गया है। निश्चित रूप से वह भी उसी की तरह संघर्ष में जुटा रहता होगा!

उसने बोतल से जितना भी तेल निकला, उसमें कटी हुई सब्ज़ी को डाल दिया। फिर उसने ताँबे का एक बरतन उठाया। उसमें काली मिर्च, जीरा, सौंठ और लाल मिर्च रखी थी। उसने उन्हें सिलबट्टे पर रखा और उन्हें महीन करने लगी···! लानत है! क्या सोच रही है वह! उसका मन हमेशा उस व्यक्ति को लेकर उरियम के ठोस खम्भों के इर्द-गिर्द सपने बुनता रहता है। पर वह अपने को शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करने से बचा सकती है। उसमें इतनी इच्छा-शक्ति और आत्मिक बल है। यह आत्मिक बल उसे अपने पुरखों से विरासत से मिला है। यही बल सोने और चाँदी के धागों वाले सुन्दर परदे को एक ही क्षण में लोहे की अभेद्य ढाल में परिवर्तित कर सकता है। क्या दामोदरिया गोसाईं परिवारों में किसी ने इससे पहले कभी भी, कहीं भी, ऐसी स्थिति का सामना किया है? आह! महीधर आये तो सही! इससे बढ़कर खुशी उसके लिए और क्या होगी।

उसका ध्यान कड़ाही में भुन रही सब्ज़ी की ओर गया। उसने अधपकी सब्ज़ी को पलटा और जहाँ-जहाँ वह कड़ाही से चिपक गयी थी, वहाँ खुरचा। फिर उसने पिसे हुए मसाले में पानी का छींटा देकर उसे कड़ाही में डाल दिया। अब चूल्हे में लकड़ियाँ और आगे करके उसने आग को और तेज़ किया। एक क्षण तक वह सोचती वहीं बैठी रही। अब वह और क्या पकाये? बाँस की टोकरी में पड़े टमाटरों पर उसकी दृष्टि गयी। कुछ ख़ासे पके हुए थे, कुछ अधपके थे। वह इनमें चावल का चूरा डालकर खट्टी चटनी तैयार करेगी। सफर से थककर लौटे किसी व्यक्ति के लिए इससे बढ़िया पकवान और क्या होगा।

वह खाना तो बना रही थी, लेकिन उसके कान बाहर की ओर ही लगे हुए थे। एक बार उसे बाँस के फाटक के हटने की आवाज़ आयी और वह ज़ोर से चिल्लायी, "अरी, राजाबाहिनी! देख तो कौन आया है?"

नौकरानी का उत्तर था, "माँ, पातहल्दिया से भगवान विष्णु का एक भक्त आया है और अफ़ीम के शिविर से एक होमगार्ड है।"

छोटी गोसाइन को थोड़ी निराशा हुई। उसने आग को ठण्डा करने के लिए कुछ जलती लकड़ियाँ चूल्हे से बाहर निकालीं और रसोईघर की कच्ची दीवार में बने एक अजीब से छेद में से बाहर देखा। उसने जल्दी-जल्दी एक बड़े बरतन में अपने हाथ धोये, रस्सी पर लटकता एक गताला उतारा और उसे अपने वक्ष पर ओढ़ लिया। फिर वह बाहर आयी और बरामदे में खड़ी हो गयी। इस बीच पातहल्दिया वाला विष्णु भक्त पहले से ही सहन में दाखिल हो चुका था। उसके बाल शंकरदेव के चेलों की तरह लम्बे थे और सर पर जूड़े में बँधे हुए थे। वह एक साफ़-सुथरी धोती पहने हुए था और उसकी कुर्ती सुनहरी रेशम के रंग की थी। उसका चेहरा चपटा था और ओंठ पतले-पतले थे। चाहे उसके पाँव नंगे थे, पर वे बिलकुल साफ़ थे।

वह छोटी गोसाइन के निकट आया और फिर उसने झुककर उसके पाँव छुए। उसके पीछे-पीछे ही फाटक को बन्द करके होमगार्ड भी चला आया। उसके चेहरे और सर के बाल खिचड़ी हो रहे थे। वह धारीदार कमीज़ के साथ एक ढीली-ढाली पैण्ट पहने हुए था। उसके जूते मोटे तले के थे और धूल-मिट्टी से सने हुए थे। उसने अपने उन जूतों को उतारा और एक कोने में रख दिया। वहीं उसने अपनी छड़ी भी रख दी। फिर उसने भी बड़े सम्मान के साथ झुककर गोसाइन का अभिवादन किया।

गोसाइन ने नौकरानी को आवाज़ दी कि वह आगंतुकों के लिए दो चटाइयाँ बिछा दे। स्वयं वह जल्दी से रसोईघर में दाख़िल हो गयी। उसने चूल्हे पर से कड़ाही को उतारा और पानी के छींटे देकर आग को बुझा दिया। कड़ाही को उसने केले के हरे पत्तों से ढाँप दिया और बरामदे में आकर लकड़ी की एक अच्छी-सी दिखने वाली तिपाई पर बैठकर बोली, "अब तो दोपहर के खाने का वक़्त है। आप लोगों को भूख भी लगी होगी। जाइये, कुएँ पर अपने पाँव धो आइए। मैं आपको बासी भात नहीं खिलाऊँगी, बल्कि अभी-अभी पका गरम भात दूँगी।"

सत्र में हर कोई जानता है कि छोटी गोसाइन, दोपहर के भोजन के समय, अगर कोई आ जाये, तो उसे बिना खिलाये लौटने नहीं देती।

विष्णु भक्त का उत्तर था, "आपका बासी भात भी हमारे लिए अमृत समान है। लेकिन आप कृपया अपने को कष्ट न दें। पातहल्दिया से चलते समय हमने भात खा लिया था।"

"आप यहाँ कैसे आये?" वह बोली।

"हमें यहाँ कुछ अफ़ीमचियों को पुनर्वास केन्द्र में दाखिल कराना है। हम यहाँ

व्यवस्था देखने आये हैं। एक बात और भी है। आपके कुछ असामी चेले कुछ सूचना चाहते हैं। हम, माताजी, आपसे वह सूचना लेने आये हैं।"

छोटी गोसाइन ने अपने गताला से अपना मुँह पोंछा। उसकी सुन्दर आँखें अब पूरी तरह खुली थीं। उसने झिझकते हुए पूछा, , "क्या··· क्या सूचना चाहते हैं आप मुझसे?"

"माताजी, आप यहाँ अकेली रहती हैं और एक ही पेट को आपको भरना होता है। लेकिन आपकी भूमि पर जो लोग रहते हैं, उनकी हालत बहुत ख़राब है। उस पर काला आज़ार ने उनके जवान बेटों को अपनी चपेट में ले लिया है। आपको तो उन मच्छरों के बारे में पता ही है जो चुपके से गारो की पहाड़ियों से आते हैं और तबाही मचाते हैं।"

"हाँ, हाँ, मैंने सुन रखा है··· लेकिन वे जानना क्या चाहते हैं?"

"माँ, आपका वह विश्वासपात्र, महीधर बापू, जो आपकी छत्रछाया में रहता है, आपके असामी अनुयायियों के बीच पातहल्दिया में घूमता रहता है। उसने यह ख़बर फैला दी है कि आप अपनी ज़मीन पर बयाना लेने की सोच रही हैं···"

छोटी गोसाइन को ऐसे लगा जैसे कि उसके सर पर आसमान टूट पड़ा हो। वह ज़ोर से बोली, "आप बयाने की बात कर रहे हैं? क्यों लूँगी मैं बयाना? क्यों मैं अपनी ज़मीन बेचूँगी?"

"आपके असामियों की हालत बहुत ही खस्ता है। उधर अफ़ीम की लत उन्हें जकड़े हुए हैं। फिर भी उनके मन में एक सपना है कि एक दिन उनके पास अपनी ज़मीन का एक टुकड़ा हो, चाहे इसके लिए उन्हें अपना सब कुछ बेचना पड़े। लेकिन हो सकता है कोई अनजाने गिद्ध उस ज़मीन पर झपट पड़ें और सब कुछ हथिया लें।"

छोटी गोसाइन फिर चिल्लायी, "भगतजी! हमारे पास कोई बाप-दादा की ज़मीन नहीं है। बड़े गोसाईं ने ज़मीन का बँटवारा कर दिया था और उसमें से ज़्यादातर वर्तमान गोसाईं को ही मिली। अमरंगा की तैंतालीस बीघा खिराजी ज़मीन और तीस बीघा रूपीत ज़मीन में से हमारे गोसाईं को एक छोटा टुकड़ा भी नहीं मिला। मेरे सभी अनुयायी जानते हैं कि दो सौ साल पहले राजा शिवसिंह ने अमरंगा, दूबजूनी, खिधिरपुखरी, तामुल्डी, बाकू, खमार तथा चाईगाँव में सत्रों के निर्माण के लिए लगान से मुक्त ढेर सारी ज़मीन दी थी। उस गोरे साहिब, जेनकिंस के समय दूबजूनी, बजरापाड़ा और तामुल्डी की ज़मीनों पर लगान लगा दिया गया था। बड़े गोसाईं के समय में कई अनुयायियों की प्रार्थना पर उनमें से हर एक को अपना-अपना पट्टा लेने की अनुमति दे दी गयी थी। अब मेरे सुनने में आ रहा है कि उसी समय से तामुल्डी, कजालीकुरा तथा खिधिरपुखरी हमारी विरासत में से बाहर हो गये हैं···"

गोसाइन ने अपनी सुघड़ नाक पर से, जोकि एक सुन्दर टील[16] के फूल के समान दिख रही थी, अपने गताला से पसीना पोंछा, और फिर अपनी बात जारी रखी, "जिन

दिनों भारी भूकंप आया था, रानी क्षेत्र के राजा ने गोसाईं को चार गाँव दान में दिये थे। इनमें सतधारिया और सरनियां के गाँव भी शामिल थे। इस अनुदान के लिए ताँबे के पत्तरे पर लिखवाकर आदेश जारी किया गया था। लेकिन सरकार के सफ़ेद मुँह वाले बन्दरों ने यह अनुदान देने से इनकार कर दिया, क्योंकि उनका कहना था कि पूरे के पूरे गाँव दान-अनुदान में नहीं दिये जा सकते। दूसरे, इस तमाम भूमि पर लगान लगा दिया गया। जब बड़े गोसाईं ने अपनी वसीयत की तो हमारे गोसाईं को उसमें से ज़मीन का एक छोटा-सा टुकड़ा भी नहीं मिला।"

सूरज उस समय एक बड़े से, पके हुए कद्दू की तरह दिखाई दे रहा था और माटियापहाड़ के बिजुरी बाँसों के झुण्ड के बीच से वह ऐसे दिख रहा है जैसे अभी गिरा कि गिरा। छोटी गोसाइन को अभी तक ठीक से भूख नहीं लगी थी, हालाँकि उसके खाने का समय काफ़ी पहले निकल चुका था। वह तो अब इसी उम्मीद के सहारे खड़ी थी कि महीधर किसी भी समय पहुँच सकता है। उसकी नौकरानी उसके लिए कुछ पान के पत्ते और कच्ची सुपारी लेकर आयी और बोली, "माँ, मुझे मन्दिर से ढोलों की आवाज़ बहुत पहले सुनायी दी थी। वहाँ भोग का प्रसाद पहले से ही बँट चुका है। तुम अपना खाना कब खाओगी?"

वहाँ आये दोनों आगन्तुक भी एकाएक बोल उठे, "हाँ, हाँ, माताजी, आप भीतर जाइए और अपना भोजन कीजिए।"

लेकिन छोटी गोसाइन ने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया। उसने सुपारियों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटा, पान के पत्तों पर चूना लगाया और उन्हें उन दोनों आगन्तुकों के सामने कर दिया। हाँ, उसने यह सावधानी ज़रूर बरती कि वह उनसे छुए नहीं। उसी समय बुनी हुई टोपी पहने होमगार्ड ने विष्णु भत्ता को ठीक से देखा। उसकी आँखें छोटी-छोटी और मक्कारी से भरी थीं। वे रह-रहकर झिप जातीं। उसकी टाँगों के बाल सड़क की धूल के कारण सफ़ेद हो रहे थे। वह एक काइयाँ किस्म का आदमी दिखाई देता था।

गोसाइन को सम्बोधित करते हुए वह बड़े आदर से बोला, "माँ, हम आपसे एक सवाल पूछना चाहते हैं?"

गोसाइन को ऐसे लगा जैसे कि कोई धीरे-धीरे उसकी ख़ाल छील रहा है।

"हाँ, हाँ! कैसा सवाल है?"

"हेरामदो का वह ब्राह्मण आपके यहाँ एक अरसे से रह रहा है। यह ठीक है न?"

"हाँ, महीधर बापू एक लम्बे समय से यहीं पर है। तुम क्या पूछना चाहते हो?"

होमगार्ड ने अपना चेहरा पोंछा और बोला, "क्योंकि वह इतने अरसे से आपके यहाँ है, इसलिए वह एक आज्ञाकारी और विश्वसनीय रिश्तेदार की तरह हो गया होगा।"

एकाएक भगत उठकर खड़ा हो गया और उसने एक तरफ़ मुँह करके ज़मीन पर पान की लाल-लाल पीक को थूक दिया। फिर वह बोला, "वह तो एक तगड़े भैंसे

की तरह है। इधर-उधर घूमता रहता है और अपना काम करता रहता है। मेरा नहीं ख़्याल कि विधुर हो जाने के बाद उसने अभी तक किसी और लड़की को अपने साथ रखा है।"

होमगार्ड ने उसके स्वर में स्वर मिलाया, "वाह, वह तो ऐसे व्यवहार करता है जैसे कि वह किसी अधिकार गोसाईं का गर्वीला बेटा हो।"

फिर उसने बड़े व्यंग्यपूर्ण ढंग से किसी गीत की कोई पंक्तियाँ गुनगुनायीं, जिनका अर्थ था :

वह लम्बी धोती पहनता है
लेकिन उसका किनारा सुनहरी नहीं।
जब वह चलता है तो उसके जूते चीं-चीं करते हैं
लेकिन उसकी जेब में एक फूटी कौड़ी भी नहीं होती।

छोटी गोसाइन का धीरज खत्म हो रहा था। साथ-साथ उसे चिन्ता भी थी। वह ज़ोर से बोली, "यह उसकी बात करने का ढंग है। वह एक ऊँचे ब्राह्मण परिवार से है। वे लोग कूच-बिहार से आये थे और बड़े गोसाईं से उन्हें दान के रूप में जगलिया के किनारे ज़मीन मिली थी। उन्होंने काफ़ी समय तक गोसाईं के यहाँ यजमानी ब्राह्मणों के रूप में काम किया है। महीधर को वे अपना बेटा ही मानते रहे हैं। इसलिए उसके व्यवहार में वह पुट क्यों न आये? क्या तुम लोगों ने उसके बुजुर्गों के बारे में नहीं सुना? उन कान्यकुब्ज ब्राह्मणों को प्राण नारायण और वीर नारायण नाम के कोच राजाओं ने सम्मानित किया था। उन्हीं के समय में उन्होंने महाभारत के द्रोण पर्व और कीरत पर्व का अनुवाद किया। तुम लोगों को पता है बाढ़ में चली जाने से पहले कोच राजाओं ने कितनी मियादी खिराज वाली ज़मीन दान में दी?"

होमगार्ड भी अब अधीर हो रहा था। वह उसे टोकते हुए बोला, "तो आपका उस पर पूरा विश्वास है?"

"क्यों नहीं? उसने मेरी कई तरह से मदद की है। चिकॉरहाटी की उपजाऊ ज़मीन पर, जिसमें मेरे साथ कुछ और लोगों की साझेदारी भी है, बाहर के कुछ लोगों ने हमें बताये बिना उस पर बुवाई शुरू कर दी थी। वह वहाँ गया, उसने उन घुसपैठियों को बाहर किया और अब मुझे वहाँ से कुछ धान मिलने लगा है। पातहल्दिया के असामियों से लगान वसूल करना मुझ अकेली के बस का नहीं था। महीधर ने उनसे एक-एक पाई वसूल की और वसूल की गयी रकम को नियमित रूप से मेरे पाँवों पर रखता रहा। चार वर्ष तक मैं उस भूमि पर लगान चुकता नहीं कर सकी थी। वह मुझे सरकार को देना होता है। लगान विभाग का कारिंदा यहाँ आता रहा और चिड़चिड़ाकर लौटता रहा। लेकिन महीधर की मदद से मैंने लगान की सभी बकाया रकम चुकता कर दी है। जब वह कारिंदा पिछली बार यहाँ आया था तो पहली बार उसने मेरे सामने अपना सर झुकाया था।"

होमगार्ड और भगत, दोनों ही बेचैन-से हो उठे। वे उठकर खड़े हो गये और फिर पान की पीक थूकने के बहाने थोड़ा पीछे हट गये। वे कुछ देर तक वहाँ खड़े एक दूसरे के कान में कुछ फुसफुसाते रहे। फिर गोसाइन के निकट होकर भगत बोला, "माँ, हमने सुना है कि महीधर ने एक काग़ज़ पर आपकी ज़मीनों का विवरण और आँकड़ें लिख रखे हैं? क्या यह ठीक है? हमने यह भी सुना है कि मियादी खिराज वाली ज़मीन के कई बीघे, जिनकी आपको कोई जानकारी नहीं थी, उसने ढूँढ़ निकाले हैं और उनके बारे में कुछ लिखकर भी रख लिया है।"

गोसाइन को फिर वही एहसास सताने लगा जैसे कि कोई तीखे, नुक़ीले नाखूनों से उसकी खाल नोच रहा है। वह बोली, "हाँ, यह ठीक है। उसने मेरी तमाम मियादी खिराजी, एजमाली[17], खिराजी और एकचनिया पट्टा[18] ज़मीनों के भूमि-सर्वेक्षण नक्शे पर अंकित सन्दर्भ-संख्या को लिख लिया है।"

होमगार्ड अब एकाएक बोल पड़ा, "लेकिन कहा यह भी जाता है कि आपके नाम में ज़्यादा ज़मीन नहीं है। पातहल्दिया में आपके रिश्तेदारों की हालत शुरू से ही बहुत खराब रही है और आपको उन्हें ज़िन्दा रखने के लिए अपने भण्डार में से चावल भेजने पड़ते हैं। एक अफवाह यह भी है कि आपके गोसाईं और बड़े गोसाईं के बीच कुछ अजीब तरह का झगड़ा हुआ था…"

"हाँ, हाँ! कुछ हुआ ज़रूर था। लेकिन हर किसी को इसके बारे में पता है।"

"लेकिन हमें तो कुछ पता नहीं। क्या आप इस पर कृपा करके कुछ प्रकाश डालेंगी?"

"भगत, अच्छा यही होगा कि तुम मेरे मुँह से इस बारे में कुछ न सुनो। हमारे गोसाईं को कुछ भूमि और अचल सम्पत्ति से बेदख़ल कर दिया गया था। अब समय आ गया है कि हर किसी को इसके बारे में पता चले!"

इस पर भगत बोला, "हमने सुना है कि बड़े गोसाईं ने डाखला की किसी स्त्री को भण्डार में से, वह जितना चावल चाहे, ले जाने की अनुमति दी थी। कहा यह भी जाता है कि उसने उस स्त्री को हवेली के एक भीतरी कक्ष में बैठने की अनुमति भी दी थी। और एक मौके पर तो जब बड़ा गोसाईं किसी काम से गुवाहाटी जाने को तैयार हुआ था तो दुर्गा भी उसके साथ चलने को उत्सुक थी। वह बैलगाड़ी में गुड़ की मिठाइयों का एक पैकेट लिये बैठी थी। लेकिन बड़े गोसाईं ने उसे गाड़ी से नीचे उतरवा दिया था और डाखला की उस स्त्री को अपने साथ गुवाहाटी ले गया था। तब दुर्गा ने अपने को उस धूल-भरी सड़क पर गिरा दिया था और रो-रोकर तमाशा-सा खड़ा कर दिया था। उसके हाथ की मिठाई उस धूल में बिखर गयी थी। उस दृश्य को देखने के लिए समूचा गाँव उमड़ पड़ा था। लेकिन उस हृदयहीन, घमण्डी स्त्री ने एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देखा था। वह अपने कानों में सोने की बालियाँ पहने हुए थी। वे उसे बड़े गोसाईं ने दी थीं। वह अपने हाथी पर सवार था और वह

स्त्री बैलगाड़ी में। दोनों गुवाहाटी साथ-साथ पहुँचे थे। जब वे लौटे थे तो तुम्हारा पति और दुर्गा, दो नागों की तरह, फन काढ़े, बातघर में पड़े थे। जैसे ही वह डाखला वाली स्त्री बैलगाड़ी से उतरी थी, वैसे ही दुर्गा उस पर झपट पड़ी थी। उसके एक हाथ में एक पुराना जूता था। उसने उससे उसकी बड़ी-बड़ी छातियों पर वार करना शुरू कर दिया था। तुम्हारा गोसाईं उत्तेजना से उछल रहा था और दुर्गा को बढ़ावा देते हुए कहे जा रहा था, "मारो, और मारो इस कुतिया को। खूब मारो इसे…"

उस समय बड़ी गोसाइन बरामदे में थी। वह वहीं से चीख़ी, "इस बाराभटेरी[19] (छिनाल) का मार-मारकर कचूमर निकाल दो।…"

उस दिन से तुम्हारे गोसाईं के पिता ने बड़े गोसाईं के अनैतिक आचरण की खुलकर आलोचना करनी शुरू कर दी थी और वे आपस में जानी दुश्मन बन गये थे। जो मैंने कहा है, वह ठीक है न, माँ?"

छोटी गोसाइन एक क्षण के लिए चुप रही। फिर एकाएक उसकी आँखों में आँसू तिर आये। होमगार्ड बोला, "माँ, हम हमेशा तुम्हारी भलाई के बारे में सोचते रहते हैं। हमारी बराबर यही कोशिश है कि दक्षिणी तट के बड़े ज़मींदारों की भूमि की नाप-जोख हो…हम इसीलिए यह पूछताछ कर रहे हैं। आपको इसका बुरा नहीं मानना चाहिए। और माँ, क्या तुमने उस काग़ज़ को देख लिया है जिसे महीधर ने तमाम विवरणों के साथ तैयार किया है? क्या इस कागज़ की प्रतिलिपि तुम्हारे पास है?"

गोसाइन का उत्तर था, "मेरे पास बहुत कम ज़मीन बची है। अगर तुम्हें मुझ पर यक़ीन नहीं होता तो मैं तुम्हें बड़े गोसाईं की वसीयत दिखा सकती हूँ। वह मेरे लकड़ी के बक्से में पड़ी है। मैं वह वसीयत ले आती हूँ और तुम अपनी आँखों से देखोगे कि बड़े गोसाईं ने अपने सबसे छोटे बेटे और बहू के साथ कैसा बर्ताव किया है!"

छोटी गोसाइन अब खड़ाऊँ वाले छोटे से अँधियारे कक्ष में दाखिल हुई। ठीक उसी समय गोपीनाथ मन्दिर के गर्भगृह के फाटक बन्द करने के उपलक्ष्य में मन्दिर के ढोल बजने शुरू हो गये। उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं और अपने दोनों हाथों की हथेलियों को आपस में मिलाकर प्रार्थना की मुद्रा में उन पर अपना सिर झुका दिया। फिर वह लकड़ी के पलंग के निकट गयी और उसके नीचे से उसने एक बड़ा-सा लकड़ी का बक्सा खींचकर बाहर निकाला। अब उसने उस बक्से को खोला और उसमें से वसीयत की प्रतिलिपि निकालकर होमगार्ड के हाथ में थमा दी। वसीयत का कागज़ बहुत पुराने मूगा रेशम के रंग का हो रहा था। अपने हाथों में वसीयत की प्रतिलिपि पाकर होमगार्ड ने अपनी जेब से अपना पुराना चश्मा निकाला और उसकी डोरियों को अपने कानों के इर्द-गिर्द लपेटकर उसे ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने लगा। अंग्रेज़ी के शब्द पढ़ते समय उसके लहज़े में एक अजीब तरह की तबदीली आ जाती थी।

"1903 के अधिनियम XVI के अन्तर्गत मान्य। भारत सरकार की अधिसूचना सं. 707, दिनांक 24 जनवरी, 1870 के अन्तर्गत यह वसीयतनामा हरकान्त देव

गोस्वामी, अधिकार, जिसके पिता का नाम स्वर्गीय माधवकान्त देव गोस्वामी अधिकार है, जो जाति से ब्राह्मण है, पेशे से एक धार्मिक प्रमुख है, जो जिला कामरूप, पुलिसथाना पलासबाड़ी और मौजा च्यानी का रहने वाला है, द्वारा तैयार करवाया गया है··· मेरे दो बेटे जीवित हैं। बड़े का नाम कृष्णकान्तदेव गोस्वामी और छोटे का रमाकान्तदेव गोस्वामी है। मेरा छोटा बेटा हठी स्वभाव का है और ग़ैर-आज्ञाकारी है, अपने पिता के प्रति भी। वह निर्दयी और प्रतिशोधपूर्ण भी है। वह मेरी इच्छा के विरुद्ध काम करता है और मेरे शत्रुओं से सम्पर्क बनाये रखता है। वह मेरे लिए हमेशा अत्यधिक सन्ताप और परेशानी का कारण रहा है। भविष्य में मुझे उससे आशा नहीं है कि वह अपनी माँ की या उसकी सम्पत्ति की ठीक से देखभाल करेगा।"

छोटी गोसाइन के भीतर से एक गहरी आह निकली। उसे जैसे कि मानसिक पीड़ा ने घेर लिया। वह एकाएक चिल्ला उठी, "उसका बाप एक सन्त पुरुष था। लेकिन चूँकि वह अपने बाप के विरुद्ध उसकी चरित्रहीनता को लेकर बोला था, इसलिए वह उसकी आँख की किरकिरी बन गया था।"

तोते की नाक वाले होमगार्ड ने वसीयतनामे को फिर से पढ़ना शुरू किया, "मैं क्योंकि अब बूढ़ा हो गया हूँ, इसलिए अपनी मृत्यु के बाद अपनी भूमि को सुरक्षित हाथों में सौंपना चाहता हूँ। (1) अपने बेटे रमाकान्त के लिए मैं कुछ अचल सम्पत्ति छोड़ रहा हूँ जिसका विवरण इस वसीयतनामा के साथ परिशिष्ट में नत्थी है। पट्टे वाली ज़मीन उसके नाम से राजस्व न्यायालय में पंजीकृत है। उपरोक्त सम्पत्ति के अलावा रमाकान्त ने स्वयं ही कुछ ज़मीन च्यानी मौजा में अधिगृहीत की है। इसलिए मैं उसके नाम से और भूमि नहीं छोड़ना चाहता। संलग्न परिशिष्ट के अनुसार तमाम खिराज (लगानी) और निस्फी खिराज (आधा-लगानी) भूमि में अपने बड़े बेटे कृष्णकान्त के नाम कर रहा हूँ। इसके साथ-साथ हमारा छाजन वाला मकान तथा टीन की छत वाला मकान भी मेरे न रहने पर उसी का होगा। (2) रमाकान्त की नक़द पूँजी ऋणों और व्यापार में लगी है, और वह कई गुना बढ़ गयी है। मेरे पास जो नक़द पूँजी बची है, वह मेरे बड़े बेटे कृष्णकान्त और मेरी पत्नी ओमवती देवी की होगी।

मेरी दूसरी सम्पत्ति का विवरण, जिसमें हाथी, घोड़े, गायें, भैंस, गोदाम में रखा धान, बरतन इत्यादि शामिल हैं, इस वसीयतनामा के परिशिष्ट 'जी' में उल्लिखित हैं। जब मैं नहीं रहूँगा, तब मेरी सारी चल सम्पत्ति मेरे बड़े बेटे कृष्णकान्त की होगी। मेरे परिवार के इष्ट देवता के सोने और चाँदी के ज़ेवरात, सोने के फूल, छत्र, वेदी, ढोल और दूसरे पवित्र-पात्र उसी परिशिष्ट में वर्णित हैं। मेरे न रहने पर इसका मालिक मेरा बड़ा बेटा कृष्णकान्त ही होगा और अधिकार का पद भी उसे ही मिलेगा। अधिकार की सत्ता से सम्बद्ध सम्पत्ति, जैसे धार्मिक दण्ड और छत्र, हाथी की घण्टियाँ, पालकी और श्राद्धीथग्गी (अनुष्ठानिक थालियाँ), सब मेरे बड़े बेटे की होंगी, और मेरे छोटे बेटे रमाकान्त को इसमें से कुछ भी नहीं मिलेगा। मेरे न रहने पर ब्राह्मण, गोसाईं

और शूद्र जाति के मेरे सभी अनुयायी मेरे बड़े बेटे, कृष्णकान्त को अपना गुरु मानेंगे। यह वर्तमान गुरु का आदेश है। (3) बारदोआ मौजा में पट्टा सं. 112/94 के अन्तर्गत जितनी भी भूमि है, उसकी कीमत 325 रुपये है और खिराज भूमि की···"

होमगार्ड ने पढ़ना बन्द कर दिया। वह थक गया दीखता था। उसने अपना रूमाल निकाला और अपने चश्मे के शीशों को साफ़ करने लगा। फिर वह बोला, "इस परिशिष्ट के नीचे तुम्हारे रानी मौजा वाले गाँवों—पालहल्दिया, नरगाँव इत्यादि—की खिराज़ भूमि का विवरण है और बड़े गोसाईं के बड़े बेटे को दी गयी सम्पत्ति का विवरण भी है, और उस सबका विवरण भी जिससे तुम्हारे पति को वंचित रखा गया। माँ, क्या मैं उसे भी पढ़ूँ?"

एक बार फिर छोटी गोसाइन ने अपने गताला के सिरे से अपनी आँखों के आँसुओं को पोंछा और बोली, "लोग सोचते हैं कि पातहल्दिया की इस बेटी को केवल एक पेट ही पालना है, और उसके पास काफ़ी खिराज और निस्फी,-खिराज भूमि है। मैं बड़े गोसाइं की बहू हूँ, उसी गोसाईं की जो इतना शक्तिशाली था, जिसके पास बेहिसाब ज़मीन थी और दस हाथी थे। क्या कभी किसी ने अब यह पता लगाने की चिन्ता की कि वह बहू कैसी जर्जर हालत में है? ···क्या कभी किसी ने यह भी देखने की कोशिश की कि उसका गताला तार-तार हो रहा है? ऐसे अँधियारे क्षणों में महीधर अपने हाथ में दीपक लेकर आया है और मेरा सहारा बनकर खड़ा है। केवल उसी की मदद से मैं लगान दे सकी और घर के रोज़मर्रा के ख़र्चों से निपट सकी।"

भगत ने अपने लम्बे बालों को जूड़े में बाँधा और अपने आप कुछ बड़बड़ाने लगा।

छोटी गोसाइन कहती गयी, "होमगार्ड भइया, तुम वह परिशिष्ट (बी) भी देखो। तुम्हें उसमें कृष्णकान्त के नाम चल सम्पत्ति की भी एक लम्बी सूची मिल जायेगी।"

होमगार्ड ने लकड़ी के रंग के उन पुराने कागज़ात को खोला और ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने लगा :

(1) राजेन्द्र, ऐरावत और माणिक—तीन लम्बे दाँत वाले हाथी··· 500 रुपये

(2) दो भूरे रंग के और एक सफ़ेद रंग का घोड़ा 160 रुपये

(3) आठ भैंसें और चार भैंसे 150 रुपये
(भविष्य में जो भी पड़वा पैदा होगा, वह कृष्णकान्त का ही होगा)

(4) जोत के बैल—बीस और दुधारू गाय—साठ 80 रुपये
(भविष्य में जितने भी बछड़े पैदा होंगे, वे कृष्णकान्त के ही होंगे।)

(5) पालकी के चाँदी के हत्थे—दो 200 रुपये
(इस बिन्दु पर पहुँचकर छोटी गोसाइन के भीतर से एक गहरी आह निकली। उसे वह दिन याद आया जब गोसाईं ने उसके लिए पालकी भेजी थी। उसके हत्थे केवल लोहे के थे। ओह! उसे कई चीज़ों से वंचित किया गया।)

(6) ताम्रद्वार 1 जोड़ी 20 रुपये
(7) पीतल के घड़े–17 40 रुपये
(8) पीतल की थालियाँ–3 10 रुपये
(9) बड़ी प्लेटों को रखने के स्टैंड–8 8 रुपये
(10) पीतल के डिब्बे–80 40 रुपये
(11) दो बड़ी बन्दूक़ें–मेरे नाम से 50 रुपये
(12) हाथियों के लिए बड़ी घण्टियाँ–8 8 रुपये

(यहाँ होमगार्ड कुछ समय के लिए रुक गया। उसने अपने बेढंगे से चश्मे को उतारा और रूमाल से फिर उन्हें साफ़ किया। न उसमें, और न ही भगत में अब और इच्छा रही थी कि सूची को अन्त तक पढ़ा जाये)।

"माँ, दूसरी सूची में टीन की छत और छाजन वाले दो कमरों के और चार कमरों के घरों में रखे उस सामान का उल्लेख है जो औपचारिक बैठकों और नाट्य प्रदर्शनों में काम आता था। इसके अलावा इष्टदेव, गोपीनाथ की सोने की माला, सोने के सिक्के, ताँबे के ढोल इत्यादि का भी उल्लेख है। इस सबको पढ़ने की क्या ज़रूरत है? तुम्हारे गोसाईं के लिए भूमि का कहीं कोई उल्लेख नहीं!"

यहाँ भगत ने भी अपनी बात जोड़ी, "वाह-ह-ह! बड़े गोसाईं ने तुम्हारे लिए एक भी नौकरानी नहीं छोड़ी जो सहन में झाड़ू लगाये, धान कूटे और गन्दे कपड़े उबाले?"

होमगार्ड ने अपना चश्मा फिर लगा लिया और विभिन्न परिशिष्टों पर अपनी नज़र दौड़ाने लगा। फिर वह एकाएक बोला, "यहाँ इस परिशिष्ट में बंधवा दासियों का स्पष्ट उल्लेख है। ये उनके नाम हैं और यह उनका मूल्य आँका गया है–

जानकी, महिमा, बिरेही, घेनटपी तथा ऊझा 150 रुपये

छोटी गोसाइन बोली, "हाँ, हाँ, मैं जानती हूँ। उनमें से हर एक की कीमत तीस रुपये थी। उनमें एक, घेनटपी की मृत्यु तो अभी, कुछ ही दिन पहले हुई है। उसे अफ़ीम की लत थी और उसी ने उसकी जान ले ली। उसके अन्तिम दिनों में मैंने उसे देखा था। वह हर समय ड्योढ़ी में लेटी रहती थी। अगर कोई पास से गुज़र जाता तो उसे पीने को थोड़ा-सा पानी मिल जाता, वरना वहीं भूखी और प्यासी पड़ी रहती थी। उसके चेहरे पर मक्खियाँ भिनभिनाती रहतीं और उसकी तकलीफ़ को और बढ़ाती रहतीं…"

होमगार्ड ने अपनी कमर सीधी की और गोसाइन की ओर देखने लगा। "गोसाइन माँ, आपकी ज़मीनों की सूची कहाँ है? ज़रूर वह महीधर बापू के पास होगी!"

छोटी गोसाइन को फिर वही अनुभूति होने लगी जैसे कि कोई उसकी चमड़ी को तीखे, नुकीले नाखूनों से खुरचकर निकाल रहा है।…

"हाँ, जैसे तुम्हें वसीयतनामा देखने की इच्छा हुई थी, वैसे ही महीधर को भी मेरी ज़मीनों का ब्योरा जानने की इच्छा हुई थी। मैंने वह सूची उसी को दे दी है।"

होमगार्ड उत्तेजित हो उठा और बोला, "माँ, क्या तुमने कोरे कागज़ पर हस्ताक्षर करके वह कागज़ उसे थमा दिया था?"

···आह! क्या कह रहा है यह! क्या यह मेरे टुकड़े-टुकड़े करके मेरे मन के गुह्यतम स्थल को देखना चाहता है? क्या यह आखिर मुझे बिलकुल नंगा करके छोड़ेगा? लेकिन इन्हें मिलेगा क्या? महीधर का अस्तित्व तो अब मेरे रक्त-प्रवाह का हिस्सा बन गया है। अगर वे मुझे छोटे-छोटे टुकड़ों में काट भी डालें तो भी उनकी समझ में कुछ नहीं आयेगा। मेरा यह रक्त एकदम शुद्ध है। इसमें किसी तरह की कोई मिलावट नहीं!···

"···हाँ, होमगार्ड। एक दिन उसने मुझसे एक कोरे कागज़ पर हस्ताक्षर करने को कहा था। उसने मुझे बताया था कि वह इस काग़ज़ पर मेरे हस्ताक्षर के साथ हर सन्दर्भ-संख्या को उतार लेगा और फिर जिस किसी असामी ने मुझे अदायगी नहीं की है, उसके पीछे लगा रहेगा।"

"क्या तुमने अपने हाथ से वह सन्दर्भ-संख्या स्वयं लिखी थी?"

"समय ही कहाँ था? वह ब्राह्मण तमाम रात टूटी-फूटी ढेकी वाले कक्ष में एक लैम्प के सामने बैठा रहा था और उस कागज़ पर कुछ लिखता रहा था। जब मैं सुबह जगी तो मैंने उसे उसी तरह बैठे पाया। बेचारा! मैंने उससे कहा कि क्यों वह अपने शरीर को इस तरह कष्ट दे रहा है?" वह बोला, "तुम्हारी उकियम वाली लगानी भूमि का हिसाब-किताब बिलकुल उलझा पड़ा है। मैंने अब उसे ठीक कर दिया है। मैं चाहता हूँ कि तुम एक कागज़ पर हस्ताक्षर कर दो।"

"जब मैं अपने सुबह के कामों से निपटकर वापस आयी तो मैंने देखा कि बरामदे में पातहल्दिया से आये मेरे दो अनुयायी खड़े हैं। वह नवविवाहित दम्पति थे। वे मुझसे आशीर्वाद लेने आये थे। तो समय ही कहाँ था? मैं फूल और तुलसी के पत्ते लायी। खड़ाऊँ कक्ष के फर्श पर मैंने गोबर और मिट्टी की लिपाई की। यानी यह कर, वह कर। तमाम दिन ऐसे ही चलता रहा। महीधर ड्योढ़ी में खड़ा था और कह रहा था, "तुम ये तमाम कागज़ात देखने के लिए समय निकाल नहीं पाओगी। तुम इस कोरे काग़ज़ पर, बस हस्ताक्षर कर दो। बाकी मैं अपने आप कर लूँगा।" उसका कण-कण मेरे प्रति समर्पित है। वह मेरे यहाँ उस समय आया था जब मेरा समय बहुत ही खराब चल रहा था। जैसे कि ईश्वर ने मेरे पास कोई मसीहा भेजा हो। अब भी मैं उसी का इन्तज़ार कर रही हूँ। अभी तक पातहल्दिया से धान की गाड़ियाँ नहीं आयी हैं।"

होमगार्ड और भगत कुछ नहीं बोले, बल्कि वे वहाँ से उठे, गोसाइन के निकट गये और विदाई के लिए उन्होंने उसे झुककर प्रणाम किया। फिर उन्होंने बाँस के फाटक को खोला और सड़क पर चले आये।

कुछ देर तक छोटी गोसाइन बरामदे में खड़ी उन्हें जाते देखती रही और अपने ख़यालों में खोयी रही। वह उलझन में थी, और साथ ही उनके आने से वह स्तब्ध भी हो रही थी। वह अपने में तभी लौटी जब उसकी नौकरानी ने उसे पुकारा! "गोसाइन, खाना कब खाओगी? पहले ही काफ़ी देर हो चुकी है। मैं कहती हूँ हेरामदो वाला वह ब्राह्मण नहीं आयेगा। तुम अपना खाना खाओ और मुझे जाने की आज्ञा दो!"

छोटी गोसाइन के माथे पर चिन्ता की कुछ रेखाएँ साफ़ देखी जा सकती थीं। ···तो वह आज भी नहीं आयेगा? अब क्या होगा? क्या वह इन्द्रनाथ के पास जाये? उसके पति, दिवंगत गोसाईं ने अपना आख़िरी समय आने से पहले उससे कहा था, "इन्होंने ज़मीन के मेरे हिस्से से मुझे वंचित कर दिया है। इनके पास मदद के लिए कभी मत जाना और इनकी नज़रों में अपने को छोटा मत करना। अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखना।"

अब तक वह अपनी ज़मीनों के मामले अकेले ही निपटाने की कोशिश करती रही थी। वह सर झुकाकर किसी के पास भी मदद के लिए नहीं गयी थी।

पड़ोसियों के घरों में कूटे जा रहे बटेश्वरी जहा चावल की सुगन्ध अब उस पर छाये जा रही थी। वह अपने रसोईघर के भीतर गयी। खाना खाया, नौकरानी को विदा किया और एक तश्तरी में पान-सुपारी लिये बरामदे में आ गयी।

बातघर अब चमगादड़ों के लिए रहने और पनपने का स्थान बन गया था। जैसे ही शाम हुई, उनकी चीं-चीं चारों ओर सुनाई देने लगी। डूबता सूरज और चढ़ता चाँद, दोनों ही, बड़ी नारंगियों की तरह, आकाश में दिखाई देने लगे। सूरज और चाँदी की मिली-जुली रोशनी उस हवेली तथा आसपास की दृश्यावली पर एक रहस्यमयी छटा बिखेरने लगी, जैसे कि पट और मूँगा रेशम के धागों की एक बड़ी चादर ने सब कुछ ढाँप दिया हो। सड़क पर न ही किसी तरह की हरकत थी, और न ही कोई आवाज़ थी। जब से उन्मत्त हाथी ने जमालुद्दीन को मार डाला था, लोग शाम को घर से बाहर निकलते हुए डरते थे, हालांकि वे जानते थे कि वह हाथी जिरंग के जंगलों में भाग गया है।

गोसाईं की हवेली से नृत्य करते छोटे लड़कों के पाँवों की घण्टियों की आवाज़ आ रही थी। उन्हें एक नृत्य नाटक में दासियों के रूप में भाग लेना था। शायद वे मानपुर के गोसाईं के निर्देशन में अपनी-अपनी भूमिका का अभ्यास कर रहे थे। मानपुर का गोसाईं बड़ी गोसाइन का एक दूर का रिश्तेदार है। वह ही इस नाटक मण्डली का गुरु और व्यवस्थापक है। आजकल गोसाईं परिवारों के लड़के इन घूमती-फिरती नाटक मण्डलियों में शामिल हो जाते हैं और दक्षिणी तट से उत्तरी तट तक भ्रमण करते हैं। इनमें से कुछ तो स्वयं ही गुरु बन जाते हैं और दूसरे लड़कों को प्रशिक्षित करते हैं।

छोटी गोसाइन को इस बात पर विश्वास नहीं था, लेकिन अब तो यह उसकी आँखों के सामने घट रहा था। वह हमेशा की तरह बरामदे में अकेली बैठी थी। माटियापहाड़ मे एक गीदड़ हू-हू कर रहा था। गोसाइन के कान महीधर के पदचाप सुनने के लिए चौकस थे। क्या वह अब वाकई नहीं आयेगा?

वह रहस्यमय प्रकाश अब हर कहीं छाया दिखता था। कितना कोमल है यह! कितना सुखद! हारमोनियम और नाचते पाँवों के घुँघरुओं की आवाज़ें इस रहस्यमय प्रकाश से मिलकर एक हो गयी थीं और एक लयमयता में बँध गयी थीं। उसने सुपारी वाली तश्तरी पर नज़र डाली। नौकरानी ने केवल कच्ची सुपारियाँ ही उसमें रखी थीं। शायद वह लौटने की जल्दी में थी, क्योंकि उसे पहले ही काफ़ी देर हो चुकी थी और उसके पास इतना समय नहीं था कि वह पिछवाड़े से भूमि में दबायी गयी सुपारियों को निकाल सके।

गोसाइन ने कच्ची सुपारियों के ही कुछ टुकड़े मुँह में डाले और उन्हें चभलाने लगी। इस चभलाने का असर तुरन्त ही हुआ, क्योंकि उसके वदन में जैसे कि कुछ जलने लगा। उसकी त्वचा लाल हो गयी। उस पर जैसे कि कोई नशा चढ़ रहा हो। ओह! कैसी आग-सी लगी हुई है! चक्कर भी आ रहे हैं! क्या वह कुएँ पर जाये और अपने सर पर कुछ पानी उँड़ेले? नहीं, नहीं! जो होता है, होने दो। थोड़ी देर बाद अपने आप ठीक हो जायेगा। वह बिना हिले-डुले बैठी रही और अपनी हथेलियों से अपने सर को दबाये रही। पर अपनी इस परेशानी के क्षणों में भी उसे महीधर की याद आ रही थी। जैसे ही वह आयेगा, वह लपककर रसोईघर में जायेगी, उसके लिए खाना गरम करेगी और फिर उससे कहेगी, "तुम्हें कोई चिन्ता नहीं? तुम्हें मेरी रत्तीभर चिन्ता नहीं? इस अकेली औरत की? अब वह निष्ठा और सम्मान वाली दीवार तो धीरे-धीरे ढह ही रही है। अफ़ीमची गोपीनाथ का वह चन्द्राकार लटकन तो ले ही उड़े हैं। दिन-दहाड़े अधिकार गोसाई की अटारी से हाथी के दाँतों की भी चोरी हो गयी। स्वयं मेरे अपने घर से गोसाईं की विधवा बहन के ज़ेवर ग़ायब हो गये। क्या तुम्हें मेरी कोई चिन्ता नहीं? क्या तुम्हारा मुझसे कोई सरोकार नहीं?" "हाँ, हाँ, आने दो उसे। मैं उससे साफ़-साफ़ कहूँगी। आने तो दो उसे!"

ढेकी के छप्पर के निकट, नींबू के पेड़ के नीचे, गीदड़ अपनी हू-हू की आवाज़ें निकाल रहे थे। वह रहस्यमय सूर्य अब दिखाई देना बन्द हो गया था और अँधेरा उतरता आ रहा था। उस अँधेरे में चाँद एक रजत चक्र की तरह चमक रहा था। चाँद पर एक छोटा-सा बादल भी मँडरा रहा था और ऐसा लगता था जैसे कि चाँद ने सफ़ेद पगड़ी बाँध रखी हो! आह! कैसा अद्‌भुत दृश्य है यह! चाँद तो अब अधिकार गोसाई के गोल चेहरे जैसा दिखता है, और बादल उसके सर पर विशिष्ट अवसरों पर ओढ़ाया जाने वाला छत्र! ऐसे लग रहा था जैसे गोसाईं पुराने गोसाइयों का श्राद्ध करने जगलिया के तट की ओर बढ़ रहा हो।

छोटी गोसाइन अपनी इस दिमागी उड़ान पर मुस्करा उठी। लेकिन इस बीच उसके कान पदचाप की ओर ही लगे रहे। उसका शरीर एक प्रकार की ऐंद्रिक तन्द्रा से जकड़ा हुआ था। यह तन्द्रा उसे बीच-बीच में जकड़ ही लेती है। ऐसे क्षणों में वह कोई धार्मिक ग्रन्थ खोल लेती है और अपनी धीमी, सुरीली आवाज़ में उसका पाठ करने लगती है।

अब वह खड़ाऊँ वाले पवित्र कक्ष में दाखिल हुई। भीतर काफ़ी अँधेरा था। वह माचिस की डिबिया ढूँढ़ने लगी। डिबिया उसे बिस्तर के नीचे मिली। उसने उससे लकड़ी की तिपाई पर रखे दीये को जलाया। फिर उसने गुरु लीला[20] नाम के ग्रन्थ को निकाला और उसके उस पन्ने को खोला जहाँ उसने एक सूखे पत्ते का निशान लगा रखा था। फिर उसने उस अध्याय से पढ़ना शुरू किया जहाँ यह वर्णित था कि गुरु दामोदर देव कैसे कूच-बिहार गये और वहाँ कैसे नये सम्प्रदाय का प्रचार किया···

···नहीं, नहीं! उसका मन बार-बार एकाग्रता से हट रहा है। वह भगत और वह होमगार्ड! उन्हें उससे कौन-सा भेद मिला? कौन-सी गुत्थी वे खोल पाये? उसने उनसे महीधर से अपने रिश्ते की बात साफ़-साफ़ की थी, और कुछ नहीं छिपाया था। अब अफवाहें तो फैलेंगी ही। लोग जगलिया के तट पर उसके बारे में तरह-तरह की बातें करेंगे। अगर गोसाईं जीवित होता तो इस सबकी नौबत कहाँ आती? अब भी जब वह गोसाईं के खड़ाऊँ पर फूल चढ़ाती है तो उसकी आँखें आँसुओं से भर आती हैं। लेकिन उस व्यक्ति के प्रति उसके मन में कैसा विचित्र आकर्षण है! इस पर वह काबू पाने में असमर्थ है। उसका उसके साथ कोई शारीरिक सम्बन्ध भी नहीं, हालांकि अगर वह चाहती तो हो सकता था। फिर भी उसे लेकर उलटी-सीधी बातें चलती ही रहती हैं। जगलिया के तट पर सभी ब्राह्मण इसकी चर्चा करते हैं। इस तरह की ऊल-जलूल बातों से कौन बच सकता है? और तो और, गुरु दामोदर देव जैसे महान् व्यक्तियों को भी ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ा। दामोदर देव के बारे में उस घटना को कौन नहीं जानता? एक बार जब राजा परीक्षित शिकार पर गया हुआ था तो उसके जनानखाने की महिलाएँ दामोदर देव के पास आयीं और उनके सामने अपना सर नवाया। लेकिन इस साधारण-सी बात को लेकर ही तरह-तरह की अफ़वाहें गरम होने लगीं। इससे गुरु दामोदर इतने क्षुब्ध हुए कि उन्होंने वह स्थल ही छोड़ दिया और कूच-बिहार चले गये। राजा परीक्षित ने इन अफ़वाहों पर विश्वास किया और इस वैष्णव सन्त से वह अत्यधिक रुष्ट हो गया। छोटी गोसाइन के दिवंगत पति ने एक बार उसे बताया था कि ऐसे सन्त पर सन्देह करने के बदले में उसके साथ ईश्वरीय न्याय हुआ, क्योंकि दिल्ली के बादशाह ने उसके राज्य पर आक्रमण करके उसे पूरी तरह नष्ट कर दिया।

ओह, इस सन्त का हृदय कितना कोमल था! एक बार उसने विजय नगर के राजकीय दूत से कहा था कि वह देवी दुर्गा के सामने रक्तपात और बलि से घृणा

करता है—यदि मुझे बलि वाले व्यक्ति के साथ ले जाया जाता है, तो बलि की वेदी पर पहले सर मैं रखूँगा।

लेकिन आजकल ऐसी शिक्षा पर कौन चलता है? यदि घर में गम्भीर रोग आ जाये या लगे कि किसी ग्रह की कुदृष्टि है, तो दामोदरिया गोसाईं परिवारों के लोग भी दौड़े-दौड़े कामाख्या मन्दिर जायेंगे और वहाँ देवी के सामने काली बकरी की बलि चढ़ा देंगे!···

हर्र! हर्र! हर्र! ···आह! लगता है किसी ने बाँस का फाटक खोला है! वह दौड़ती हुई बाहर गयी, लेकिन तुरन्त ही निराश हो गयी। यह तो केवल एक कुत्ता था जो चूहे का पीछा कर रहा था। उसी ने बाँस के अड़ंगे को एक तरफ़ कर दिया था और सहन में दाख़िल हो गया था।

छोटी गोसाइन वापस चली गयी और लकड़ी की एक तिपाई पर बैठ गयी। दीये की रोशनी में उसका बदन ऐसे लकदक कर रहा था जैसे पुराने पट का रेशम करता है। उसने अब धार्मिक पुस्तक को बन्द कर दिया था। उधर नृत्य करते लड़कों के टखनों पर बँधे घुँघरुओं की आवाज़ भी बन्द हो गयी थी। शायद उनका अभ्यास ख़त्म हो चुका था। जैसे-जैसे रात बढ़ती गयी, पुराने अफ़ीमचियों की रुक-रुककर खाँसने की आवाज़ भी बढ़ती गयी। रात्रि को इस समय भुनते पान के पत्तों की गन्ध भी ज़्यादा से ज़्यादा तेज़ होती जा रही थी।

अब छोटी गोसाइन के सोने का वक़्त हो आया था। वह उठकर खड़ी हो गयी और बरामदे के एक कोने में रखे पानी के घड़े की ओर बढ़ी। वहाँ उसने पानी से अपने पाँव धोये और फिर अपने पंजों के बल चलते हुए अपने सोने के कमरे में दाखिल हुई और भीतर से अड़ंगा लगाकर उसने दरवाज़े को बन्द कर लिया। वह पंजों के बल चलकर ही अपने बिस्तर की ओर बढ़ी। बिस्तर पर बैठकर उसने तकिये के नीचे से एक गमछा निकाला और उससे अपने गीले पाँवों को सुखाया। फिर अपने वक्ष पर हाथ रखकर उसने इस भूमण्डल की चारों दिशाओं के देवताओं की वन्दना की। यह वन्दना वह बचपन से ही करती आ रही है। अब उसने एक गहरी साँस ली और अपनी पीठ के बल लेटकर सोने के लिए अपनी आँखें बन्द कर लीं। उसके सरहाने दीया जलता रहा। उसने उसे फूँक मारकर बुझाया नहीं। इस मद्धिम प्रकाश में वह किसी बड़े चित्रकार द्वारा बनाये गये चित्र के समान दिख रही थी, सफ़ेद तकिये पर अपने छितराये बालों के साथ।

पर उसे नींद नहीं आयी। उसके कान बाँस के फाटक की ओर ही लगे हुए थे। उसे फिर महीधर का ख़याल आया। मान लो वह लगान इकट्ठा करने में सफल रहता है। जब यह रकम हाथ में आ जायेगी तो वे दोनों, साथ-साथ, भीषण तरमा नदी के तट पर बसे भेलाभंगा सत्र में जा सकते हैं। उसकी एक भतीजी वहाँ के एक परिवार में ब्याही हुई है। पिछली बार जब वह जगलिया के तट पर श्वारी उत्सव के

लिए आयी थी, तो बोली थी, "आप भेलाभंगा क्यों नहीं आतीं? वहाँ आपको श्री शंकरदेव के अपने दैवी हाथों से लिखी भागवत देखने को मिलेगी और साथ में भगवान कृष्ण की चतुर्भुज मूर्ति भी।"

राजाबाहा का एक यजमानी ब्राह्मण ज़्यादा कमाई के लिए कूच-बिहार गया था। जब वह लौटा था तो उसे उसी की बिरादरी वालों ने बिरादरी से बाहर कर दिया था, यह कहकर कि वह विलायती, यानी भ्रष्ट हो गया है। इसलिए गोसाईं के पास वह प्रायश्चित करने आया था। उसने पवित्र गंगाजल पिया था और गऊ मूत्र का सेवन किया था। इसी ब्राह्मण ने छोटी गोसाइन से कहा था कि उसे तरमा नदी के किनारे भगवान् कृष्ण की चतुर्भुज मूर्ति देखने जाना चाहिए। उसे याद है उन दिनों महीधर उम्र में अभी काफ़ी छोटा था। वह गोसाईं के पास जाता था और जनेऊ बनाने के लिए सूत कातता रहता था। फिर काफ़ी समय तक वह दिखाई नहीं दिया। शायद वह भी तरमा नदी के तट पर ज़्यादा यजमानी पैसा बनाने के लिए कूच-बिहार चला गया था। इसके बाद उसने सुना कि वह लौट आया है और पारिवारिक जीवन बिता रहा है। फिर उसके सुनने में आया कि उसकी पत्नी का देहान्त हो गया है और वह बड़ी पतली हालत में रह रहा है। गोसाईं के गुज़र जाने पर वह उसके पास आया था और उसने अपना परिचय दिया था। अपने सामने एक परिपक्व, गठीले और पुष्ट मांस-पेशियों वाले युवक को देखकर वह हैरान रह गयी थी। युवक ने अपने दुर्भाग्य की कहानी कह सुनायी थी और उससे किसी नौकरी के लिए मिन्नत की थी। अब उसी महीधर के साथ वह तरमा के तट पर जाने की तीव्र इच्छा लिये हुए है और एक बार भगवान् कृष्ण की चतुर्भुज मूर्ति को भी देखना चाहती है। ···उसका पति उसे बताया करता था कि उनके कुछ रिश्तेदार भी वहाँ रहते हैं। वह कभी-कभी किसी पुरुषोत्तम भट्टाचार्य का भी ज़िक्र किया करता था जिसने कूच-बिहार के राजा के संरक्षण में संस्कृत में रत्नमाला व्याकरण की रचना की थी। वह उनका एक निकट का रिश्तेदार था। उससे मिलने की भी उसकी तीव्र इच्छा थी··· अब भेलाभंगा जाने में इतनी कठिनाई नहीं होगी। शुरी जाति के लोग उसे पलासबाड़ी तक पालकी में ले जाने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। महीधर पैदल आ सकता है। पलासबाड़ी से रास्ता तो बिलकुल साफ़ है ही।

···गोसाइन पर अब नींद चढ़ती जा रही थी। इसलिए वह जल्दी ही सो गयी। उसे एक सपना आया··· वह महीधर के साथ तरमा नदी के किनारे-किनारे चल रही है। दोनों किनारों पर गहरा के फूल खूब घने हो रहे हैं, लेकिन पथ पर कण्टीली झाड़ियाँ हैं। महीधर उससे कहता है, "भगवान् कृष्ण के इस इहलीला को समाप्त करने के 18 दिन बाद उनका अधजला शरीर समुद्र से एकस्थ होकर पाषाण में परिवर्तित हो गया। इस पाषाण से नीलगिरि के नीलमाधव का जन्म हुआ। मैं तुम्हें एक दिन नीलगिरि ले चलूँगा। तुम अपनी आँखों से नीलमाधव को देखोगी। वह डोमों का

इष्टदेव है। एक डोम ने ही उसे ढूँढ़ निकाला था। उस डोम को डर था कि कहीं कोई नीलमाधव चुरा न ले। इसलिए उसने किसी को भी नीलगिरि का रास्ता नहीं बताया था। लेकिन राजा इन्द्रदूमा का पुरोहित लोमड़ी-सा चालाक था। उससे निपट पाना आसान नहीं था। इसलिए डोम ने उसकी आँखों पर पट्टी बाँध दी। पुरोहित फिर भी अपनी चाल से बाज़ नहीं आया। वह अपने साथ सरसों के बीज की एक पोटली ले गया। पोटली के कपड़े में एक छोटा-सा छेद था, जिसमें से बीज के दाने नीलगिरि के पथ पर गिरते रहे। कुछ समय बाद वे बीज फूट पड़े और पीले फूलों वाले लम्बे पौधे बन गये। आओ, आओ, छोटी गोसाइन, हम उसी पथ पर चलेंगे।"

आनन्द-विभोर हुए वे दोनों सरसों के पीले फूलों वाले उस पथ पर बढ़ रहे हैं। वह एकाएक उत्तेजित होकर कहता है, "देखो, देखो! यही वह पथ है जो हमें चतुर्भुज और नीलमाधव के पास ले जायेगा।"

उसे पण्डों का एक झुण्ड दिखाई देता है। उनके सर पूरी तरह मुंडे हुए हैं और वे सभी केसरिया रंग के चोले पहने हुए हैं। वे जगन्नाथ मन्दिर के मदन मोहन महापात्र लालमोहरिया के वंश से हैं। वे हर वर्ष एक ब्राह्मण विधवा को तीर्थ-यात्रा पर ले जाने के लिए उड़ीसा से आते हैं और जब वे विधवाएँ तीर्थयात्रा से लौटती हैं, तो इनके लम्बे, घुँघराले, काले बाल जा चुके होते हैं। उनके सर भी उसी तरह सफाचट मुंडे होते हैं जैसे पण्डों के। वह जैसे ही पण्डों को देखती है, उस पथ पर लहलहाते पीले फूल कैक्टस के कण्टीले पौधे बन जाते हैं। अब उसे उन पण्डों में कुछ और चेहरे भी दिखाई देते हैं। वे सब उसके पहचाने हुए चेहरे हैं। वे रहे मार्क और गिरिबाला! वह इन्द्रनाथ है, अपनी पाइप पर कश लगाता हुआ। वे गोसाइन और दुर्गा हैं। वह कल्लू महावत है। और वे सब उसके पातहल्दिया और उकियम वाले अनुयायी हैं। वे सब उसे और उसके साथ चलते महीधर को देख रहे हैं।"

आह! ऐसा लगता है जैसे कि किसी ने कण्टीले कैक्टस के सभी पौधों को आग लगा दी हो। अब वह किधर जाये? कहाँ? उसके कानों में लोहे की ज़ंजीरों के खनकने की आवाज़ आती है। यह आवाज़ उसी की ओर चली आ रही है। क्या यह उन्मत्त हाथी जगन्नाथ है?

एकाएक उसे महीधर की आवाज़ सुनाई देती है। वह बहुत गहरी है। "आओ माँ! मेरा हाथ थामो! मैं हाथी से भी निपट सकता हूँ। मैं छिन्न-भिन्न हौदे को भी जोड़कर उसे वापस हाथी की पीठ पर बाँध सकता हूँ। मुझमें यह सब करने की शक्ति है। तुम कब तक अपने विगत का शव अपने कन्धों पर ढोती रहोगी? आओ! आओ, मेरे साथ! मेरा हाथ थामो। अगर तुम इस रास्ते पर इसी तरह बढ़ती रहीं तो तुम्हारे शरीर के मांस को ये काँटे उधेड़ डालेंगे और उसकी चिंदियाँ कर देंगे! आओ! मेरा हाथ थामो!"

झाड़ियों में लगी आग से अब लपटों की लम्बी-लम्बी जिह्वाएँ बाहर आ रही हैं और उसके गताला को पकड़ लेती हैं। धीरे-धीरे उसके कपड़े और उसका शरीर

आग से घिर जाते हैं। वह भय से चीख़ उठती है। उसके गले से एक विचित्र-सी, भुतवा-चीख़ निकलती है और वह काँपती हुई-सी जग जाती है। कोई दरवाज़े पर ज़ोर-ज़ोर से, और लगातार, थपथपाये जा रहा है।

"जागो, गोसाइन, जागो! कुछ भयंकर घट गया है। जागो! दरवाज़ा खोलो।"

छोटी गोसाइन ने अपने बदन पर पड़े कपड़े को एकदम परे फेंका और घबरायी-सी उठ खड़ी हुई। फिर वह दरवाज़े की ओर दौड़ी, उसका अड़ंगा हटाया और दरवाज़े को एकदम खोल दिया। बरामदे में पहुँचकर वह एकाएक रुकी और बुरी तरह काँपती हुई वहीं की वहीं खड़ी रह गयी। सहन में कुछ लोग आ जुटे थे। उनके हाथों में जलती मशालें थीं। वे अँधेरे में चुड़ैलों और प्रेतों की तरह दिखाई दे रहे थे। मशालों की फड़फड़ाती मद्धिम रोशनी में उसे सुबह वाला भगत दिखाई दिया। उसके हाथ और टाँगें कीचड़ से सनी हुई थीं और उसकी चोटी भी खुल गयी थी। ओह, वह होमगार्ड, जैसे कि वह किसी युद्ध के मैदान से लौटा हो! हे ईश्वर, यह सब क्या है? उसके हाथों पर खून? क्या यह खून ही है? आह! वे तो सिपाही हैं। हाँ, पुलिस के सिपाही! एकाएक उसकी आँखें ज़मीन पर पड़ी किसी चीज़ से टकरायीं।

"कौन? कौन है यह? यहाँ कौन पड़ा है? हे भगवान्, क्या वही है? ओह! हाय! कौन पड़ा है यहाँ?"

जलती मशालों की रोशनी में अब वह साफ़ देख सकती थी कि ज़मीन पर एक आदमी पड़ा है और उसका शरीर मछली पकड़ने वाले जाल से बँधा है। वह बरामदे से नीचे उतरी और धीरे-धीरे लोगों से घिरी उस लाश की ओर बढ़ी। फिर वह थोड़ा झुकी और उसके चेहरे को ग़ौर से देखा। वह चीख़ मारती-सी एकदम पीछे हट गयी, और किसी-न-किसी तरह पाँव घसीटती हुई बरामदे तक पहुँची। उसने बरामदे के एक खम्भे को कसकर पकड़ लिया। उससे वह गिरने से बच गयी। अपने हाथ में मशाल लिये एक होमगार्ड अब उसके निकट आया। उसने एक मुड़ा-तुड़ा काग़ज़ का टुकड़ा निकाला और बोला, "गोसाइन, इस काग़ज़ को देखो। क्या यह वही है जिस पर तुमने हस्ताक्षर किये थे?"

मशाल की रोशनी में छोटी गोसाइन ने काग़ज़ पर अपने हस्ताक्षर को पहचान लिया।

होमगार्ड कहता गया, "जब हम दोपहर को यहाँ आये थे तो तुमने हमें बताया था कि तुमने एक कोरे काग़ज़ पर हस्ताक्षर किये थे। ज़रूर यह वही कागज़ है!"

छोटी गोसाइन ने उस काग़ज़ को अपनी मुट्ठी में भींच लिया और बुदबुदायी, "हाँ, यह वही है। मैंने दो या तीन और काग़ज़ों पर भी हस्ताक्षर किये थे। महीधर ने कहा था कि वे मेरी तरफ़ से अपील करने के काम आयेंगे।"

भीड़ में से अब कुछ आवाज़ें आयीं, "अपील करने के लिए कागज़? कैसी अपील?"

"तीन सत्रों के गोसाईं घराने की बहू की दुर्दशा के बारे में। इस बारे में कि उसे अपने असामियों से लगान भी नहीं मिल रहा। इस बारे में कि उसे धान का अपना हिस्सा नहीं मिलता। टैक्स कलेक्टर पहले ही धमकी दे चुका है कि वह उसके कपड़े, बरतन और दूसरी चीज़ें उठा ले जायेगा, अगर उसने समय पर करों की अदायगी नहीं की तो।"

उसकी आवाज़ काँप रही थी। वह रुक-रुककर कहती गयी, "मैंने केवल इन्हीं अपीलों के लिए अपने हस्ताक्षर किये थे, और किसी काम के लिए नहीं···"

इस पर होमगार्ड चीख़ता हुआ बोला, "गोसाइन, उसने तुम्हारा खून चूस लिया है!"

उसकी आवाज़ जैसे कि उसके गले में ही दब रही थी। वह बड़ी मुश्किल से बोली, "किसने? ···किसने मेरा खून चूसा है?"

होमगार्ड ने ज़मीन पर पड़े खून और कीचड़ से सने व्यक्ति की ओर इशारा किया। छोटी गोसाइन फिर लाश के निकट आयी, उस पर थोड़ा झुकी और उसके चेहरे को ग़ौर से देखा। फिर वह एकाएक चीख़ मारकर रो पड़ी, "महीधर! हाय, महीधर! किसने भाले से तुम्हारे शरीर को छेदा है? किसने तुम्हें इस जाल में बाँधा है? हाय, महीधर! ···हाय! ···हाय···"

वह ऐसे काँप रही थी जैसे कि उसे किसी रोग ने आ दबोचा हो। उसके लिए खड़े रहना मुश्किल हो रहा था। उसने सहारे के लिए एक खम्भे को पकड़ लिया। होमगार्ड ने अपनी जेब से एक कागज़ निकाला और मशाल की रोशनी में उसे ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने लगा, "यह पातहल्दिया की मियादी खिराज़ी ज़मीन का पट्टा नं. 31 है और पूर्वी समारिया की मियादी खिराजी ज़मीन का पट्टा नं. 20··· तुमने इन ज़मीनों का बयाना लेने का अधिकर महीधर को दिया था!"

छोटी गोसाइन चीख़ी, "हे ईश्वर! हे ईश्वर!···"

होमगार्ड कहता गया, "यह तब पकड़ा गया जब यह नदी को पार करने की कोशिश कर रहा था और बयाने की रकम के साथ भागना चाह रहा था। हर कोई जानता है कि तुम इस पर पूरा भरोसा करती थीं। तुम्हारे दिल में इसके लिए एक ख़ास जगह भी थी। लेकिन हमें शक़ था, और हमारे जवानों ने इसका भेड़ियों की तरह पीछा किया।"

एक सिपाही ने गोसाइन के पाँवों पर एक थैली पटकी। थैली में से कितने ही सिक्के बाहर निकलकर बिखर गये। एक चमचमाती फुटी भी बाहर आ गिरी और उसके पैरों के पास आकर रुक गयी। वह फिर चिल्लायी, "हे भगवान! यह फुटी किसकी है?"

होमगार्ड का उत्तर था, "यह दुर्गा के गहनों में से ही है।"

भीड़ में से हर कोई आवाज़ें कसने लगा, "तो चोर महीधर है! इसी ने गहने चुराये।"

छोटी गोसाइन की आँखों के सामने धुन्ध छा गयी। ज़मीन पर पड़ा वह आदमी अब जाल में फँसे अजगर की तरह दिखाई दे रहा था। अरे, अरे, मेरी तकदीर फूटी! अभी! कुछ देर पहले ही तो मैं इसके साथ नील माधव के मन्दिर की ओर, सरसों के पीले फूलों से लदे पथ से जा रही थी। इसने अपना हाथ मेरी ओर बढ़ाया था और बोला था, "आओ, मेरा हाथ थामो, माँ! अगर तुम यहाँ इसी तरह चलती रहीं तो कण्टीली झाड़ियाँ तुम्हारे मांस का रेशा-रेशा कर देंगी। आओ, चली आओ!"

जिसके साथ उसने अपना बाकी का सारा जीवन बिता देने की सोची थी, उसी ने उसका सब कुछ उतार लिया और उसे नंगा छोड़ दिया। ओह! वह पड़ा है उसका प्यार, जाल में फँसे सर्प की तरह। सब कुछ ख़त्म हो गया। अब यह वह दुनिया नहीं रही। प्रेम, धर्म, त्याग··· सबका अन्त हो गया है। उसकी आँखों के सामने जो संसार था, वह भी लुप्त हो गया है।

ज़मीन पर पड़ा वह आदमी, भगत, होमगार्ड और भीड़ के वे लोग उसके चारों ओर घूमे जा रहे थे। वह वहीं बरामदे में गश खाकर लुढ़क पड़ी।

## तेरह

इन्द्रनाथ उद्विग्न मानसिक अवस्था में बैलगाड़ी के सामने खड़ा था। बैलगाड़ी पर बहुरंगी छाजन थी और उस पर लटकता परदा भी फूलदार था। खटियामारी के एक शिक्षक ने, जो वहाँ से अपनी साइकल पर गुज़र रहा था, उसे बताया कि कुछ राभा लोगों ने, जो इधर-उधर अपनी चीज़ें बेचते फिरते हैं, पागल हाथी को पास की एक बस्ती में देखा है।

इन्द्रनाथ का बराबर यही विचार रहा था कि यह पागल हाथी हमेशा के लिए जंगल में चला गया है और पश्चिमी तट के दूसरे पागल हाथियों की तरह अब लौटेगा नहीं। उसने यह कल्पना नहीं की थी कि अगर वह सत्र में लौटा तो उसे गोली मारने की भी नौबत आ सकती है, और ऐसी गम्भीर स्थिति का भी उसे सामना करना होगा।

ब्रायर लकड़ी से बनी अपनी पाइप पर कश लगाते हुए इन्द्रनाथ बरामदे में चक्कर लगा रहा था, लेकिन इसके साथ ही उसकी आँख सफ़र के लिए तैयार की जा रही बैलगाड़ी पर लगी हुई थी। दुर्गा उस दिन, थोड़ा ठहर कर, चिकारहाटी जाने वाली थी। वह स्वयं सारी तैयारी की देख-भाल कर रहा था, क्योंकि वह चाहता था कि इतने लम्बे सफर पर दुर्गा को ज़्यादा से ज़्यादा आराम मिले। दुर्गा को भेजने के विचार से ही उसका मन भारी हो रहा था और अब यह ख़बर पाकर कि पागल हाथी लौट भी सकता है, वह और भी परेशान हो रहा था। इसीलिए वह बरामदे में चक्कर पर चक्कर काटे जा रहा था।

बैलगाड़ी आख़िर तैयार हो गयी और उसे भीतर सहन में लाया गया। इन्द्रनाथ ने अब बरामदे के चक्कर काटने बन्द कर दिये और बरामदे के पास खड़ा हो गया। इस बीच सहन में कुछ भीड़ भी जुट आयी थी। इन्द्रनाथ को देखकर औरतों ने अपने सर गतालों से ढक लिये। उनकी बातचीत उसके कानों में स्पष्ट पड़ रही थी, "यह तो मरने के निकट है। इसका चेहरा नहीं देखा? कैसे एक बुढ़ायी हुई गिद्ध-का-सा हो रहा है! ···वह अपने दिवंगत पति की अस्थियाँ पवित्र नदी में प्रवाह नहीं कर सकी। इसीलिए वह इतनी दुबली हो गयी है! बिलकुल कंकाल-सी! इसका दुःख इसे खा गया है! ···सुनने में तो यह भी आ रहा है कि इसे वह नामुराद तपेदिक रोग भी है··· इन्द्रनाथ ने इसे गुवाहाटी के अस्पताल में दाखिल करवाने की बेहद कोशिश की, लेकिन इसने सुना ही नहीं और बरामदे में ज़िन्दा लाश की तरह पड़ी रही। ···ना ढंग से खाती थी, ना कहीं जाती थी।"

अधिकार महाप्रभु का आशीर्वाद लेकर दुर्गा पवित्र खड़ाऊँ कक्ष से बाहर आयी। उसके पाँव नंगे थे और अपने वक्ष के इर्द-गिर्द केवल अपनी मेखला लपेटे हुए थी। उसका सर एक सफ़ेद, बड़े सूती शॉल से ढका हुआ था। उसके पाँव डगमगा रहे थे और ऐसा लगता था जैसे कि वह काँप रही है। वह एक क्षण के लिए रुकी और चारों ओर देखने लगी। उसे गोसाइन बरामदे के एक खम्भे के निकट खड़ी दिखाई दी। वह बिना गताला के लाल रंग की मेखला पहने हुए थी। वह उसकी ओर कुछ देर तक देखती रही। उसकी आँखें आँसुओं से भर आयी थीं। वह गोसाइन के निकट गयी और झुककर उसके पाँवों को छुआ। गोसाइन के पाँव पर तब एक गरम-गरम आँसू गिरा। गोसाइन अपने आपको रोक न सकी। उसने दुर्गा को अपने सीने से लगाया और उसे अपनी भुजाओं में कस लिया। यह दृश्य देखकर वहाँ जितनी भी औरतें खड़ी थीं, विह्वल हो उठीं, और उनमें से कुछ ने रोना शुरू कर दिया।

इस पर गोसाइन बोली, "तुमने अपनी आँखों से ये संकट के दिन देखे हैं। इसलिए सारा इल्ज़ाम मुझ पर नहीं थोपना। तुम एक धार्मिक और ईश्वर से डरने वाली औरत हो। इसलिए तुम अपना दिल खोल सकती हो और सब कुछ समझ सकती हो।"

दुर्गा ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसे गिरिबाला की एक झलक दिखाई दी। वह बरामदे के एक खम्भे के पीछे अपना मुँह छिपाये हुए थी। वह उससे आँखें मिलाने से बचना चाहती थी। दुर्गा डगमगाते क़दमों से उसकी ओर गयी। गिरिबाला ने ज़ोर-ज़ोर से सिसकना शुरू कर दिया। दुर्गा बस इतना ही कह पायी, "हो सकता है हम फिर कभी न मिल पायें।"

दुर्गा की यह बात सुनकर गिरिबाला पूरी तरह से फूट पड़ी। वहाँ जमा हुई औरतें कह उठीं, "आह! ये दोनों साथ-साथ रहती थीं और साथ-साथ ही खाती थीं। कभी-कभी घर के बरतन भी साथ रहने से बज उठते हैं। ओह! कितने दुख की बात है। चिकारहाटी से इसे लेने कोई नहीं आया। इसीलिए इसके दुःख ने इसका यह हाल कर दिया है।"

इस बीच गुईमैनी हर किसी को ग़ौर से देख रही थी और अपनी तीखी आँखों से उनकी प्रतिक्रिया को भाँप रही थी। वह उन औरतों के साथ खड़ी थी जो चावल कूटने के लिए आयी थीं। वह उनसे बतियाते हुए बोली, "इन्द्रनाथ ने पूरी कोशिश की कि इसे गुवाहाटी के अस्पताल में ले जाये, लेकिन उसकी इसने चलने नहीं दी। यह बराबर इनकार करती रही। और तो और, यह चावल की भूसी के जलते ढेर के पास बैठ जाती और खाँसे जाती। अगर इसे मरना ही है तो हर किसी का यही विचार था कि अच्छा हो यह अपने स्वर्गीय पति के घर में मरे। स्त्री का धर्म यही कहता है।"

दूसरी औरतों ने इस पर अपने सर हिला दिये और बोलीं, "हाँ, हाँ! धार्मिक ग्रन्थों में यही लिखा है। इससे इसकी आत्मा को बहुत शान्ति मिलेगी!"

गुईमैनी बोली, "यह ज़्यादा दिन जीवित नहीं रहेगी। ज़रा देखो तो सही उसकी तरफ़। उसका पेट और कमर एक हो गये हैं। बड़ा गोसाईं भी इसी तरह सूख गया था और खाँसते-खाँसते उसने अपना दम तोड़ दिया था। बेचारा! और तो और, वह नासपीटा ब्राह्मण इसके ज़ेवर भी ले उड़ा। सत्यानाश हो उसका! शैतान कहीं का!"

दुर्गा अब बैलगाड़ी में बैठ गयी थी। उसकी ओर देखते हुए गोसाइन उससे कहना चाह रही थी, "जाओ दुर्गा, छोटी गोसाइन से भी मिल लो। यह तुम्हारे मुकद्दर का खेल था। उसे क्या दोष देना!" लेकिन ये शब्द उसके मुँह में ही रह गये। वह उन्हें मुँह से बाहर न निकाल सकी।

बैलगाड़ी आगे बढ़नी शुरू हो गयी थी। उसके पीछे-पीछे अपनी साइकल पर शम्भू अमीन जा रहा था।

कई लोग उसे विदाई देने के लिए बातघर में जमा थे। शायद इसके बाद वे दुर्गा को कभी देख न सकें। हो सकता है वह यहाँ इस सत्र में लौट भी न पाये। वहाँ मार्क भी एक अफ़ीमची के साथ खड़ा था। वह अफ़ीमची उसके मार्गदर्शन के कारण अपनी लत छोड़ चुका था। मार्क भी दुर्गा से दो-एक शब्द कहना चाहता था, लेकिन उसे इसके लिए अवसर ही नहीं मिला। उसने पहले ही बैलगाड़ी का पिछला परदा गिरा दिया था।

जैसे कि सब कुछ ख़त्म हो चुका था। जैसे कि तमाम मान-मर्यादा मिट्टी में मिल गयी थी। लेकिन यह मिट्टी कभी-कभी दुर्गा से बात भी करती थी, मानो कह रही हो, "हम आयेंगे और तुम्हें वापस ले जायेंगे। हमने यह तमाम ज़मीन और जायदाद तुम्हारे लिए रख छोड़ी है। इसे लो और खुशी-खुश रहो। जब वक़्त आयेगा तो इसे ज़रूरतमन्दों के बीच बाँट देना।"

नहीं, कोई नहीं आया, और कुछ भी नहीं घटा। वक़्त भी ख़त्म होता जा रहा था। उसे कोई शिकवा नहीं, किसी के प्रति कोई द्वेष नहीं···

बैलगाड़ी अब तेज़ चलने लगी थी। बैलों की गर्दन से बँधी घण्टियाँ हवा में संगीत का समाँ बाँध रही थीं। नंग-धड़ंग बच्चे, उनकी माताएँ और दूसरी औरतें भी

अपने-अपने बाड़ों के फाटकों तक आ गयी थीं और बैलगाड़ी को गुज़रते हुए देख रही थीं। वे कह रही थीं, "देखो, देखो, दुर्गा माईशाना जा रही है। वह बिलकुल अकेली है। कोई उसे लिवाने नहीं आया!"

"बेचारी! यह अब बचेगी नहीं। इसे तपेदिक है।"

"इसका सब कुछ चला गया है। इसका सोना, इसकी ज़मीन। यह अब अपनी सूखी हड्डियों को आराम देने के लिए चिकारहाटी जा रही है।"

"हर कोई कह रहा है कि हदबन्दी होने वाली है, हदबन्दी होने वाली है। गोसाईं लोग बड़ी जल्दबाज़ी में अपनी ज़मीन बेच रहे हैं। चिकारहाटी के गोसाईं ने भी इसी तरह दुर्गा की ज़मीन बेच डाली है।"

बैलगाड़ी कई तरह की आवाज़ें करती सड़क पर दौड़ रही थी। जैसे कि ये आवाज़ें दुर्गा के अपने भीतर गूँज रही थीं। बच्चे और औरतें कुछ दूर तक गाड़ी के पीछे-पीछे भागते रहे।

दुर्गा ने परदा उठाया और बाहर की ओर देखा। हर जगह हरियाली थी। हवा में हरे-हरे नारियल के पेड़ों के पत्ते लहलहा रहे थे। सुपारियों की बेलें पेड़ों के इर्द-गिर्द लिपटी हुई थीं और उस हरियाली को दोबाला कर रही थीं। हिजल के पेड़ों की हरियाली भी घनी होने के कारण कुछ काली-काली दिख रही थी। वह यह सब फिर कब देखेगी? शायद कभी नहीं। सब कुछ तो आकारहीन और धुँधला होता जा रहा है। वह फिर यह सब नहीं देख पायेगी।

अब सड़क पर हलकी-हलकी ढलान शुरू हो गयी थी। बैलगाड़ी की रफ्तार बढ़ गयी और इसके साथ ही बैलों के गले में बँधी घण्टियाँ और अधिक टनटनाने लगीं।

ढलान के ख़त्म होते ही गाड़ी एक ऐसे बिन्दु पर पहुँची जहाँ तीन सड़कें मिलती थीं। इस तिराहे पर, बरगद के पेड़ के नीचे, वही फटेहाल, विकृत आकृति वाला कोढ़ी बैठा था जिसे बिरादरी-बाहर कर दिया गया था। उसकी हालत अब पहले से बदतर थी। फिर भी वह अपनी आवाज़ को ऊँचा करके चिल्लाया, "तुम जा रही हो! जाओ, जाओ। कुछ घोड़ों पर जाते हैं, कुछ हाथियों पर, पर हर किसी को जाना पड़ता है!"

दुर्गा की आँखों से आँसू बहे जा रहे थे। उसे अपने शरीर में बेहद कमज़ोरी महसूस हो रही थी। बैलगाड़ी अब एक लम्बे-चौड़े मैदान में से गुज़र रही थी। यह मैदान जगलिया नदी के किनारे-किनारे था। बचपन में वह यहीं आती थी, महावत के साथ, श्वारी उत्सव को देखने के लिए। यहाँ दक्षिणी तट के अलग-अलग सत्रों के देवताओं को पालकी में लाया जाता था। यहीं उसने दो हाथियों को बाँसों से एक-दूसरे को खींचते हुए देखा था। जीतने वाले हाथी से अगर बाँस टूट जाता तो उसे शुभ माना जाता। इस बाँस से मछली पकड़ने का फंदा भी तैयार किया जाता था और लोगों की धारणा यह भी थी कि इससे ढेरों मछलियाँ पकड़ में आ जायेंगी। दुर्गा जब बच्ची ही थी और बिना गताला के घूमती-फिरती थी, तो ऐसे फंदे से पकड़ी गयी, शुभ समझी जाने वाली एक मछली को वह लालच में आकर खा गयी थी।

बैलगाड़ी ने फिर रफ़्तार पकड़ ली थी और सड़क पर आगे ही आगे बढ़े जा रही थी। एकाएक दुर्गा के कानों से एक बड़ी ही हृदय-विदारक आवाज़ आ टकरायी। उसने परदा उठाकर बाहर देखा। गिरिबाला ज़ोर-ज़ोर से रोती हुई दौड़ी चली आ रही थी और बैलगाड़ी को पकड़ने की कोशिश कर रही थी। इन्द्रनाथ भी उसके साथ था और उसका हाथ पकड़कर उसे वापस हवेली में ले जाना चाहता था। दुर्गा ने यह भी देखा कि बच्चों के एक झुण्ड ने गिरिबाला को घेर लिया है और चिल्ला-चिल्लाकर स्थिति को और भी बिगाड़ दिया है। वास्तव में गिरिबाला ने वहाँ एक तमाशा-सा खड़ा कर दिया था। क्या मार्क भी वहीं है? हाँ, वह है। ओह! वह तो रो-रोकर बावरी हुई जा रही है। दुर्गा भी अपने आँसू रोक नहीं पायी। उसने अपनी आँखें अपने गताला से पोंछी और सोचने लगी—कौन जाने दिल की किस कन्दरा में किसी के लिए स्नेह या प्यार दबा पड़ा रहता है और उसे इसकी ख़बर तक नहीं होती। फिर कैसे यह एकाएक अनपेक्षित क्षणों में बाहर आता है! इसका भी किसी को पता नहीं चलता।

बैलगाड़ी बराबर बढ़े जा रही थी। इसके पहिये वैसी ही कर्र-कर्र की आवाज़ पैदा कर रहे थे। फिर उसका सर घूमने लगा। उसे लगा जैसे कि उसके दिल में आग भड़की हुई है। आह! वह फिर कभी इस रास्ते से लौटेगी नहीं! वह जल्दी ही ख़त्म हो जायेगी! उसने अब खाँसना शुरू कर दिया था, और अपने मुँह को अपने गताला से कसकर ढाँप लिया था। वह अपनी खाँसी को दबाने की भरपूर कोशिश कर रही थी। उसकी आवाज़ गले में फँसी हुई थी। वह अपने मुँह पर गताला लगाये-लगाये ही बोली, "नहीं, नहीं, चलते रहो।"

घण्टियों की आवाज़ अब और साफ़ हो गयी थी। फिर धीरे-धीरे गाड़ी के पीछे-पीछे आने वाले लोग भी एक-एक करके लौटने लगे। दुर्गा ने परदे की एक सलवट में से झाँककर देखा—इन्द्रनाथ और शम्भू अमीन अब भी अपनी साइकलों पर उसके पीछे-पीछे आ रहे थे। उसने परदे को ज़ोर से एक तरफ़ किया और चिल्लाकर बोली, "वापस जाओ, इन्द्रनाथ, वापस जाओ। मेरा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ है। तुम माराभीटा वाली वह ज़मीन फिर वापस पा जाओगे। मुझे विश्वास है वह तुम्हारे लिए नासूर नहीं बनी रहेगी। तुम अपने परिवार की प्रतिष्ठा फिर लौटा लाओगे। याद रखना, अगर मैं मर गयी तो तुम ज़रूर आना और मेरा अन्तिम संस्कार करना।"

इन्द्रनाथ गाड़ी के और निकट हो गया और बोला, "तुम ठीक हो जाओगी। मेरी पूरी कोशिश थी कि मैं तुम्हें गुवाहाटी के अस्पताल में दिखा सकूँ। लेकिन मैं असफल रहा।"

दुर्गा फिर बोली, "तुम्हें अब वापस चले जाना चाहिए।"

"जब तुम ठीक हो जाओगी तब मैं तुम्हें दादा के श्राद्ध के लिए वापस लिवाने आऊँगा। यह मेरा वचन है।"

"जाओ, जाओ!"

बैलगाड़ी साल के घने जंगल में दाख़िल हो चुकी थी, और उसके पहिये वैसे ही कर्र-कर्र कर रहे थे। इन्द्रनाथ ने अपनी साइकल रोक ली और कुछ देर के लिए वहीं खड़ा रहा। फिर वह मुड़ा और साइकल पर सवार होकर उस रास्ते पर हो लिया जो जगलिया नदी की ओर जाता था। नदी के तट पर पहुँचकर वह साल के एक बड़े पेड़ के नीचे एक चट्टान पर बैठ गया। गाड़ी के पहियों की कर्र-कर्र की आवाज़ अब धीरे-धीरे दूर क्षितिज में ग़ायब होती जा रही थी। पीड़ा का तीर जैसे कि उसे बेंध गया। उसने अपने बायें हाथ की हथेली पर अपना माथा टिकाया और वहीं बैठा रहा। आख़िर, एक ठण्डे हाथ की छुअन ने उसे चौंकाया। उसने आँखें उठाकर ऊपर की ओर देखा। मार्क उसके सामने खड़ा था।

"उठो, इन्द्रनाथ! यह नियति बड़ी बलवान है। हम केवल इसके विरुद्ध संघर्ष कर सकते हैं। जो लोग अपनी भावना के स्तर से ऊपर नहीं उठ पाते, उन्हें अन्त में विषाद का सागर अपने साथ बहा ले जाता है।"

बिना अपने सर को घुमाये इन्द्रनाथ बोला, "मेरे प्यारे मार्क, तुमने उसके चेहरे पर ग़ौर किया?"

"हाँ, इन्द्रनाथ।"

"तुम्हारा क्या ख़याल है—क्या वह वाकई जाना चाहती थी?"

"तुम इसी पर अब क्यों सोचे जा रहे हो?"

"मैं नहीं जानता। मेरी आत्मा को एक प्रकार का शोक धीरे-धीरे खाये जा रहा है। मुझे ऐसे लगता है जैसे कि मेरे भीतर सब कुछ सुन्न पड़ गया है।"

मार्क के दिल से जैसे कि एक ख़ामोश-सी चीख़ निकली। लेकिन वह कुछ बोला नहीं। वे कुछ देर तक चुपचाप वैसे ही खड़ा रहे। हवा की स्तब्धता में वे जगलिया नदी की धारा की कल-कल की आवाज़ स्पष्ट सुन रहे थे।

इन्द्रनाथ ने अपनी पाइप निकाली, उसकी प्याली में भरे हुए तम्बाकू को तीली दिखायी और उस पर कश लेने लगा। फिर उसने मार्क की ओर देखा और बोला, "क्या तुमने अपना काम पूरा कर लिया है?"

"मुझे उस जर्मन साहिब के बारे में अभी कुछ सामग्री इकट्ठा करनी है। फिर मैं भोलागाँव जाऊँगा और वहाँ मुसलमानों के साथ रहूँगा। मैं अफ़ीमचियों के पुनर्वास शिविर में भी कुछ समय बिताऊँगा। लेकिन, इन्द्रनाथ···"

"तुम कुछ कहना चाहते हो? बोलो।"

"अगर गिरिबाला मेरे साथ काम करे··· तुम जानते ही हो··· तीन या चार पाण्डुलिपियों पर हमने अभी तक कोई काम नहीं किया··· तुम्हें कोई ऐतराज़ तो नहीं होगा? क्या तुम्हारे पिता मान जायेंगे?"

इन्द्रनाथ कुछ देर चुप रहा और अपनी पाइप पर कश लेता रहा, लेकिन साथ-साथ वह इस प्रश्न पर भी सोचता रहा।

"क्या ख़याल है तुम्हारा, इन्द्रनाथ?"

"उसकी ससुराल वाले उसे लिवाने आ रहे हैं। वे यहाँ उसके आचरण से खुश नहीं हैं। बंगरा का गोसाईं, तुम जानते ही हो, मार्क, कि वह बहुत ही संकीर्ण विचारों का है। फिर मान-मर्यादा का प्रश्न भी उठ खड़ा होता है। हम चाहते हैं कि जब उसका समय आये तो वह सम्मान के साथ इस दुनिया से जाये।"

एक क्षण के लिए तो मार्क जैसे कि गूँगा हो गया। वह वहाँ सन्न, निःशब्द खड़ा रहा।

इन्द्रनाथ बोला, "मैं जानता हूँ तुम्हारी भावनाओं को ठेस पहुँची है। लेकिन मेहरबानी करके मुझे भी समझने की कोशिश करो।"

"क्या उसके लिए किसी प्रकार की व्यवस्था कर पाना सम्भव नहीं ताकि उसका मन कभी ख़ाली न रहे? जैसे पढ़ना-लिखना। कोई ऐसा काम जिससे कि उसकी अपने जीवन पर पकड़ मज़बूत हो? उसकी उम्र ही अभी क्या है?"

इन्द्रनाथ ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसके पास कोई उत्तर था भी नहीं। उसके दाँतों ने उसकी पाइप को बुरी तरह भींच रखा था, यहाँ तक कि वे उसमें गड़े जा रहे थे।

मार्क ने अपने कंधे पर खादी का झोला मज़बूती से पकड़ रखा था। उसने कहना जारी रखा, "इन्द्रनाथ···!"

इन्द्रनाथ ने उसे बीच में ही टोक दिया और बोला, "मैं जानता हूँ तुम क्या कहने जा रहे हो! तुम्हारी भाषा में—हम उसकी क़ब्र खोद रहे हैं। यही कहना चाह रहे थे न तुम?"

इस पर मार्क चुप ही रहा।

"मार्क, तुम एक यायावर विद्वान हो। तुम ज्ञान की तलाश में भटकने वाले एक घुमंतू हो। जगलिया के तट पर तुम्हें ऐसे कई अनुभव हुए होंगे। गिरिबाला एक अनुभव-मात्र है। तुम यही मानकर चलो।"

मार्क ने उसे गहरी नज़रों से देखा। इससे इन्द्रनाथ ने बहुत छोटा महसूस किया। कई बातें थीं जो इन्द्रनाथ को पसन्द न थीं। वे उसकी बर्दाश्त के बाहर थीं, उसकी क्षमता के भी बाहर थीं। यह एक ऐसी पीड़ा थी जिसे उसे चुपचाप सहना था, जिसे वह दूसरों के साथ बाँट नहीं सकता था। ठीक उसी क्षण एक छोटी-सी रूपहली मछली, पानी में से कूदकर, एक अर्द्धवृत्ताकार-सा बनाती, एकाएक बाहर आयी और फिर पानी में ही ग़ायब हो गयी। कुछ मेंढक जो नदी के टूटे तट के किन्हीं हिस्सों में छिपे हुए थे, ढप की आवाज़ करते पानी में कूद गये।

मार्क उठकर खड़ा हो गया। उसके पुराने कैनवस के जूते, जो धूल से अटे पड़े थे, बुरी हालत में थे। उसकी पैण्ट भी पुरानी थी और कट-सी रही थी। इसी वजह से उसने पायंचों को घुटनों तक मोड़ रखा था। उसने आख़िर इन्द्रनाथ से विदा ली और सत्र की ओर बढ़ गया।

इन्द्रनाथ के मन को एक गहरी उदासी ने घेर लिया था। उसने अपनी पाइप फिर जलायी और उस पर कश लेने शुरू कर दिये। साल के लम्बे, काले साये अब जगलिया नदी के जल पर बिछने लगे थे। ऐसे लगने लगा था जैसे कि साल के वे पेड़ खुद ही नदी के आर-पार गिर पड़े हों। नदी अब अँधियारी, गहन और रहस्यमयी लगने लगी थी। वह स्थल अब बिलकुल सुनसान, निर्जन था। हर कहीं चुप्पी का साम्राज्य था। वे औरतें और युवतियाँ, जो अपने वक्ष के इर्द-गिर्द केवल मेखला लपेटकर, नदी तट के टूटे भागों में बैठकर अपने हाथों से ही मछलियाँ पकड़ती थीं, वे भी जा चुकी थीं।

उस चुप्पी को एकाएक एक लॉरी की आवाज़ ने तोड़ा। शायद वह लोहारघाट की ओर जा रही थी। सड़क उस समय ठीक ही थी। उस पर बारिश या बाढ़ के कारण होने वाली दलदल या कीचड़ नहीं था। इसलिए गाड़ियों को खींचने के लिए हाथियों की भी ज़रूरत नहीं पड़ती थी।

जैसे-जैसे वह गाड़ी इन्द्रनाथ के निकट आयी, उसके इंजन की आवाज़ ऊँची और स्पष्ट होती गयी। अब इन्द्रनाथ को अपनी ग़लती का अहसास हुआ। वह, दरअसल, लॉरी के इंजन की आवाज़ नहीं थी, जीप के इंजन की आवाज़ थी, जो उसकी ओर चली आ रही थी। उसका दिल चलते-चलते जैसे कि रुका। एक अनचीन्हे भय ने उसे अपनी गिरफ़्त में ले लिया। अगर इस जीप में वे शिकारी हुए जिन्हें जगन्नाथ (हाथी) को गोली मार देने का आदेश मिला है। तब? उसे लगा जैसे कि उसका दिल धड़क तो रहा है, लेकिन थोड़ा पीड़ाते हुए। जीप के इंजन की आवाज़ अब और ऊँची हो गयी थी और कान फाड़ रही थी। जिस चट्टान पर अभी कुछ ही देर पहले वह सन्नाटे से घिरा बैठा था, वह उसी पर उठकर खड़ा हो गया। अब यह सन्नाटा जीप की गर्जन और फड़-फड़ से भंग हो रहा था। ऐसे लगता था जैसे कि युद्ध के घोड़े उसकी ओर सरपट दौड़े चले आ रहे हों, और उनके नाल भूमि को गुँजा रहे हों। इन्द्रनाथ की आँखों के सामने सरकारी घोषणा-पत्र के शुष्क, निर्वैयक्तिक शब्द नाचने लगे, "···के क्षेत्रों में एक दुष्ट, लम्बे दाँतों वाले हाथी को नष्ट करने की घोषणा। एक लम्बे दाँतों वाले हाथी, जिसका आकार-प्रकार निम्नांकित वर्णन के अनुसार है, मानव जीवन के लिए खतरा बन गया है। वह··· की मृत्यु का कारण बना है। उक्त हाथी को 'दुष्ट' करार दिया जा रहा है और वन्य जीवन (सुरक्षा) अधिनियम··· की धारा ···के अन्तर्गत उसके शिकार की अनुमति प्रदान की जा रही है। उक्त ख़तरनाक हाथी के ख़त्म करने के एवज़ में सरकार को कोई रॉयल्टी देय नहीं होगी। केवल बन्दूक़ के लाइसेंसधारियों को और जिनके पास 400 बोर या उससे अधिक की राइफल है ··· घोषित 'दुष्ट' हाथी का विवरण : नर या मादा, बंध, नाखून, पूँछ, क़द··· पैर का घेरा···"

इन्द्रनाथ को लगा जैसे कि उसे हलके चक्कर आ रहे हैं। वह जानता था कि उन्मत्त हाथी का नष्ट किया जाना अनिवार्य है। वह इसके लिए तैयार भी था। लेकिन

अब जबकि निर्णय की घड़ी आ पहुँची है, वह अपने पर से नियन्त्रण क्यों खोता जा रहा है?

जीप तिराहे पर आकर रुकी। एक मोटा-सा व्यक्ति, जिसकी मूँछें बड़ी थीं और जो ढीली-ढाली खाकी हाफ-पैण्ट और मोटे तले के जूते पहने हुए था, गाड़ी से उतरा। उसने जेब से रूमाल निकाला, चेहरे और हाथ-पाँव पर पड़ी धूल को पोंछा और फिर इन्द्रनाथ की ओर निगाह उठायी। कुछ देर तक वह चुपचाप खड़ा रहा। जैसे कि उसे कुछ हैरानी हुई हो, और फिर उसे घूरने लगा। आख़िर, वह अपने स्वर में कोमलता लाकर बोला, "क्या यह छोटे गोसाईं हैं? इस निर्जन जगह पर आप अकेले कैसे खड़े हैं? क्या आप नदी से मछली पकड़ रहे हैं? मैं वार्डन बाबू हूँ। हम हाथियों के डिपो पर कई बार मिल चुके हैं।"

इन्द्रनाथ बिलकुल बुत बना हुआ था। उसमें कोई हरकत न थी। मोटा व्यक्ति कहता गया, "हम आपकी हवेली पर जा रहे हैं। हमें मनियारी-किनियारी पर पता चला कि गोसाईं अपने अनुयायियों से मिलने गये हैं। इसलिए हमने सोचा कि घोषणा वाला कागज़ आपको सौंप दें। आप गोसाईं की ओर से उस पर हस्ताक्षर कर दीजिए। कुछ और काग़ज़ात भी हैं। गोसाईं की अनुपस्थिति में आप उन्हें भी निपटा सकते हैं।"

फिर थोड़ा-सा बनते हुए वह बोला, "मेरे सुनने में यह भी आया है कि··· हाँ, हाँ··· आपका अपने बचपन में इस हाथी के साथ विचित्र सम्बन्ध था। क्या यह सच है?"

इन्द्रनाथ फिर भी चुप रहा।

"हम अजीबोगरीब क़िस्से सुन रहे हैं। इस हाथी के उन्मत्त हो जाने के बाद भी आपका इससे आमना-सामना हुआ। क्या यह ठीक है?"

इस बार भी इन्द्रनाथ ने कोई उत्तर नहीं दिया। मोटे व्यक्ति को इस चुप्पी से कुछ-कुछ परेशानी होने लगी।

"ठीक है, छोटे गोसाईं। अब हम असली मुद्दे पर आते हैं। इस हाथी के दायें पाँव का घेरा? कृपया यह काग़ज़ देखिए। क्या यह पैमाइश ठीक है? हमें इसे लेकर कुछ दुविधा हो रही है।"

इन्द्रनाथ की चुप्पी बरकरार रही। मोटा वार्डन बाबू कुछ-कुछ अपना विश्वास खोने लगा। उसने अपना रूमाल निकाला और अपने माथे को पोंछना शुरू कर दिया।

"लगता है आप बहुत ज़्यादा चिन्तित हैं। हम आपकी चिन्ता का कारण समझ रहे हैं। भिखारू गोसाईं के साथ भी ऐसा ही हुआ था। उसका हाथी, ऐरावत, भी पागल हो गया था। वह नहीं चाहता था कि उसे गोली मारकर ख़त्म किया जाये। इस दौरान उस हाथी ने तीन व्यक्तियों की जान ले ली थी। गाँव के तमाम लोग उसके ख़िलाफ़ हो गये थे और उसे काग़ज़ात पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया गया था।"

इन्द्रनाथ से अब रहा नहीं गया। वह फट-सा पड़ा, "हाँ, हाँ, मैंने इसके बारे में सब सुन रखा है।"

"बेशक, आपने ज़रूर सुना होगा। जगलिया नदी के तट पर हर किसी की यह ज़बान पर है। यह भी सब जानते हैं कि ऐरावत को नष्ट करने के बाद जल्द ही गोसाईं का दिमाग़ फिर गया। लगभग छः महीनों तक वह किसी से नहीं बोला।"

इन्द्रनाथ का धैर्य जैसे कि जाता रहा था। उसने वार्डन की बात को एकदम काट दिया और बोला, "ठीक है, ठीक है। काफ़ी हो लिया। बताओ मुझे कहाँ हस्ताक्षर करने हैं।"

"हमें वाकई बहुत दुःख है। जब हमने सुना कि उन्मत्त हाथी जीरंग के घने जंगल में चला गया है, तो हमने राहत की साँस ली। हमारा ख़याल था कि वह लौटकर नहीं आयेगा। और जब हमारे कानों में यह ख़बर पड़ी कि आप जमालुद्दीन की लाश के साथ आधी रात के वक़्त उसके गाँव, भोलागाँव, गये थे और आपने उन्मत्त हाथी की रत्ती-भर परवाह नहीं की थी, तो हम आपकी प्रशंसा किये बिना न रह सके। आप तो जगलिया के तट पर रहने वाले लोगों के लिए अपनी तरह का उदाहरण बन चुके हैं।"

इन्द्रनाथ का धैर्य और भी जाता रहा। वह बौखलाया-सा बोला, "चलो, चलो। बताओ मुझे कहाँ हस्ताक्षर करने हैं।"

वार्डन से जितनी जल्दी बन पड़ा, वह जीप की ओर बढ़ा और वहाँ से एक फाइल ले आया। जगलिया के किनारे, चट्टान पर खड़े-खड़े ही, इन्द्रनाथ ने कागज़ात को सरसरी तौर से भी देखे बिना उन पर हस्ताक्षर कर दिये। उस दस्तावेज़ के शब्दों को पढ़ने की वह हिम्मत जुटा नहीं पा रहा था।

वार्डन बोला, "पहले हमने सोचा कि बिना लम्बे दाँत वाला बूढ़ा हाथी उन्मत्त हो गया है। लेकिन बाद में हमें किसी से पता चला कि यह तो आपका प्रिय हाथी, जगन्नाथ है। छोटे गोसाईं, हम आपकी पीड़ा को समझ रहे हैं। हाथी के नष्ट हो जाने के बाद आप उसके लम्बे दाँत अपने पास रख सकते हैं, हालाँकि आमतौर पर उन्हें शिकारी की सम्पत्ति माना जाता है। शिकारी की व्यवस्था हो चुकी है। उसने 400 बोर की राइफल भी जुटा ली है। वह रहा, वह, जीप में। यह वही व्यक्ति है जिसने भिखारू गोसाईं के उन्मत्त हाथी, ऐरावत, को ख़त्म किया था। क्या आप उससे बात करना चाहेंगे?"

इन्द्रनाथ ने इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया।

"भिखारू गोसाईं ने हमें हाथी को ख़त्म करने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये थे। मेरा ख़याल है आप जानते ही हैं कि हाथियों के बारे में उसकी अच्छी जानकारी और अनुभव है। जैसे—उसके किस स्थल पर गोली मारी जाये ताकि उसे कम-से-कम कष्ट हो, इत्यादि। हाँ, छोटे गोसाईं, अगर आपका भी कोई सुझाव हो तो ··· यद्यपि हमारे अपने नियम हैं। लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आपके सुझावों पर भी भरसक अमल होगा।"

इन्द्रनाथ ने अपना सर उठाया और वार्डन की ओर देखा। लेकिन उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। फिर थोड़ी देर बाद वार्डन ने थोड़ा झिझकते हुए अपने

कन्धे उचकाये और अपनी बगल में फाइल को दबाकर जीप में उछलकर जा बैठा। लेकिन जीप के चलने से पहले उसने इन्द्रनाथ को सम्बोधित करते हुए कहा, "असम के गजट में, कमिश्नर साहब और सेक्रेटरी साहब के पास, इस घोषणा की कॉपी पहुँच चुकी है। हमने सुना है कि जिस खेत में आप हाथी बाँधते थे, वहाँ दूसरे गोसाइयों के हाथी जीरंग के जंगल में लकड़ी के लट्ठे लाने के लिए जाने से पहले विश्राम करते थे। उस खेत में हमेशा हाथियों की गहमा-गहमी रहती थी। दायें पैर की पैमाइश के बारे में अब भी कुछ सन्देह है। घोषणा-पत्र में साफ़ कहा गया है कि इस विवरण वाले किसी और हाथी को मारा न जाये। इसलिए मेरी राय में अच्छा यही होगा कि जिस समय आपके हाथी को गोली मारी जाये, आप उस समय वहीं रहें। आप ठीक से सुन तो रहे हैं न, छोटे गोसाईं? जैसे ही तैयारी पूरी हो जायेगी, आपको सूचित कर दिया जायेगा। दुष्ट हाथी ज़्यादातर माटियापहाड़ और खेतों के बीच घूमता रहता है। पिछले दो-तीन दिन से उसने सत्र में जाना बन्द कर दिया है। लेकिन एक बार अगर उसने फिर किसी खेत में पाँव रखा तो देखते ही देखते वह खेत ख़त्म हो जायेगा। छोटे गोसाईं, आप एक समझदार व्यक्ति हैं। हर कोई इस तट पर यह बात समझता है। आप अपनी भावनाओं पर कृपया पत्थर रखें।"

इन्द्रनाथ की चुप्पी कायम रही। लेकिन जैसे ही जीप रवाना हुई, वैसे ही नुकीले नाक-नक्श वाले शिकारी ने चिल्लाकर कहा, "रुकिए! रुकिए! छोटे गोसाईं, अच्छा हो चलने से पहले हम आपस में हाथीदाँत के बारे में बात कर लें। अगर आपको नागवार न गुज़रे तो एक दाँत मुझे मिलना चाहिए। अगर यह पागल हाथी जंगली हाथी होता, तो मैं दोनों दाँतों का हक़दार होता। सरकार के नियमों में इसका प्रावधान है।"

इस बार भी इन्द्रनाथ ने अपने मुँह से कोई शब्द नहीं निकाला। तब वार्डन बोला, "अगर हमसे कोई ग़लती हुई हो तो कृपया हमें क्षमा करें। हमने केवल अपना फ़र्ज़ निभाया है। कृपया तैयार रहें। जब जीप लौटेगी, तब आपको ज़रूर पता चल जायेगा···"

वार्डन ने अब गाड़ी को गियर में डाला, एक्सलेटर पर अपना पाँव दबाया और गाड़ी घरघराती हुई सड़क पर जा पहुँची। जैसे कि युद्ध के घोड़ों की नालें गर्जना कर रही हों। जीप आँख से ओझल हो गयी।

इन्द्रनाथ बिना हिले-डुले, वैसे ही चट्टान पर एक घायल व्यक्ति की तरह बैठा रहा और सोचता रहा। हर चीज़ का अन्त होना है। यहाँ कुछ भी स्थायी नहीं है। केवल शून्य ही बचा रहता है। आँख झपकते ही हमारे मन में प्रेम और पीड़ा की गाँठें खुल जाती हैं और फिर सब कुछ ख़त्म हो जाता है। कुछ नहीं बचता।

इन्द्रनाथ के मन में एक-एक करके वे सभी चेहरे उभरने लगे जो उसकी हृतन्त्रियों से बँधे हुए थे, और फिर वे ग़ायब भी होते रहे··· दुर्गा, गिरिबाला, उसकी माँ गोसाइन, उसके पिता अधिकार, और वे सब जो उसे चाहते थे और उसमें निष्ठा

रखते थे, सत्र के लोग··· और यह हाथी, जगन्नाथ, जिसके साथ उसने अपना बचपन बिताया था। सभी उसके शरीर के अदृश्य अंगों के समान थे। आह! यह पीड़ा! इन्द्रनाथ ने अपनी कमीज़ को सामने से अपनी मुट्ठी में कस लिया और अपने दिल पर उसकी दाब दी··· वह चट्टान पर खड़ा हो गया और चारों ओर देखने लगा। उसे हर कहीं एक प्रकार की संज्ञा-शून्यता का एहसास हुआ। उसकी दृष्टि में भगवती के घर की छाजन वाली छत पड़ी। ईलीमन वहीं रहती है। शायद एक दिन वह उसके जीवन का अंग बन जाये। अब गड़बड़ कहाँ है? किसी प्रकार का भी उसमें उत्साह क्यों नहीं? अभी कुछ दिन पहले ही तो वह घर, वह सहन, उसके लिए प्रेरणा का स्रोत हो रहा था। उसे ईलीमन का साया हर कहीं दिखाई दे रहा था। वह जानता है कि शुद्ध प्रेम प्रेरणा का कितना बड़ा स्रोत है! लेकिन इस क्षण वह बिलकुल सूख गया है। सब कुछ ख़त्म हुआ दिखता है, और उसकी पहुँच से परे है। उसका मन अकाल से पपड़ी हुई और तड़की भूमि के समान हो रहा है।

उसने अब अपनी पाइप निकाली। एकाएक उसे जगलिया नदी की ओर से सड़क पर आती एक बैलगाड़ी की छाजन दीख पड़ी। जैसे ही गाड़ी निकट आयी, उसने देखा कि वह दही से भरे मिट्टी के बरतनों, कटहल और गन्ने की फांदियों से लदी हुई है। उसमें कुछ बंधुवे भी बैठे हुए थे वे दही के बरतनों को थामे हुए थे। उनके बदन नंगे थे, सिवाय एक गन्दी धोती के जो उनकी कमर पर लिपटी हुई थी, और एक गमछे के जो उनके सर पर बँधा था।

इन्द्रनाथ के पास पहुँचकर गाड़ी वहीं रुक गयी। उसमें से भगवती पुजारी कूदा और दौड़ता हुआ उसकी ओर आया। वह काफ़ी मोटा था। वह धोती पहने हुए था। धोती उसके घुटनों तक पहुँच रही थी। इसके अलावा एक साफ़-सुथरी चादर उसके कन्धों से लटक रही थी। चादर से अपनी गंजी चाँद को पोंछते हुए भगवती हाँफता हुआ बोला, "मुझसे जितनी जल्दी बन सका, मैं आया हूँ। उसी दुष्ट हाथी के कारण। इन्द्रनाथ, इस सत्र पर अशुभ ग्रह का साया है। शायद कुछ दुष्ट् नक्षत्र उच्च स्थिति में जा रहे हैं। मुझे ग्रन्थों को देखना होगा। हो सकता है तुम्हें कुछ पाठ-पूजा करवानी पड़े। तुम्हारा हाथी तो इस सत्र के ताज के समान था। देखो, उसकी क्या हालत हुई है!"

इन्द्रनाथ पहले की तरह ही चुप रहा।

"उस दिन, आधी रात के वक़्त, तुम उस मुसलमान, जमालुद्दीन की लाश को लेकर भोलागाँव गये थे। शायद तुमने लाश ख़ुद नहीं उठायी थी। फिर भी तुम्हें अपने को शुद्ध करने के लिए चौहरा प्रायश्चित्त करना होगा। मैं गोसाईं का इन्तज़ार कर रहा हूँ कि वह अपने दौरे से लौट आये। उस रात तुमने जो कुछ किया, वह असाधारण था। कुछ ने तुम्हारी इसके लिए प्रशंसा भी की है, लेकिन दो-तीन गोसाइयों ने तुम्हें भद्दी और गन्दी से गन्दी गाली भी दी। आख़िर, वह एक मुसलमान की लाश थी, इन्द्रनाथ!"

अब भी इन्द्रनाथ चुप ही रहा और उसने अपना मुँह नदी की ओर मोड़ लिया। बैलगाड़ी ने फिर चलना शुरू कर दिया। लेकिन भगवती ने ताली पीटकर गाड़ीवान को रुकने का इशारा किया।

बंधुवे बैलगाड़ी के भीतर से ही चिल्लाये, "कृपया जल्दी करें। जल्दी करें! पागल हाथी कभी भी आ सकता है··· कभी भी!"

नदी से जो हवा आ रही थी, वह बहुत तेज़ थी और भगवती के मोटे बदन को ढकने वाली चादर को उठाये लिये जा रही थी। इससे उसकी छाती और कंधे नंगे हो रहे थे, और उसके जनेऊ से जो सोने की अँगूठियाँ बँधी थीं, वे सूरज की रोशनी में चमचमा रही थीं।

"इन्द्रनाथ, आज कोजागर कुमुदी लक्ष्मी पूर्णिमा[1] है। इस शुभ दिन पर अगर तुम इन्द्र और उसके दैवी गज, ऐरावत, की पूजा करते हो तो देवी लक्ष्मी हमेशा तुम्हारे घर में निवास करेंगी। लेकिन अफ़सोस। तुम्हारा अपना ऐरावत पागल हो गया है और उसे गोली मारनी पड़ेगी। शायद आज की रात ही! कैसा दुर्भाग्य है यह! कैसी विपदा की घड़ी आ पड़ी है।"

गाड़ीवान और बंधुवे ने फिर गाड़ी में से शोर मचाना शुरू कर दिया, "हे ईश्वर! आइए! पागल हाथी आ रहा है। गोसाईं को भी अपने साथ ले आइए! देर मत कीजिए!"

भगवती ने अपना हाथ हिलाकर इशारा किया कि वे इन्तज़ार करें। वह इन्द्रनाथ की ओर मुड़ा, लेकिन इन्द्रनाथ ने वहाँ से हटने का कोई संकेत नहीं दिया।

"इन्द्रनाथ, तुम्हारे मन की हालत भी वैसी ही हो रही है जैसी कि भिखारू गोसाईं की थी। वह भी नहीं चाहता था कि उसके हाथी को गोली मारी जाये। वह तभी माना, जब लोगों ने उसे धमकी दी कि वे उसे पीट डालेंगे। मिलरॉय और बोर नाम के दो अंग्रेज वन-अधिकारियों ने भी उसे दिलासा दिया। तुम जानते ही हो कि भिखारू गोसाईं उनकी बहुत इज्ज़त करता था। उन्होंने उसे अपने हाथियों को चराने सम्बन्धी टैक्स की अदायगी से भी मुक्त कर दिया था। इन्द्रनाथ, तुम्हारी हालत भी उसी भिखारू गोसाईं की तरह हो जायेगी। लोग तुम्हारे ख़िलाफ़ हो जायेंगे। और वे जो लाल झण्डे लेकर तुम्हारी ज़मीन पर धरना दिये बैठे हैं, वे तो पहले से ही नारे लगाा रहे हैं कि गोसाईं, आओ और अपनी भूमि पर हल चलाओ।··· मैं उन्हें श्राप देता हूँ—कि उनके वंश का सत्यानाश हो!"

इन्द्रनाथ ने अब अपनी लम्बी चुप्पी को तोड़ा और बोला, "मैंने अपनी रज़ामन्दी दे दी है। किसी समय भी माटियापहाड़ से हाथी उतर सकता है। उसे गोली मार दी जायेगी···"

पुजारी चीख़ उठा, "वह पागल हाथी है। वह इधर भी आ सकता है। इसलिए चलो, चलो, घर चलो!"

इन्द्रनाथ ने अपना सर हिलाया और बोला, "वे आयेंगे और मुझे अपनी जीप में ले जायेंगे। वे चाहते हैं कि जब हाथी को गोली मारी जाये, उस समय मैं वहीं रहूँ। दूसरे, उन्हें हाथी के दायें पैर के घेरे के बारे में कुछ सन्देह है।"

एक क्षण के लिए इन्द्रनाथ फिर अपने ख़यालों में खो गया। उसके भीतर घोषणा पत्र में दिया गया हाथी का विवरण घूम रहा था :

| | |
|---|---|
| नर/मादा | मखाना |
| पूँछ | पूरी |
| नाखून | सोलह |
| ऊँचाई | 9 फुट, 6 इंच |
| दायें पाँव के पदचिह्न का घेरा | चार फुट, 9 इंच |

पुजारी उसे गौर से देखता रहा और बोला, "अरे इन्द्रनाथ, अपने गले में कोई अच्छा नग पहन लो। इस वर्ष तुम्हें अपने ग्रहों की पूजा के बारे में ख़ास ध्यान देना होगा। तुम्हारा परिवार ब्राह्मणों को दान देने के मामले में बहुत मशहूर है। जब यह हाथी मर जाये, तो मुझे इसका एक दाँत दे देना। भूमि का दान भी तुम्हारे लिए नितान्त आवश्यक है। तुम्हारे दादा के श्राद्ध के समय मुझे जो भूमि दान में मिली थी, वह मुझे बेचनी पड़ गयी।"

इन्द्रनाथ को अच्छी तरह याद था कि वह भूमि बेचकर पुजारी ने बंगरा के निकट एक बहुत बढ़िया भूखण्ड खरीदा था। उसे यह भी याद था कि पुजारी ने भेंट में मिली तरह-तरह की चीज़ों को दूसरे ब्राह्मणों को बेचने या उनसे अदला-बदली करने के लिए कितने ज़ोर-ज़ोर से सौदेबाज़ी की थी। उस समय ज़बर्दस्त झगड़ा भी हुआ था जो उसके मन से मिटा नहीं था। इसके बाद जो खींचातानी हुई, उससे पुजारी के माथे पर चोट भी आ गयी थी और उस चोट का निशान अब तक बरकरार था।

इन्द्रनाथ का चेहरा तन गया। लेकिन भगवती आसानी से दबने वाला नहीं था। उसने बड़ा ठण्डा भाव दिखाते हुए विश्वसनीय ढंग से कहा, "यह एक सार्वभौम सत्य है कि पूजा-अर्चना और कर्मकाण्ड से बुरे नक्षत्र और दुष्ट आत्माएँ दूर रहती हैं। तुम्हें उकियम के गोसाईं की याद है? वह जीरंग के जंगल में दाख़िल हुआ था और वहाँ से ग़ायब हो गया था। कुछ का कहना था कि उसे जंगली सूअर ने मार डाला और कुछ का कहना था कि उसे शेर खा गया। उसकी लाश का कहीं पता ही नहीं चला। इस वजह से उसका अन्तिम संस्कार हो ही नहीं सका। गोसाइन लगभग पागल ही हो गयी। उसने अपना दुबला-पतला घोड़ा मेरे लिए भेजा। मैंने व्यवहार दर्पण[2] अध्ययन किया और उसे निम्नलिखित निर्देश दिये–

आदमी की शक्ल का तिनकों का एक पुतला बनाओ। उसके सर पर पलाश के चालीस पत्ते चिपकाओ, और गर्दन पर दस पत्ते। पेट पर बीस पत्ते। बाजुओं पर सौ पत्ते। अंतड़ियों में छः पत्ते, जंघाओं में एक सौ तीस पत्ते। घुटनों में दस पत्ते,

गुह्यस्थलों में तीन पत्ते, पाँवों की उँगलियों में सौ पत्ते। फिर पुतले के शरीर पर तागे में पिरोये साठ पत्तों का एक हार। फिर उस पर चावल के चूरे से पूरी तरह लेप··· यह सब करने से ही गोसाईं का अन्तिम संस्कार पूरा हुआ। गोसाइन ने स्वच्छ मटके में उस पुतले की भस्मी को इकट्ठा किया और मुझे छः बीघा ज़मीन दान में दी। उसी दिन से उसके वे बुरे दिन टलने लगे और वह फिर से पहले जैसी हो गयी।"

पुजारी अपनी बात कह लेने के बाद इन्द्रनाथ की ओर देखने लगा। लेकिन इन्द्रनाथ तो एक शब्द भी नहीं बोला। पुजारी कहता गया, "इन्द्रनाथ, तुम्हें ग्रहों का भी शमन करना होगा। मुझे उम्मीद है आज हाथी को गोली मार दी जायेगी। कल से सूर्योदय से ठीक पहले एक ऐसी शुभ घड़ी आयेगी। संसार में तब अभी अँधेरा ही होगा। लेकिन चाहे वहाँ झील है या तालाब या नदी, उसका पानी स्वच्छ और पवित्र होगा। जनती संन्यासी[3] इसी शुभ घड़ी में स्नान करते हैं। इसी शुभ घड़ी में तुम कल मुझे हाथी का एक दाँत दे देना। मुझे विश्वास है लाश को चीरने-फाड़ने का काम रातोंरात पूरा हो जायेगा। तुम ऐसी शुभ घड़ी में एक ब्राह्मण को दान दो।"

इन्द्रनाथ से अब रहा नहीं गया। वह चिल्ला पड़ा, "बापू, कृपा करके मुझे कुछ समय के लिए अकेला छोड़ दो।"

गाड़ीवान की घबराहट बहुत बढ़ चुकी थी। उसने गाड़ी से ही पुकार कर कहा, "हमारे पेट में चूहे कूद रहे हैं। हमने सुबह चलने से पहले थोड़ा-सा बासी भात ही खाया था। अब ज़्यादा देर मत कीजिए। किसी समय भी पागल हाथी आ सकता है। अरे बापू, आ जाओ, आ जाओ अब।"

भगवती ने इन्द्रनाथ की ओर बड़े विचित्र ढंग से देखा, और जल्दी ही उसका देखने का यह ढंग गहरी वितृष्णा में बदल गया। वह एकाएक मुड़ा और तेज़ क़दमों से गाड़ी की ओर बढ़ गया। गाड़ीवान ने अपना चाबुक फटकारा और गाड़ी कर्र-कर्र की आवाज़ से सत्र की ओर बढ़ने लगी।

इन्द्रनाथ की आँखों के सामने दुर्गा का चेहरा फिर उभरने लगा। जब उसे गुवाहाटी के अस्पताल ले जाने की बात उठी थी, तो उसने प्रतिरोध करते हुए चीख़कर कहा था, "नहीं, नहीं, मुझे अस्पताल जाने की ज़रूरत नहीं! मैं अपने पति के घर जाना चाहती हूँ और वहीं मरना चाहती हूँ। मुझे चिकारहाटी ले चलो।"

दुर्गा इस हाथी को बहुत चाहती थी। वह उसे अपने हाथों से, बड़े प्यार से बाँस की डलिया में चावल खिलाया करती थी। इस दृश्य के अलावा और भी कई दृश्य और यादें इन्द्रनाथ के मन में ताज़ा हो उठीं और उसके भीतर चक्कर काटने लगीं।

शायद वह अब तक चिकारहाटी पहुँच भी गयी हो। दुष्ट हाथी के डर से गाड़ीवान ने गाड़ी बहुत तेज़ चलायी होगी।

जिस चट्टान पर वह अब खड़ा था, उसी के पास से गिरिबाला और दूसरी ब्राह्मण स्त्रियाँ किन्हीं शुभ अवसरों पर जगलिया से पानी भरने के लिए निकलती थीं।

ब्राह्मण स्त्रियों के उस जुलूस को ताक-झाँक करने वालों की दृष्टि से बचाने के लिए कपड़े की एक दीवार खड़ी कर दी जाती थी, और पाँच बंधुवे उस कपड़े को थामे रहते थे। गिरिबाला क्योंकि काफ़ी लम्बी थी, इसलिए उसका सर कपड़े से ऊपर रहता था। वह अपने बाजू पर सिन्दूर और हल्दी लगे तथा आम के पत्तों से ढके शुभ घड़े को लिये रहती। उस समय तक उसके पति का देहान्त नहीं हुआ था। इसलिए उसके माथे पर एक बड़ी-सी सिन्दूर की बिन्दी भी रहती। ओह! कौन जानता है? इन्द्रनाथ उसे फिर देख भी पायेगा कि नहीं? उसके नासापुट फड़कने लगे। उसने अपना रूमाल निकाला और अपने माथे को पोंछा। वह बेचैन हो रहा था। बार-बार उसकी आँखें सड़क की तरफ़ जातीं। किसी समय भी उसे लिवाने के लिए जीप आ सकती थी। उस जीप में लोहे की कई ज़ंजीरें थीं जो अपनी तरह की आवाज़ पैदा कर रही थीं। अभी तक वह आयी क्यों नहीं है? क्या उसे अब भी उम्मीद करनी चाहिए?

कुछ दूरी पर कुछ पानी के गड्ढे थे। अब यह पानी खड़ा था और इसमें मछलियाँ नहीं थीं। सत्र के गाँव वालों ने, इसमें जो थोड़ी-बहुत मछलियाँ रही होंगी, पकड़ ली होंगी और चलते बने होंगे। अब तो इस पानी की सतह पर कुछ सूखी, कंटीली झाड़ियाँ और सूखी घास के डण्ठलों का जाल-सा बना हुआ था, जैसे कि किसी ने किसी गाय के कंकाल की पीली पड़ती पसलियों का ढेर लगा दिया हो। इन्द्रनाथ ने पास के एक बड़े हिजल पेड़ की ओर देखा। यह बिलकुल नंगा हो रहा था। इस पर कोई पत्ता नहीं था। चारों तरफ़ एक अजीब तरह का वीराना था, जैसे कि यहाँ कभी अकाल पड़ा हो।

एकाएक इन्द्रनाथ को अपनी माँ का ख़याल आया। वह तो बहुत घबरायी हुई होगी। उसे जल्दी से घर पहुँचना चाहिए। लेकिन उसकी टाँगें चल नहीं रही थीं। वह उस स्थल से ऐसे ही बँध गया था जैसे कि वह कोढ़ी, जो चौराहे के पास बरगद के पेड़ के नीचे बैठा रहता था। हाँ, इस कोढ़ी ने जो कभी किसी महावत का सहायक था, उसे कुछ ही दिन पहले बताया था कि दुष्ट हाथी बरगद के पेड़ तक आया था और अपना माथा उसके तने से रगड़ता रहा था, लेकिन उसने उस पर हमला नहीं किया था। कोढ़ी का कहना था, "यही बात आपके साथ हुई थी। हुई थी न? हाथी ने केवल अपनी सूँड ऊपर उठायी थी और आपको कुछ नहीं कहा था। आख़िर आप गोसाईं हैं। एक बार, बहुत पहले, मैं आपके साथ इसकी पीठ पर बैठकर कूच-बिहार गया था। उस समय मैं एक सहायक था। इस नामुराद बीमारी ने तब मुझे खाना शुरू ही किया था। और हाँ, आपको याद है? एक बार इसने आपकी कमर को अपनी गिरफ्त में ले लिया था और छोड़ नहीं रहा था? हाँ, हाँ, पागल हो जाने पर भी, चाहे इसका सर फिर गया था, यह आपको भूला नहीं था!"

ढम-ढम-ढम। गोपीनाथ मन्दिर के ढोल एक लय के साथ बजने शुरू हो गये थे। वातावरण की खामोशी में वह आवाज़ गुंजित-अनुगुंजित हो रही थी। इन्द्रनाथ ने सुना। वह इस सत्र का भावी अधिकार है। लेकिन इस समय तो उसकी हालत ऐसे

हो रही है जैसे कि वह युद्ध के मैदान से भागकर आया हो और कोर्ट मार्शल के बाद उसे घसीटकर परे किया जा रहा हो। वह! वह जीप को अपनी ओर आते देख सकता है। उसके पहिये धूल के गुबार उड़ा रहे हैं। उसे अब उसकी भयावनी थूथनी भी दिखाई दे रही है, जैसे कि वह एक दुर्दांत अजगर हो। आ रही है वह ···आ रही है!

अब उसे जीप में से बाहर निकली हुई बन्दूक़ की चमचमाती नली भी साफ़ दिखाई दे रही है। उसका हाथ अपनी पंजाबी की जेब की ओर गया। जैसे ही उसने झटके से रूमाल बाहर निकाला, उसकी तम्बाकू वाली पाइप ज़मीन पर दूर जा गिरी। उसने रूमाल का गोला-सा बनाकर अपनी मुट्ठी में कस लिया। उसके माथे पर एक नस बुरी तरह फड़कने लगी। भावी अधिकार की आँखों से अब आँसुओं की एक अविरल धारा बह रही थी।

## चौदह

निम्न प्राथमिक पाठशाला की बिल्डिंग को अफ़ीमचियों के उपचार केन्द्र में परिवर्तित कर दिया गया था। वहाँ खूब गहमागहमी थी। केन्द्र की रसोई का काम राजाबाहा के दो पतले-दुबले ब्राह्मण सँभाले हुए थे। उनकी नंगी पीठें पसीने से चमचमा रही थीं। उनकी छाती के आर-पार जनेऊ ने सूखी अंतड़ियों का रंग ले लिया था। अफ़ीमचियों के घरों के पिछवाड़े में भी पान के पत्तों की बेलों ने वैसा ही रंग और शक्ल अख़्तियार कर ली थी।

इस केन्द्र में तीन अफ़ीमची औरतों को ज़बरदस्ती लाया गया था। उनमें से दो बाँस की चटाई पर बैठी थीं, पर तीनों अपने वक्ष को मेखला से ढाँपे हुए थीं। एक ने अपने कन्धों के इर्द-गिर्द गताला भी लपेटा हुआ था। वह बाँसों के चबूतरे पर सो रही थी। ये चबूतरे केन्द्र में रखे गये अफ़ीमचियों के पलंग का भी काम कर रहे थे। व्यवस्था समिति में स्थानीय बोर्ड से कुछ व्यक्ति सदस्य के रूप में लिये गये थे। दवाइयों की आपूर्ति सबडिविज़नल स्टोर करता था।

सोने वाली औरत को गर्भ था। उसे रह-रहकर दर्द उठता था और वह पलटे खा रही थी। उसे अफ़ीम की तलब भी हो रही थी, क्योंकि जबसे वह इस केन्द्र में आयी थी, उसे अफ़ीम मिलनी बिलकुल बन्द हो गयी थी। उसने तब से अफ़ीम खाना शुरू किया था जब से उसने यौवन में क़दम रखा था। तब उसे आमतौर पर बहुत पीड़ा सताती थी। धीरे-धीरे उसकी यह आदत पकती गयी और अफ़ीम के बिना उसकी गुज़र होना असम्भव हो गया।

तीनों औरतें बेहद झगड़ालू थीं। उनकी मेखलाएँ मारकिन की थीं। वे उन्हें केन्द्र से मिली थीं। उनके गताले बिलकुल गन्दे और तार-तार हो रहे थे। जिस कमरे में

उन्हें रखा गया था, उसके ठीक बाहर कुछ लोग बैठे आपस में बातें कर रहे थे। उनमें से ज़्यादातर चौधरीपाड़ा, खारापाड़ा, राजाबाहा तथा हेरामदो के थे।

गोसाईं का मुख्य पुजारी, पुरुषोत्तम भगवती भी वहीं खड़ा था। उसके माथे पर चन्दन का तिलक लगा था। वह हुक्का पी रहा था। जब-जब वह हुक्के पर कश लगाता, हुक्के के भीतर का पानी गुड़-गुड़ की आवाज़ करता। चार मौजों का सेक्रेटरी, भगतदास, एक नीची तिपाई पर बैठा था। वह एक पुरानी, खस्ता मेज़ के पास बैठे चार होमगार्डों को देख रहा था। वे होमगार्ड उन अफ़ीमचियों की सूची तैयार कर रहे थे जो केन्द्र में आने से आनाकानी कर रहे थे या डर के मारे वहाँ से भाग गये थे।

होमगार्ड आपस में ज़ोर-ज़ोर से बहस करने और अफ़ीमचियों को लेकर एक-दूसरे को इल्ज़ाम देने में लगे थे। दरअसल, उनके बीच इस बात को लेकर कुछ ग़लतफ़हमी थी कि कौन भागा है और कौन आने से आनाकानी कर रहा है। नया कम्पाउण्डर अभी-अभी पहुँची दवाइयों के स्टॉक को चैक कर रहा था और उन पर लेबल लगाने के साथ-साथ रजिस्टर में उन्हें दर्ज़ भी किये जा रहा था। वह बुरी तरह काम में लगा हुआ था, क्योंकि अफ़वाह यह थी कि एक राजनेता उनके यहाँ शिविर का निरीक्षण करने आ रहा है।

लेकिन इन लोगों के शोर से भी बढ़कर उन तीन अफ़ीमची औरतों का शोर साफ़ सुना जा सकता था। एक कह रही थी, "तुम तो अपना फूला पेट लेकर यहाँ ऐसे आयी हो, जैसे वह चावल की बड़ी गठरी हो। तब तुम क्या करोगी अगर बच्चा उछलकर यहीं बाहर आ गया?"

एकाएक ऐसी आवाज़ आयी जैसे कि किसी ने दीवार पर लात मारी हो।

"तुम दूसरों को परेशान क्यों कर रही हो? इस नासपीटे का नाम कंपू रख देना।"

"अपने मुँह की चूहेदानी बन्द रख! कंजरी कहीं की!"

दूसरी औरत ने तड़ककर जवाब दिया, "अरी कुतिया, तू कंजरी किसे कह रही है? हर कोई तुम्हारे खसम के बारे में जानता है। साला भड़ुआ! एक लौंडिया को लेके उड़ गया। पुलिस उसके पीछे लगी है। वह खस्सी सांड की तरह घूमता-फिरता है!"

"थू! ख़ाली मेरा खसम ही है ऐसा? मैं जानती हूँ किसका टाँका कहाँ भिड़ा है?"

इसके बाद कुछ ऐसी गन्दी गालियों की झड़ी लगी कि उन्हें यहाँ दोहरा पाना मुश्किल हो रहा है। एक स्वयंसेवक ने ज़मीन पर अपनी लाठी ज़ोर से पटकी और चीख़ा, "ऐ गन्दी, अफ़ीमची औरतो, बन्द करो यह बकवास! अगर सेक्रेटरी ने सुन लिया तो वह तुम्हारी ख़ाल उधेड़े बिना नहीं रहेगा।"

ठीक उसी समय दो निषेध अधिकारी शिविर में दाख़िल हुए। वे पास के कुछ गाँवों में अफ़ीमचियों का सर्वेक्षण करने गये थे। वे अधेड़ उम्र के थे और दुबले-पुतले

थे। वे कलकत्ता के बाबुओं की तरह खादी की पंजाबी और शांतिपुरी धोती पहने हुए थे। उन्होंने पाठशाला की बिल्डिंग के पास अपनी साइकलें खड़ी कीं और वहाँ तक चलकर पहुँचे जहाँ पुरुषोत्तम भगवती हुक्का गुड़गुड़ा रहा था। वहाँ पहुँचकर वे उसके सामने खड़े हो गये। एक होमगार्ड भीतर गया और अधिकारियों के लिए लकड़ी की दो कुर्सियाँ बाहर ले आया। ठीक उसी समय बोलो भी उनमें शामिल हो गया। वह शिविर में चावल तथा अन्य खाद्य सामग्री पहुँचाता था।

मिट्टी के प्यालों में चाय आ गयी। उनसे उठती भाप कुछ ऐसी गन्ध दे रही थी जैसे बारिश में ताज़ा धुली भूमि से आती है, और भूमि भी ऐसी जो एक लम्बे समय तक प्यासी रही हो। भगवती के लिए यह चाय पीतल के गिलास में आयी थी जिसे राजाबाहा का एक ब्राह्मण रसोईया स्वयं लेकर आया था।

कांग्रेस के पुराने कार्यकर्त्ता तथा निषेध अधिकारी ने एक साथ कहा, "हमने इधर जो आँकड़े जुटाए हैं, उनसे यह पता चलता है कि दक्षिणी तट पर लगभग 70 प्रतिशत लोग अफ़ीम लेते हैं, और इस सत्र में तो इनकी संख्या लगभग शत-प्रतिशत है। हमें सख्ती से काम लेना होगा। अगर ज़रूरी हुआ तो कठोर बनकर भी! वरना यह सत्र इस बुरी लत में इतना गहरा धँस जायेगा कि इसे तबाही से रोक पाना असम्भव हो जायेगा।"

इस पर बोलो ने टिप्पणी की, "क्या आप जानते हैं कि यह विपत्ति इस सत्र पर कब टूटी?"

लम्बे क़द के निषेध अधिकारी ने अपना रूमाल निकाला और अपने चश्मे को साफ़ करता हुआ बोला, "मोहम्मद गोरी के ज़माने में बंगाल के शासक बख़्तियार खिलजी ने कामरूप पर आक्रमण किया था, लेकिन उसे तथा उसके आदमियों को परास्त कर दिया गया और वैसे ही खदेड़ा गया जैसे बन्दरों की टोली को खदेड़ा जाता है। उसके कुछ आदमियों को राजा नीलध्वज ने बन्दी बना लिया। क्योंकि वे लोग ग़ोर से आये थे, इसलिए उन्हें गोरिया कहा गया। असल में, अफ़ीम खाने की लत इन्हीं मुसलमानों और राजपूतों ने फैलायी।"

अब तक इस बातचीत में दूसरा निषेध अधिकारी भी शामिल हो चुका था। "ओह! इसके बाद तो आक्रमण पर आक्रमण हुए। आक्रमणकर्त्ता थे गयासुद्दीन, जाज़ बेग़, तुरबक, हुसैन खाँ, मिरजुम अल्लाह, मंसूर खाँ इत्यादि।"

एक अन्य अधिकारी ने भी इस अवसर को हाथ से जाने नहीं दिया। अपनी बुद्धि तथा ज्ञान का प्रदर्शन करते हुए बोला, "नहीं, नहीं! मुझे यक़ीन है कि जगलिया के तट पर पहले-पहल अफ़ीम लाने वाले बर्मा के लोग ही होंगे। दिसम्बर 1821 में तीन सौ बर्मी सैनिकों ने राजा चन्द्रकान्त की छावनी पर हमला किया। यह बात हर कोई जानता है। लेकिन उन्हें काननमुख तक पीछे धकेल दिया गया। 1824 के बाद गोरा ब्रिटिश जनरल, जार्ज मेकमारेन, बीस हाथियों के साथ आया। वे हाथी तोपों और

बारूद से लैस थे। उन्होंने इन दुष्ट बर्मी सैनिकों को खदेड़ दिया। इतिहास के इस तथ्य को कौन नहीं जानता! उस समय भागने वाले उन सैनिकों में से कुछ यहाँ-वहाँ, विभिन्न गाँवों में छिप गये। हो सकता है उनमें से कुछ यहाँ भी आये हों। संख्या 23। ब्रिटिश सैनिकों की पाँच कम्पनियों वाली नेटिव इनफैंट्री! ज़ाहिर ही है कि बर्मी सैनिक इतनी ज़बर्दस्त फ़ौज के सामने टिक न पाये होंगे।"

बोलो ने अब कहा, "मैंने विद्वानों से सुना है कि बहारिस्तान-ए-ग़ैबी[1] में जिस खमरंगा का ज़िक्र है, वह दरअसल हमारा अमरंगा ही है। इन विद्वानों का यह भी कहना है कि जब मिर्ज़ानाथन ने इस जगह पर हमला किया तो बरदोआ के हमारे सैनिकों ने भारी तलवारों के साथ उनका मुक़ाबला किया। एक तलवार का वज़न लगभग सोलह सेर बताया जाता है। खमरंगा का बादशाह और मलिका, दोनों ही शराबी थे।"

तब सब एकाएक बोल पड़े, "क्या! बादशाह और मलिका, दोनों ही शराबी!"

"हाँ, हाँ, शराबी! शंकरगुरु और माधवगुरु यहाँ सत्र की स्थापना करने आये थे, लेकिन जब उन्होंने जगलिया के पानी की सतह पर शराब को तैरते देखा, तो उन्होंने अपना विचार बदल दिया और वे वापस चले गये।"

एक पतला-दुबला स्कूल मास्टर भी, जो पुरानी धोती और नीले रंग की कमीज़ पहने हुए था और जो इस वार्तालाप को चुपचाप सुन रहा था, बड़ी हलकी आवाज़ में बोला, "उन दिनों के दक्षिणी तट के बारे में कहने को कई बातें हैं। यहाँ ज़्यादातर लोग सौदागर थे। वे इतने अमीर थे कि वे सोने के घड़ों में रखा पानी पीते थे। उनका व्यापार दूर-दूर तक, यानी प्रशान्त महासागर, हिन्द महासागर और अरब सागर तक फैला हुआ था। यह भी कहा जाता है कि वे चीन के साथ रेशम का लेन-देन करते थे। लेकिन अब तो सब कुछ बिखर गया है। उन सौदागरों की सन्तानें अब कहीं नज़र नहीं आतीं। ब्राह्मणवाद के वर्चस्व के झगड़े में उनका दर्जा समाज के निम्न जाति के लोगों की तरह हो गया है। अब तो उस शानदार परम्परा का साया-भर बाक़ी बचा है। अब तो मारवाड़ी और बिहारी व्यापारियों ने सब कुछ हड़प लिया है और लूट की कमाई पर पनप रहे हैं।"

कुछ देर तक चुप्पी छायी रही। फिर भगवती पुजारी ने अपने मुँह से हुक्के की नली निकाली और पास ही खड़े एक ब्राह्मण रसोइये से बड़े धीमे से बोला, "यह मास्टर कौन है?"

उस दुबले ब्राह्मण लड़के ने उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा, "यह तो डाखले का डोम है। वहाँ प्राथमिक पाठशाला में पढ़ाता है।"

यह सुनते ही भगवती ने पास में बैठे उस निम्न जाति के शिक्षक के साये से अपनी कुर्सी परे कर ली। इस बीच वहाँ शिविर में नंगे, काँटे के समान दुबले और बड़े-बड़े पेट वाले बच्चों का एक झुण्ड दौड़ता आया और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा, "हो, हो! वहाँ देखो! उन अफ़ीमचियों को देखो। वे फाख़्ता का मांस खाने के बाद उलटी कर रहे हैं!" फिर उन्होंने गाना शुरू कर दिया—

अफ़ीमची कहता है
मेरे बाप! मेरे बाप!
मैं एक गहरे खड्डे में कूद गया हूँ।
वह खड्डे में ही रहा, अब उसकी पत्नी रोती है और
तीन तोले अफ़ीम की माँग करती है।

फिर बच्चों ने और हो-हल्ला मचाना शुरू कर दिया, क्योंकि होमगार्ड उन्हें अपने डण्डों से भगा रहे थे।

निषेध अधिकारी ने अपना माथा पोंछा और बोला, "श्रीमान्, हमारे संस्कृत साहित्य में अफ़ीम के लिए कोई शब्द नहीं है। यह शब्द अहिफेन जो हम इस्तेमाल करते हैं, वह अरबी भाषा से आया है। राजा लक्ष्मीसिंघ के ज़माने में 1795 में ब्रिटिश तोपची असम में पोस्त के बीज लाये थे और पहले पहल उन्होंने इसकी बेलताला में बुवाई की थी।"

पुजारी ने अपने मुँह से हुक्के की नली फिर हटाई और जानना चाहा, "अफ़ीम बनाने की विधि क्या थी?"

"एक कपड़े में पोस्त के बीजों का रस इकट्ठा किया जाता था और उसे पानी में उबाला जाता था। जो कुछ गाढ़ा-गाढ़ा बचता था, उसे हम अपने यहाँ कानी कहते हैं।"

वहाँ खड़े दूसरे निषेध अधिकारी ने भी, जिसके गाल धँसे हुए थे, अपनी बुद्धि और ज्ञान का प्रदर्शन करने के उद्देश्य से अपनी बात जोड़ने की कोशिश की। उसकी आवाज़ दम-ख़म वाली थी। उसने हर किसी को चिल्लाकर चुप कराना चाहा और फिर अपना गला साफ़ करते हुए बोला, "चरक, बाणभट्ट और सुश्रुत के पुरातन औषधि ग्रन्थों में अफ़ीम का कोई ज़िक्र नहीं है। लेकिन पन्द्रहवीं और सोलहवीं सदी के सारंगधर और भावमिश्र के ग्रन्थों में अफ़ीम का उल्लेख मिलता है।"

भगवती ने अब हुक्के की नली को नीचे रख दिया और बोला, "किस बीमारी के लिए वे इस अफ़ीम का इस्तेमाल करते थे?"

"दस्त और बदहज़मी के लिए।"

निषेध अधिकारी ने अपनी बात जारी रखी, "अंग्रेज़ सरकार ने 1928 में क़ानून बनाकर अफ़ीम पर रोक लगानी चाही। उनकी योजना थी कि पचास साल से कम उम्र वाले लोगों के लिए हर साल उनके कोटे में कुछ कटौती की जायेगी और दस साल की अवधि में धीरे-धीरे अफ़ीम का परमिट सिस्टम ख़त्म कर दिया जायेगा। लेकिन वे सुसरे अफ़ीमची! वे तो अफ़ीम के धुएँ से अन्धे हो रहे थे। जब उन्हें इस योजना का पता चला तो उन्होंने अपना नाम रजिस्टर करवाना बन्द कर दिया। सरकार ने डिब्रूगढ़ और शिबसागर के ज़िलों में अफ़ीम की दुकानें सील कर दीं।"

दूसरे निषेध अधिकारी को भी अब अपना ज्ञान बघारने की इच्छा हुई। वह बोला, "कोई ज़्यादा पुरानी बात नहीं है। युद्ध के दिनों में पहाड़ियों पर रहने वाले

आदिवासी जीरंग तक अफ़ीम की तस्करी करते थे। वे रात के वक़्त जंगल के रास्ते आते थे। वहाँ मित्र सेना ने सड़कें बना रखी थीं और पहले के वक़्तों में समूचे असम में अफ़ीमचियों और गोरे साहिबों के बीच काफ़ी झड़पें होती रहती थीं। वह नौगाँव का सिंगर साहिब! उसने कोशिश की कि अफ़ीम पर किसी तरह रोक लगायी जाये, लेकिन भीड़ ने उसकी इस क़दर पिटाई की कि वह वहीं ढेर हो गया। यह घटना 1860 की है।"

भगवती बोला, "हे राम! क्या उन्होंने गोरे साहिब को वाक़ई मार डाला? कितना बुरा समय आ रहा है। अभी कुछ दिन की तो बात है। भगत-सेवा[2] में एक भगत ने, जब तक उसे अफ़ीम की भेंट नहीं चढ़ायी गयी, आशीर्वाद देने से साफ़ इनकार कर दिया। भगवान् भला करे! हम तो बिलकुल पतन की ओर जा रहे हैं!"

एकाएक उनके इर्द-गिर्द भूरे रंग का धुआँ लहरियों की शक्ल में मँडराने लगा। वह शिविर में भी घुस आया। भगवती, निषेध अधिकारी, होमगार्ड, शिविर के अफ़ीमची—सभी इस धुएँ की वज़ह से खाँसने और छींकने लगे। स्कूल के बूढ़े शिक्षक ने अपनी खाँसी पर काबू न पा सकने के कारण अपने छाते को अपने सीने पर कस लिया। साँस उखड़ जाने की वजह से वह बेहाल हो रहा था।

अब भगवती पुजारी ने ज़ोर से चिल्लाकर कहा, "यह धुआँ कौन कर रहा है? क्या जल रहा है?"

एक निषेध अधिकारी भी चिल्लाया, "मेरा ख़याल है यह मार्क साहिब की करनी होगी। मैंने उसे पिछले दरवाज़े से आते देखा था। उसने इन अफ़ीमचियों के छोटे-मोटे सामान की होली जलायी होगी। वह काफ़ी लम्बे अरसे से इसकी धमकी दे रहा था।"

"तुम जाकर देखते क्यों नहीं कि वे चीज़ें क्या हैं?"

बढ़े हुए दाँतों वाले निषेध अधिकारी ने उत्तर दिया, "सौ के क़रीब पान के पत्तों को भूनने वाले टूटे और काले हुए मिट्टी के बरतन, उतनी ही तादाद में भेम, भारी मात्रा में बाँस की खपच्चियाँ, कई मिट्टी की नलियाँ, पुराने तार-तार हुए कपड़ों के ढेर। मार्क साहिब ने क़सम खायी थी कि वह इन सब पर मिट्टी का तेल डालकर उन्हें आग लगा देगा।"

उसी समय मार्क भी वहाँ उनके बीच आ खड़ा हुआ। उसे देखते ही वे सब एकाएक चुप हो गये। हर कोई उसकी आँखों पर टकटकी लगाए हुए था। वे आँखें पुराने मूगा रेशम की तरह भूरी थीं, जैसे कि जगलिया के गदले पानी पर सूरज डूब रहा हो। आज ये आँखें थकी हुई थीं। एक होमगार्ड उसके लिए लकड़ी की एक कुरसी ले आया। कुरसी क्योंकि पुजारी के बहुत नज़दीक रखी गयी थी, इसलिए पुजारी तुरन्त वहाँ से थोड़ा परे हट गया ताकि वह इस क्रिस्तान से छुए नहीं। फिर मार्क साहिब को सम्बोधित करते हुए वह बोला, "आपने अफ़ीम की लत छुड़वाने के लिए कुछ नेक काम किया है। हर कोई आपकी इसके लिए प्रशंसा कर रहा है। लेकिन आपके उस

गिलमन साहिब वाले काम का क्या हुआ? उन्होंने अपना दम यहीं तोड़ा था! क्या आपने काफ़ी सामग्री जुटा ली है?"

"मैंने कुछ तो जुटायी ही है! लेकिन काम चल रहा है।"

"गिलमन ने गुवाहाटी में कुछ विद्यार्थियों की सहायता की थी। क्या आपको उनके नाम मिले?"

मार्क ने स्वीकृति में अपना सर हिलाया। बढ़े दाँतों वाले निषेध अधिकारी ने कुछ अजब नज़रों से उसकी ओर देखा और बोला, "मुझे गिलमन के नंदराम दोलोई से हुए झगड़े के बारे में कुछ पता है। यह साहिब अक्सर बारदोआ चाय बाग़ान की हफ्ता मण्डी में जाता था। वहाँ वह जंगली भैंसे की तरह घूमता रहता। दोलोई के पास उस मण्डी का ठेका था। एक बार वह यह मण्डी लोहारघाट ले गया। साहिब को बारदोआ की मण्डी से बहुत लगाव था। उसने तुरन्त दोलोई को बुलवाया और अपने किसी आदमी से उसके गालों पर थप्पड़ मरवाये। इसके विरोध में बारदोआ और लोहारघाट के सभी लोग उसके बँगले की ओर चल पड़े। साहिब को इसका पता चल गया। वह उसी दिन वहाँ से हाथी पर बैठकर भाग लिया। उसके साथ उसका वह आदमी भी था। वह आदमी तो फिर कभी लौटा नहीं। गिलमन साहिब को बेंटिंक और वन संरक्षक मिलरॉय ने सुरक्षा प्रदान की।"

मार्क अब बेचैन था। उसने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया। वह पराजित, थका हुआ और उदास दिख रहा था, जैसे कि उदासीनता के महीन रेशमी धागे के काले जाल ने उसे फाँस रखा हो।

अपने मुँह से हुक्का हटाते हुए भगवती ने कहा, "मैं आपकी दिमाग़ी परेशानी समझ सकता हूँ। आप कैसे पीले-पीले और बेचैन दिख रहे हैं।"

निषेध अधिकारी, होमगार्ड, रसोइये तथा बारीहाट का बोलो—सभी गोरे साहिब की ओर देख रहे थे और सहानुभूति में अपने मुँह से तरह-तरह की आवाज़ें निकाल रहे थे।

उनमें से एक बोला, "साहिब तो बाँस के डण्डे की तरह दुबला-पतला दिख रहा है! चेहरा भी कैसा उतरा हुआ है।"

एक दूसरा व्यक्ति बोला, "यह तो है ही! इस तरफ़ वह डटगुची, कुलची, केंदुकुची और हाटओखली तथा दूसरी तरफ़ जगलिया को पार करके वह गरगरा, हारोपाड़ा, चनापाड़ा, झालिमाबोरी तथा दूसरी जगहों पर जाता है। उसके जूते घिस गये हैं और उसके कपड़े भी गन्दे और फटने को हो रहे हैं। हमेशा वही पुरानी, खस्ता और छेद-भरी हस्तलिपियों को ढूँढ़ता रहता है।"

भगवती की उँगलियाँ उसके जनेऊ में पिरोयी सोने की अँगूठी से खेल रही थीं। यह जनेऊ उसकी तोंद को घेरे हुए था। वह बोला, "अरे गोबर गनेशो! यह चनापाड़ा या झालिमाबोरी नहीं। इसके दिमाग़ को कुछ और खाये जा रहा है!"

अब एक साथ कई लोग बोल पड़े, "क्या है, बापू? उसे क्या परेशानी है?"

पुजारी ने हुक्के पर जल्दी-जल्दी दो या तीन कश लिये। फिर उसने मार्क की ओर आधी बन्द आँखों से देखा और ग़ौर किया कि उसका ध्यान कहीं और है। उसकी आँखें झुकी हुई थीं और वह ज़मीन को घूरे जा रहा था, जैसे कि उसने अपने मन में अपने पाँव तले की ज़मीन को खोदने की बात ठान ली हो। वह अपने ही ख़यालों की दुनिया में खोया हुआ था।

कुछ लोग उन दो व्यक्तियों के इर्द-गिर्द खड़े हो गये। वे मार्क को काफ़ी पसन्द करते थे। उन्हें लगा कि पुजारी कोई ऐसी बात कहने जा रहा है जो हो सकता है मार्क की प्रतिष्ठा के अनुकूल न हो। उनके मन में मार्क और गिलमन साहिब के लिए वही इज़्ज़त थी जो कभी ब्राउन, ब्रोनसन तथा कटर के लिए थी, क्योंकि जब ब्रिटिश सरकार ने अपनी पक्षपातपूर्ण नीति चलायी थी तो उन्होंने असमिया भाषा के लिए जमकर लड़ाई की थी। दूसरे, वे यह भी जानते थे कि मार्क साहिब ने अपने दुबला गये शरीर पर पहने कपड़ों को छोड़कर बाक़ी सब कुछ ग़रीबों में बाँट दिया है। उसने तो अपनी एंडी शाल को भी उतारकर बरगद के पेड़ के नीचे रहने वाले अभागे कोढ़ी की भेंट कर दिया था।

पुजारी की नज़रों में आयी चालाकी को वहाँ खड़ा हर कोई साफ़-साफ़ भाँप सकता था। उसका कहना था, "बंगरा से कुछ लोग गोसाईं की माईशाना गिरिबाला को ले जाने आये हैं।"

बारीहाट वाला बोलो कह उठा, "यह बेशक एक अच्छी ख़बर है कि वह वापस अपनी ससुराल जायेगी। वरना उसकी हालत भी वही होती जो दुर्गा की हुई है। कैसे उसे बेहूदा ढंग से गोसाईं की हवेली से उठा बाहर फेंका गया!"

हर कोई अब मार्क की ओर देख रहा था। ज़्यादातर गाँववासी जानते थे कि उसके और गिरिबाला के बीच कैसा कोमल सम्बन्ध स्थापित हो गया है।

मार्क उठकर खड़ा हो गया। वह चुपचाप अपने चारों ओर हर चेहरे को देख रहा था। फिर वह सर झुकाये, नपे-तुले क़दमों से धीरे-धीरे वहाँ से हट गया। चारों ओर एक उदास चुप्पी छा गयी। गिरिबाला का जिस कँटीले ढंग से पुरुषोत्तम भगवती ने ज़िक्र किया था, वे लोग उससे खुश न थे। हर कोई समझ रहा था कि यह उसने मार्क को चोट पहुँचाने के उद्देश्य से किया है।

पुजारी ने हुक्के की नली फिर उठायी और देर तक उस पर कश लगाता रहा। फिर उसका हाथ अपनी चोटी से बँधे लाल फूल की ओर गया। वह आश्वस्त हो लेना चाहता था कि वह फूल अपनी जगह पर ही है।

जब उसने अपना हाथ उठाया तो उसकी तोंद का एक भाग नुमायां हो उठा। वह बोला, "बहुत समय पहले जब मैंने उसकी जन्मपत्री देखी थी तो मैं जान गया था कि उसके भाग्य में क्या बधा है। बंगरा के गोसाईं से उसके विवाह-सम्बन्धी ग्रह उसके पक्ष में नहीं थे। ओह! नियति के फेर को कौन टाल सकता है! उसका यौवन-

काल निकट आता जा रहा था और यौवन के पाप को टालने के लिए उसका जल्दी-से-जल्दी विवाह होना ज़रूरी था। ···जगलिया नदी के उस पार गोसाईं परिवारों की तीन-चार लड़कियों की रजस्वला होने के बाद चुपचाप शादी कर दी गयी थी··· लेकिन इससे क्या होता है! ···वे तो पाप की काली तलैया में गहरे डूब ही चुकी हैं। लेकिन यहाँ हमारी गोसाइनों को आठ वर्ष की होते न होते पालकियों में सत्र लाया गया। गिरिबाला को लेकर गोसाईं बहुत ही उद्विग्न था और उसके रजस्वला होने के पाप को लेकर परेशान रहता था। गोसाइन तो लगभग पागल ही हो गयी थी। मैंने बंगरा के गोसाईं की जन्म-पत्री देखी थी। वह भयंकर थी। शादी एक ही रात में तय हो गयी। जिस दिन शादी पक्की करने के लिए उसे ज़ेवर पहनाने तथा सिन्दूर और तेल लगाने की रस्म हुई, उस दिन बहुत वर्षा हुई। तूफ़ान में बातघर की टीन की छत उड़ गयी। वह लुच्चा बदमाश! हर कोई उसकी हरकतों से परिचित था। अफ़ीम बेचने वाली मिनियारी की उस लफंगी के साथ तो उसका चलता ही रहता! गोसाईं यह बात जानता था। लेकिन अफ़सोस, वह कुछ कर नहीं सकता था। वह जल्दी में था कि इस लड़की से किसी तरह पिण्ड छूटे। वरना रजस्वला होने के इस पाप से परिवार की बदनामी होती।"

बढ़े दाँत वाले निषेध अधिकारी ने अब पुजारी को टोका, "लेकिन वह फिरंगी क्रिस्तान और उसका गिरिबाला से रोज़-रोज़ का मिलना? उसके बारे में गोसाईं क्या सोचता है?"

"आजकल गोसाईं अपने अनुयायियों के साथ अपनी ही आध्यात्मिक दुनिया में खोया रहता है। उसे क्या पता कि क्या-कुछ हो रहा है? यह सब इन्द्रनाथ के कारण हुआ है। उसका कहना था कि यह लड़की जीवन-भर क्या करेगी? उसे ग्रन्थों और पाण्डुलिपियों में खोये रहने दो। जब गिरिबाला बच्ची थी तो झालियाबारी के हंसदेव पण्डित ने उसे पढ़ाया था। उसे विष्णु भारतीय का ध्रुव चरित[3] ज़बानी याद था। लेकिन किसी लड़की में इतनी बुद्धि का होना किस काम का? इससे तो परिवार के नाम पर बट्टा ही लगेगा। औरतों को शिक्षा देना बेकार है।"

निषेध अधिकारी ने फिर टोका, "क्या कह रहे हो तुम? कैसे वह परिवार के नाम पर बट्टा लगा सकती है?"

पुजारी ने ज़ोर-ज़ोर से, बल्कि पूरी ताक़त से, बोलकर उसकी बात काट दी, "जी हाँ! मेरी छठी संज्ञा मुझे यही बताती है। तुम देखोगे वह परिवार के नाम को ज़रूर बट्टा लगायेगी।"

उसकी गर्जना सुनकर वहाँ खड़े सभी व्यक्तियों की जैसे कि बोलती बन्द हो गयी। उनकी हिम्मत नहीं हो रही थी कि वे उससे बहस करें।

अब बोलने वाला एक बंधुवा था। उसके बाल घुँघराले थे और उसका धड़ नंगा था। वह अपनी कमर पर केवल गमछा लपेटे हुए था। उसने कहा, "बंगरा से आये

वे दो व्यक्ति अब सत्र में आवारागर्दी करते रहते हैं। वे अपने साथ एक छाजन वाली गाड़ी लाये हैं। जब बंगरा के गोसाईं ने सुना कि उसकी बहू एक क्रिस्तान के साथ भागने की तैयारी कर रही है तो वह ग़ुस्से से पागल हो गया। उसने उन आदमियों से कहा कि वे उसके बिना नहीं लौटें और अगर वह आसानी से आने को तैयार न हो तो उसे बालों से घसीटते हुए बंगरा तक लाया जाये।"

बड़ी उम्र वाला निषेध अधिकारी इस तरह की बातें सुनते-सुनते तंग आ गया था। वह अधीर होकर बोला, "चुप रह, दुष्ट कहीं का। बहुत हो गया। अब कुछ मत बोलना।"

इस पर होमगार्ड ने भी जड़ दिया, "अरे पापियो, तुम सब गोसाईं की बुराई क्यों करते हो? तुम्हें उस बूढ़ी गुईमैनी वाला किस्सा याद नहीं? वह बाज़ार में पुराने सिक्कों का व्यापार किया करती थी। तुम जानते हो उसके साथ क्या हुआ? उसने गोसाईं के बारे में उलटी-सीधी बातें फैलानी शुरू कर दीं—कि गोसाईं ने तो डाटकुच्ची की एक निचली जाति की औरत को सोने की बालियाँ भेंट में दी हैं··· हर कोई जानता है कि कैसे बोकुल पेड़ के प्रेत ने उसकी धुनाई की थी!"

इस पर घुँघराले बालों वाला बंधुवा फिर बोला, "नहीं, नहीं, वह प्रेत नहीं था। बड़ा गोसाईं स्वयं उस पेड़ में छिपा हुआ था। उसी ने उस काली जीभ वाली गुईमैनी की वह धुनाई की कि वह कभी भूलेगी नहीं।"

एक होमगार्ड चिल्लाया, "अपनी ज़बान को लगाम दो। अगर इन्द्रनाथ ने सुन लिया तो वह तुम्हारी ख़ाल खींच लेगा।"

भगवती ने अपने मुँह से हुक्के की नली हटायी और बोला, "गोसाईं को बुरे दिन देखने ही पड़ेंगे। उधर माराभीटा वाली ज़मीन और उस पर कम्युनिस्टों का धरना! गोसाईं अपने आदमियों को भेजकर उस पर हल चलवाना चाहता है। असामी अपनी तरह से धमकियाँ दे रहे हैं कि गोसाईं आये तो सही यहाँ और चलवा के देखे हल इस ज़मीन पर! हम देख लेंगे! देख लेंगे हम उसे!"

अब बारी टेढ़े-मेढ़े दाँतों वाले निषेध अधिकारी की थी, "लेकिन यह ज़मीन तो पानी से भरी हुई थी। थी या नहीं?"

"हाँ, हाँ! था तो पानी वहाँ! गोसाईं उस पर बराबर लगान देता रहा। लेकिन एक दिन यही ज़मीन, ज़मीन न रहकर सोना उगलने वाली खान बन गयी। लोगों ने गोसाईं को आधे धान की बटाई दिये बिना उस पर हल चलाना शुरू कर दिया। जब वहाँ अमीन बटाई लेने पहुँचा तो उन्होंने उसकी अच्छी ख़बर ली और कहने लगे कि अगर गोसाईं ख़ुद अपने कंधे पर हल उठाकर यहाँ आता है और ज़मीन जोतता है, तब वह आधे धान की बटाई का हक़दार होगा। अधिकार ग़ुस्से से भरा बैठा है। इन्द्रनाथ भी बहुत परेशान है और नाराज़ है। वह कहता है कि वे अन्त तक इस लड़ाई को लड़ेंगे और ज़रूरत पड़ी तो गुवाहाटी के न्यायालय में भी जायेंगे?"

वहाँ मौजूद सब लोगों ने एक ही स्वर में कहा, "हाँ, हाँ, गोसाईं को गुवाहाटी ज़रूर जाना चाहिए। यह प्रतिष्ठा का सवाल है। विश्वास नहीं होता कि असामी ऐसा बुरा व्यवहार करने लगेंगे। उत्तरी तट में कहा जाता है कि एक-दो गोसाईं ऐसे भी हैं जो अपने असामियों पर क़ाबू न पा सके और उन्हें पान-सुपारी की दुकानें खोलनी पड़ गयीं।"

पुजारी ने ऊँची आवाज़ में प्रलाप करना शुरू कर दिया, "हाय, हाय, हमारे बुरे दिन आ गये हैं। इतने अनुयायियों के होते हुए गोसाईं लोग पान-सुपारी की दुकान खोलेंगे। ईश्वर की उन लोगों पर मार! अभी कल तक तो वे कच्चा पट्टा[4] लाकर गोसाईं के क़दमों में रखते जाते थे।"

उन तीन अफ़ीमची औरतों की चीख़ें अब फिर आने लगी थीं और बाहर बैठे लोगों के कानों से टकरा रही थीं। वहाँ भीतर घमासान युद्ध होता लग रहा था, जैसे कि उन्होंने बाँस के चबूतरे को तोड़ डाला हो और उनकी खपच्चियों से एक-दूसरे पर वार कर रही हों। यह युद्ध तो चल ही रहा था, गन्दी से गन्दी गालियाँ भी उछाली जा रही थीं जो कानों को छेद रही थीं। बाहर बैठे कुछ लोगों ने अपने कानों को अपने हाथों से ढाँप लिया। पर कोई भी वहाँ से उठा नहीं। धँसे गालों वाले निषेध अधिकारी ने हर किसी पर अपनी निगाह डाली और बोला, "सुनने में यह आ रहा है कि इन्द्रनाथ संन्यासी हो गया है। वह अपना सर झुकाये इधर-उधर घूमता रहता है।"

घुँघराले बालों वाले बंधुवे ने भी अपनी आवाज़ ऊँची की, "राजापुखरी के पुजारी की बेटी ईली ने अपने यहाँ काम करने वाली उस बुढ़िया को एक दिन उससे बात करने के लिए भेजा था। वह बुढ़िया सड़क पर ही खड़ी रही और उसका बोलो के यहाँ से लौटने का गयी रात तक इन्तज़ार करती रही। उसने उससे कुछ कहा तो ज़रूर, लेकिन लगता है छोटे गोसाईं ने उस पर ध्यान नहीं दिया।"

अब पुजारी बोला, "वह अफ़ीमची ब्राह्मण, जो उससे शादी करना चाहता था, शायद वक़्त आ गया है कि वह क़ैद से रिहा हो जाये!"

इस पर बंधुवे ने टिप्पणी की, "छोटे गोसाईं मँगनी के उपहारों के बारे में नहीं सोच रहे। असल में वह ब्राह्मण किसी दिन भी छूटकर आ सकता है। ···बड़ा अजब मामला है!"

पुजारी एक प्रकार से गरजने ही लगा, "क्या सड़ी हुई बातें करते हो! वह सब इन्द्रनाथ के लिए इतना आसान नहीं। क्या कभी तुमने सुना है कि एक गोसाईं एक साधारण ब्राह्मण लड़की को मँगनी के उपहार भेजे? इस सत्र में कभी किसी गोसाईं ने एक साधारण ब्राह्मण कन्या से विवाह नहीं किया।"

पुजारी ने एकाएक बोलना बन्द कर दिया था। उसने अब देखा कि ज़िले का डॉक्टर, उसका कम्पाउण्डर तथा कई पुराने कांग्रेसी कार्यकर्त्ता उसकी ओर चले आ रहे हैं। डॉक्टर खाकी रंग की ढीली-ढाली और ऊँची हाफ़पैण्ट पहने हुए था। वह फ़ेल्ट

हैट भी लगाए हुए था, और जब वह चलता था तो उसके धूल से अटे जूते कुछ अजीब-सी आवाज़ करते थे। वहाँ मौजूद लोग या तो कुर्सियों और चटाइयों पर बैठे थे, या खड़े थे। भगवती पुजारी ने अपने हुक्के की नली को एक तरफ़ रखा और अपने कन्धे पर पड़ी चादर को फिर से ठीक किया। वहाँ बैठे बंधवे, जो अब तक अपने काम के प्रति लापरवाह हो रहे थे, आँख झपकते ही उठे और वहाँ से भाग लिये।

अफ़ीम छुड़वाने वाले शिविर से लौटकर मार्क सीधा हाथीबाड़ा वाली अपनी झोंपड़ी में गया। पहले इस झोंपड़ी का इस्तेमाल महावत, महावत के सहायक और फंदेबाज़ करते थे। अब मार्क ने इस झोंपड़ी के चप्पे-चप्पे को अपनी पाण्डुलिपियों से भर दिया था। वह आमतौर पर साफ़-सुथरी रहती, क्योंकि सफ़ाई का काम वे लोग करते थे जो मार्क साहिब की प्रेरणा से अफ़ीम खाना छोड़ चुके थे और हर कहीं साये की तरह उसके पीछे-पीछे रहते थे। झोंपड़ी की एक दीवार पर एक कील से लकड़ी का एक क्रॉस टँगा रहता था। इन्द्रनाथ ने वहाँ यूरियम की लकड़ी से बनी एक कुर्सी और एक मेज़ भी भिजवा दी थी। मेज़ पर भी कई पाण्डुलिपियों का अम्बार लगा था। एक कोने में बड़े साफ़-सुथरे ढंग से चीनी के कुछ बर्तन और एक कड़ाही पड़ी थी। ये बरतन और कड़ाही वैसी ही थी जैसी बेस कैम्प में सैनिक इस्तेमाल करते थे। खिड़की पर बाहर के गुलमोहर के एक पेड़ की छाया पड़ रही थी। उसकी शाखाओं पर लाल फूलों के गुच्छे थे। खिड़की के पास, लकड़ी की तपाई पर, हाल ही में मिली साँची छाल की एक पाण्डुलिपि रखी थी जिसे गुटीमाली[5] फूलों के हार से हलके से बाँधा गया था। यह पाण्डुलिपि गिरिबाला को राजाबाहा के एक दूर-दराज़ के स्थान पर एक ब्राह्मण के घर मिली थी। हालाँकि इस झोंपड़ी के चारों ओर हाथियों की लीद की बदबू फैल रही थी, फिर भी गुटीमाली के फूलों की सुगन्ध साफ़ महसूस की जा सकती थी।

मार्क की कमीज़ पसीने से तर थी। उसकी पैण्ट के पाँयचे बूढ़े हाथी के कानों की तरह फटे हुए थे। वह काफ़ी उद्विग्न और बेचैन दिखाई देता था। आमतौर पर वह बाहर से लौटते ही सांची की छाल वाली पाण्डुलिपि खोलता था। लेकिन इस बार उसने ऐसा नहीं किया।

यह कैसी निराशा है? विशेषकर ऐसे व्यक्ति में जिसने सांसारिकता छोड़ दी हो? मार्क कुछ देर तक दीवार पर टँगे लकड़ी के क्रॉस को टकटकी लगाए देखता रहा। तब उसकी आँखें फिसलकर क्रॉस के नीचे लिखे शब्दों पर पड़ीं। रोमन अक्षरों में लिखा था—'स्वीकारों का सम्राट्'। हाँ, यह 'स्वीकारों का सम्राट्' सब कुछ जानता है, सब कुछ सुनता है। मार्क की आँखें जगलिया के गदले पानी में डूबते सूरज की तरह पीली और घुटी-घुटी थीं। जब कभी वह किसी को मानसिक पीड़ा और वेदना में देखता तो उसका अपना दिल भी उसी कष्ट और वेदना से भर जाता। क्या 'स्वीकारों का सम्राट्' उसके दिल में घुसकर उसे छू सकता है? क्या वह कुछ नहीं करेगा? वह अपने बिस्तर पर एकदम सीधा लेट गया।

अगले दिन सुबह-सुबह आसमान बादलों से पुता दिखता था। फिर वर्षा के कण गिरने शुरू हो गये! अब वर्षा बढ़ती ही जा रही थी। गिरते पानी की आवाज़ रेगिस्तान में से गुज़रते घोड़ों के नालों की थाप की तरह थीं। हवा और तेज़ हो गयी। लगता था जैसे कि यह झोंपड़ी की छत उड़ा देगी। मार्क ने एक भजन गुनगुनाना शुरू कर दिया। यह भजन उसे बचपन में सिखाया गया था। ···वर्षा और-और तेज़ होती जा रही थी और पड़-पड़ की आवाज़ भी कर रही थी। आमतौर पर जब बारिश तेज़ होती थी तो मार्क को गहरी चिन्ता हो जाती थी कि कहीं ऐसा न हो कि उसकी पाण्डुलिपियों, टिप्पणियों तथा दूसरे मूल्यवान काग़ज़ात को कोई नुक़सान पहुँचे। वह झोंपड़ी के भीतर इधर से उधर दौड़ता था और जो भी कपड़ा उसके हाथ लगता, उससे उन्हें ढाँप देता। लेकिन इस बार वह बिस्तर पर बिना हिले-डुले पड़ा रहा।

बड़ी भयंकर बारिश थी। गिरते पानी की गर्जना से ऐसे लगता था जैसे कि यह अपनी धारा के साथ सब कुछ बहा ले जायेगी।

एकाएक उसे दरवाज़े पर खट-खट की आवाज़ सुनाई दी। लेकिन उसने उसकी तरफ़ ज़्यादा ध्यान नहीं दिया, क्योंकि उसका ख़याल था कि जब कभी बारिश होती है तो आमतौर पर वही बहिष्कृत कोढ़ी उसकी झोंपड़ी में पनाह लेने चला आता है। कई बार वह उसकी चारपाई के नीचे गुड़ी-मुड़ी हुआ पड़ा रहता। मार्क इस ग़रीब व्यक्ति के बारे में अब तक कई कुछ जान गया है। जिस प्रेत का अक्सर ज़िक्र होता था कि वह सत्र में घूम-घूमकर आधी रात के समय राहगीरों को लूटता है, वह कोई और नहीं था, यही कोढ़ी था। लेकिन मार्क इस रहस्य को अपने तक ही बनाए हुए था, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि इस अभागे, बहिष्कृत व्यक्ति के लिए और परेशानियाँ खड़ी हों।

एकाएक खिड़की का पल्ला कुछ टूटने जैसी आवाज़ के साथ खुला। इससे झोंपड़ी के भीतर हवा का एक ज़बरदस्त झोंका आया जिससे सांची की छाल वाली पाण्डुलिपि के पास पड़े कई कागज़ात उड़ गये। ये कागज़ात दरअसल, पुराने पत्र थे जिन्हें मार्क ने इकट्ठा किया था। ये पत्र ब्रिटिश वन अधिकारियों द्वारा श्रीहाटी सत्र के अधिकार, भुवनेश्वर गोस्वामी को लिखे गये थे। हैरानी की बात यह थी कि एक पत्र असमिया भाषा में किसी व्यक्ति, मिलरॉय द्वारा इस गोसाईं को लिखा गया था। श्रीहाटी की भूमि एक मुस्लिम बादशाह ने दान में दी थी।

मार्क अब उठकर खड़ा हो गया। उसने खिड़की का पल्ला बन्द किया और उसके शटरों को एक डोरी से बाँध दिया। इन पुराने पत्रों को प्राप्त करने वाली गिरिबाला ही थी। अगर कोई और दिन होता तो वह लैम्प के पास बैठकर उनसे कुछ उद्धरण उतार लेता। लैम्प के प्रकाश में उसका चेहरा अब उन ब्राह्मण बालकों की तरह दिख रहा था जो जगलिया के तट के निकट रहते हैं। पर आज वह लैम्प के निकट नहीं गया।

ओह, लगता है यह छत उड़ी, सो उड़ी। गीली मिट्टी की गन्ध और हाथी की लीद की गन्ध, दोनों मिलकर, उसकी झोंपड़ी में घुस आयी थीं···

हर्र, हर्र, हर्र,

हर्र, हर्र, हर्र!

जैसे कि कोई मिट्टी के ख़ाली घड़े में कंकड़ फेंक रहा हो!

क्या उसे आज ही, इसी रात, यहाँ से चले जाना चाहिए? पड़ा रहने दो यह सब यहीं, गिलमन पर लिखी टिप्पणियाँ, मिलरॉय और बोर साहिब द्वारा दक्षिणी तट के अधिकारों और महलदारों (हाथी बाड़ों के मालिकों) को लिखे पत्र। वे पुराने काग़ज़ात भी जो दीमक की सुरंगों के रंग के हो रहे हैं। लालटेन की रोशनी में वे काग़ज़ात शहद की मक्खियों के परों के समान दिखते थे। लालटेन के पास श्रीहाटी के गोसाईं द्वारा फ्रांसिस जेनकिंस को भेजी गयी अपील की प्रति भी पड़ी है। लालटेन की रोशनी में उस कागज़ पर लिखी इबारत चमचमा रही है।

कड़क, बूम, कड़क! थार्र ऽ ऽ ऽ

बिजली की चमक आँखों को चुंधिया रही थी। मार्क तुरन्त समझ गया कि यह भयंकर बिजली पुराने कटहल के पेड़ पर गिरी है। फिर मिट्टी के खाली घड़े में कंकड़ डाले जाने की वही आवाज़। अब आकाश से पानी की बड़ी-बड़ी बूँदें गिर रही थीं। वह अपने बिस्तर पर उकड़ूँ होकर बैठ गया। उसके घुटने उसकी छाती में धँसे हुए थे। उसमें कुछ भी करने की इच्छा नहीं थी। यह मन सन्न क्यों पड़ता जा रहा है? उसने लकड़ी के क्रॉस की ओर एक बार फिर देखा। उसकी आँखें पहले की तरह ही पीली थीं, जैसे जगलिया के गदले पानी में सूरज डूब रहा हो। क्या यह सब गोसाईं की उसी लड़की, गिरिबाला, के कारण हुआ है?

वह दूर-दूर तक घूम आया है, ब्रह्मपुत्र के उत्तरी तट और दक्षिणी तट पर, गाँवों और शहरों में से होता हुआ। उसके देखने में कई प्रकार के चेहरे आये—जवान, बूढ़े, अधेड़। फिर वह उसके सुन्दर चेहरे को देखकर इसी जगह जड़-भरत बनकर क्यों रुका रहा है?

विचित्र! विचित्र! वाकई विचित्र है यह!

ठीक उसी समय मार्क को अपने दादा की याद आयी। वह उसके लिए आदर्श था। उसका वह अनुसरण करना चाहता था। वह विलियम केरी का, उसके काम-काज में, हाथ बँटाता था। वह फ़ोर्ट विलियम्स कॉलेज में आने वाले भारतीय आगन्तुकों से धार्मिक विषयों पर बातचीत भी करता था। ग़रीबों और पददलितों के प्रति वह दया और ममता की प्रतिमूर्ति होता। हर कोई उससे प्यार करता था और उसका सम्मान करता था। अपना अन्त आने तक वह वही पवित्र आत्मा बना रहा। ···लेकिन वह (मार्क) स्वयं क्यों बीच रास्ते में ही उखड़ गया है? क्या यह एक प्रकार की प्राणनाशक विकृति नहीं? क्या उसकी तमाम मेहनत, उसका अनुसन्धान और जीवन के ज्ञान के प्रति उत्कंठा—बेकार हो गये हैं?

विकृति तो यह है ही। है न?

कितना अपमानजनक है यह!

लेकिन एक भीतरी आवाज़ उसके अन्दर गूँजी। अगर यह विकृति और विकार है, तब यह सब काम, जो उसने अपने खून-पसीने से पूरा किया है, सब निरर्थक है। वह जायेगा, चला जायेगा। हमेशा के लिए! इस जगह से। वह मिनियारी के चौराहे तक पैदल ही जायेगा, बिना किसी का ध्यान आकर्षित किये और फिर वहाँ से पलासबाड़ी के लिए बस ले लेगा। वह जहाँ भी रुकने का फ़ैसला करे, वह इन्द्रनाथ से पत्र-व्यवहार ज़रूर बनाए रखेगा। इन्द्रनाथ भावी अधिकार है। अगर वह चाहे तो आमूल-चूल परिवर्तन कर सकता है। ईश्वर ने उसके हाथ में दैवी प्रकाश थमाया हुआ है। उसकी मदद से वह अन्धकार को भगा सकता है। लेकिन···

वह खिड़की के शटरों में से बिजली की कौंध देख सकता है। जैसे कि युद्ध के मैदान में चमचमाती तलवारें आपस में टकरा रही हों। ओह! फिर कोई दरवाज़ा खटखटा रहा है। उसने अपने कानों को साधा। हाँ, खटखटाहट की आवाज़ साफ़ है। वह दरवाज़ा खोलने के लिए उठा, लेकिन इससे पहले कि वह खोलता, दरवाज़ा अपने आप किसी चीज़ के टूटने की आवाज़ के साथ खुल गया और एक मानव आकृति भीतर चली आयी। वह आकृति बिलकुल भीगी हुई थी और उसके कपड़ों से बहते पानी ने समूचे फ़र्श को भिगो दिया था। उसे देखते ही मार्क का शरीर बर्फ़ की तरह ठण्डा पड़ गया और उसकी आत्मा सहस्र जिह्वाओं के साथ चिल्लाने लगी। इस गरजती वर्षा और बिजली की कड़क के साथ इस अँधियारी रात में अधिकार महाप्रभु की बेटी उसके सामने खड़ी थी। उसके शरीर से उठने वाली मृदु सुगन्ध ने समूची झोंपड़ी को सराबोर कर दिया था। उसका मस्तिष्क सन्न हो रहा था और उसके मुँह से एक भी शब्द नहीं निकल पा रहा था···

लड़की तिपाई की ओर बढ़ी। उस पर से सांची छाल वाली पाण्डुलिपि तथा दूसरे कागज़ात को हटाया और उस पर बैठ गयी। वह वर्षा से पूरी तरह तर थी। भीगी हुई मारकिन की शमीज़ उसके वक्ष के उभारों से चिपकी हुई थी। उसकी मेखला भी घुटनों तक उठी हुई थी। उसकी अनावृत्त, गोरी और पतली टाँगें हिरन की टाँगों के समान दिख रही थीं। उस समय वह अपनी नंगी टाँगों के कारण एक नन्हीं बालिका के समान दिख रही थी। लालटेन की मद्धिम रोशनी में उसका भीगा हुआ बदन एक रहस्यमयी आभा बिखेर रहा था।

मार्क जहाँ खड़ा था, वहीं खड़ा रह गया। इस अद्‌भुत दृश्य ने उसे गूँगा बना दिया था। उसके मुँह से एक शब्द भी निकल न पाया।

गिरिबाला चिल्लायी, "दरवाज़ा बन्द क्यों नहीं करते, साहिब? पानी अन्दर आ रहा है।"

"गिरिबाला, तुम गोसाईं परिवारों की परम्परा की मर्यादा तोड़ रही हो। वापस जाओ। इसी वक़्त। चली जाओ।"

गिरिबाला उठी और मार्क के शब्दों की परवाह न करते हुए उसने दरवाज़ा बन्द करके चिटखनी लगा दी। फिर वह तिपाई की ओर लौटी और उस पर बैठ गयी। उसने अपने गताला से पानी निचोड़ना शुरू कर दिया। अब उसने अपने दाँतों से अपनी मेखला का एक किनारा पकड़ा। वह अपनी छातियाँ ढँकना चाहती थी, और अपने धड़ से चिपटी, दूसरी त्वचा बनी, तर शमीज़ को खोलना चाहती थी···

क्या हो रहा है यह? गोसाईं की यह बेटी? मार्क ने अपनी आँखें दूसरी ओर घुमा लीं। अब वह एकाएक बोला, "चलो, काफ़ी हो गया। मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ और तुम्हें तुम्हारे घर छोड़े आता हूँ। सुनो, गिरिबाला! मैं तुम्हारे मन की हालत अच्छी तरह समझता हूँ। मैं सब कुछ समझ रहा हूँ, और मेरे सामने यह बिलकुल स्पष्ट है कि···"

पर नहीं, उसे किसी प्रकार की कोई चिन्ता नहीं। उसने अब अपनी शमीज़ भी उतार दी है और उसमें से पानी निचोड़कर उसे एक तरफ़ फ़र्श पर रख दिया है। अब उसने अपने बाल भी खोल डाले हैं और जल्दी-जल्दी हाथ चलाकर वह अपने भीगे बालों से पानी निकाल रही है। नहीं, उसे किसी भी बात को लेकर परेशानी नहीं, न उसे किसी चीज़ से सरोकार है। जैसे कि वह सब कुछ समझ-सोचकर और दृढ़ निश्चय के साथ यहाँ आयी है। वापस जाने का उसका कोई इरादा नहीं। मार्क उसके निकट झुका और उसने उसे वापस ले जाने के अपने अनुनय को दोहराया। गिरिबाला ने उसकी आँखों में देखा और बोली, "मेरे ससुर ने दो आदमी भेजे हैं। गाड़ी पर सजावटी कपड़े की छाजन लगाने का काम लगभग पूरा हो चुका है। लेकिन मैं अब जाऊँगी नहीं।"

"गिरिबाला!"

"मैं उस क़ब्रिस्तान पर वापस नहीं जाऊँगी। मैं नहीं चाहती कि मुझे ज़िन्दा को दफ़ना दिया जाये। मैं मरना पसन्द करूँगी।"

मार्क की आँखों के सामने कई गोसाईं विधवाओं के चित्र खिंच गये··· वे विधवाएँ जिन्होंने अपना तमाम जीवन चारदीवारी के भीतर ही बिता दिया और बाहर सड़क पर झाँककर भी नहीं देखा···वे विधवाएँ जिन्हें अभाव और अनजाने लोग जर्जर कर गये और जो क्रूर कर्मकाण्ड की मार सहती रहीं···वे विधवाएँ जो समाज की प्रताड़ना के डर से मामूली-सा पढ़ने-लिखने की इच्छा भी पूरी नहीं कर पायीं और लिखित शब्द के अमृत को कभी पी नहीं पायीं। ओह! जगलिया नदी जैसे नदियों के तटों पर रहने वाली ऐसी स्त्रियों की संख्या सैकड़ों-हज़ारों में होगी··· और अब उसके सामने उन चित्रों के बीच गिरिबाला का चित्र है, चारों ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों से घिरी किसी झील के जल में कमल के अक्स की तरह।

अब वह क्या कहना चाहती है, ऐ, स्वीकारों के सम्राट्?

वह फिर बोली, "जब मैं रजस्वला हुई थी तो नदी के तट वाली सभी गोसाइनें मुझसे कहा करती थीं कि तुम तो एक फ़रिश्ता हो, एक प्यारा-प्यारा फ़रिश्ता। लेकिन तुम जानते हो, मेरा वह पति जो उस अफ़ीमचोर, बदनाम औरत के पास अक्सर जाता था, कहा करता था—क्या बड़ी बात है तुम्हारे इस सुन्दर शरीर में? किनियारी वाली उस महिला को देखो! चाहे वह निचली जाति की है और अफ़ीम बेचती है, लेकिन उसका शरीर यौन उत्तेजना से दमकता है। ···तुम उसके मुक़ाबले में कुछ भी नहीं हो··· सुनने में तो यह आता है कि वह हमेशा गरमायी कुतिया की तरह आदमियों को यहाँ-वहाँ सूँघती फिरती है। लेकिन तुम्हारे जैसी गोसाईं लड़कियों में वह खून ही कहाँ है जो उनकी धमनियों में कामुकता से भरा बहता है!"

गिरिबाला अपनी बात जारी न रख सकी। उसकी आँखों में आँसू आ गये थे। वह अपने घुटनों पर अपना माथा रखे वहीं गुड़-मुड़ी हो गयी थी और ज़ोर-ज़ोर से सिसकियाँ भरते हुए बुरी तरह रोने लगी थी। उसकी पीठ पर उसके बाल बिखरे हुए थे। उसकी कोमल भुजाएँ और कँधे अनावृत थे और अपना प्रभाव छोड़ रहे थे।

उसके भीतर की आवाज़ ने कहा, "मार्क, तुम उसे अपने बाजुओं में उठाकर उसे सांत्वना क्यों नहीं देते? आह! उठाओ उसे और अपने आलिंगन में कस लो। तुमने उसका साया जगलिया के पानी में और माटियापहाड़ की गदली ढलानों पर देखा है। तुमने यह साया हर कहीं देखा है। अपने से पूछते क्यों नहीं? क्या यह तुम्हारे मन में नहीं था? तुमने उसे तूफ़ान में और बारिश में देखा है। ठीक है न? अब अपने दिल के भीतर झाँककर देखो!"

गिरिबाला ने अपनी लाल, आँसुओं से भीगी आँखों से ऊपर की ओर देखा और बोली, "मैं किसी तरह भी उसे अपने से बाँध न पायी। न शरीर से, न मन से। लेकिन उस औरत का मांस। क्या उसमें ऐसी शक्ति थी कि उसके सामने गुण और सद्व्यवहार, जीवन की सभी मूल्यवान् वस्तुएँ, सड़क की मिट्टी की तरह बेकार और बेमानी हो गयीं? मन का समूचा धन उस मांस के कारण मिट्टी की तरह बर्बाद हो गया। ···क्या कोई इस पर विश्वास कर सकता है? ओह! मेरे प्राणप्यारे साहिब, मेरा स्पर्श करो और एक बार··· केवल एक बार उसे अनुभव करो।"

मार्क एक क़दम पीछे हट गया। उसका ईश्वर उसके हृदय पर शासन करता था। वह हमेशा इतना अनुशासित और ज्ञान के लिए इतना पिपासु रहता था! वह अब सहस्र जिह्वाओं के साथ चिल्ला रहा था··· और अर्द्धनग्न युवती की आकृति लालटेन के प्रकाश में ऐसे जगमगा रही थी जैसे अँधेरी कन्दरा में कोई रहस्यमय दीया जल रहा हो ··· पहली बार उसकी आँखें ऐसा दृश्य देख रही थीं। वह बिलकुल भौंचक्क था···

आह! आह! दुःख का यह कुआँ कितना गहरा होगा कि एक स्त्री अपने से बदला लेने के लिए मजबूर है, लज्जा और शील के सभी बन्धन तोड़ रही है! कैसी कड़ी परीक्षा है यह! ···कैसे यह व्यक्ति जो कभी किसी स्त्री के इतना निकट हुआ

ही नहीं, उसके मन के रहस्यों को जान सकता है! हालांकि वह दरवाज़े की दहलीज़ पर बुत बना खड़ा था, लेकिन उसका मन और उसकी आत्मा उसके पाँवों को युवती की ओर घसीट रहे थे। हाँ, हाँ! उसने बड़ी कोमलता से उसे ऊपर उठा लिया है। लेकिन वह उसके मन को कैसे जान सकती है? बस, एक ही स्पर्श और दोनों जलकर राख हो जायेंगे।···

यह क्रिस्तान युवक सात समुद्र और तेरह नदियाँ पार करके यहाँ आया है। वह बड़े खतरनाक इलाक़ों में से गुज़रा है, लेकिन इस तरह की परीक्षा-अग्नि से वह कभी नहीं गुज़रा।

यह पहली बार था जब मार्क फूट-फूटकर रो रहा था। वह अपनी आँखों से बहते आँसुओं को रोक नहीं पा रहा था। लालटेन की मद्धिम रोशनी में गिरिबाला की अंजीर के रंग की त्वचा कई भागों से टूटी हुई दिख रही थी, जैसे कि जगलिया के बहते पानी में चाँद टूटता है, जैसे कि रोशनी के जाल में हिरन कैदी बना फँसा रहता है। नहीं, मार्क उसकी ओर बढ़ नहीं पाया था, न ही वह उसे अपने बाजुओं में उठा पाया था। लालटेन की रोशनी मद्धिम पड़ती जा रही थी। इस अँधियारी तूफ़ानी रात में उसके बाजुओं को काठ मार गया था। वे अधिकार महाप्रभु की इस अभागी बेटी को उठाने से इनकार कर रहे थे। उस मद्धिम रोशनी में दीवार पर लटकता वह लकड़ी का क्रास एक काला साया बन गया था। मार्क वहीं का वहीं खड़ा था, जैसे कि वह कोई लोहे का ढाँचा हो जो न आगे बढ़ सके और न पीछे हट सके।

झोंपड़ी का दरवाज़ा एकदम से खुला। जैसे कि किसी ने उस पर ज़बरदस्त ठोकर मारी हो। तीन या चार गठीले बदन के व्यक्ति वहाँ आ घुसे। उनके पीछे पुरुषोत्तम भगवती पुजारी की आकृति थी। वह यम की तरह दिख रहा था। उसकी आँखों से चिनगारियाँ बरस रही थीं। धुँधलके में वे किसी शिकारी, हिंस्र पशु की आँखों की तरह लग रही थीं। जैसे कि वे उस गोरे क्रिस्तान को, जिसने एक गोसाईं की बेटी का धर्म भ्रष्ट किया है, लपककर दबोच लेंगी! जैसे कि वे उसके सीने को चाक कर देंगी।

हे भगवान्, तू ही है···

ऐसी काली करतूत गोसाईं के घर में पहले कभी नहीं हुई थी। पुजारी गरजा, "उस लड़की को इसकी माँद से बाहर निकालो। ले जाओ उसे बाहर! इस म्लेच्छ ने उसकी मासूमियत का फायदा उठाया है··· बाँध दो इसे! कसकर रस्से से बाँधो इसे! भागने न पाये यह! जल्दी करो! बाँधो इसे! उसे घसीटकर बाहर ले जाओ! उसके गताले और मेखला को ग़ौर से देखो! उसका नाश हो चुका है, सर्वनाश!"

दोपहर की गर्मी बढ़ती ही जा रही है। हाथीबाड़े के मैदान में पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों का जमघट लग गया है। पुराने कटहल के पेड़ के नीचे गिरिबाला गुड़मुड़ी हुई बैठी

है। उसने वही शमीज़ पहन रखी है जो उसने गीली होने के कारण पहले उतार दी थी और उसे लकड़ी की तिपाई पर रख छोड़ा था। उसका गताला भी उसके कन्धों पर ढंग से ओढ़ा हुआ है। पेड़ के पत्तों से पानी की बूँदें अब भी झड़कर गिर रही हैं। अभी कुछ ही देर पहले उसके जीवन की सबसे अँधियारी करतूत सबके सामने आ गयी थी और उसने सबको हिला दिया था। लेकिन उसके अपने चेहरे पर उसका कोई चिह्न नहीं है। वह पेड़ के नीचे बिलकुल अनासक्त और निस्पंद बैठी है···

और ये हैं यहाँ के लोग जिनके पैर कीचड़ से सने हुए हैं और लाल-लाल दिख रहे हैं। वे वहीं खड़े हैं। उनमें से कुछ बाँस और फूस की बनी एक बड़ी-सी छाजन लिये हुए हैं। वे देवी बसन्ती (देवी दुर्गा का एक रूप) की एक कुटिया तैयार करने आये हैं। लेकिन उनकी आँखों के सामने यह जो नाटक चल रहा है, उसके कारण उन्होंने अपने हाथ का काम एक तरफ़ रख दिया है। पुराने कटहल के पेड़ के नीचे बैठी युवती उन्हें पूरी तरह खुली आँखों से घूरे जा रही है। देवी बसन्ती का यह मेला जगलिया के किनारे नवम्बर के महीने में कभी नहीं लगता। लेकिन नयी पीढ़ी के छोकरों ने इस रस्म को बदल डाला है। उनका कहना है, "राजा के आदेशानुसार यदि वसन्तोत्सव गरमी के दिनों में मनाया जा सकता है, तब जनता की यह आवाज़ है कि अगर वह चाहे तो नवम्बर का उत्सव मई के महीने में मनाया जायेगा···!"

कहा जाता है कि राजापुखरी सत्र में, जो वैवाहिक बन्धनों के माध्यम से जगलिया के तट के इस सत्र से बँधा है, वसन्त उत्सव अप्रैल के महीने में बड़े ठाठ से मनाया जाता है। हुआ यों कि एक बार राजा शिवसिंह राजापुखरी के सत्र अधिकार के यहाँ आया और उसने यहाँ के शानोशौकत से मनाये जाने वाले वसन्त उत्सव को देखने की इच्छा प्रकट की। इसलिए राजा की इच्छा को ध्यान में रखते हुए अधिकार ने इस उत्सव का आयोजन किया, हालाँकि महीना अप्रैल का था। उन दिनों छाजन वाली कुटिया बाँसों और केलों के सूखे पत्तों से तैयार की जाती थी। उसके भीतर एक ज़िन्दा भेड़ रखी जाती थी, और कुछ मन्त्रों का उच्चारण करके झोंपड़ी को आग लगा दी जाती थी। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, भेड़ की जगह बकरी ने ले ली और कुटिया की एक दीवार में एक छोटा-सा झरोखा भी रखा जाने लगा ताकि अगर वह भागना चाहे तो भाग ले। कई बार बकरी उस झरोखे में से निकल भागती भी थी, लेकिन अक्सर वह जल जाती थी।

पुरुषोत्तम भगवती की गर्जना स्पष्ट सुनाई दे रही थी, "गोसाईं अभी ऊपरी असम से लौटा नहीं है। इन्द्रनाथ उस भूतों के डेरे, माराभीटा, गया हुआ है।"

भीड़ में से एक आवाज़ उठी, "उस म्लेच्छ साहिब ने उसे अपवित्र कर दिया है। गोसाइन उसे हवेली में अब घुसने नहीं देगी।"

एक दूसरा व्यक्ति बोला, "कौन जानता था कि यह गोरा संन्यासी स्त्री-गमन करना शुरू कर देगा। ···आह हा हा! यह तो फुलचुरी[6] वाला मामला बन गया!"

पुजारी चिल्लाया, "वहाँ केवल खड़े मत रहो। बाँस और लकड़ियाँ जल्दी लाओ। जल्दी करो। छाजन खड़ी करो··· तुम लोग बसन्ती पूजा के लिए आये हो। हम एक बार में दो काम करेंगे··· बलि वाली बकरी को जलाने से पहले गिरिबाला को शुद्ध कर दिया जायेगा। ईश्वर! आजकल यह क्या हो रहा है! कोई समय था जब गोसाईं की लाड़ली बेटी आकाश में चाँद और तारों को भी नहीं देखती थी!"

किसी की कुछ बोलने की हिम्मत नहीं हो रही थी और वहाँ पुराने पेड़ के नीचे गिरिबाला निस्पंद और निर्द्वन्द्व बैठी थी। हर क्षण स्थिति अधिकाधिक गम्भीर होती जा रही थी। चारों ओर ऐसा रोष व्याप गया था जिसकी कभी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। लेकिन देखने वाले इस बात से हैरान थे कि लड़की इतनी शान्त और अनासक्त क्यों बैठी है। विचित्र है यह! एकदम विचित्र! इस घटना के बारे में ख़बर पाकर चारों ओर गहरी चुप्पी छा गयी थी। वहाँ सभी युवक, हेरामदो और राजाबाहा के ब्राह्मण तथा सत्र के सभी अनुयायी जुट गये थे।

एकाएक ऊपर से धम की आवाज़ करता एक पका कटहल गिरा और गिरते ही ज़मीन पर फैल गया। उसकी पीली-पीली गुठलियाँ चारों ओर बिखरी हुई थीं। आमतौर पर पहले जब कभी ऐसा होता था तो उन रसभरी, कोमल गुठलियों को पाने के लिए लोगों की छीना-झपटी शुरू हो जाती थी और देखते ही देखते सब कुछ ग़ायब हो जाता था, सिवाय उसके कटीले छिलके के, जो कटी हुई बकरियों की अंतड़ियों के समान दिखता था। लेकिन अब कोई अपनी जगह से हिला तक न था। बल्कि छोटे-छोटे बच्चों ने भी इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया था।

पुजारी फिर गरजा, "अरे, तुम कमीनो और घसियारो। जल्दी से उठो। इससे पहले कि लड़की हवेली में जाये, हमें शुद्धिकरण की रस्म पूरी कर लेनी चाहिए। आख़िर, वह हमारे मालिक गोसाईं की बेटी है!"

हर कोई चुपचाप बैठा रहा, जैसे कि पेड़ के नीचे बैठी लड़की के साथ वे भीतर ही भीतर सहानुभूति के तन्तुओं से बँध गये हों। इस बीच झोंपड़ी पर छत डालने का काम बड़ी तेज़ी से चल रहा था। जो कुछ भी सामान महावत और उनके सहायक पीछे छोड़ गये थे, उसे झोंपड़ी की छत पर पटक दिया गया। इन चीज़ों में अधिकतर सूखा फूस, जलाने की लकड़ी, काँटेदार झाड़ियाँ इत्यादि ही थीं। यह सब कुछ बिलकुल सूखा था और झट आग पकड़ सकता था। प्रायश्चित के लिए तुलसी और डुबोरी[7] के पत्ते तथा फूल और ताँबे के सिक्के तैयार रखे गये थे। पुजारी ने अब गिरिबाला को झोंपड़ी में प्रवेश करने के लिए कहा और गिरिबाला बिना एक शब्द बोले भीतर चली गयी। जैसे कि उसे इसी अनुमति की प्रतीक्षा थी।

पुजारी ने साफ़ और ऊँची आवाज़ में मन्त्र पढ़ने शुरू कर दिये। वे धानु प्रायश्चित के लिए कुछ धार्मिक ग्रन्थों से लिये गये थे। जब कोई निचली जाति का व्यक्ति किसी ब्राह्मण स्त्री से यौन सम्बन्ध रखने का पाप करता है, वह प्रायश्चित्त

उन्नीस बार किया जाता है। मन्त्रोच्चारण के दौरान कई स्थलों पर जब गले में कुछ फाँस-सी लगती, तो उसकी आवाज़ डगमगा जाती और अस्पष्ट हो जाती। लेकिन वह अन्त तक अपना कार्म करता ही रहा और उसने वह कर्मकाण्ड पूरा कर ही डाला। फिर उसने अपना हाथ हिलाकर गिरिबाला को इशारा किया कि वह झोंपड़ी से बाहर आ जाये, और इसके साथ ही उसने पास खड़े एक युवक को सम्बोधित करते हुए कहा कि वह झोंपड़ी को आग लगा दे, क्योंकि वह अपवित्र हो चुकी है। "हम बसन्ती पूजा के लिए दूसरी झोंपड़ी बनायेंगे", उसने दोहराया।

उसने गिरिबाला की ओर फिर देखा और ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगा, "आ जाओ बाहर, उस झोंपड़ी से! वह अब अपवित्र है। जल्दी करो!"

वक़्त जैसे कि ठहर गया था। लोग इन्तज़ार कर रहे थे। पुजारी ने फिर गिरिबाला को पुकारा, "तुम अब शुद्ध हो चुकी हो। तुम वापस अपनी हवेली में जाओ। बाक़ी का हम तब पूरा करेंगे जब बडे गोसाईं लौट आयेंगे। वह देखो। बंगरा के वे आदमी तुम पर आँख रखे हुए हैं। उन्होंने उस क्रिस्तान के साथ तुम्हारे कुकर्म के बारे में सुन लिया है…"

उधर से गिरिबाला दृढ़ स्वर में बोली, "आग लगा दो! मैं बाहर आ जाऊँगी…"

पास खड़ा युवक पहले से ही तैयार था। उसने जल्दी से दियासलाई जलायी और तुरन्त उसे झोंपड़ी की छत पर पड़े भूसे-लकड़ियों इत्यादि पर फेंक दिया।…लेकिन पुरुषोत्तम भगवती के माथे पर क्रोध की गहरी रेखाएँ उभर आयीं थीं। गोसाईं की यह बेटी बड़े विचित्र ढंग से पेश आ रही है। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उसने इससे पहले किसी गोसाईं की बेटी का इस तरह का शुद्धिकरण किया भी नहीं था। वह तो केवल, जब कभी गोसाइनों को किसी ख़ास स्थिति का सामना करना पड़ता, धर्मग्रन्थ पढ़कर कुछ विवादास्पद मामलों का समाधान ढूँढ़ता। एक बार चौधरीपाड़ा की गोसाइन को एकाएक मासिक स्राव होने लगा था। उस समय वह अपने मृत पति पर कोई भेंट चढ़ा रही थी। पुजारी ने उसी समय किसी ग्रन्थ को बाँचा और उस विधवा को उसकी उलझन से उबार लिया। एक बार पातहल्दिया की विधवा गोसाइन बहुत बीमार थी और अपने दिवंगत पति का श्राद्ध नहीं कर पा रही थी। धर्मग्रन्थों में पुजारी ने उसका भी समाधान ढूँढ़ निकाला। लेकिन गिरिबाला की यह विचित्र करतूत! गज़ब है! वाक़ई गज़ब है। अब कहती है कि वह तभी बाहर आयेगी जब आग लगा दी जायेगी। हाँ, उसने यही तो कहा है… वे! वे! लपटें अब ऊपर ही ऊपर उठ रही हैं। वह क्या सोच रही है? क्यों नहीं बाहर आती! हे ईश्वर! वह क्या करने जा रही है!

पुजारी पागलों की तरह चिल्लाया, "वह अब भी वहीं है! वहीं है वह! भीतर! जल्दी करो! कुछ करो! छत जल रही है! उसे बचाओ!"

लोगों की भयंकर चीख़ोपुकार ने जैसे कि आसमान फाड़ दिया हो। एक ज़बरदस्त धमाके के साथ छत नीचे आ पड़ी और उस बेजान-सी युवती को उसने अपने में जकड़ लिया।

गिरिबाला अब ऊँची-ऊँची उठती लपटों में ग़ायब हो चुकी थी।

अब कुछ नहीं बचा था··· वायुमण्डल में और आकाश में केवल जल रहे मांस की गन्ध थी! केवल जलते मानव मांस की गन्ध!

## पन्द्रह

दोपहर का भोजन कर चुकने के बाद इन्द्रनाथ बोलो के अड्डे पर जाने के लिए तैयार हो गया। इस बार वह वहाँ अपनी माँ, गोसाइन के कहने पर जा रहा था। दरअसल, गरगरा और सुवालकुचि से सत्र में अनुयायियों की एक टोली आ रही थी और उनके भोजन के लिए तुरन्त कबूतरों और पपीतों की व्यवस्था करनी थी। वह जानती थी कि ठीक तरह के कबूतरों और पपीतों की पहचान करने वाला सबसे बढ़िया व्यक्ति बोलो ही हो सकता है।

इन्द्रनाथ के बालों में ठीक से न तेल लगा था, न कंघी हो पायी थी। उसकी धोती भी मुचड़ी हुई थी और ज़्यादा साफ़ नहीं थी। उसके दुबले और लम्बूतरे चेहरे पर चिन्ता और मानसिक सन्ताप की लकीरें खिंच आयी थीं। इधर जो त्रासदी हुई थी, उसके आघात से उसकी आँखों के नीचे काले साये उभर आये थे। उसने अब तो बोलो के जुए के अड्डे पर जाना लगभग छोड़ ही दिया था। गिरिबाला की मृत्यु के बाद गोसाइन भी अब लोगों को बहुत कम दिखती थी। वह घण्टों अपने छोटे-से गुड़गुड़ी वाले कमरे में बन्द रहती। अपनी बेटी की मृत्यु पर वह-ज़्यादा नहीं रोयी थी, बल्कि यह सब करने लगी थी—यानी गुड़गुड़ी पीते रहना। ···उसे जो भी देखता, उसकी इस लत से परेशान हो उठता। कई बार तो उसके निकट रहने वाली उसकी साथिन, गुईमैनी, भी उससे तंग आकर वहाँ से चली जाती। उसके हाथ में, बस, हमेशा गुड़गुड़ी की नली रहती और वह एक भुतवे साये की तरह कमरे में अकेले बन्द रहती।

हाथीबाड़ा पहुँचकर इन्द्रनाथ ने बारीहाट वाली सड़क नहीं पकड़ी, बल्कि वह सीधा महावतों और उनके सहायकों की उन छाजन वाली झोंपड़ियों की ओर बढ़ गया जहाँ मार्क ठहरा हुआ था। थोड़ी दूर जाने पर उसे आधे जले बाँस और काली राख का ढेर अब भी दिखाई दे रहा था। एक-दो कौवे भी मलबे पर फुदक रहे थे।

इन्द्रनाथ ने अपनी जेब से एक चाबी निकाली और मार्क की झोंपड़ी का ताला खोला। भीतर ऐसे अँधेरा हो रहा था मानो वह कोई गुफा हो। उसने तब खिड़की खोल

दी। इससे प्रकाश का एक शहतीर एकाएक अन्दर आ घुसा। मार्क की अब सभी चीज़ें स्पष्ट दिख रही थीं। स्याही की दवातें तथा पक्षी के परों से बनाये गये कलम तथा पतंगों के परों के रंग वाली यहाँ-वहाँ बिखरी पाण्डुलिपियाँ। उसकी आँखें मिट्टी की उस पतली दीवार पर भी पड़ीं जहाँ मार्क ने ईश्वर की प्रार्थना से लिये गये विभिन्न उद्धरण कागज़ों के टुकड़ों पर लिखकर चिपकाये हुए थे। ये उद्धरण उसने बड़ी सावधानी से लिखे थे। हर अक्षर स्पष्ट और उभरा हुआ था। वह अपनी असमिया की हस्तलिपि को सुधारने के लिए पक्षी के पर के कलम का इस्तेमाल करता था, और कागज़ के उन टुकड़ों पर उसके अध्यवसाय तथा श्रम का परिणाम देखा जा सकता था।

इन्द्रनाथ के दिल के भीतर दर्द की एक तीखी लहर दौड़ गयी। उसने अपनी पाइप निकाली, उसकी प्याली में बीड़ियाँ भरीं और उन्हें दियासलाई दिखा दी। फिर पाइप पर कश लेते हुए उसने एक-एक करके दीवार पर चिपकाये गये कागज़ के टुकड़ों को पढ़ना शुरू किया।

जैसे-जैसे वह उद्धरण की उन पंक्तियों को पढ़ता गया, उसे संस्कृत की शिक्षा देने वाले उन गुरुकुलों की याद आने लगी जहाँ निर्धन छात्र भी पढ़ते थे। वे फ़रवरी के महीने में बाहर निकलते और घर-घर भिक्षा माँगते। भगत और दूसरे लोग कभी-कभी उन्हें रोक लेते थे और उनसे नामघोष[1] और अन्य धार्मिक ग्रन्थों से सुन्दर लिपि में उपदेश-वाक्य लिखवाते थे। कागज़ के उन टुकड़ों को वे लोक कला के कुछ चित्रों से सजाते भी थे।

इन्द्रनाथ को मार्क द्वारा दीवार पर चिपकाये गये काग़ज़ के उन टुकड़ों में कुछ समानता दिखी। वे ईश्वर-पुत्र, हज़रत ईसा के उपदेश-वाक्य थे।

"ईश्वर के लिए शाही सड़क बनाओ और उसकी तमाम सड़कों को सरल और सीधा रखो!"

"तंग दरवाज़े से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा दरवाज़ा विनाश की ओर ले जाता है!"

"जो सड़क जीवन की ओर जाती है, वह तंग और सीधी है। केवल कुछ लोग ही इस पथ को ढूँढ़ और समझ सकते हैं!"

गोरे साहिबों—बोर, मिलरॉय तथा हंफ्री—से श्रीहाटी के गोसाईं को जो पत्र मिले थे, उन सभी को बड़े सलीके से बाँधकर कमरे के एक कोने में रखा गया था ताकि गोसाईं को उन्हें ढूँढ़ने में दिक्कत न हो। सांची पाण्डुलिपि भी ठीक से ढँककर लकड़ी की तिपाई पर रखी थी और उसे फूलों की एक माला से लपेटा गया था। गिरिबाला ने बरहेरामदो, होरू-हेरामदो, राजाबाहा, मचकुची तथा अन्य स्थानों के घरों में जाकर उनकी परछत्तियों और ढेकियों से बड़ी मेहनत और लगन के साथ पुरानी पाण्डुलिपियों को इकट्ठा किया था। उसने कई गोसाइयों की हवेलियों के पवित्र खड़ाऊँ कक्षों और अँधेरी कोठरियों को भी अनछुआ नहीं रहने दिया था।

निश्चित रूप से मार्क इसी सत्र में रुके रहना चाहता था। अभी उसका काम अधूरा था। वह गिलमन साहिब की जीवनी भी पूरी नहीं कर पाया था और न ही वह दक्षिणी तट के गोसाइयों की बो, मिलरॉय और हंफ्री जैसे ब्रिटिश अधिकारियों की स्मरण-योग्य मैत्री के बारे में लिख पाया था। पर अब तो सब कुछ ख़त्म हुआ समझो। मार्क अब कभी वापस नहीं आ पायेगा। क्या उसकी उससे कहीं, किसी समय, भेंट होगी?

इन्द्रनाथ झोंपड़े से बाहर आया। उसके ऊपर सितम्बर महीने का एकदम स्वच्छ आकाश था। कुछ पहले वर्षा हुई होगी, लेकिन अब तो चमकीली धूप निकली हुई थी। सभी पेड़ और झाड़ियाँ उस चमकीली धूप में चमचमा रहे थे। सोनारू[2] के पेड़ के सुनहरे, पीले फूल सूरज की पीली चमक से होड़ ले रहे थे। एकाएक उसकी आँखें पुराने कटहल के पेड़ की ओर गयीं। पेड़ के नीचे एक मछुआरिन बैठी थी। उसकी टोकरी धान से भरी थी। यह धान उसने मछली बेचकर प्राप्त किया होगा। वह अब यह देखना चाहती थी कि यह धान कितना है। इसलिए उसे माप रही थी।

कुछ समय पहले यही मछुआरनें गोसाईं को केवल एक टोकरी धान के बदले अपनी सारी मछलियाँ दे जाती थीं। लेकिन अब वे उसी गोसाईं से बचती थीं और जितनीं भी मछलियाँ पकड़ती थीं, उन्हें महाजनों के यहाँ ले जाती थीं, क्योंकि महाजनों से उन्हें अधिक धान मिलता था। लगता था जैसे कि अब हर किसी को ज़्यादा भूख लगती है और उसे खाने को ज़्यादा चाहिए।

एकाएक उस स्तब्ध वातावरण को एक दिलदहला देने वाली चीख़ ने चीर डाला। इन्द्रनाथ झटके से मुड़ा। वह बूढ़ा, गुरबत का मारा, काकारिया, जो मिट्टी के खिलौने बेचकर और कालिया बजाकर अपना गुज़ारा करता था, अपना बेटा खो चुका था। दाह-संस्कार के बाद उसने सम्भवतया गाँव वालों को जो कुछ भेंट स्वरूप देना था, वह भी वह दे चुका था। रस्म के अनुसार गाड़े गये बिजली के बाँस पर अब लाल कपड़े का एक टुकड़ा हवा में फड़फड़ा रहा था। जो लोग शव-यात्रा में शामिल थे, वे जगलिया में कीचड़ और पानी से स्नान भी कर चुके थे। यातनाभरी जिस चीख़ को सुनकर इन्द्रनाथ दहल गया था, वह मृत बालक की माँ की थी। दो स्त्रियाँ उसे थामे हुए थीं और कटहल के पेड़ तक पहुँचने में उसकी सहायता कर रही थीं। माँ शोक में डूबी थी और प्रलाप कर रही थी। यह प्रलाप एक गीत की शक्ल में था—

चिता को, हे रामा, एक ही वक़्त चार उँगलियों से मापा जाता है।
जलाऊ लकड़ी एक के ऊपर एक रखी जाती है।
और फिर मुख को अग्नि दिखा दी जाती है।
चिता के सात फेरे लिये जाते हैं।

प्रलाप करती उस विक्षिप्त स्त्री का हृदय-विदारक गान हर किसी के दिल को छू गया। बालक को केवल दो दिन बुखार आया था और वह चल बसा। पलासबाड़ी

के वैद्य ने उन्हें सलाह दी थी कि वे गुवाहाटी से किसी डॉक्टर को बुला लायें। लेकिन यह निर्धन बाप अपने बीमार बेटे के इलाज के लिए गुवाहाटी से डॉक्टर कैसे बुला सकता था?

खट, खट, खट!

खट, खट, खट!

इन्द्रनाथ ने पलासबाड़ी से आती सड़क की ओर देखा। उसे सफ़ेद घोड़े पर सवार एक व्यक्ति दिखाई दिया। वह जगलिया के लकड़ी के पुल पर जा पहुँचा और वहाँ खड़ा होकर रेलिंग पर झुक गया। वह घुड़सवार जैसे ही नज़दीक आया, इन्द्रनाथ ने देखा कि वह तो भिखारू गोसाईं का बेटा देवदत्त है। दोनों ने साथ-साथ गुवाहाटी में शिक्षा पायी थी। लेकिन वह क्योंकि भावी अधिकार था, इसलिए भिखारू गोसाईं ने उसे गुवाहाटी से वापस बुला लिया था, ऐसे ही जैसे इन्द्रनाथ को अपने सत्र में लौटना पड़ा था। इन्द्रनाथ को याद था कि अपने अनुयायियों से लौटकर भिखारू गोसाईं कैसे हिरण के मांस के साथ छात्रों के भोजनालय में पूरी तेज़ी से पहुँचता था। इन्द्रनाथ ने इतनी अधिक मात्रा में हिरण का मांस कभी नहीं देखा था। गोसाईं के पास जगन्नाथ जैसा ही एक विशाल हाथी था···

खट, खट, खट!

खट, खट, खट!

घोड़ा अब पुल पर पहुँच गया था। देवदत्त ने जैसे ही इन्द्रनाथ को देखा, वह घोड़े से नीचे कूद पड़ा। गुवाहाटी में कुछ समय तक रहने के बाद उसके बोलने में ऊपरी असम का लहज़ा आ गया था।

"मुझे गिरिबाला और उस हरामी, म्लेच्छ के बारे में पता चला है। मरने दो! तुमने उस व्यक्ति को खड़ाऊँ कक्ष में जाने की इजाज़त ही क्यों दी? मुझे किसी और से उसके बारे में पता चला है।"

इन्द्रनाथ ने उसका हाथ पकड़ लिया और बोला, "अब छोड़ो यह सब! पहले यह बताओ जा कहाँ रहे हो?"

"तुमने सुना नहीं? सरकार हम ज़िन्दों की ख़ाल उतारने जा रही है! प्यारे भाई, हमारी ज़मीन की हदबन्दी होने जा रही है। वह बहुत जल्द होने वाली है।"

इन्द्रनाथ बोला, "ओह! तुम भूमि परिसीमन अधिनियम के अन्तर्गत हदबन्दी की बात कर रहे हो!"

देवदत्त ने मिलरॉय से अंग्रेजी सीखी थी। मिलरॉय एक ब्रिटिश वन अधिकारी था। लेकिन पूरी कोशिश के बावजूद वह ठीक लहज़े में यह भाषा कभी नहीं बोल पाया। वह अपने अन्दाज़ में बोला, "सुस्त पड़े-पड़े इन्तज़ार करने की बजाय तुम कुछ करते क्यों नहीं? ऐसी होशियारी से कोई स्कीम भिड़ाओ कि यह हदबन्दी हो ही नहीं। तुम जानते हो कि 1956 तक यह अखिल भारतीय अधिनियम बन जायेगा। यह कुछ

इस प्रकार होगा···" उसने अपने अनूठे ढंग से अंग्रेजी का यह उद्धरण देना शुरू किया–

"क़ानून, रीति-रिवाज़ या इक़रारनामों में इसके विरुद्ध चाहे कुछ भी हो, किसी भी व्यक्ति को कुल मिलाकर पचास बीघे से ज़्यादा भूमि ज़मींदार या असामी के नाते रखने की अनुमति नहीं होगी, और पचास बीघे की यह सीमा किसी परिवार के सदस्यों द्वारा अलग-अलग या संयुक्त रूप से या परिवार के सभी सदस्यों की कुल भूमि पर लागू होगी···"

इन्द्रनाथ हक्का-बक्का रह गया। सरकार का जो कानून अभी तक पास भी नहीं हुआ था, उसका लागू होना तो दूर उसे देवदत्त शब्दशः कैसे उद्धृत कर सकता है? बोलो के अड्डे पर एक बार किसी ने उसके कान में इस भूमि परिसीमन अधिनियम के बारे में कुछ फुसफुसाया था, लेकिन उसने इसकी ओर ध्यान नहीं दिया था···

देवदत्त फिर बोला, "मेरे शब्दों के प्रति संजीदगी दिखाओ! बेहतर हो, अभी से तैयारी करो और इसके बारे में कुछ करो!"

वह थोड़ा रुका और फिर कहता गया, "मैंने केवल हाथ से लिखे कुछ कागज़ात लेकर अपनी कुछ ज़मीन बेच भी डाली है। मैं इसी काम से इधर आया हूँ। मेरे कई रिश्तेदार चिकारहाटी में फैले हुए हैं। जब वह भयंकर भूकम्प आया था तो उसके बाद उतना ही भयंकर अकाल भी पड़ा था। चावल की ज़बरदस्त कमी आ गयी थी। मेरे कुछ रिश्तेदारों ने रंगून से चावल की तस्करी करके और उसे चोरी से यहाँ बेचकर अपार धन कमाया था। वे मालामाल थे। इन्द्रनाथ, मेरी बात पर ग़ौर करो और पेशतर इसके कि बहुत देर हो जाये, कोई ठोस क़दम उठाओ। जो कुछ करते हो, उसे गुप्त रखो। हाथ के लिखे कागज़ात के ज़रिये अपनी झालिमाबाड़ी और गरगरा वाली ज़मीनों को बेच डालो। मैं तुम्हारे पास ख़रीदारों को भेजूँगा। अपनी कुछ ज़मीन अपने नाम से हटाकर अपने रिश्तेदारों और मित्रों के नाम कर दो और जहाँ तक हो सके, असामी काश्तकारों को एक तरफ़ करो। माराभीटा में तुम्हारी जो बेइज़्ज़ती हुई थी, उसके बारे में दक्षिणी तट के सभी गोसाइयों को अब तक जानकारी मिल चुकी है। और तेईस मौजों के मौजेदार! जानते हो वे क्या कहते हैं?"

एकाएक उन दोनों की निगाहें एक रंग-बिरंगे छाजन वाली बैलगाड़ी की ओर उठ गयीं। वह उन्हीं की ओर आ रही थी। देवदत्त को ज़्यादा उत्सुकता हो रही थी। वह उसे बराबर देखे जा रहा था। शीघ्र ही जावाकुसुम तेल की सुगन्ध हवा में भर गयी। ऐसी सुगन्ध वाला तेल आमतौर पर दक्षिणी तट की महिलाएँ ही इस्तेमाल करती थीं। इससे इन्द्रनाथ को गन्ने के रस की याद हो आयी। दोनों को ऐसा महसूस हुआ जैसे कि बैलगाड़ी में बैठी महिलाएँ मचिकुची गोसाइयों की बेटियाँ हैं और इनकी सहेलियाँ चिकारहाटी में रहती हैं। वे अक्सर इस सड़क पर आती-जाती थीं।

देवदत्त अब इस तड़क-भड़क वाली गाड़ी की ओर तीखी निगाहों से देख रहा था। हो सकता है उसे इन गोसाईं युवतियों के सुन्दर हाथ या सुघड़ टाँग की झलक मिल जाये। स्त्रियों के लिए उसके भीतर ज़बरदस्त कमज़ोरी रही है। वह बोला, "इन्द्रनाथ, मुझे पता चला है कि तुम राजापुखरी के उस पुजारी की बेटी से शादी करने के लिए बड़े उत्सुक हो। लेकिन इधर मुझे यह भी पता चला है कि तुमने अब वह विचार छोड़ दिया है और तुम्हारी अपनी ज़मीन में भी कोई रुचि नहीं रही।"

वह फिर थोड़ी देर के लिए रुका और कहता गया, "हमारे परिवार में अभी तक कभी कोई ब्राह्मण कन्या नहीं लाया। लेकिन अगर तुम ऐसा सोच रहे हो, तो कोई हर्ज़ भी नहीं। मैं पूरी तरह इसके पक्ष में हूँ।"

फिर अपने चेहरे पर एक शरारतभरी मुस्कान लाकर वह बोला, "मेरे कानों में यह बात भी पहुँची है कि यह लड़की रजस्वला हो चुकी है। और हाँ, तुम जानते ही हो! ···उसके शरीर के वे ख़ास-ख़ास अंग, वे तो इतने बड़े हो रहे होंगे जितनी धान की कटोरियाँ होती हैं!"

अब उसके होंठों के कोनों के इर्द-गिर्द एक मक्कारी-भरी मुस्कान थी। इन्द्रनाथ को लगा जैसे कि उसकी छाती में से रोष और उबकाई की एक लहर-सी उठ रही है। उसने किसी-न-किसी तरह कोशिश करके उसे दबाये रखा। वह देवदत्त के चरित्र को अच्छी तरह जानता था। इसलिए उस पर रोष प्रकट करना बेकार था।

देवदत्त ने अपनी बात कहना जारी रखा, "तो इन्द्रनाथ मुझे उम्मीद है कि अब हर बात साफ़ है। तुम्हारे पिता और मेरे पिता दोनों के पास अपने-अपने नाम से निस्फ़े-खिराज वाली सबसे अधिक ज़मीन है। तुम मेरे पास कभी भी आओ। मैं तुम्हारे लिए ग्राहक और हुण्डियाँ तैयार रखूँगा।"

उसने अपनी पंजाबी की जेब से रूमाल निकाला और अपने कीचड़ से सने जूतों को साफ़ करना शुरू कर दिया। फिर वह बोला, "सुनो! अगर कहीं हिसाब-किताब करने या आँकड़ों के काम की नौबत आ गयी तो तुम अपना अमीन मेरे पास भेज देना··· हाँ, एक बात और। अगर तुम्हें हदबंदी के तहत ज़मीन छोड़नी भी पड़ी तो तुम गरगरा और रंगमाटी वाली ज़मीनों को ही देना। उन पर मुक़दमेबाज़ी चल रही है। इससे तुम काफ़ी चक्कर से बच जाओगे। लेकिन ख़याल रहे, तुम पर और तुम्हारे पिताजी पर माराभीटा के उन हरामियों ने जो कीचड़ उछाला था, उसे नहीं भूलना! साले सड़कछापिए कम्युनिस्ट! लाल झण्डे ढोने वाले सुअर! उनकी हिम्मत कैसे हुई कि वे गोसाईं के खिलाफ नारे लगायें और उससे कहें कि वह हल खुद चलाये। अपने हाथों से! इससे बढ़कर और बेइज़्ज़ती क्या होगी! उन्हें बिना सज़ा दिये मत जाने देना! यह हमारा, दक्षिणी तट के हम गोसाइयों की प्रतिष्ठा का सवाल है।"

इस तरह की भड़ास निकालने पर भी इन्द्रनाथ ने अपनी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। वह चुप रहा। वह देवदत्त से, जितनी जल्दी हो सके, छुटकारा चाहता था।

देवदत्त अब उस कटहल के पेड़ की ओर बढ़ा जहाँ उसने अपना घोड़ा बाँध रखा था और इन्द्रनाथ की ओर मुड़कर बोला, "सुनो इन्द्रनाथ। समूचे दक्षिणी तट में गोसाईं लोग अफ़रा-तफरी में एक-दूसरे पर गिरने-पड़ने लगे हैं। हाथ से लिखे दस्तावेज़ों और रिश्तेदारों तथा मित्रों के बीच भूमि बाँटने के लिए भगदड़ मची हुई है। उत्तरी तट का एक गोसाईं तो पान की दुकानें खोलने की सोच रहा है, क्योंकि इस मार-धाड़ में उसके रिश्तेदार ही उसकी ज़मीनें हड़प गये हैं। अपनी ज़मीनों को सुरक्षित रखने के लिए तुम्हें सारस के समान धीरज रखना होगा और लोमड़ी के समान मक्कार बनना पड़ेगा।"

देवदत्त ने गोल शीशों वाले अपने चश्मे को उतारा और अपने रूमाल से उसे चमकाने लगा। वह दक्षिणी तट के दूसरे गोसाईं युवकों की तरह गोरा नहीं था। उसकी नाक सीधी और लम्बी थी जिससे संकेत यह मिलता था कि उसमें बुद्धिमत्ता और चातुर्य पर्याप्त मात्रा में है। अधिकांश समय तक उसकी आँखों से अस्थिरता और धूर्तता टपकती रही। इससे उसके व्यक्तित्व का आकर्षण कम हो रहा था। उसके बाल काले और घने थे। वे बीच में से काढ़े हुए थे और दोनों ओर घूँघर लिये हुए थे।

इन्द्रनाथ बोला, "मैं तुम्हें एक मुद्दत के बाद मिल रहा हूँ। मेरी माँ भी तुमसे मिलकर खुश होती। लेकिन गिरिबाला की मृत्यु के बाद वह मुश्किल से ही घर से बाहर निकलती है।"

देवदत्त का स्वर अब बड़ा धीमा था, "आज नहीं, इन्द्रनाथ। केवल यह भूमि की हदबंदी का संकट ही मुझे यहाँ लाया है। मैं दो-तीन दिन बाद तुम्हारे माता-पिता से मिलने की कोशिश करूँगा। तुम्हारा चेहरा काफ़ी उतर गया है, मेरे दोस्त। गिरिबाला की आत्महत्या पर इस कदर क्यों इतना सोच रहे हो? अच्छा हुआ इसका अन्त ऐसे हुआ। वरना वह गऊ मांस खाने वाला गोरा हरामी तुम्हारे परिवार के नाम को कीचड़ में घसीटता!"

यह सुनकर इन्द्रनाथ से रहा नहीं गया। वह कह उठा, "नहीं, नहीं, ऐसा मत कहो। कृपा करो··· जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, मुझे बुरा नहीं लगता अगर गिरिबाला और मार्क किसी बन्धन में बँध जाते। शायद तुम विश्वास नहीं करोगे, मार्क जैसा सच्चा आदमी मैंने आज तक नहीं देखा। मैं उसकी बहुत इज़्ज़त करता हूँ।"

देवदत्त बोले जाना चाहता था, "कैसी अजीब बात है! एक भावी अधिकार के मुँह से ऐसी बात निकले! किसी अधिकार के ऐसे अधर्मी बेटे को मैंने नहीं देखा। बुरा मत मनाओ, इन्द्रनाथ। अभी-अभी मुझे एक वाकया याद आ गया। जब हम दोनों साथ-साथ गुवाहाटी में पढ़ रहे थे, तुम्हें याद है हम दक्षिणी तट के गोसाईं अपना खाना खुद ही पकाते थे। एक दिन दिसम्बर के महीने में जब हम नदी में प्रातः स्नान करने के बाद बरामदे में अपनी-अपनी चादर ओढ़े बैठे थे और गायत्री मन्त्र का जाप कर रहे थे, ठीक उसी समय मछुआरों की जाति का एक शम्भू डोम बालक, जो मुश्किल से चार या पाँच वर्ष का होगा, काओइमाछ[3] से भरी एक टोकरी लिये वहाँ आ टपका।

उसके हाथ-पाँव तीले के समान पतले थे और उसका पेट बढ़ा हुआ था। मैंने उससे कहा कि वह टोकरी पलट दे। मैं देखना चाहता था कि टोकरी वाली मछली ताज़ा और ज़िन्दा है या नहीं। उस बालक ने बरामदे के फ़र्श पर सब कुछ पलट दिया। कुछ मछलियाँ अभी ज़िन्दा थीं। उन्होंने वहाँ फुदकना और बल खाना शुरू कर दिया। एकाएक उनमें से एक मछली उस ग़रीब बालक के खुले मुँह में आ पड़ी और उसके गले में अटक गयी। भयंकर दृश्य था यह! बालक फ़र्श पर मारे दर्द और घुटन के छटपटाने लगा। फिर देखते ही देखते उसे खून की उलटी हो आयी। लेकिन हमारी, गोसाइयों के बेटों की, इतनी हिम्मत नहीं हुई कि उसे छुएँ और उसकी मदद करें, क्योंकि वह निचली जाति का था और उसे छूने पर हमें ठण्डे पानी में दूसरी बार स्नान करना पड़ता। तुम्हें तब मलेरिया हो रहा था और तुम आराम कर रहे थे। लेकिन शोर सुनकर तुम आँधी की तरह बाहर आये, और जब तुमने देखा कि मामला क्या है, तो तुम्हें याद है तुम्हारे मुँह से क्या शब्द निकले थे? तुमने चिल्लाकर कहा था—इस दुनिया में धरम-करम कुछ नहीं बचा! कोई नेकनीयती या इन्सानियत नहीं बची!—तुम गोली की तरह बालक की ओर गये थे। हम कहते ही रह गये—मत जाओ उसके पास! तुम्हें बुख़ार है। तुम्हें नहाना पड़ जायेगा! मत छुओ उसे, लेकिन तुमने हमारी चेतावनी की कोई परवाह नहीं की। तुमने बालक के मुँह में अपनी उँगलियाँ डालीं और उस मछली को बाहर खींच लिया! हमने तुम्हें मज़बूर किया कि तुम ब्रह्मपुत्र जाओ और ठण्डे पानी में स्नान करो। याद है तुम्हें, इन्द्रनाथ? तुम शुद्धीकरण वाली रस्म निभा नहीं पाये थे, क्योंकि ऊँचे बुख़ार से तुम्हारा शरीर जल रहा था।"

इन्द्रनाथ ने उत्तर नहीं दिया।

"उस समय हमने अपने धर्म और उच्च जाति की माँग के अनुसार रीति-रिवाज़ों और परम्पराओं के प्रति होने वाली भावना के विचित्र अभाव का ज़िक्र किया था। हमने उस समय इस बात पर भी आश्चर्य व्यक्त किया था कि तुम्हारा यह जीवन तुम्हें किस दिशा में ले जायेगा, आने वाले वर्षों में तुम्हारा क्या होगा! हमें तुम्हें लेकर बहुत चिन्ता थी··· अब, इन्द्रनाथ, मुझे बताओ क्या तुम गऊ के मांस खाने वाले उस व्यक्ति को अपनी बहन को ले जाने की इजाज़त देते?"

हालांकि इन्द्रनाथ 'हाँ' या 'न' में कुछ नहीं बोला था, लेकिन देवदत्त को फिर भी इस बात का शक़ रहा कि इन्द्रनाथ ज़रूर ऐसा कुछ करता जो लीक से हटकर होता और जिस पर विश्वास करना भी कठिन हो जाता। उसने इन्द्रनाथ के उत्तर का इन्तज़ार नहीं किया। वह अपने घोड़े पर सवार होकर चलने के लिए तैयार हो गया और जाते-जाते बोला, "इन्द्रनाथ, ज़मीन की हदबन्दी वाली बात याद रखना। सभी गोसाईं पहले से ही इस समस्या को लेकर परेशान हैं। ख़ासकर अलीबाड़ी और दखिनरानी की मियादी खिराजी ज़मीनों को लेकर। अगर तुम उन्हें बेचने का फैसला कर लेते हो, तो मेरे पास चले आना। मैं उन सबको ख़रीद लूँगा। मुझसे वादा करते हो न?"

इन्द्रनाथ ने अपनी पहले वाली चुप्पी बरकरार रखी और निगाह उठाकर ऊपर देखा तक नहीं। फिर उसे सरपट भागते देवदत्त के घोड़े की नाल की आवाज़ सुनाई दी। जब उसने अपना सर उठाया तो तब तक देवदत्त हाथीबाड़े को पार कर चुका था और पुराने कटहल के पेड़ के परे मुख्य सड़क की ओर बढ़ रहा था। सड़क की पत्थर जैसी कड़ी सतह पर उसे तेज़ भागते घोड़े की केवल खटखट ही सुन पड़ रही थी।

देवदत्त के शब्दों में शायद कुछ सच्चाई है। हदबंदी होने वाली है! हदबंदी होने वाली है! लेकिन इन्द्रनाथ में ऐसी कोई रुचि नहीं कि वह इसे लेकर बैठ जाये और इसके बारे में कोई कार्रवाई करे। उसका दिल पहले ही काफ़ी भारी हो रहा है। वह अमीन को भी ज़मीन बेचने सम्बन्धी काग़ज़ात के लिए नहीं भेजना चाहता। वह बहुत बेचैन है! यह ख़ालीपन, यह भाव-शून्यता और यह कर्महीनता उसमें क्यों है? इतने में ठण्डी हवा का एक झोंका आया और पसीने से तर-ब-तर उसकी पीठ को सहला गया।

जो लोग अभागे काउरिया के बेटे के दाह-संस्कार में शामिल हुए थे, वे जगलिया में रीति-अनुसार स्नान कर चुके थे। उनकी दुबली-पतली कायाएँ डोरी से चालित कंकालों की तरह इन्द्रनाथ के पास से निकल रही थीं। उनकी गीली धोतियों से अब भी पानी टपक रहा था। उनमें से कुछ ने काफ़ी झुककर इन्द्रनाथ का अभिवादन किया और आगे बढ़ गये। एक शोककर्त्ता तो भूमि से अपना माथा छुआता हुआ एकदम लेट ही गया और बोला, "छोटे गोसाईं, कालाआज़ार की महामारी अब बरहेरामदो, खोरू-हेरामदो, तल्लापाड़ा और दूसरे गाँवों में बुरी तरह फैली हुई है। काफ़ी लोग पहले ही ख़त्म हो चुके हैं। और भी अनेक लोग इससे प्रभावित हैं, यहाँ तक कि सरकारी कम्पाउण्डर का लाल पानी भी उन्हें नहीं बचा सका। वे उलटी करते हैं और मर जाते हैं। बस उलटी करते हैं और मर जाते हैं··· मक्खियों की तरह!"

लेकिन उसने इन्द्रनाथ के उत्तर का इन्तज़ार नहीं किया। वह आगे बढ़ गया। वह काफ़ी थका हुआ और निरुत्साहित दिखता था। दरअसल, ये सभी व्यक्ति कंकाल-से दिखते थे और अफ़ीम की लत से बुरी तरह जकड़े हुए थे।

इन्द्रनाथ ने बारीहाट जाने वाली सड़क पकड़ ली। पहले ही देर हो चुकी थी। सर के ऊपर सूरज तो झुलस देने को हो रहा था। इन्द्रनाथ ने अपनी पाइप निकाली और एक बीड़ी को प्याली में रखकर जलाया। हाँ, देवदत्त ठीक कहता है। ज़मीन की हदबन्दी गोसाइयों को तबाह कर देगी। पिछले चार सौ वर्षों से उनका जो सम्बन्ध ज़मीन से बन गया था, वह हमेशा के लिए टूट जायेगा। वह जानता था कि अगले चार-पाँच रोज़ में उसका पिता उससे कहेगा—इन्द्रनाथ, कुछ करो, कुछ करो। तुम्हें याद नहीं हमारे पुरखे, गौरीकान्त गोसाईं ने बाजापाड़ा वाली सारी ज़मीन पट्टे पर अपने असामियों को दे दी थी, क्योंकि उन्होंने इसके लिए अनुनय-विनय किया था? और

तुम जानते हो कि कैसे गारो वाले मौजेदार ने कई तरह की चालें चलकर पूरे खमार को निगल लिया था। लेकिन बेटे, इधर मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारा मन उचाट-उचाट रहता है। मैं समझ नहीं पा रहा कि इसका मैं क्या अर्थ लगाऊँ। शायद तुम्हें पता नहीं कि इन ज़मीनों को एक करने में हमारे बाप-दादाओं ने कितना पसीना बहाया था। बर्मियों के आक्रमणों के बाद केवल महाराजा गोपीनाथ के नेतृत्व में ही हम अच्छे दिन देख पाये हैं। हर कोई जानता है कि तुम समझदार हो। लेकिन तुम्हारा यह खिंचे-खिंचे रहना! क्यों इन्द्रनाथ, क्यों?

हाँ, उसके पिता के शब्द उसके कानों में गूँज रहे हैं। यह सच है कि भूमि के मामले में उसकी कोई रुचि नहीं है, और न ही पहले थी। राजा शिव सिंह द्वारा ताँबे के पत्तरे पर दिये गये आदेश के माध्यम से दान की गयी निस्फ़ेखिराज भूमि का हिसाब-किताब उसकी समझ में अब भी नहीं आता, न ही उसकी समझ में यह आता है कि कप्तान जेंकिन के आदेशों से खाजेलीकुरा तथा खमार की ज़मीनें खिराजी कैसे बनीं?

वह इस तरह क्यों सोचने लगा है? कहीं ऐसी नौबत तो नहीं आ जायेगी कि महाप्रभु गोसाईं को मजबूर होकर उसकी जगह दत्तक पुत्र बनाना पड़ जाये? दक्षिणी तट में क्या कोई और ऐसा गोसाईं अधिकार है जिसने अपने बेटे के जीवित रहते दत्तक पुत्र बना लिया हो? क्या कभी ऐसा हुआ है? अगर उसे ठीक-ठीक याद है तो ब्रह्मपुत्र के दक्षिणी तट के इलाके में भी दत्तक पुत्र बनाने की कभी कोई रस्म नहीं हुई।

उसके मन की ऐसी हालत क्यों है? क्यों? लेकिन इस तरह से अनासक्त रहना उसकी मानसिकता का हमेशा एक अंग रहा, और इसी के कारण उसने कभी-कभी अजीबो-गरीब रास्ते अख़्तियार किये। आजकल जब वह बोलो के अड्डे पर ताश खेल रहा होता है, तब भी वह इसी से परेशान रहता है। राजापुखरी के पुरोहित की बेटी ईलीमन का चित्ताकर्षक सौन्दर्य भी उसे इससे बचा नहीं पाया। अगर वह कभी आकर्षण के सुनहरे जाल में जकड़े जाने को भी होता है तो यह अनासक्ति उसमें एक सुराख कर देती है··· जब वह गुवाहाटी में पढ़ रहा था, तब भी वह कभी-कभी इस रहस्यमयी उदासी की जकड़न में आ जाता था। उस समय तब वह ब्रह्मपुत्र की रेत में इधर से उधर ग़श्त करता रहता था। सुनने में यह भी आता है कि इन्द्रनाथ को बिहारी और मारवाड़ी लड़कों के साथ ब्रिटिश अधिकारियों ने एक बार पकड़ लिया था और गलती से जेल में डाल दिया था। इनका जुर्म यह बताया गया था कि ये ब्रह्मपुत्र की रेत पर खुले में शौच के लिए बैठते हैं। यह सब इसीलिए हुआ, क्योंकि उस समय भी यह अपनी उदासी से घिरा वहाँ पर निरुद्देश्य भटक रहा था।

बारीहाट जाने वाली सड़क पर लकड़ी के पुल के एक सरे पर एक बड़ा जामुन का पेड़ खड़ा था। उसके साये में वह जगह हमेशा ठण्डी और सुखद रहती थी। यहाँ

से जगलिया नदी के दोनों तट साफ़-साफ़ दिखते थे। दोनों ही ओर से तटों पर गहरी हरियाली होती और बीचोंबीच बहती नदी के पानी में नीला आकाश प्रतिबिम्बित दिखता, और ऐसे लगता जैसे कि नदी एक नीले रंग का सर्प हो जो भूमि के हरे रेशमी परिधान पर से सिमट-सिकुड़कर निकल रहा है। यह इन्द्रनाथ की मनपसन्द जगह थी जहाँ वह अपनी पाइप को सुलगा लेता और विचारमग्न उस पर कुछ देर तक कश लगाता रहता।

पुल का यह हिस्सा, छायादार जामुन का यह पेड़ और हरे तटों तथा बल खाती नदी का यह दृश्य इन्द्रनाथ को एक प्रकार की रहस्यमयता में ले जाता था। इसी स्थल पर उसका अपने जगन्नाथ, यानी उन्मत्त हाथी से सामना हुआ था और उसने उससे कुछ नहीं कहा था। यहीं पर उसने दुर्गा को विदाई दी थी और जब तक वह दृष्टि से ओझल नहीं हो गयी थी, वह उसे देखने की कोशिश करता रहा था। सब कुछ यहीं पर, इसी स्थल पर हुआ था। यहीं पर एक चाँदनी रात में मोहक ईलीमन से उसकी अविश्वसनीय भेंट हुई थी और तब उसके साथ वह बूढ़ी औरत भी थी···

नहीं, नहीं! वह यहाँ ज़्यादा देर तक रुकना नहीं चाहता··· गरमरा और सुआलकुची के वे अनुयायी··· उसकी माँ ने उसे बताया था कि वे बड़े प्रभावशाली लोग हैं। जब वे गुवाहाटी के एक स्कूल में पढ़ रहा था, तब वे सत्र में आये थे और हवेली की महिलाओं के लिए अनेक उपहार लाये थे, जिनमें एंडी की शालें, पुराने धान के चावल, गुड़ से भरे मिट्टी के बर्तन, हाथी दाँत के कंघे, मूंगा रेशम की मेखला और रेहा[4] इत्यादि शामिल थे। उनके साथ ढोल बजाने वाले, भैंस के सींग बजाने वाले और कुछ ओझा लोग भी थे। ड्योढ़ी में, जहाँ एक तार पर हाथी के गद्दे और दूसरा साजोसामान टँगा था, दक्षिणी तट के एक भगवती[5] ने भागवत से कुछ श्लोक पढ़े थे। इन्द्रनाथ इस ब्राह्मण को अच्छी तरह जानता था। यह ब्राह्मण बीच में से फटने को हो रही भागवत की एक पुरानी प्रति को लेकर एक बड़े पीढ़े पर बैठ जाता था। बरहेरामदो, होरूहेरामदो, तल्लापाड़ा और चौधरीपाड़ा जैसी जगहों से लोग इसके इर्द-गिर्द घेरा बनाकर बैठ जाते थे और इसे पूरी तन्मयता से सुनते थे। यह भगवती हमेशा गोल शीशों वाला पढ़ने का चश्मा लगाता और उसे अपनी नाक पर बनाये रखने के लिए अपने कानों से डोरी बाँध लेता। वे लोग इसके इस बेढंगे चश्मे को देखकर हँसने के साथ-साथ इसका मज़ाक़ भी उड़ाते। लेकिन भागवत का पाठ करने में यह व्यक्ति अद्वितीय था। इन्द्रनाथ को अब भी याद है कि किस बारीकी से उसने बिज़नी के कुछ गौरिया वैष्णवों तथा इस सत्र के संस्थापक दामोदर देव तथा उसके वैष्णववाद का बखान किया था और कैसे वह वैष्णव ग्रन्थों का अनुसरण करते हुए स्थिति या श्रोताओं के अनुसार उनमें कुछ परिवर्तन भी कर लेता। हाँ, इन्द्रनाथ को सब कुछ याद है। व्यक्ति या स्थिति को देखते हुए परिवर्तन किये जा सकते हैं, यहाँ तक कि स्थिति-विशेष या परिवेश को देखते हुए भी कड़ाई में कुछ ढील दी जा सकती है।

सब कुछ इन्सान के अपने हाथ में है। हाँ, पुरुष और स्त्रियों के हाथों में! जैसे कि ईश्वर शून्य है, केवल सत्यता और श्रद्धा ही ईश्वर है। यदि कोई धर्म है तो वह यही है। इन्द्रनाथ ने अपने आपको आश्वस्त किया।

क्या उसके मन की सभी खिड़कियाँ अब बन्द हैं? नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं। एक खिड़की में से वह अब भी नीले सर्प की तरह हरे रेशम के तटों के बीच से बहती जगलिया के सौन्दर्य को आत्मसात् कर सकता है। इससे उसे अपनी प्रिय ईलीमन के लम्बे लहरियेदार बालों की भी याद आ गयी। वह एकादशी के पूरे चाँद की सराहना कर सकता है और कल्पना कर सकता है कि इसका प्रकाश जगलिया के जल की सतह पर फैले मछुआरे के जाल के समान होगा। हाँ, यही वह पुल है जहाँ उसकी ईलीमन से भेंट हुई थी।

प्रेम दैवी है। यह प्रेम किसी प्रकार की कोई माँग नहीं करता। सभी रास्ते यहाँ आकर मिलते हैं और ख़त्म हो जाते हैं। उसे ऐसा ही लगता है। गिरिबाला, मार्क, छोटी गोसाइन··· क्या उनका प्रेम भी इसी दैवी पथ में समा जाता है?

एक अपरिभाषित पीड़ा उसके दिल के एक कोने में अब भी उसे टीस देती है। अपराध और पश्चात्ताप की भावना उसे घेरे रहती है। वह कितना स्वार्थी है। उसकी हतन्त्रियाँ गिरिबाला की आत्मा के स्पन्दन से एकात्म होकर बज उठती हैं। उसका अगोचर स्वर उसके मन में गूँजता है, "मैं तुम्हें जानती हूँ, मैं तुम्हें समझती हूँ। मुझे तभी खुशी होगी जब तुम्हारा उद्विग्न मन शान्त होगा।"

हाँ, वही तो था जिसने उन्हें घनिष्ठ होने का अवसर दिया। उस समय उसके मन में यह चलता रहता था कि मार्क के लिए पुरानी पाण्डुलिपियाँ जुटाने का काम मार्क के पुण्य कार्य को तो आगे बढ़ायेगा ही, उसके साथ-साथ गिरिबाला के मन-मस्तिष्क को भी पुष्ट करेगा। वह देखता रहा है कि कैसे सत्र की स्त्रियों ने अपना समय बिताया है। निश्चित रूप से वे इसलिए नहीं हैं कि उन्हें यूरियम के क़फ़नों का? शीशम की दीवारों और खम्भों में ज़िन्दा दफ़ना दिया जाये। स्त्री का जीवन ईश्वर की एक सुन्दर देन है।

मार्क के धर्मग्रन्थ कहते हैं :

"मैंने भैंसों की रचना इसलिए की कि वे भेड़ियों के साथ-साथ रह सकें। तुम संसार में जाओ, लेकिन उतने ही बुद्धिमान् और सूझबूझ वाले बनो जितना कि साँप होता है, और उतने ही विनम्र बनो जितनी कि फाख़्ता होती है। लेकिन इन्सान से बचो! वह तुम्हें अपनी धार्मिक सभाओं में नंगा करके सबको दिखाता फिरेगा!"

ओह, कैसी ग़लती हुई उससे? उसने उन्हें नगरबेरा[6] और भटेरा[7] की झाड़ियों के बीच एक-दूसरे के रू-ब-रू खड़े देखा था। अक्सर वे रोशनी के खम्भे के नीचे एक दूसरे की आँखों में झाँकते होते, लेकिन उसने इस बारे में न कभी कुछ कहा और न किया। मार्क का वही ग्रन्थ एक दूसरे स्थल पर कहता है :

"हम भूखे थे, लेकिन तुमने हमारी भूख का शमन नहीं किया। हम शोकातुर थे, लेकिन तुमने हमारा शोक बँटाया नहीं। हमने बाँसुरी पर एक धुन बजायी, लेकिन तुमने उसे सुना नहीं।"

इन्द्रनाथ ने सड़क पर फिर चलना शुरू कर दिया। उसकी आँखों के सामने अब बोलो के घर का मुख्य द्वार था। वह उस द्वार के बाँस के अड़ंगे के सामने रुक गया। उसमें प्रवेश करने के लिए उसने उसे एक तरफ़ किया, लेकिन फिर उसका मन बदल गया और उसने उस अड़ंगे को वापस अपनी जगह पर कर दिया और कुछ देर तक बिना हिले-डुले वहीं खड़ा रहा। सहन में आक के पेड़ के साये में भड़कीले ढंग से सजायी गयी एक ढकी हुई गाड़ी खड़ी थी। शायद कुछ स्त्रियाँ पास के गाँवों से बोलो के परिवार से मिलने आयी थीं। भीतर से हँसी-ठट्ठा करने और एक दूसरे से मज़ाक़ करने की आवाज़ें आ रही थीं। शायद गोलकधाम की बाजी चल रही थी। इन्द्रनाथ को एकाएक लगा कि तम्बाकू पी-पीकर अपने होंठों को दाग़ी करने से तो यही अच्छा होता कि उसकी माँ गोलोकधाम जैसा कोई खेल खेलना शुरू कर देती।

अब वह दोचित्त हो रहा था—कि भीतर जाये या नहीं—कि इतने में बोलो स्वयं ही पान की पीक थूकने बाहर आया। इन्द्रनाथ को बाहर गेट के पास खड़ा देखकर वह फौरन कह उठा, "छोटे गोसाईं, आप वहाँ क्यों खड़े हैं? भीतर आ जाइए।"

इन्द्रनाथ सहन के भीतर हो लिया, और फिर जैसे ही वह उसके घर में प्रवेश करने को हुआ, उसे बरामदे के एक सिरे पर तिपाई पर बैठा एक बूढ़ा व्यक्ति दीख पड़ा। उसका चेहरा लम्बी दाढ़ी से ढका हुआ था और उसके लम्बे बाल उसके कानों पर झूल रहे थे। बोलो ने उसका परिचय देते हुए कहा, "यह दक्षिणी तट के जीववल्लभ गोस्वामी हैं। यह तुम्हारे पिता प्रभु के साथ 1912 में गुवाहाटी में पढ़ते रहे। 1912 ही था न तब?"

बूढ़े आदमी ने स्वीकार में अपना सर हिला दिया।

इन्द्रनाथ को याद आया कि उसके पिता ने उसे गोसाईं के बारे में कभी कुछ बताया था। यह व्यक्ति इतना ग़रीब था कि यह अपनी शादी के लिए आवश्यक कन्यापान[8] भी न जुटा पाया, और इसका परिणाम यह रहा कि यह तमाम उम्र कुँवारा ही रहा। इसके पुरखे बंगाल के नादिया जिले के शान्तिपुर से आये थे। उनका अमरंगा सत्र के कनौजी गोसाइयों से कोई सम्बन्ध नहीं था। इस गोस्वामी ने कन्यापान के विरुद्ध लड़ाई लड़ी और जीत गया। उसके पिता ने उसे, बस, यही बताया था···

इन्द्रनाथ ने उस बूढ़े व्यक्ति को और ग़ौर से देखा। उसके बाल पूरी तरह सफ़ेद थे और वह एंडी की पुरानी मैली-कुचैली पंजाबी पहने हुए था, और इस पंजाबी का रंग तुरई-झांवा के समान हो रहा था। वह जो जूते पहने हुए था, उनके तले काफ़ी मोटे थे। उसके कन्धों पर एक साफ़-सुथरी सूती चादर थी। वह चादर वैसी ही सफ़ेद थी जैसी कि प्रायः युवक गोसाईं ओढ़ते थे।

बूढ़े व्यक्ति ने जैसे ही इन्द्रनाथ को पहचाना, उसका चेहरा खिल उठा। वह बोला, "मैंने कूच-विहार के भेलाडंगा सत्र में तुम्हारे बारे में सुना था। हर कहीं लोग इसकी चर्चा करते हैं। कैसे तुमने उस भयंकर उन्मत्त हाथी की परवाह किए बिना आधी रात के वक़्त जमालुद्दीन के शव को भोलागाँव पहुँचाने में मदद की! शाबाश! तुमने जो कुछ किया, वह अद्‌भुत है!"

बोलो ने उस बूढ़े व्यक्ति से अनुनय किया, "गुरुवर, आप छोटे गोसाईं को आशीर्वाद दीजिए। जल्दी ही उसे माराभीटा में पहुँचना है। वहाँ कम्युनिस्टों ने नरक खड़ा कर दिया है। आप इसकी सफलता की शुभकामना करें!"

यह सुनते ही इन्द्रनाथ बोल उठा, "नहीं, नहीं! मुझे ज़मीन का कोई लालच नहीं। यह तो मैं केवल अपने पिता के लिए कर रहा हूँ। वह इसे लेकर बहुत परेशान हैं और इसे परिवार की प्रतिष्ठा का सवाल बनाए बैठे हैं। मैं वाकई लाचार हूँ।"

"हाँ, हम जानते हैं।" बोलो ने कहा, "लेकिन वे बड़े गोसाईं को धमकियाँ दे रहे हैं और कह रहे हैं कि वह अपनी ज़मीनों पर ख़ुद हल चलायें। वे हरामज़ादे! कुत्ते कहीं के! तुम्हारा अमीन जब वहाँ गोसाईं के लिए धान लेने गया था तो धन देने के बदले उसे अपनी पीठ पर लाठियाँ मिली थीं।"

इस बीच एक बंधुवा इन्द्रनाथ के लिए लकड़ी की एक तिपाई ले आया था। बोलो ने अपनी चादर से उसे झाड़ा और बोला, "आइए, गोसाईं, यहाँ बैठिए।"

बूढ़े व्यक्ति ने कहा, "अधिकार लोगों की अब सत्ता और शान ख़त्म हो चुकी है। भूमि परिसीमन ने सब कुछ उलट-पलट दिया है। आज से तीस-चालीस वर्ष पहले क्या शानदार समय था! क्या वह कभी लौटेगा? मैं तुम्हारे पिता के साथ खेला करता था। हम दोनों साथ-साथ पढ़ते भी थे। हम उन दिनों मुग़ल-पठान" का खेल खेलते थे। हर हफ्ते तुम्हारा हाथी गाँव से आता था। आह! क्या दिन थे वे! मिट्टी के कूंडो में मक्खन जैसा गाढ़ा दही, बाँस जैसे मोटे गन्ने के गाँडे और कटहल के मीठे रस भरे कोए। आह, क्या बढ़िया-बढ़िया चीज़ें होती थीं। मैं पुराने दिन कभी नहीं भूलूँगा। एक बार मैं इधर तुम्हारे पिता के हाथी पर आया था। उस समय तुम्हारे पास एक बड़ा अड़ियल हाथी था···क्या नाम था उसका? अरे, हाँ, हाँ, ऐरावत! अगर उसकी पीठ पर चार से ज़्यादा व्यक्ति बैठ जाते तो वह नाराज़ हो जाता और पैर पटकने लगता। फिर बैठने की जगह को बार-बार कसने के लिए हर किसी को चार-पाँच बार नीचे उतरना पड़ता। एक बार जब महावत उसके पेट पर रस्सा बाँध रहा था तो उसने रस्से को अपनी सूँड से हटा दिया जिससे महावत के सर पर चोट आ गयी। हम उस दिन बहुत जल्दी में थे, क्योंकि एक ख़ास वक़्त के बाद हाथियों को गुवाहाटी की स्ट्रैण्ड रोड पर जाने की इजाज़त नहीं थी।"

अब दोनों गोसाइयों के सामने पीतल के गिलासों में चाय आ गयी। वे गिलास सोने की तरह चमचमा रहे थे। दोनों गोसाईं कुछ देर तक चुपचाप चाय सुड़कते रहे।

फिर उत्तरी तट के गोसाईं ने ही बात शुरू की, "तुम्हारे पिता का भी जवाब नहीं। उन दिनों हम मैकाले की *डेज़ ऑव एंशेंट रोम*, शेक्सपीयर, *द अरेबियन नाइट्स* तथा *यूथ्स गोल्डन पाथ* पढ़ा करते थे। लेकिन तुम्हारे पिता बंकिम की *देवी चौधुरानी*, *लाइफ ऑव नेल्सन* जैसी पुस्तकें ही पढ़ना पसन्द करते थे। *बंगवासी* नाम की पत्रिका हमेशा उनके बिस्तर के निकट पड़ी रहती। एक बार मैं कोई नाटक देखने तुम्हारी वार्षिकी सभा में भी आया था। तुम्हारे दादा अपने हाथों से पटाखे तैयार करते थे। वह इसके लिए बंखा[10] की खोखली शाखाओं में बारूद भरा करते थे, और विस्फोट तैयार करने के लिए गंधक और शोरे में लकड़ी का कोयला मिलाया करते थे। वह घेरा, जहाँ आगन्तुकों को सांधा[11] दिया जाता था, बहुत बड़ा था। शामियाना खड़ा करने ताल्लुकदार पाड़ा से लोग आये थे। ढोलचिये गरगरा से आये थे और ओझा लोग जयपुर से···।"

अब उनके सामने पीतल का एक बोटा[12] रखा गया। उसमें सुपारी और खाने का तम्बाकू था। एक बंधुवा उत्तरी तट के गोसाईं के लिए भरा हुआ हुक्का ले आया।

"सुनो, इन्द्रनाथ! एक बार जब मैं इधर आया था तो मेरे सुनने में आया कि नाहिरा के गोसाईं का कत्ल हो गया है। उसका दो विधवाओं और एक विवाहित स्त्री के साथ मामला चल रहा था।"

इन्द्रनाथ पहले ही विचारों से घिरा हुआ था। इसलिए उसकी उस बूढ़े व्यक्ति से बातचीत करने में कोई रुचि न थी। वह किसी ख़ास मकसद से बोलो से मिलने आया था और वहाँ से जितनी जल्दी हो सके, चला जाना चाहता था। लेकिन वह बातूनी बूढ़ा गोसाईं आसानी से टलने वाला नहीं था। वह इन्द्रनाथ के इस तनाव और चिन्ता-भरे व्यवहार का कारण भूमि-परिसीमन अधिनियम का खतरा समझ रहा था जो कि उस पर मँडरा रहा था। उसने उत्तरी और दक्षिणी तटों के और भी ऐसे ही विक्षिप्त और दुःख से आतुर युवा गोसाइयों को देखा था जो इधर-उधर दौड़-धूप में लगे हुए थे। लेकिन वह इन्द्रनाथ के मन की उथल-पुथल का सही कारण कैसे जान सकता था?

बूढ़े गोसाईं ने फिर कहा, "उधर कूच-बिहार वाली ज़मीन के लिए मैंने सुना था कि तुम्हारा कोई ख़ास लगाव नहीं है। लेकिन अब तुम्हें देखकर लगता है कि यह सच नहीं है, और यह सच होना भी नहीं चाहिए। कौन अपने बाप-दादा से मिली जायदाद और धन-दौलत को छोड़ना चाहेगा? निश्चित रूप से नयी पीढ़ी के युवक तो बिलकुल नहीं।"

बोलो ने इसमें हस्तक्षेप किया, "नहीं, नहीं, ऐसा नहीं है। इन्द्रनाथ को ज़मीन की कोई भूख नहीं। उसे तो यह भी पता नहीं कि जेंकिन साहिब के ज़माने में कितनी भूमि को खिराजी बना दिया गया था।"

बूढ़ा गोसाईं भी रुका नहीं। कहने लगा, "निस्फे-खिराज़ भूमि पर राजा चन्द्रकान्त सिंह के ज़माने में लगान लगा था जो बर्मी आक्रमण के दिनों तक लागू

रहा। गोरे साहिबों के ज़माने में निस्फ़े-खिराज़ और खिराज़, दोनों प्रकार की भूमियों पर प्रति पूरा[13] आठ आने की दर से लगान लगा था।"

"हाँ, हाँ! स्कॉट साहिब के ज़माने में लगान की दर आठ आना थी। 1834 के बाद से जेंकिन साहिब के ज़माने में, ब्रह्मोत्तर तथा धर्मोत्तर ज़मीनों का मापना-जोखना शुरू हो गया था और काफ़ी गड़बड़ी फैली थी। वे ज़मीनें, जो अहोम राजाओं से दान में नहीं मिली थीं, उन पर प्रति पूरा एक रुपये की दर से लगान लगाया गया। जगलिया के दोनों तटों पर भी ऐसी कई झगड़े वाली ज़मीनें थीं। तुम जानते हो, इन्द्रनाथ, ऐसी ज़मीनें कहाँ हैं और उनका क्षेत्रफल क्या है?"

इन्द्रनाथ थोड़ी देर तक चुप रहा। फिर बोला, "ज़मीनों का सभी हिसाब-किताब हमारे अमीन के पास रहता है।" इतना कहकर वह फिर चुप हो गया और अपनी पहले वाली स्थिति में लौट गया।

ठीक उसी समय घर के भीतर गोलोकधाम खेल रही महिलाओं की ज़ोर से हँसी की आवाज़ आयी। बातें करते समय उनकी आवाज़ भी वैसी ही ऊँची थी। छोटे गोसाईं ने अपनी पंजाबी की जेब से रूमाल निकाला और अपने चेहरे से पसीना पोंछा। फिर उसने बोलो की ओर देखा और धीरे-से कहा, "मैं असल में तुम्हारे पास एक ज़रूरी काम से आया हूँ।"

इस पर बोलो ने उससे बड़े उत्साह से पूछा, "हाँ, हाँ, बताओ! बताओ मुझे!"

उत्तरी तट का गोसाईं अब फ़ौरन बोल पड़ा, "अगर तुम लोगों को कोई निजी बात करनी है तो मैं यहाँ से हट जाता हूँ।"

इन्द्रनाथ ने उसे रोका और कहा, "निजी कुछ भी नहीं है। आप यहीं बैठे रहिए।" फिर बोलो की ओर मुड़कर बोला, "गरगरा और सुबालकुचि से कुछ अनुयायी आ रहे हैं। हमेशा की तरह मेरे पिता चाहते हैं कि उनके भोजन के लिए कबूतर और पपीते की व्यवस्था तुम ही करो। एक बात और! अगले महीने माराभीटा की उस विवाद वाली ज़मीन पर धान की बुवाई होगी। मेरे पिता चाहते हैं कि तुम मेरे साथ वहाँ चलो। हम अपनी साइकलों पर चलेंगे। मैं अपनी पुरानी साइकल ही ले जाऊँगा। सच बात तो यह है कि मेरा वहाँ जाने का बिलकुल मन नहीं है। लेकिन मैं अपने पिता को 'न' कैसे कह सकता हूँ।"

इस पर बोलो थोड़ा कस गया और उसे डाँटता हुआ-सा बोला, "छोटे गोसाईं, आपको जाना ही होगा। आपको अपनी शक्ति और अधिकार दिखाना ही होगा। और आप अपनी पुरानी साइकल नहीं ले जायेंगे। आप अपने हाथी पर बैठकर जायेंगे, और हाथी की पीठ पर हौदा कसा होगा, और वह हौदा चमचमा रहा होगा। आप एक अधिकार के बेटे हैं। वह ज़मीन आपकी है। जेंकिन के समय से, जब यह खिराज़ी हुई, तब आपने इस पर लगान दिया। इस ज़मीन पर पानी था। यह एकदम उपजाऊ हो गयी। यह देवी लक्ष्मी का वरदान है। इसलिए आप हाथी पर हौदे में जायेंगे।"

इन्द्रनाथ चुप रहा। बोलो उसकी अन्तरतम की भावनाओं को कैसे समझ सकता है? माराभीटा में ज़मीन के उस टुकड़े ने उसके अन्तर्मन को मथ डाला है और उसे परीक्षा के बिन्दु पर ला खड़ा किया है।

उत्तरी तट के गोसाईं ने अपनी बात जड़ी, "तुम मेरे बेटे के समान हो। तुम्हारे पिता और मैं मुग़ल-पठान खेला करते थे। हम जनार्दन जाते थे। वहाँ हारमोनियम बजाते थे और साथ-साथ गाते थे। हम दोनों ने साथ-साथ अंग्रेज़ी सीखी और साथ-साथ नेल्सन की जीवनी पढ़ी। सुनो बेटा! भूमि-परिसीमन से भी ज़्यादा मुसीबत पैदा करने वाली वह लाल आँधी है जो कभी भी इधर का रुख़ कर सकती है और अपने साथ सब कुछ उड़ा ले जा सकती है। ऊँचाई से नीचे आ पड़ना, जानते हो, इसका मतलब क्या है?"

···नहीं, नहीं! अब वह समय नहीं रहा। इन्द्रनाथ अब उस मनःस्थिति में नहीं है कि वह किसी से नसीहतें ले या उनकी ऊँची-नीची बातें सुने या नैतिकता के पाठ पढ़े।

बोलो ने फिर कहा, "मैं जानता हूँ। कई कारण हैं कि इन्द्रनाथ क्यों इतना उदास और खिन्न है। उसकी बहन का देहान्त हुए ज़्यादा समय नहीं हुआ। दुर्गा अपनी ससुराल अकेली ही चली गयी और वहाँ से उसे लिवाने कोई नहीं आया। उसके प्रिय हाथी को गोली मारकर ख़त्म कर देना पड़ा। उधर माराभीटा में कम्युनिस्टों का ख़तरा है। ऐसे हालात में वह कैसे शान्त रह सकता है?"

बूढ़े गोसाईं के चेहरे पर इन्द्रनाथ के लिए सहानुभूति और कुछ-कुछ उदासी आ गयी। वह अपनी कुर्सी पर से उठा, और उसके कन्धे पर हाथ रखकर उसे दिलासा देने लगा। "इन्द्रनाथ, इन बातों से परेशान मत होओ। ईश्वर में विश्वास रखो। मेरी आशिष, मेरे बेटे, हमेशा तुम्हारे साथ है!" और वह बूढ़ा व्यक्ति तथा बोलो इन्द्रनाथ को विदाई देने बाहर तक आये।

बोलो इन्द्रनाथ के साथ कुछ दूर तक पैदल चलता रहा। सूरज की किरणें अब पीली पड़ने लगी थीं। ग्वाले अपने पशुओं के साथ धूल के बांदल उड़ाते चरागाहों से लौट रहे थे। वे केले के पत्तों में मन्दिर का प्रसाद भी लिये हुए थे।

बोलो कहने लगा, "छोटे गोसाईं, ज़्यादा चिन्ता मत करो। पुराने वक़्तों में जब-जब तुम्हारे पुरखों पर किसी तरह का कोई संकट आया, मेरे पुरखे उनकी मदद के लिए आगे आये। अब मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूँ। जैसी भी मदद चाहिए, मुझे बताओ।"

इन्द्रनाथ ने केवल अपना सर हिला दिया। फिर बोला, "मैं जानता हूँ, बोलो! केवल तुम्हीं से मैं अपने दिल की भीतरी से भीतरी बात कर सकता हूँ, और केवल तुम्हें देखकर ही मुझे राहत की साँस मिलती है।"

"आप मुझे सभी कुछ क्यों नहीं बता देते? ज़गलिया के दोनों तटों के लोग अब यही कहने लगे हैं कि आप रोज़मर्रा की ज़िन्दगी से भी बेगाने हो रहे हैं। मेरा विश्वास

कीजिए। राजापुखरी के पुजारी की वह बेटी अब किसी तरह भी आपसे मिल नहीं सकती।"

इन्द्रनाथ ने अपना सर झुका लिया और चुपचाप खड़ा रहा। उसके अन्तरतम में एक प्रकार की कशमकश चल रही थी। वह उसे कैसे प्रकट करे? वही उसकी ऐसी परेशानी का कारण बनी हुई है?

अब वे दोनों सड़क पर नयी-नयी बिछी बजरी पर चल रहे थे। सड़क के दोनों तरफ़ शीशम के ऊँचे-ऊँचे पेड़ थे। सूरज की किरणें उन पर धूप-छाँव की एक अपनी तरह की बुनावट बुन रही थीं जिससे ऐसा आभास होता था जैसे कि पेड़ों को चीते की खाल ने ढक लिया हो।

इन्द्रनाथ बोला, "हम दोनों साथ-साथ खेले हैं और साथ-साथ बड़े हुए हैं। सच, मैं तुम्हें अपने मन की बात बताना चाहता हूँ।"

"तब बताओ, बताओ, मुझे।"

"भूमि की मुझे कोई लालसा नहीं है, और यह तुम जानते ही हो··· और जिस लड़की का तुमने ज़िक्र किया है, उसे मैंने भूलने की पूरी कोशिश की है, लेकिन भूल नहीं सकता हूँ। इसके लिए मैं अपने आपको माफ़ नहीं कर सकता। सपने कम ही सच होते हैं। क्या वे सच होते हैं? गिरिबाला को अपनी जान देनी पड़ी। दुर्गा को सुसराल वालों की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ वहाँ जाना पड़ा। और छोटी गोसाइन! उसके बारे में तो तुम्हें सब पता ही है··· जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, मैं समझ नहीं पाया कि क्या निर्णय लूँ, क्या करूँ! मैं एक तरह से अपने को हर चीज़ से अलग रखना चाहता हूँ। बस, मैं कोशिश ही कर सकता हूँ, और यकीन करो इससे मुझे बहुत मानसिक क्लेश होता है।"

बोलो बहुत ही हलकी और धीमी आवाज़ में बोला, "मैं समझ रहा हूँ इन्द्रनाथ! मैं सोच सकता हूँ कि तुम्हारे ऊपर क्या बीत रही होगी! एक प्रकार की परीक्षा है यह, बहुत ही कड़ी परीक्षा है। सब नियति का खेल है।"

"नहीं, नहीं, बोलो! यह न परीक्षा है, न नियति का खेल है और न ही कुछ और है। यह सब स्वाभाविक रूप से हुआ है। अपने आप! बस, तसल्ली इस बात की है कि वह लड़की, ईलीमन, सही-सलामत है। इसी से मुझे लगता है कि मैं अपने को माफ़ नहीं कर सकता···"

"इन्द्रनाथ, तुम्हारा प्यार सात्विक और उदात्त है। सम्भवतः तुमने उसे छुआ तक नहीं, और न ही तुम दिल खोलकर उससे कभी बात ही कर पाये। अगर तुम्हारी किसी भारी विपत्ति में वह तुम्हारा सहारा बन सकती है तो मैं इस प्यार की दाद दिए बिना नहीं रह सकता।"

"सुनो बोलो, मैंने अपने पिता के सामने अपनी एक इच्छा व्यक्त की है।"

"यह इच्छा क्या है?"

"उन्होंने मेरे पिता को यह कहकर अपमानित किया है कि वह अपनी ज़मीनों पर स्वयं हल चलायें। यह उनके लिए बर्दाश्त से बाहर हो गया है। उन्होंने मुझे खड़ाऊँ कक्ष में बुलाया था और कहा था कि मैं फ़ौरन माराभीटा के लिए रवाना हो जाऊँ। वह भी यही चाहते हैं कि मैं हाथी पर बैठकर जाऊँ। उन्होंने मुझसे कहा है कि मैं गरगरा से कारिंदों को बुलवा भेजूँ और यात्रा के लिए उनसे हौदा ठीक करवाऊँ। उन्होंने परछत्ती की ओर भी इशारा किया और कहा कि मैं हौदे को सजाने के लिए पुराने हाथी दाँतों को बाहर निकालूँ और सर पर पगड़ी बाँधकर, रेशमी पंजाबी और शान्तिपुरी धोती पहनकर अपने पुरखे अधिकारों की तरह जाऊँ। जब मेरे पिता और मेरे पिता के पिता माराभीटा जाया करते थे तो उनके अनुयायी ढोल और मंजीरे बजाकर उनका स्वागत किया करते थे। तब वे हौदे से नीचे आते थे और ज़मीन पर बिछे एक लम्बे वस्त्र पर चलकर आगे बढ़ते थे। फिर वे अनुयायी उस वस्त्र को कई टुकड़ों में काट लेते थे और आपस में बाँट लेते थे। जब कभी उनके परिवार का कोई सदस्य बीमार पड़ता तो तलिस्मे के तौर पर उस कपड़े के टुकड़ों को वे अपने-अपने सर पर बाँध लेते··· आज वही लोग हमें धमकियाँ दे रहे हैं। मेरे सुनने में आ रहा है कि कूच-विहार का वह अफ़ीम का तस्कर ब्राह्मण जो जोकराम भगवती के घर में पकड़ा गया था, जेल में से छूटकर माराभीटा में उन्हीं से जा मिला है। कहने को यह भी कहा जा रहा है कि बड़े गोसाईं से जिस परिवार की शत्रुता थी, उसका एक युवक कम्युनिस्टों से मिल गया है और अब नेता बना हमारे खिलाफ़ नारे लगाता घूमता है। वे सब अब यही नारा लगाते हैं—गोसाईं आओ, अपनी भूमि पर हल चलाओ।"

इन्द्रनाथ और बोलो अब लकड़ी के पुल पर आ गये थे। इन्द्रनाथ बोला, "बोलो, अब वापस जाओ। वह बुड्ढा गोसाईं तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा होगा···"

"अरे, ठीक है! उसे रात भर यहीं रुकना है। मैंने ड्योढ़ी में उसके लिए व्यवस्था कर दी है ताकि वह वहीं अपना खाना बनाये और सो जाये।"

वे नयी-नयी बजरी बिछी सड़क पर बराबर चले जा रहे थे। लोहारघाट जाने वाले दो ट्रक उनके पास से दनदनाते हुए निकल गये। इन्द्रनाथ ने कहा, "जब हमारे लोग वहाँ धान की रोपाई करने जाते थे, तो वे आपस में फुसफुसाकर ही बात करते थे। कभी कहीं कोई विरोध नहीं दिखता था। लेकिन अब सब जगह बारूद के धुएँ की ही गन्ध आती है। एक युवक, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह मेरे दादा की नाजायज़ औलाद है, वह भी आजकल वहाँ उनका नेता बना घूमता है। लेकिन बोलो, मैंने अभी तक तुम्हें वह नहीं बताया जो मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ।"

"हाँ, कहो न, इन्द्रनाथ!"

"मैं अपने पिता के अपमान का बदला लेने वहाँ ज़रूर जाऊँगा और उन्हें चुनौती दूँगा। मैं अपने हाथी पर हौदे में ही बैठकर जाऊँगा और देखूँगा कि धान की फ़सल कैसे नहीं कटती! लेकिन क्या तुम जानते हो कि जब एक बार फ़सल कट गयी और उसे गट्ठरों में बाँध दिया गया तो मैं क्या करूँगा?"

"क्या? क्या?"

एकाएक गोली चलने की आवाज़ आयी और इसके साथ ही जंगली मुर्गाबियों का एक झुण्ड जगलिया के पश्चिमी तट से गोक-गोक-गोक करता उड़ गया। बोलो ने अपनी बात जारी रखी, "अरे, ये वही उत्तरी तट के गोसाईं छोकरे होंगे, और मुर्गाबियों का शिकार कर रहे होंगे। लेकिन इन्द्रनाथ, तुम बताओ मुझे कि माराभीटा में क्या करोगे?"

"जैसे ही धान के गट्ठर बैलगाड़ियों पर लादे जायेंगे, मैं वहाँ एक घोषणा करूँगा।"

"क्या?" बोलो एकाएक कह उठा।

"हाँ, मैं घोषणा करूँगा कि अब से यह ज़मीन उन असामी काश्तकारों की होगी जो इसे कई वर्षों से जोतते आ रहे हैं।"

बोलो दंग रह गया। उसके मुँह से निकला, "तुम क्या कह रहे हो? तुम इतने वर्षों से लगान देते रहे हो। वे गुण्डे तुम्हारे पिता को गाली देते हैं और उनसे कहते हैं कि ज़मीन पर हल चलाओ। यह सब जानते-बूझते हुए तुम उन्हें ज़मीन का हक़ देना चाहते हो? वाकई, तुम्हें समझना बहुत मुश्किल है।"

कुछ देर तक दोनों तरफ़ से चुप्पी बनी रही। फिर इन्द्रनाथ ही बोला, "हमारे बंधुवे पहले से ही वहाँ हैं। वे वहाँ तम्बुओं में रह रहे हैं और धान की कटाई के लिए तैयार हैं। अभी तक उन हुड़दंगाबाज़ों ने उनका विरोध नहीं किया है। पलासबाड़ी का वह बंगाली इन्स्पेक्टर बार-बार हमारे यहाँ आ रहा है और कह रहा है कि वह हमारे लिए पुलिस का बन्दोबस्त कर देगा। उसका कहना है कि ज़बरदस्ती ज़मीन को हड़पना आग के साथ खेलने के समान है। मैंने पुलिस सहायता के लिए मना कर दिया है और उससे कहा है कि माराभीटा में कोई दंगा-फ़साद या रक्तपात नहीं होगा। जब औरतें वहाँ रोपाई कर रही थीं तो उन लोगों ने कोई शोर-शराबा नहीं किया था और न ही उन्हें रोका था। लगता है गोसाईं के स्वागत में फिर ढोल और मजीरे बजेंगे। फिर पहले की तरह कपड़ा बिछाया जायेगा और गोसाईं उस पर चलकर आगे बढ़ेगा, और उसके अनुयायी उसके सम्मान में झुके रहेंगे। सब वैसे ही होगा जैसे पहले हुआ करता था।"

बोलो ने हँसना शुरू कर दिया। इन्द्रनाथ भी मुस्कराने लगा। वे अब हाथीबाड़े में पहुँच चुके थे। इन्द्रनाथ ने फिर बोलो से कहा, "तुम अब वापस जाओ। वह बूढ़ा गोसाईं तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा होगा, और तुम्हारे घर में मेहमान भी खूब आये हुए हैं।"

इस पर बोलो ने उत्तर दिया, "दोपहर का भोजन कर लेने के बाद महिलाएँ गोलोकधाम के खेल में जम गयी हैं। जहाँ तक उत्तरी तट के गोसाईं का ताल्लुक है, उसका मुख्य उद्देश्य है यहाँ ज़मीन ख़रीदना। वह परिसीमन अधिनियम के कारण

धड़ाधड़ बिक रही ज़मीन का लाभ उठाना चाहता है। वह अविवाहित है, और कूच-बिहार में यजमानी करके उसने काफ़ी रक़म कमायी है। लेकिन इन्द्रनाथ, तुम उन सर-चढ़े हुड़दंगबाज़ असामियों के नाम कच्चा पट्टा करवाना चाहते हो? तुम वाकई गम्भीर हो?"

"हाँ, मैंने निश्चय कर लिया है, और इस निश्चय से डिगूँगा नहीं।"

"ईश्वर के लिए ऐसा मत करो। उन्होंने तुम्हारे पिता का अपमान किया है, और बदले में तुम उन्हें इनाम देना चाहते हो? मेरे सुनने में यह पहले कभी नहीं आया कि दक्षिणी तट के किसी गोसाईं ने ऐसा व्यवहार किया हो। तुम्हारा दिमाग़ तो ठीक है न?"

इन्द्रनाथ चुप रहा। वे अब दोनों पुराने बरगद के पेड़ के निकट खड़े थे। यहाँ से वह जगह साफ़-साफ़ दीख पड़ रही थी जहाँ गिरिबाला का वह त्रासद अन्त हुआ था। बोलो ने इन्द्रनाथ की ओर मुँह करके उससे विदा लेते हुए कहा, "ठीक है तब। मैं अब जा रहा हूँ। कबूतरों और पपीतों के बारे में चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं। मैं उनकी व्यवस्था कर लूँगा। ···और हाँ, मैं तुम्हारे साथ माराभीटा भी चलूँगा और तुम्हारे साथ तुम्हारे साये की तरह रहूँगा··· बिलकुल तुम्हारे साये की तरह!"

इन्द्रनाथ ने अब अपनी हवेली का रुख किया। वह एक छोटे रास्ते से जा रहा था। पीला अर्धचन्द्र आसमान में लटका हुआ दिखाई देता था। फिर उसे लगा कि एक धुँधला जाल चाँद को तो ढके हुए है ही, साथ में उसने तमाम पेड़ों, झाड़ियों, यूरियम, शीशम, सोनार—समूचे परिदृश्य को अपने में लपेट लिया है।

एकाएक उसकी नज़र जोकराम भगवती के घर की कमज़ोर दीवार पर पड़ी। उसके छिद्रों में से एक लटकते दीये की कुछ-कुछ रोशनी दिखाई दे रही थी। आह! उस मद्धिम रोशनी में उसे बाजू और पतली गर्दन का भी आभास हो रहा था। उसमें ताज़ा गन्ने के रस की चमक थी। कौन हो सकता है वह? क्या वह वाकई लौट आयी है? और क्यों? क्या उस अफ़ीमची ब्राह्मण की क़ैद पूरी हो चुकी है, और वह जेल से बाहर आ गया है? क्या वह फिर उसे मँगनी के उपहार दे-देकर आतंकित कर रहा है? लेकिन यह सब सोचने का उसके पास समय नहीं था। अभी नहीं। वह तो इतनी घोर और लम्बी यातना में से गुज़र रहा है और इधर यह आ पहुँची है। ऐसी घड़ी में! नहीं, नहीं, अभी नहीं।

इन्द्रनाथ सत्र की ओर चलता ही गया। जैसे ही वह बातघर के निकट हुआ, वैसे ही पेड़ की झाड़ी में से एक दिनकाना (कोयल की शक्ल का एक पक्षी) एकाएक उड़कर उसके ऊपर से निकल गया। वह चौंक उठा। ओह! कैसा अपशकुन है! वह उदास और खिन्न मुद्रा में सहन में दाखिल हुआ। उसके सीने में एक तरह का दर्द उठा। अभी कुछ ही दिन पहले तो, जब वह बोलो के अड्डे से लौटता था तो गिरिबाला और माँ चिन्ता और उत्कण्ठा से भरी उसका इन्तज़ार करती रहतीं। सर्दी के मौसम

में वे अपने सामने आग रखकर बरामदे में बैठती थीं, और जब गरमी का मौसम होता तो वे अपने हाथों में खजूर के पत्ते के पंखे लिये रहतीं। पर अब तो वहाँ कोई नहीं था। बरामदा खाली पड़ा था। अब गोसाइन, उसकी माँ, अपने छोटे अँधियारे कमरे में बैठी हुक्का गुड़गुड़ा रही होगी। पहले दिन के समय गुईमैनी उसके साथ रहती थी, लेकिन अब, गिरिबाला की मृत्यु के बाद, वह उस छोटे से अँधियारे कमरे में अकेली ही अपना समय बिताती है। अब तो वह हुक्के में पानी भी नहीं डालती। अब हुक्का गुड़गुड़ाता भी नहीं, और इससे दूसरों को पता भी नहीं चल पाता कि वह हुक्का पी रही है···

इन्द्रनाथ सोच में डूबा था। उसे लगा कि मानव जीवन इसी तरह से विभिन्न स्थितियों में से गुज़रता है और अपने आपको बदलता रहता है। यहाँ कुछ भी स्थायी नहीं है। इस प्रक्रिया में आदमी आदमी के बीच का सम्बन्ध एक तेज़ धार वाले, तीखे हथियार की शक्ल ले लेता है और अपने ही लोगों को नुक़सान पहुँचाने लगता है। नहीं, नहीं! उसे अपने को इस तरह यातना नहीं देनी चाहिए और ऐसे बेचैन नहीं हो जाना चाहिए। वह आख़िरी घड़ी दूर नहीं, और वह पूर्व-निर्धारित स्थल भी दूर नहीं जब उसे एक कड़ी परीक्षा में से गुज़रने के लिए अपने अन्तःकरण के रू-ब-रू होना पड़ेगा।

एकाएक उसे मार्क के धर्मग्रन्थों की याद हो आयी। उनमें कहीं लिखा था—

"वे लोग जो मेरा अनुसरण करना चाहते हैं, उन्हें अपने निजत्व की कुर्बानी देनी होगी और उनमें से हर एक को अपना-अपना क्रॉस ढोते हुए मेरे पीछे खड़ा होना पड़ेगा···!"

क्या उसकी फिर कभी मार्क से भेंट होगी? अगर हाँ, तो कहाँ? क्या ब्रह्मपुत्र के दूर के किनारे के परे? ···वह कुएँ की ओर बढ़ा और वहाँ उसने अपना मुँह-हाथ धोया। कुछ पानी उसने अपने पाँवों पर भी डाला। उसकी आँखें सड़क के पार भगवती के पिछवाड़े पर लगी हुई थीं। नहीं, कुछ नहीं! लकड़ी के खम्भे और बरामदे का दृश्य धतूरे और लंटना की बड़ी-बड़ी झाड़ियों के कारण स्पष्ट नहीं दिख रहा था। अब तो वह कठना पेड़ भी दीख नहीं पड़ रहा था जिसके नीचे ईलीमन आकर खड़ी होती थी। अभी झुटपुटे का समय ही था, लेकिन सब जगह अँधेरा छा रहा था। वह क्यों आयी है? उस दुष्ट ब्राह्मण ने ज़रूर उसे परेशान किया होगा और धमकाया होगा!

दिनकाना पक्षी की चुक-चुक-चुक वातावरण में फैल गयी थी। उस रात इन्द्रनाथ को एक सपना आया—वह सूखी कँटीली झाड़ियों के एक जंगल में खो गया है। चारों तरफ़ वीराना ही वीराना है। वह निरुद्देश्य भटके जा रहा है। फिर एकाएक उसे ईलीमन दिखाई देती है। वह जंगल के एक वीरान हिस्से में खड़ी है। वह उसकी ओर दौड़ता है। वह एकाएक एक लाल फूल में परिवर्तित हो जाती है और वह लाल फूल ढेर सारे

ख़ून में परिवर्तित हो जाता है। फिर वह ख़ून एक कँटीली झाड़ी पर बिखर जाता है और नुकीले काँटों से ख़ून टिप-टिप करके गिरने लगता है···

इन्द्रनाथ चौंकर उठ खड़ा होता है।

एक महीना ऐसे ही बीत गया। माराभीटा में अब यह धान की कटाई का समय था। यात्रा के लिए बिना लम्बे दाँत वाले हाथी को साथ ले जाना था। हौदे को जल्दी से जल्दी तैयार किया जा रहा था ताकि उसे हाथी की पीठ पर बाँधा जा सके··· आख़िर हौदे को यथास्थान रख दिया गया और उसे कसकर बाँध दिया गया। लेकिन इस बिना दाँत वाले हाथी में जगन्नाथ वाली वह राजसी ठाठ कहाँ! उसकी भद्दी सूँड़ पर एक सफ़ेद, लम्बी-सी धारी थी और चारों तरफ़ सफ़ेद-सफ़ेद दाग़ थे, जैसे कि वह चीते की ख़ाल हो। वह ज़िद्दी भी था। वह इस तरह लुढ़कता हुआ चलता जिससे हौदा बार-बार खिसक जाये। तब यात्रियों को नीचे उतरकर रस्सों को फिर से कसना पड़ता। तमाम रास्ते बार-बार ऐसा ही होता रहा।

बंगाली पुलिस इन्स्पेक्टर ने दो-तीन बार यह सन्देश भेजा था कि वह कुछ सिपाही अपने साथ ले ले, क्योंकि उसे सुरक्षा की ज़रूरत पड़ेगी। लेकिन यह पुलिस क्यों? यह तो उसके अन्तःकरण की परीक्षा की घड़ी है। उसका मन बड़े विचित्र विचारों तथा भावनाओं के शिकंजे में था।

भगवती पुजारी ने अपनी पत्तरियों को ठीक से बाँचा और यात्रा के लिए शुभ घड़ी निश्चित की। गोसाइन ने पहले ही रात के समय अपने दो अतिविश्वसनीय अनुयायियों को माराभीटा भेज दिया था। उन्होंने पहली रस्म पूरी भी कर ली थी और शाली[16] धान की बालियों के पाँच मुट्ठे वापस भी ले आये थे। धान की पहली कटाई के लिए इस रस्म को अदा करने की एक परम्परा बन गयी है। मुट्ठों को केलों के पत्तों पर रखा गया और पत्तों को खत्ती के सामने सरसों के तेल का दीया जलाकर रखा गया, और गोसाइन ने स्पष्ट ऊँचे स्वर में प्रार्थना की—

"हे चारों दिशाओं के देवताओ! इस बालक की रक्षा करना! यह अपनी ही भूमि वापस लेने जा रहा है··· इसका ख़याल रखना···!"

···इन्द्रनाथ को विदाई देने अनेक लोग बातघर में जुटे थे। गोसाइन भी बाहर आकर खड़ी हो गयी थी। उसका सर गताले से ढका हुआ था। उसे देखकर एक-दो स्त्रियों ने टिप्पणी की, "अरे गोसाइन! इस कोमल बालक को उस नासपीटी जगह पर क्यों भेज रही हो? उन घाघ मण्डलों[17] और उन ख़तरनाक लोगों के बीच जो बारूद बनाते हैं? क्यों भेज रही हो उसे वहाँ?"

गोसाइन ने कोई उत्तर नहीं दिया। गुईमैनी भी वहीं उसके पास खड़ी थी। वह बोली, "ए-हे! ये क्या चबड़-चबड़ लगा रखी है। वह तो धान की कटाई की रस्म के

लिए जा रहा है। सभी असामी उसका सर झुकाकर और हाथ बाँधकर स्वागत करेंगे। बंधुवे उसकी खड़ाऊँ लेकर चलेंगे और आगे-आगे सींग और ढोल बजाने वाले रहेंगे। बस, थोड़ा सब्र रखो और देखो! सब कुछ वैसा ही हो जायेगा जैसा कि पुराने दिनों में हुआ करता था।"

हाथी को घुटनों के बल बिठा दिया गया था। इन्द्रनाथ उसके पास खड़ा था। यात्रा के लिए तैयारी पूरी थी। अधिकार गोसाईं भी फाटक तक आया था। इन्द्रनाथ रेशम की पंजाबी और शान्तिपुरी धोती पहने हुए था। उसके कन्धे पर रेशम की चादर थी।

किसी ने भीड़ में से ऊँची आवाज़ में कहा—

"वाह! वह तो आज स्वर्ग से उतरे किसी देवता के समान दिख रहा है। इस देवता के सामने कौन टिक सकता है। गोसाईं आख़िर गोसाईं ही होता है।"

इन्द्रनाथ ने अपने पिता के पाँव छूकर उन्हें प्रणाम किया और फिर माँ की ओर बढ़ा।

लेकिन यह क्या? गोसाइन को क्या हो गया है? उसने एक क्षण के लिए अपने बेटे को कसकर अपने सीने से लगा लिया, फिर वह तेज़ी से भीतर की ओर बढ़ी और अपना तमाम नियन्त्रण खोकर फफक-फफककर रोने लगी।

भीड़ में खड़ा हर व्यक्ति गोसाइन को इस हालत में देखकर अचम्भे में पड़ गया। यह महिला तो कठोर-से-कठोर समय में भी अपने आँसुओं को बाहर नहीं आने देती थी।

अब वे आपस में फुसफसा रहे थे, "बेचारी गोसाइन! गिरिबाला की मृत्यु के बाद यह अब अपना नियन्त्रण खो चुकी है। तम्बाकू··· तम्बाकू··· तम्बाकू! हमेशा तम्बाकू ही पीती रहती है और तम्बाकू पी-पीकर इसकी उँगलियाँ और होंठ काले पड़ गये हैं···!"

इस बीच तीन, बिना छाजन वाली, गाड़ियाँ सड़क पर से गुज़रीं। उन पर लम्बे-लम्बे बाँस लदे थे और इन बाँसों के दोनों सिरे नुकीले थे। फिर धान काटने के लिए दराँतियाँ थीं, गट्ठर बाँधने के लिए रस्सी थीं, उबला और सूखा चावल था, मिट्टी के बर्तनों में पकी इमली थी, नमक की थैलियाँ थीं और गुड़ के मिट्टी के मर्तबान थे। हर गाड़ी में, उस सब सामान के ऊपर, छः या सात कटाई करने वाले व्यक्ति थे। वे सब मस्ती में थे और हँस-हँसकर तथा एक-दूसरे से भद्दा मज़ाक़ करते हुए कटाई के गीत गा रहे थे।

हाथी अब सत्र से बाहर आ चुका था और मुख्य सड़क पर आगे बढ़ रहा था। सड़क के दोनों तरफ़ पुरुष-स्त्रियों और बच्चों की भीड़ लगी थी और वे जुलूस को अच्छे से अच्छे ढंग से देखने के लिए एक-दूसरे को धकिया रहे थे। उनमें से अधिकांश

निचली जाति के थे--जैसे कहार, लोहार, बढ़ई, नाई, धोबी, पालकी उठाने वाले, इत्यादि। वे इस सत्र से तथा आसपास के गाँवों से आये थे। 1813 में, जब एक भयंकर भूकम्प ने गराईमारी को मिस्मार कर दिया था, तब गोसाईं अपने सत्र को जगलिया के तट पर ले आया था और उसके साथ-साथ ये परिवार भी चले आये थे। अब डेढ़-सौ से अधिक वर्ष बीत जाने पर उनकी जड़ें और शाखाएँ दूर-दूर तक फैल गयी थीं और उनके बाद की पीढ़ियाँ उपयुक्त काम की तलाश में उत्तरी तट तक भी जा पहुँची थीं।

बरगद के पेड़ के नीचे खड़े होकर बूढ़े काउरिया ने अपने कालिया को ज़ोर-ज़ोर से बजाकर अपने मालिक, छोटे गोसाईं को विदाई दी। वह केवल एक पुराने गन्दे गमछे में था जोकि कमर के इर्द-गिर्द लिपटा हुआ था। उसकी काली पीठ पसीने से चमचमा रही थी, जैसे मेंढक की गीली धब्बेदार त्वचा चमचमाती है।

हाथी की पीठ पर हौदे में बैठे इन्द्रनाथ का दिल पिंजरे में क़ैद एक परेशान पक्षी की तरह फड़फड़ा रहा था। चलते-चलते रास्ते में आम के पेड़ की एक निचली शाखा से हौदा जा टकराया और उसके कुछ पत्ते उससे चिपक गये। इसके साथ ही हाथी के पीछे आ रहे लोग एकाएक कह उठे, "आह! यह तो बहुत अच्छा लक्षण है! सब कुछ ठीक रहेगा! बस, थोड़ा इन्तज़ार करो।"

सड़क पर लोगों की रेलपेल कई गुना बढ़ गयी है, जैसे कि वे सब मधुमक्खियों की तरह अपने छत्तों को छोड़कर, ढेरों के ढेर, बाहर आ गये हों।

हौदे में बैठा इन्द्रनाथ भगवती के घर के सहन में सब कुछ देख रहा था। हाँ, वह वहीं है। कठना फूल वाले पेड़ के नीचे। उसके बाल बिखरे हुए हैं और उसका गताला गन्दा हो रहा है। इन्द्रनाथ को कुछ-कुछ ऐसा अहसास हो रहा था जैसे कि उस युवती के भीतर तूफ़ान घुमड़ रहा है। बेशक़, वह उस तक कोई ऐसा महत्त्वपूर्ण सन्देश पहुँचाना चाहती है जिसने उसे यहाँ लौटने को मजबूर कर दिया। पर उसे पाने के लिए यह समय उपयुक्त नहीं है। नहीं, नहीं, अभी नहीं! युवती जैसे कि उसे घोर यन्त्रणा की स्थिति में पुकार रही हो, "अरे सुनो! वह ब्राह्मण जेल से छूट गया है। कुछ करो! जल्दी! वरना मैं नदी में कूद जाऊँगी। जगलिया में! मुझे सुन पा रहे हो न!"

···इन्द्रनाथ का दिवास्वप्न एकाएक टूटा। लोग ऊँची से ऊँची आवाज़ में उसे आशीर्वाद दे रहे थे और उसके लिए प्रार्थना कर रहे थे।

सत्र की बाहरी सीमा पर पहुँचकर उन्होंने उसे अन्तिम विदाई दी।

जैसे-जैसे हाथी सड़क पर आगे-आगे बढ़ता गया, इन्द्रनाथ का मन इर्द-गिर्द की दृश्यावली में उलझता गया। जहाँ तक उसकी आँखें देख सकती थीं, जगलिया के दोनों तटों पर प्रकृति हरीतिमा के परिधान में लिपटी दिखती थी। नदी, उसे लगा, एक नीले सर्प की तरह है जो कि भूमि की हरी रेशमी चादर पर पलटें खा रहा है। दायीं तरफ़ पान के पत्ते के बंधनवार और बाँस के झुरमुट दिखाई दे रहे थे। वे सत्र को ढकने

वाली एक हरी छत के समान दिख रहे थे। ये तमाम दृश्यावली उसे बहुत प्रिय थी और उसके लिए मूल्यवान भी। यह सब उसके बाल्यकाल का एक अंग रहा है, और बाद के वर्षों का भी।

दूसरी तरफ़ उसे मछली की तलाश में लम्बी, काचीडरिया घास के बीचोंबीच चलते लम्बी-लम्बी टाँगों और पीली चोंच वाले बगुले दिखाई दिए। यह दृश्य उसके लिए जाना-पहचाना रहा है··· तभी उसे कल्टू महावत का एक विचित्र अनुभव याद हो आया। वह एक दिन बंसी लगाए मछली पकड़ रहा था, और उसके हाथ एक बड़ी मछली लग गयी थी। लेकिन जैसे ही उसने मछली को काँटे से निकाला, एक बगुले ने उसे धर लिया। कल्टू को एकदम गुस्सा आ गया और उसने उस पक्षी पर अपनी बंसी दे मारी। वह बंसी उसे ऐसे स्थल पर लगी जिससे वह वहीं ख़त्म हो गया। तब उसकी हैरानी की कोई सीमा नहीं रही थी जब उसने देखा कि मृत बगुले की गर्दन के नीचे एक फटी थैली में से एक जीवित, बिना ज़हर वाला, साँप रेंगकर बाहर आ गया है।

आह! कितने सुन्दर हैं नदी के हरे तट। उसे लगा जैसे कि वह यह मनोरम दृश्य एक मुद्दत के बाद देख रहा है। इन तमाम दिनों वह हमेशा अपने में खिंचा-खिंचा, विचारमग्न रहा। उसकी आँखें खुली रहती थीं, लेकिन देखती कुछ नहीं थीं··· अब उसकी आँखें हरीतिमा की कई छटाएँ देख रही थीं। कहीं कुछ काला-काला दिखता, कहीं बिलकुल काला। कहीं रेशम-सा हलका हरा, और कहीं, दूसरी तरफ़, तोते के परों जैसा हरा।

बोलो अपनी साइकल पर हाथी के पीछे-पीछे बड़े मज़े-मज़े, चला आ रहा था। उसके पीछे दो या तीन अनुयायी भी थे जो अपनी-अपनी साइकलों पर आ रहे थे। आगे-आगे चलने वाली बैलगाड़ियों पर लदे नुकीले बाँसों की आवाज़ भी गाड़ियों के हिचकोले खाने पर उठती रहती। कटाई वालों ने बड़े ज़ोर-शोर से एक गाना गाना शुरू किया। उसका मुखड़ा था : हमारे दादा के ज़माने का भूकम्प। उसका अभिप्राय इस प्रकार था—

कहीं नीचे पाताल से आया भूकम्प, फूटे सहन, टूटे मकान,
बच्चों को बग़ल में दबाये स्त्रियाँ इधर-उधर दौड़ीं
दीवारें धराशायी हुईं, बरामदे दरक गये, मचा हड़कम्प
फाटक के पास, गोसाईं का बड़ा हाथी ज़िन्दा हो गया दफ़न।

बैलगाड़ियों के पहियों की आवाज़ और नुकीले बाँसों की खड़खड़ाहट काफ़ी दूर से सुनी जा सकती थी। इन्द्रनाथ ने पीछे मुड़कर देखा। काउरिया अब भी अपने भैंस के सींग को बजाता हुआ हाथी के पीछे-पीछे चला आ रहा था। उसके पीछे बूढ़ा बंधुवा, बिरोहू,

गुइंमैनी और सत्र की दूसरी स्त्रियाँ थीं। वे स्त्रियाँ खुश हो-होकर वही गाने गा रही थीं जो वे आमतौर पर उस समय गाती थीं जब गोसाईं अपने अनुयायियों के यहाँ जाता था। इन्द्रनाथ को लगा कि ये तमाम स्त्रियाँ, काउरिया और दूसरे लोग, उसके पीछे-पीछे इसलिए चले आ रहे हैं ताकि वे उसके चेहरे की एक झलक पा सकें, ऐसे ही जैसे अयोध्या के लोग राम की झलक पाने के लिए उसके पीछे-पीछे बहुत दूर तक चले आये थे और नहीं चाहते थे कि राम बनवास के लिए रवाना हों। वैसे भी इससे पहले सत्र का कोई भी गोसाईं अपने लाम-लश्कर के साथ धान की कटाई करने के लिए स्वयं कभी नहीं गया था। नहीं, ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था।

लोगों का विश्वास था कि माराभीटा में इन्द्रनाथ की उपस्थिति इतनी कारगर रहेगी जितना कोई शक्तिशाली से शक्तिशाली अस्त्र भी नहीं हो सकता। वहाँ के अनुयायी और असामी काश्तकार मूल रूप से बहुत ही स्वच्छ हृदयी और श्रद्धालु थे। कम्युनिस्टों का उन पर प्रभाव ऐसे ही मिट जायेगा जैसे कि पानी से लिखे शब्द मिटते हैं और यह गीलापन छोटे गोसाईं की उपस्थिति की ऊष्मता से खुद-ब-खुद सूख जायेगा। सत्र के अधिकांश लोगों ने कुछ ऐसा ही अपने मन में सोच रखा था। पुजारी पुरुषोत्तम भगवती, शम्भु अमीन, बरहेरामदो तथा खोरुहेरामदो के यजमानी ब्राह्मण और खटियामारी, माझकुची और दूर-दराज़ के झालिमाबारी के रिश्तेदार—सभी तो इन्द्रनाथ के इस निर्णय की सराह रहे थे—कि वह स्वयं वहाँ पहुँचकर ज़मीन का कब्ज़ा लेगा···

इन्द्रनाथ ने अपनी पंजाबी की जेब से रूमाल निकाला और अपनी आँखों और चेहरे पर से धूल-मिट्टी पोंछने लगा। गुवाहाटी में कुछ थोड़े समय के लिए रहने के अलावा उसने अपना सारा समय सत्र में ही गुज़ारा था। उसे अब अपना बचपन भी याद आ रहा था। कई बार वह एक गोसाईं के पुत्र के लिए निर्धारित रोज़मर्रा के कड़े जीवन से बच निकलता था और अपनी कमर पर केवल एक गमछा लपेटकर मछुआरों, कुम्हारों, चमारों इत्यादि के बच्चों के साथ खेलने के लिए भाग निकलता था। दुर्गा उसे पकड़ने के लिए उसके पीछे-पीछे दौड़ती और उसे हलकी-फुलकी गालियाँ भी देती रहती। और जैसे ही वह पकड़ में आ जाता, वह सीधे उसे कुएँ पर ले जाती और उसका मुँह-हाथ धोती, और साथ-साथ बड़बड़ाते हुए उस पर खीझती भी रहती, "कितना नटखट बच्चा है। तुम्हारे जैसा बच्चा तो मैंने कहीं नहीं देखा। हमेशा उन निचली जाति वालों के गन्दे बच्चों के साथ खेलते रहते हो। अब नहीं खेलना। सुन रहे हो न?"

···और भैंस का सींग बजाता हुआ, हाथी के पीछे-पीछे चला आ रहा काउरिया! इन्द्रनाथ अभी जब बच्चा ही था तो दौड़ता हुआ वह काउरिये की टूटी-फूटी झोंपड़ी में उसके चूल्हे तक जा पहुँचता और इस पर काउरिये की बीवी भयभीत हुई-सी चिल्ला पड़ती, "हे मेरे भगवान्! गोसाईं का बेटा सीधे हमारे यहाँ भीतर चला आया है। लोग क्या कहेंगे? ···अरे भइया!···"

…वह तो एक कुम्हार के यहाँ तल्लापाड़ा भी जा पहुँचता था और उसके तेज़-तेज़ घूमते चक्के को मोहसक्त हुआ देखता रहता था। चक्के पर गीली मिट्टी का एक लोंदा रहता जिसे कुम्हार की दक्ष उँगलियाँ तरह-तरह के रूप देतीं। वह बड़े लाड़ से कुम्हार के गले में अपनी बाँहें डाल देता और उसकी पीठ पर चढ़ बैठता। कुम्हार बेचारा उसे मीठी झिड़की देते हुए कहता, "अरे, अरे! बच्चे तुम्हें अब नहाना पड़ेगा। उतर जाओ मेरी पीठ से। अरे कोई है, छोटे गोसाईं को पिछवाड़े से लाकर एक खीरा दो! उफ्! देखो तो, वह कचरे पर खड़ा है! ओह! कोई सुन रहा है? गोसाईं के लिए एक पीढ़ा लाओ।"

कुम्हार के गाँव के दुबले-पतले, बढ़े पेट वाले, अधनंगे बच्चे इन्द्रनाथ के इर्द-गिर्द खड़े हो जाते और उसे चुपचाप घूरते रहते। आमतौर पर जब वे अकेले होते तो खीरे को झपटने के लिए शोर मचाते हुए आपस में गुत्थमगुत्था हो जाते, लेकिन इन्द्रनाथ की उपस्थिति में वे चुपचाप खड़े रहते, जैसे कि वे गोसाईं के बेटे को कुछ भी देने को तैयार हों। दरअसल, इस गोरे-चिट्टे बालक को देखकर वे एकदम गुमसुम हो जाते और इस क़दर हैरत में पड़ जाते मानो उन्हें इस हैरत का कोई वार-पार ही न मिल रहा हो।

वह शूरी लोगों की खस्ताहाल झोंपड़ियों में भी घुस जाया करता था और उसे इस बात की कोई चिन्ता नहीं होती थी कि उसकी हरकतों का अंजाम क्या होगा। इन ग़रीब लोगों के यहाँ उसे चुंगापीठा[18] खाने को मिलता था जिसे वह बड़े चाव से खाता था। जब कभी वे उसे अपने बीच पाते, वे ज़ोर-ज़ोर से कहने लगे, "अरे, देखो देखो! लारुआ गोपाल[19] आया है। वह हमारे अंगने में आकाश से उतरा है।"

हाँ, उनका कुछ ऐसा ही विश्वास था कि गोसाईं लोग आकाश से उतरे हैं। किसी भी गोसाईं को उनकी छूने की हिम्मत नहीं होती थी। इन्द्रनाथ जैसे बालक को भी। और जब वे मरने के क़रीब होते तो उनकी यह तीव्र इच्छा होती कि वे किसी गोसाईं के पाँवों को छूकर मरें। ये सभी अछूत दरिद्रता की दीन-हीन और अशक्त करने वाली ज़ंजीरों में जकड़े रहते। लेकिन सबसे बढ़कर वे उस शैतान के शिकंजे में कसे थे—वह शैतान, यानी अफ़ीम! उन लोगों में से लगभग आधे, जो इन्द्रनाथ को बहुत प्रिय थे, जवानी आने से पहले ही रतौंध के शिकार हो गये थे।

देखो, वे चले आ रहे हैं उस विशाल हाथी के पीछे-पीछे, और वह है कि हौदे में अपनी पूरी शानोशौकत के साथ बैठा है। क्या वह उनसे कहे कि वे चलें जायें, वापस चले जायें?

फिर उसकी आँखों में आँसू आ गये…

क्या किया है उसने इनके लिए? क्या कभी उसने इन लोगों की भलाई या खुशी के लिए कुछ किया है?…

हाँ, यही वह समय है। यही मौक़ा है अब! अमीन को उसने कहा ही था कि वह अपने साथ नत्थीपत्र[20] और पट्टे के कागज़ात ले चले···हाँ, वह स्वयं गरगरा, खापेगाँव, नारगाँव, गोरायेमारी और अन्य स्थानों पर असामी काश्तकारों के घर-घर जायेगा और उनके फाटक के अड़ंगे के सामने खड़ा होकर पूछेगा, "आपको क्या तकलीफ़ है? आपकी क्या समस्या है? क्या आपकी खत्ती ख़ाली हो चुकी है? क्या आपके घर में किसी को क्षय रोग या काला आज़ार तो नहीं है? क्या बैलों को ख़रीदने के लिए आपको पैसों की सख़्त ज़रूरत है?"

हाँ, हाँ, वह उनसे तथा उनके बारे में सब कुछ जानने की कोशिश करेगा। वह अकेला ही जायेगा। किसी और व्यक्ति को उसके साथ चलने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि जो व्यक्ति अकेला जाता है और अकेला चलता है, वह जो चाहता है पा जाता है।

इन्द्रनाथ की निगाह हाथी के कानों के पीछे अंकुश के चिह्नों पर अटक गयी। अंकुश से जो घाव बने थे, उनमें से पहले तो मवाद चला, फिर वे भर गये, लेकिन आख़िर अपने बदरंग चकत्ते भी छोड़ गये। कुछ घाव अब तक भी ठीक नहीं हुए थे। उनसे चावलों के माड़ की गन्ध आती थी।

आह! कैसी अद्‌भुत हरियाली है। सड़क के दोनों तरफ़, जहाँ तक उसकी आँखें देख सकती हैं, सौन्दर्य ही सौन्दर्य बिखरा पड़ा है। इस हरियाली में सब कुछ शामिल है, तरह-तरह के पेड़ और तरह-तरह की झाड़ियाँ—जैसे एजार, कोटाही जामुन, बिजुली बाँस और हरियाली की विभिन्न छटाएँ। जैसे कि इस हरे रंग को कोई उत्सवी परिधान पहनाया गया हो।

···इन्द्रनाथ का मन अपने पुरखों की ओर चला जाता है। चार सौ वर्ष पहले, शायद वहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य से मुग्ध होकर, कन्नौज से आये उसके पुरखों ने गराईमारी में अपनी झोंपड़ियाँ डाल दी थीं और वहाँ की उपजाऊ भूमि में हल चलाना शुरू कर दिया था। हाँ, यहीं, इसी जगह पर उसके पिता और उसके दादा खुले मैदानों और पेड़ों के बीच मुगल-पठान तथा बाग़-बाल के खेल खेलते थे।

नुकीले बाँसों तथा कटाई करने वालों के दूसरे सामान के साथ बैलगाड़ियाँ बहुत आगे निकल गयी थीं और नज़र से ओझल हो गयी थीं। हाथी सड़क पर काफ़ी तेज़ गति से चल रहा था। वे लोग जो सत्र से दूर, यहाँ तक आ पहुँचे थे, अब पीछे छूट रहे थे। अब अगर कोई आवाज़ आ रही थी तो वह बोलो तथा गरगरा के अनुयायियों की थी जो अपनी-अपनी साइकलों पर थे और आपस में बतिया रहे थे।

इस हाथी पर पहली बार हौदा चढ़ाया गया था। फिर भी उसने इसे ठीक ही निभाया था। चाहे वह काफ़ी तेज़ चल रहा था, फिर भी हौदा अपनी जगह से खिसका नहीं था। लेकिन इन्द्रनाथ के भीतर चैन नहीं था। उसका दिल जाल में पड़ी मछली की तरह तड़प रहा था। वह अपने आपको उतना ही असहाय पा रहा था

जितना कि लकड़ी के चौखटे में जकड़ा कोई व्यक्ति—जैसे कि सूली पर ठ
ईसा मसीह।

…मानो, कुछ भी गड़बड़ नहीं था। कटाई करने वाले कटाई कर रहे थे, बंधुवे कटी फसल को गट्ठरों में बाँध रहे थे ओर फिर छः-छः गट्ठरों को एक बड़े गट्ठर में बाँधा जा रहा था और उस गट्ठर को एक ओर रखा जा रहा था। यह तमाम काम बड़े उत्साह से चल रहा था। कहीं किसी प्रकार की कोई बाधा नहीं थी।

इन्द्रनाथ हाथी से नीचे उतरा और एक उरियम पेड़ के नीचे खड़ा हो गया। बोलो तथा गरगरा के अनुयायी भी अपनी-अपनी साइकलों से नीचे उतर आये और स्तब्ध हुए से शान्तिपूर्वक चल रहे काम को देखने लगे। इस पर बोलो कह उठा, "देखा, अपनी उपस्थिति का कमाल! यहाँ आकर तुम्हारे आदमियों से लड़ने की बात तो दूर, वे तो अपने घरों से भी बाहर नहीं निकले हैं।"

इस पर गरगरा के अनुयायियों ने भी टिप्पणी की, "क्या हुआ अगर कम्युनिस्टों ने इन लोगों को भड़काया भी तो! आख़िर इनके बाप-दादे तो बड़े गोसाईं के ज़माने के ही हैं। क्या केला एकाएक पक जाता है?"

इन्द्रनाथ चुप रहा। सारा काम ठीक-ठाक चल रहा था, लेकिन उसके मन में अब भी खलबली मची हुई थी। प्रसन्नता या मन की शान्ति जैसी कोई चीज़ उसके लिए नहीं थी। उसके हृदय में अब भी वही अपरिभाषित वेदना थी और वह वैसे ही फड़फड़ा रहा था।

ये असामी काश्तकार बड़े गोसाईं के वक़्त से ही चले आ रहे हैं न! हाँ, लेकिन उनकी ज़मीन तो नदी हड़प कर गयी और वे यह स्वप्न पाले रहे कि उन्हें यह ज़मीन, जोकि लम्बे समय तक पानी में डूबी रही थी, वापस मिल जायेगी। लेकिन कम्युनिस्टों ने उन्हें भड़काया था। उनका कहना था, "क्या हुआ अगर गोसाईं ये तमाम वर्ष इस ज़मीन पर टैक्स देता रहा! अगर यह पानी में ही डूबी रहती तो क्या वह इसका कुछ कर पाता? कैसे वह इसे हथिया सकता है? उसे यहाँ अपने कन्धे पर हल रखकर आना होगा और अपने हाथों से इस ज़मीन को जोतना होगा!"

थोड़ी दूर पर सरकण्डों की शश-शश-शश की आवाज़ आ रही थी और यह आवाज़ धान की कटाई कर रही दराँतियों की आवाज़ से मिलकर एक हो रही थी। गाँव वहाँ से थोड़ी ही दूर था। लेकिन वहाँ से कोई आवाज़ नहीं आ रही थी, धान की कुटाई की भी नहीं। केवल सरकण्डों की ही आवाज़ थी—शश, —शश, —शश—शश—शश—शश—शश।

पास ही एक बड़ा-सा ठूँठ था। उसका ऊपर का हिस्सा समतल था, जैसे कि किसी तिपाई का होता है। शायद किसी समय वहाँ एक बड़ा पेड़ रहा हो। उसे लगा

कि किसानों और गाँव के लोगों को सम्बोधित करने के लिए यह एक अच्छे मंच का काम दे सकता है।

कटाई करने वाले लोग हँस रहे थे और ज़ोर-ज़ोर से एक-दूसरे को पुकारकर कह रहे थे, "हा, हा! देखो, कैसा तमाशा हुआ! गोसाईं अपने हौदे में बैठकर यहाँ आया है और ये लोग भीगी बिल्लियाँ बने काँप रहे हैं और अपने घरों में छिपे हैं। हा, हा, हा! आख़िर है तो वह गोसाईं ही न! बड़े भाग्यवान लोगों पर उसकी दृष्टि पड़ती है! लेकिन यहाँ के ये लोग! उनका दुर्भाग्य उनके आड़े आया है। उन कम्युनिस्ट शैतानों के कारण!"

फिर वही तीखी वेदना! इन्द्रनाथ धीरे-धीरे उस ठूँठ की ओर बढ़ा और उस पर चढ़कर सीधा खड़ा हो गया। एकाएक हर किसी के कानों में उसकी आवाज़ पड़ी। वह पूरे ज़ोर से बोल रहा था। उसका एक हाथ आसमान की ओर उठा हुआ था। उसे वहाँ उस मुद्रा में खड़ा देखकर हर कोई स्तब्ध रह गया। उसके शब्द साफ़ सुन पड़ रहे थे, "कहाँ हैं वे किसान जिन्होंने इस ज़मीन पर पहले-पहल बुवाई की थी? उन्हें यहाँ तुरन्त भेजो! तुरन्त!"

कटाई करने वाले उसके ये शब्द सुनकर हक्के-बक्के रह गये। उन्होंने उससे प्रश्न किया, "लेकिन गोसाईं, आप उन्हें यहाँ क्यों बुला रहे हैं? क्यों गोसाईं, क्यों?"

"तुम लोगों ने धान की कटाई की है। तुम लोगों ने अपना काम कुशलता से पूरा किया है। इससे अधिकार महाप्रभु की इच्छा पूरी हुई है। अब उन किसानों को बुलाओ यहाँ। मैं उन्हें कच्चा पट्टा देना चाहता हूँ।"

चारों ओर गहरी चुप्पी व्याप गयी। यहाँ तक कि भूमि पर गिरने वाले पत्ते की आवाज़ भी सुन पड़ रही थी। इन्द्रनाथ वहीं का वहीं, उसी मुद्रा में खड़ा था। एकाएक हवा को चीरती एक बड़ी तीखी, भयावनी ललकार सुन पड़ी—उई, उई, उई, उई,—उई, उई, उई, उई। हर किसी के कान खड़े हो गये—उई, उई, उई, उई।

एकाएक कई व्यक्ति, जिनके हाथों में नुकीले बाँस और लोहे की बरछियाँ थीं और जो फूस के ढेरों के पीछे छिपे हुए थे, कूदकर बाहर आ गये। वे सीधे चले आ रहे थे, तेज़ से तेज़ दौड़ते हुए। उनके हाथ उठे हुए थे और उनमें वे अपने-अपने हथियार लिये हुए थे।

"हाँ, हाँ, वे बरछियाँ और भाले ही हैं।"

"हाँ, हाँ, वे तीखे और नुकीले बाँस हैं!"

"नहीं, नहीं, उनके हाथों में ढोल या बाँसुरियाँ नहीं हैं। वे गोसाईं के बेटे का स्वागत करने नहीं आ रहे।"

"वोह...! वोह! भाले चमचमा रहे हैं!"

"दौड़ो...! दौड़ो...! दौड़ो! अपनी जान बचाओ!"

"वे इतने हैं! हम उनके मुकाबले में कुछ भी नहीं!"

"दौड़ो...! दौड़ो...! दौड़ो!"

"जल्दी! जल्दी! उन बाँस के डण्डों को बैलगाड़ियों से उठा लो! उन भालों को भी ले आओ, वहाँ उन गाड़ियों से! जल्दी!"

हाथी की पीठ पर बैठा महावत ज़ोर-ज़ोर से कहने लाग, "ढोल बजाओ! मजीरे बजाओ! उन्हें पीछे धकेल दो! ···गोसाईं, क्या मैं हाथी को उन पर छोड़ दूँ?"

"बोलो, गोसाईं, बोलो!"

"वोह! वोह आ गये हैं!"

"दौड़ो, गोसाईं, दौड़ो।"

"वे खेत में दाख़िल हो चुके हैं!"

फिर देखते ही देखते, हे ईश्वर, उनकी आँखों के सामने ही किसी ने पीछे से इन्द्रनाथ के सर में अपना तीखा बाँस घुसेड़ दिया।

इन्द्रनाथ उसी क्षण गिर पड़ा। उसके हाथ-पाँव फैले हुए थे।

"अरे, उसे मार डाला! मार डाला!"

"थामो उसे! थामो!"

"अरे कौन है वहाँ? थामो उसे!"

"अरे ख़ून ही ख़ून है चारों तरफ़!"

ज़मीन, आसमान, बल्कि समूची दुनिया इन्द्रनाथ की आँखों के सामने घूम रही थी। चाहे उसकी शक्ति ख़त्म हो रही थी, उसने फिर भी बैठने की कोशिश की, लेकिन तभी किसी ने उसके सर पर दो और वार किए और वह फिर औंधे मुँह ज़मीन पर आ पड़ा।

इन्द्रनाथ की आँखों के सामने अब एक काला धुँधलका छा गया था। उसे उसी अवस्था में कई चेहरे दिखे। वहाँ, उसके पिता, खड़ाऊँ कक्ष में खड़े हैं। लेकिन उनके पाँव नंगे हैं। वह, उसकी माँ रही, जो बातघर से आगे कभी नहीं गयी थी। वह अब बरगद के पेड़ की ओर भागती चली आ रही है! उसे कौन थामे हुए है? कौन थामे हुए है उसे? क्या यह दुर्गा है? अह! हा! उसे छूते हुए और उसके बाजुओं को दबाते हुए वह विलाप कर रही है—किसने तुम्हें यह चोट पहुँचायी? किसने तुम्हारी जान ली, मेरे जिगर के टुकड़े!—अह! क्या वह गिरिबाला है? किसने उसे जलाकर राख कर डाला? वहाँ अब कौन खड़ा है?

वह बड़े स्पष्ट शब्दों में कह रही है, "आओ, मेरा हाथ थामो! चलो मेरे साथ! ये सब लोग! अमीन! गुईमैनी, पुजारी, वे स्त्रियाँ! किसे वे अपने हाथों से थामे हुए हैं? क्या वह ईली है? वोह! वह दौड़ रही है! उसके बाल बिखरे हुए हैं! ईली! ईली! जगलिया नदी सूख गयी है! वह तो अब बची-खुची हड्डियों की नदी बन गयी है। नहीं, नहीं, यह नदी नहीं है। यह तो हड्डियों और काँटों का जंगल है। और उसके अपने खून की बूँदें उन काँटों और हड्डियों से टपक रही हैं! हाँ, उसका अपना ही खून!···"

**1981**

भूमि परिसीमन अधिनियम बर्फ़ानी तूफ़ान की तरह आया। इसमें कई संशोधन भी हुए। विभिन्न गोसाइयों के बेटों को कई दिन और कई रातें न्यायालयों की कारगुज़ारी पर बितानी पड़ीं। कुछ की तो राय यह थी कि जब उनकी ज़मीनें हमेशा के लिए चली गयी हैं, तो वे किताबों की दुकानें या कसाई की दुकानें ही खोल लें। एक या दो गोसाइनें, जो ज़मीन की धोखाधड़ी के मामले में फँसी हुई थीं या जो धोखे से अपनी बहुमूल्य भू-सम्पत्ति से वंचित कर दी गयी थीं और जिन्होंने अपने जीवन में पहले कभी बातघर को पार नहीं किया था, वे न केवल गुवाहाटी गयीं, बल्कि नौबत यहाँ तक आ पहुँची कि उन्हें जेल की सलाख़ों के पीछे भी बन्द किया जा सकता था।

1980 में सत्र में बिजली आ गयी। लेकिन इससे केवल कुछ ही घर रोशन हो पाये। बाक़ी के घरों में वही सरसों के तेल के दीये या मिट्टी के तेल की लालटेनें ही जलती थीं। अब जगलिया के किनारे रहने वाले गोसाईं और ब्राह्मण परिवारों की युवतियाँ निचली जाति के घरों में जाती हैं और वहाँ उनके बेटों से शादी रचाती हैं। बहुत से घर अफ़ीम की आदत से छुटकारा पा गये हैं, लेकिन फिर भी दो-एक घरों से पान के पत्तों के भूने जाने की गन्ध आती ही रहती है।

अब बिहार के सौदागर या काबुल से आये सौदागर सत्र में खुल्लम-खुल्ला घूमते हैं। वे निचली जाति की युवतियों को शादी का सपना दिखाकर या पूरे रस्मो-रिवाज़ के साथ उनसे शादी करके उन्हें ले जाते हैं। लेकिन अफ़सोस, ये युवतियाँ या तो बिलकुल बरबाद और अपमानित होकर लौटती हैं या उन्हें ज़िस्मफ़रोशी के धन्धे में बेच दिया जाता है···

हाईस्कूल अब विस्तार पा गया है। सत्र के निकट मिर्ज़ा में एक कॉलेज भी खुल गया है। युवक और युवतियाँ वहाँ आते-जाते हैं और शिक्षा प्राप्त करते हैं। उनमें से कुछ बड़े-बड़े अफसर भी बन गये हैं।

1981 में, तीस वर्ष बाद, जहाँ पहले पुराना, लकड़ी का पुल हुआ करता था, वहाँ अब एक बिलकुल नया स्टील और कंक्रीट का पुल बन गया है। यहीं पर बोलो की उस कम्युनिस्ट नेता से भेंट हुई जिसने छोटे गोसाईं का वध करवाया था। उसे जेल से लौटे काफ़ी समय हो गया है।

ग़रीबों और दलितों के लिए जितना दर्द इस व्यक्ति को होता था, इन्द्रनाथ के दिल में भी उनके लिए उतना ही दर्द था। दूसरे, वह बड़े गोसाईं का नाजायज़ बेटा है। उसकी माँ को काफ़ी ज़ेवर देकर अलग कर दिया गया था।

बोलो और यह व्यक्ति आपस में कई वर्षों बाद मिले थे, लेकिन उन्होंने एक-दूसरे को पहचान लिया था। दोनों ने दाढ़ी-मूँछ रख ली थीं जिसमें अब सफ़ेदी आ गयी थी। दोनों के शरीर सिकुड़ गये थे और उनकी त्वचा ढीली पड़कर लटकने लगी थी। दोनों ही अपने जीवन के आख़िरी दौर में थे।

बोलो ने अपना हाथ उठाकर उसे रुकने का इशारा किया था। वह व्यक्ति बिना किसी हीलोहुज्जत के रुक गया। बोलो उससे बोला, "तुमने ख़ून की नदी बहाकर उस ज़मीन को अपने कब्ज़े में ले लिया। क्या तुम उसका ग़रीब किसानों के बीच ठीक से बँटवारा कर पाये? क्या तीस वर्ष बीत जाने पर भी अब वे सन्तुष्ट हैं और खाते-पीते हैं?"

वह नेता-व्यक्ति चुप रहा। बोलो ने अपने हाथ को नचाया और अपनी बात जारी रखी, "इसी पुल के निकट हमने अपने अत्यधिक प्रिय गोसाईं के मृत शरीर को अग्नि के हवाले किया था!"

यह कहकर बोलो का गला एक क्षण के लिए भर आया। फिर वह उस व्यक्ति के एक क़दम और निकट हो गया और उसके माथे पर अपनी उँगली हिलाता हुआ रुक-रुककर बोला, "तुम, तुमने उसे मार डाला! तुम्हीं ने उसके टुकड़े किये!"

नेता अब गरजने लगा था, "किसानों के पेट ख़ाली थे! ···और···और तुम्हारा गोसाईं हौदे में बैठकर धान की कटाई करवाने आया था। इस तरह का तमाशा इससे पहले और किसी गोसाईं ने नहीं किया था!"

बोलो को कहना ही पड़ा, "क्या तुमने हौदे को ठीक से देखा था? ···वह हौदा घुन खाया था। केवल मुझे ही पता था कि उस व्यक्ति के भीतर क्या कुछ गुज़र रहा था!"

बोलो की उम्र अब चाहे ज़्यादा हो गयी थी, लेकिन वह अपने को क़ाबू में न रख सका। उसने अपना रूमाल निकाला और उससे अपनी आँखें पोंछीं। वह फिर बोला, "अपने प्राण त्यागने से पहले गोसाईं ने मुझे बताया था कि जो प्रयोग वह करना चाहता था, वह सफल रहा। लेकिन अब तुम कहते हो कि लोगों का पेट अब भी भरा नहीं है! तीस वर्ष बीत चुके हैं और अब भी लोग भरपेट नहीं खा पाते? लेकिन गोसाईं यह सोचते-सोचते ही चला गया कि···"

अब वह बुरी तरह से रो रहा था। उसके आँसू रुकते ही न थे। वह कहता गया, "मेरा विश्वास करो! उस हौदे में बैठने की उसकी कोई इच्छा न थी। मैं जानता हूँ कि उसके मन में कैसा तूफ़ान घुमड़ रहा था!"

वह व्यक्ति, जो तमाम उम्र अपने दिल में बदले की भावना लिये घूमता रहा, वह आसानी से मानने वाला नहीं था। कुछ देर तक वह बोलो के पीछे-पीछे चलता रहा। फिर बोला, "क्या तुम सच कह रहे हो? क्या वह हौदा घुन से खाया हुआ था?"

बोलो मुड़ा और उसके मुँह से ये शब्द निकले, "मैंने अपने हाथों से हाथी की पीठ पर उस हौदे को बाँधने में मदद की थी। वह हौदा वाक़ई घुन खाया था···"

---

# सन्दर्भ-शब्दावली

## भूमिका

1. सत्र : वैष्णव मठ। इनकी स्थापना असम के वैष्णव सन्तों ने की थी। कुछ-कुछ सत्र तो विशाल भूमि पर फैले हुए हैं और यह भूमि उन्हें अहोम राजाओं ने दान में दी थी। एक बार एक मुसलमान नवाब ने भी कुछ भूमि दान में दी। समूचे असम में ब्रह्मपुत्र के दोनों तटों पर ये सत्र सैकड़ों की तादाद में हैं और उस क्षेत्र की धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के केन्द्र भी बने रहे हैं। हालाँकि इनमें से अनेक सत्र बन्द होने के निकट भी हैं या विखण्डित होते जा रहे हैं, बाक़ी के सत्र अब भी काफ़ी सक्रिय हैं और उन्होंने असमिया संस्कृति को बचाए भी रखा है। प्रो. एम. नियोग ने अपनी पुस्तक *शंकरदेव एण्ड हिज़ टाइम्स* में लिखा है, "असम का वैष्णव सत्र चारों ओर से एक दीवार से घिरा रहता है और इसमें चार द्वार या कपाट होते हैं। भीतर कुटियों की चार कतारें या लम्बे आकार के चार मकान रहते हैं और प्रत्येक मकान में अनेक कमरे होते हैं। केन्द्रीय भाग में एक मन्दिर रहता है जिसे मणिपुट या भजघर कहते हैं। साथ में एक सभागार भी होता है। कुटियों की चारों क़तारें या लम्बे मकान हाटी कहलाते हैं। कुटिया या कमरा प्रायः एक ही आकार का होता है, लेकिन पूर्वी क़तार वाली कुटिया या कमरा थोड़े बड़े आकार का रहता है और वहीं पर मठाधीश या सत्र-अधिकार या सत्रीया रहता है। उसके अलावा वहाँ उप-अधिकार यानी डेका अधिकार या डेकासत्रीया तथा संस्था के अन्य कार्यकर्ता भी रहते हैं।"

2. अधिकार : इसे गोसाईं भी कहते हैं। यह सत्र का प्रमुख होता है और इसे इसी रूप में मान्यता प्राप्त होती है। एक अधिकार आध्यात्मिक प्रमुख तथा सामाजिक प्रमुख तो होता ही है, वह एक ज़मींदार

की तरह काफ़ी भूमि का मालिक होता है। एक तरह से हम उसे मानव-रूप में कोई छोटा-मोटा देवता मान सकते हैं। एस. सी. गोस्वामी ने अपनी पुस्तक *इंट्रोड्यूसिंग असम्स वैष्णविज़्म* में लिखा है, "अधिकार लोगों को न केवल उनके अनुयायी सर्वमाननीय मानते हैं, बल्कि हर मत-मतान्तर के दूसरे छोटे-बड़े लोग भी। जो सत्र अत्यधिक प्रभावशाली हैं, वहाँ किन्हीं अवसरों पर राज्य के प्रशासनिक प्रमुख स्वयं ही जाते रहे हैं।" वाइसरॉय लार्ड चैम्सफ़ोर्ड ने, अपनी असम-यात्रा के दौरान, विशिष्ट अधिकारों से एक बड़े दरबार में भेंट की थी।

3. महल : हाथियों को सधाने का केन्द्र। यहाँ जंगली हाथियों को पकड़ने से तथा उन्हें बेचने से जो राशि प्राप्त होती है, उसे भी इकट्ठा किया जाता है।

## पहला अध्याय

1. गोलोकधाम : चौसर का खेल। बिसात पर हिन्दू देवताओं के धामों के चित्र रहते हैं। इसमें आखिरी प्रस्थान गोलोकधाम होता है, जिसे भगवान् कृष्ण का निवास माना जाता है। इसमें भगवान् कृष्ण के साथ राधा तथा उनकी सखियाँ भी चित्रित होती हैं। जो खिलाड़ी सभी विघ्न-बाधाओं को पार करता हुआ यहाँ तक पहुँच जाता है, उसे विजयी मान लिया जाता है। उन दिनों यह खेल दक्षिणी कामरूप की महिलाओं में काफ़ी लोकप्रिय था।

2. सेवाली : सफ़ेद रंग का एक खुशबूदार फूल। इसे तथा इसके पत्तों को सब्ज़ी के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है।

3. अधिकार : देखें भूमिका : 2

4. जाति बांस : घने रूप से उगने वाला हरा बाँस।

5. मूगा-मेखला : विशेष प्रकार के रेशम से तैयार किया गया एक लम्बा परिधान जिसे असमिया औरतें अपने वक्ष तथा कमर पर बाँधती हैं।

6. सत्र : देखें भूमिका : 1

7. कामाला : महावत का सहायक। जंगली हाथी पकड़ते समय वह फंदेबाज़ों के सहायक के रूप में भी काम करता है।

8. बातघर : गोसाईं की हवेली का सजावटी द्वार।

9. सभा : नाट्य उत्सव जो दक्षिणी कामरूप में विशेष रूप से मनाया जाता है। इसमें पुराण, महाभारत एवं ऐतिहासिक कथाओं का उपयोग किया जाता है।

10. अमोटी : आषाढ़ (जुलाई) के चार दिन। कहा जाता है कि इन दिनों पृथ्वी रजस्वला होती है। इसलिए इसकी खुदाई रोक दी जाती है। असम की विधवाएँ इस अवसर पर एक उत्सव भी मनाती हैं।

11. बिजुली बांस : एक प्रकार का पतला, जंगली बाँस।

## दूसरा अध्याय

1. एंडी रेशम की पंजाबी : कैस्टर पौधे के पत्तों पर पाले गये कीड़ों से प्राप्त। विशेष प्रकार के रेशम से तैयार किया गया कुर्ता।

2. आहू धान : जून या जुलाई के महीनों में तैयार होने वाला धान।

3. कार्चीडरिया घास : एक प्रकार की लम्बी घास जो ज़्यादातर नदियों तथा झीलों के पास उगती है।

4. तूरी मछली : बिना चोइयाँ वाली एक प्रकार की दरियाई मछली।

5. माईशाना : छोटी मालकिन। गोसाईं परिवार की युवा बेटी। स्नेह-सम्बोधन।

6. गताला : असम, विशेष रूप से दक्षिणी कामरूप की महिलाओं द्वारा कन्धों पर ओढ़ा जाने वाला एक वस्त्र।

7. दोहार : हाथी के दो सौदागरों के बीच होने वाला व्यापार-सम्बन्ध। जंगली हाथी को पकड़ने और उसे बेचने से प्राप्त कमाई, जिसे दोनों पक्ष बराबर-बराबर बाँट लेते हैं।

8. शरी त्योहार : इस त्योहार के दौरान सभी देवी-देवताओं की मूर्तियाँ नदी के तट पर ले जायी जाती हैं और वहाँ उनकी खूब धूमधाम से पूजा की जाती है।

9. बसंती पूजा : यह त्योहार देवी बसंती से सम्बन्धित है। बसंती को देवी दुर्गा का ही रूप माना जाता है।

10. वैष्णव अहिनकपुथी : कामरूप के ब्राह्मणों की कर्मकाण्ड से सम्बन्धित एक पुस्तिका। इसका प्रणयन लखीदेव अट्टा ने किया था।

11. दोना : केले के तने से तैयार की गयी एक प्रकार की तश्तरी।

12. खंटी : नारियल के खोल से तैयार की गयी कलछी।

13. कनियार सेवा : अफ़ीमचियों की एक रस्म।

14. बादुली चाकी : बाँस की डोली में लटकने वाला सरसों का दीया।

15. ओ : एक प्रकार का अम्ल फल जिसे मछली के साथ पकाया जाता है। इसमें कई गूदेदार तहें होती हैं। असमिया कवि इसे उपमा के रूप में इस्तेमाल करते हैं। स्त्री के सुन्दर गालों की भी इससे तुलना की जाती है।

## तीसरा अध्याय

1. अमोटी : देखें, अध्याय एक : 10
2. जटर-कटर बुड़ी : दुल्हन के साथ दूल्हे के घर भेजी जाने वाली बूढ़ी नौकरानी।
3. पाठामारा काठी : बरामदे का वह भाग जहाँ पुराने ज़माने से चली आ रही श्राद्ध से सम्बन्धित एक धार्मिक प्रथा के अन्तर्गत बकरी के सर को दबा दिया जाता है और वह वहीं दम घुटकर मर जाती है।
4. आयति : शुभ मानी जाने वाली विवाहित स्त्री जिसका पति अभी जीवित है। सौभाग्यवती।

## अध्याय चार

1. जंगूर : एक पेड़ जिसके पत्ते बैलगाड़ी की छाजन में काम आते हैं।
2. पल्ला : एक प्रकार की देहाती नाट्यशाला जिसकी शुरुआत बंगाल से हुई थी।
3. गोधूली गोपाल : एक प्रकार का फूलदार पौधा जो शाम के समय खिलता है। इसके फूल बैंगने और पत्ते अत्यधिक गहरे हरे होते हैं।
4. जरमन बान : लंटना झाड़ी।
5. लंटना : एक प्रकार की झाड़ी।
6. बापू : स्नेह का शब्द : एक ज्ञानवान ब्राह्मण या पुजारी या युवक को भी इसी नाम से पुकारा जाता है।
7. गरैमारी : एक दामोदरिया सत्र।

## अध्याय पाँच

1. साँची : काग़ज़ के प्रचलन से पहले साँची पेड़ की छाल जिस पर पाण्डुलिपियाँ तैयार की जाती थीं।
2. व्यास आश्रम : महाभारत के रचयिता ऋषि व्यास द्वारा प्रणीत मानी जाने वाली एक कृति।
3. लेटेकू : नींबू की जाति का एक रसीला फल।
4. भोल : बड़ी तोरई का खोल।

5. राभा : असम के मैदानों की एक आदिवासी जाति।

## अध्याय छः

1. दोल उत्सव : एक वैष्णव उत्सव जिसके अन्तर्गत भगवान् कृष्ण का जन्म-दिवस मनाया जाता है।
2. बगौरी : बेर।
3. धगी : पीतल या लकड़ी की स्टेंड वाली एक प्रकार की तश्तरी।
4. तीन सत्र गसोई : तीन सत्रों का अधिकार।
5. डूगडुगी : कामरूप में पहने जाने वाला लाल नगों से जड़ा, ढोलक की शक्ल का ज़ेवर।
6. गलपट्टा : गले में पहना जाने वाला एक विशिष्ट असमिया ज़ेवर।
7. शालिकि थूटिया : पीले धब्बों वाला एक साँप।
8. धातू तमरेश्वरी : साँप काटे का इलाज बताने वाली एक मन्त्र-पुस्तिका।
9. धानु प्रायश्चित्त : शुद्धिकरण की एक रस्म जिसके अन्तर्गत प्रायश्चित्त करने के लिए पुजारी को कुछ राशि तथा अन्य उपहार दिये जाते हैं।
10. चन्द्रायण प्रायश्चित्त : एक कठोर प्रायश्चित्त
11. मचुआगुम
12. हुलंगागुम : असम में पाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के नाग।
13. मैरगुम :

## आठवाँ अध्याय

1. मालभोगा केला : असम का केला जो बड़े चाव से खाया जाता है।
2. भेम : अफ़ीमचियों द्वारा उपयोग में लाया जाने वाला एक पात्र जिसे मिट्टी के घड़े के ऊपरी भाग को तोड़कर तैयार किया जाता है।
3. फुटी : कामरूप के दक्षिणी तट के क्षेत्र में पहना जाने वाला कानों का एक ज़ेवर, जिसमें अनार के फूलों की बनावट रहती है।
4. काक : घने बाँसों के झुरमुट वाला बाँस।

## नवाँ अध्याय

1. पुरुष मोहिनी मन्त्र : कामरूप की स्त्रियों द्वारा पुरुषों को वश में करने वाला मन्त्र। किसी समय यह बहुत प्रचलित था।

2. साँची : देखिए पाँचवाँ अध्याय : 1

3. खरिका जहा : बढ़िया सुगन्ध देने वाला चावल। यह इतना बारीक होता है कि इसकी तुलना दाँत खोदनी, यानी खरिका से की जाती है।

4. भोजन दक्षिणा : प्रार्थना तथा रस्म-अदायगी के बाद मृतक के लिए किये जाने वाले सामूहिक स्मरण का एक अंग। इसके अन्तर्गत घर का मालिक ब्राह्मणों के पाँव धोता है और उन्हें भोजन कराने के बाद दान-दक्षिणा देता है। इस दक्षिणा की ब्राह्मण लोग आपस में अदला-बदली भी कर लेते हैं। कभी-कभी कहा-सुनी या मारपीट भी हो जाती है।

5. कालिया : एक वाद्य-यन्त्र जिसे मुँह से बजाया जाता है। यह भैंस के सींग से तैयार होता है।

6. ओ (फल) : देखें अध्याय 2 : 15

7. गुई : एक प्रकार की बृहदकाय छिपकली जिसे शिकार करके खाया जाता है।

8. प्रसाद जहा : निहायत बढ़िया क़िस्म का चावल।

9. बराली मछली : बिना चोइयां वाली एक दरियाई मछली जिसे कामरूप के लोग आमतौर पर खाते नहीं। उनका मानना है कि नदी में फेंकी गयी लाशों को यह चट कर जाती है।

10. साल मछली : सर्प की तरह दिखने वाली मछली।

11. ऊलचहरा : बरसात के दिनों में कामरूप में हर कहीं उगने वाला, चकत्तेदार, एक प्रकार की अरबी का पौधा।

12. मुक्सा और सिद्धा : दान में दिया गया गमछा और खाद्य पदार्थ।

13. मियादी खिराजी : कुछ समय के लिए दिया गया ज़मीन का पट्टा जिस पर लगान भी चुकाना होता है।

## दसवाँ अध्याय

1. भगत : सत्र में रहने वाला तथा भगवान् विष्णु या शिव की सेवा में रत व्यक्ति।

2. कुंकी : जंगली हाथियों को पकड़ने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित हाथी।

3. आगेत : आगे बढ़ने के लिए हाथी को दिया गया संकेत।

4. चेई : अपने बायें या दायें लेट जाने के लिए हाथा को दिया गया संकेत।

5. बिरि : हाथी को दिया जाने वाला एक संकेत।
6. मायंग : मायंग में रहने वाले तान्त्रिक।
7. आधी : ज़मींदार और काश्तकार असामी के बीच हुआ समझौता जिसके अन्तर्गत असामी उपज का आधा भाग ज़मींदार को देता है।
8. चुकानी : ज़मींदार और काश्तकार असामी के बीच हुआ समझौता जिसके अन्तर्गत काश्तकार ज़मींदार को उपज का आधा हिस्सा देता है या उसके बदले में कोई और जिंस या नक़द राशि देता है।
9. गजमूर्ख : महामूर्ख। बिना हीलोहुज्जत काम करने वाला व्यक्ति।
10. तेलाच : सफ़ेद चादर।
11. बरकापुर : बड़े आकार की सूती शाल।
12. घंटाकरण : लाल रंग का एक बड़ा फूल।
13. खुरमा : एक तरह की सूखी मिठाई।
14. मियादी खिराज : देखें नवाँ अध्याय : 13
15. शुरी जाति : गोसाइयों की पालकी ढोने वाली एक निम्न जाति। ये लोग देसी शराब बनाकर उसे बेचते भी हैं।
16. कालिया : देखें, नवाँ अध्याय : 5
17. हायहल : विवाह के तुरन्त बाद दुल्हन और दूल्हे द्वारा लिया जाने वाला मन्त्र, ताकि दुल्हन रसोईघर में दाख़िल हो सके।
18. खैरा
19. पाबा
20. हिस्सल : कामरूप ज़िले में उगने वाले अपनी क़िस्म के पेड़।
21. रबाबटेंगा : इसके पेड़ में बड़े आकार के नींबू जैसे रसदार फल लगते हैं।
22. बापा : छोटी उम्र वालों के लिए प्रयोग में आने वाला स्नेह-शब्द।

## ग्यारहवाँ अध्याय

1. दुधखादी
2. गहरा : स्थानीय पेड़।
3. पामा
4. हाडकटा : हड्डियों की शक्ल वाले पेड़।
5. ओझा : तन्त्र-विद्या के बल पर रोगों का इलाज़ करने वाला। तन्त्री यन्त्र बजाकर गाने वाले समूह का नेता।

6. धकर : असम का एक विशिष्ट पक्षी।
7. डल बाँस : एक क़िस्म का बाँस।
8. शालिकि थूटिया सर्प : देखिए, अध्याय 6 : 7
9. मेला शिकार : पालतू हाथियों की मदद से जंगली हाथियों को पकड़ने की एक विधि।
10. चमबईत : घुटने टेककर हाथी को झुकने का संकेत।
11. खोलबुक : हाथी के लिए एक और संकेत-शब्द।
12. गलसी जरी : जंगली हाथी को पकड़ने के लिए इस्तेमाल में लाया जाने वाला रस्सी का फंदा।
13. मित दाओ : एक प्रकार की तलवार।

## बारहवाँ अध्याय

1. बतेश्वरी शाली : खुशबूदार चावल की एक क़िस्म।
2. भोर, 3. गांधी : कामरूप में पाये जाने वाले ख़ास क़िस्म के कीड़े जो धान के खेतों को बरबाद कर देते हैं।
4. पचतिया : एक स्वदेशी पेड़।
5. मुक्सा : असम का आम इस्तेमाल में आने वाला तौलिया।
6. कचारी : असम के मैदानी आदिवासी जिन्हें सबसे पुराना माना जाता है।
7. मदन सावन : कामदेव को दर्शाती एक नृत्य भंगिमा।
8. बगुला सावन : बगुले के धीरज को दर्शाती एक नृत्य भंगिमा।
9. नेवला सावन : नेवले की द्रुतगति को दर्शाती एक नृत्य भंगिमा।
10. तौजत्तिका सार : ओझाओं तथा गाँवों की गायन मण्डलियों का मार्गदर्शन करने वाली एक दुर्लभ चित्रमय पुस्तक। मूल रूप से यह साँची पेड़ की छाल पर लिखी गयी थी।
11. बेहूला : असम की एक पौराणिक नायिका जो अपने पति को यमराज से वापस ले आयी।
12. गुलंछ : एक प्रकार का सफ़ेद फूल।
13. बीरा : दक्षिणी कामरूप में इसे बाँसों में निवास करने वाला एक भूत माना जाता है। इस क्षेत्र के तांत्रिक कोई विशेष मन्त्र पढ़कर इसे अपने वश में कर लेते हैं और इससे उलटे-सीधे काम करवाते हैं, विशेषकर शत्रुओं को नष्ट करने के लिए।

14. इंकलाब ब्रिंदाबून : इंकलाब ज़िंदाबाद का एक भ्रष्ट रूप। गँवारू लोग इसका इसी प्रकार उच्चारण करते थे।
15. रूपीत भूमि : जुती हुई भूमि।
16. टील का फूल : तिल का फूल।
17. एजमाली भूमि : सांझी भूमि।
18. एकनिया पट्टा : एक साल के लिए पट्टे पर दी गयी भूमि।
19. बाराचभेटरी : जो स्त्री बारह पुरुषों के साथ सो चुकी हो।
20. गुरुलीला : कामरूप के दामोदरिया सम्प्रदाय के संस्थापक सन्त दामोदर देव की लीला।

## तेरहवाँ अध्याय

1. कोजागर कुमुदी लक्ष्मी पूर्णिमा : बहुत शुभ मानी जानेवाली पूर्णिमा।
2. व्यवहार दर्पण : कामरूप की हिन्दू रीतियों का बखान करनेवाली एक निर्देशिका।
3. जनती संन्यासी : गुफाओं में रहने वाले और कठोर कर्मकाण्ड करने वाले संन्यासी।

## चौदहवाँ अध्याय

1. बहारिस्तान-ए-ग़ैबी : एक पुस्तक जिसमें सत्रहवीं शताब्दी में मुग़ल सेनापति, मिर्ज़ा नाथन, द्वारा दक्षिणी कामरूप पर किये गये आक्रमण का विवरण है।
2. भगत-सेवा : एक प्रकार का रहस्यवादी अनुष्ठान जिसमें कभी-कभी स्त्री के गुप्तांगों को भी उपयोग में लाया जाता है।
3. ध्रुव-चरित : एक पौराणिक पात्र, ध्रुव की गाथा। विष्णु पुराण में ध्रुव को स्वयंभू मनु का पौत्र तथा उत्तानपाद का पुत्र कहा गया है। इन्होंने अपनी विमाता सुरुचि द्वारा पिता की गोद से हटाये जाने पर घोर तपस्या की थी और अपना स्थान सुनिश्चित किया था।
4. कच्चा पट्टा : अपंजीकृत भू-विलेख।
5. गुट्टीमाली : चमेली की तरह का एक सफ़ेद फूल।
6. फुलचुरी : ग्रामीण स्तर पर उस व्यक्ति पर मुक़दमा चलाया जाना जो किसी युवती को फुसलाकर भगा ले जाता है।
7. डुबोरी : दूब।

## पन्द्रहवाँ अध्याय

1. नामघोष : सन्त शंकरदेव के सुविख्यात चेले सन्त माधवदेव द्वारा रचित वैष्णव मत से सम्बद्ध गीत-पुस्तक।
2. सोनारू : गुलमोहर का पेड़।
3. काओइमाछ : काँटेदार छोटे आकार की दरियाई मछली।
4. रिहा : छोटी चादर जिसे आमतौर पर विवाहित स्त्रियाँ ही ओढ़ती हैं। इसके ऊपर एक और चादर भी ओढ़ी जाती है।
5. भगवती : वह व्यक्ति जो 'भागवत' का पारायण करता है। भागवत में श्रीकृष्ण का जीवन-चरित्र और उनकी लीलाओं का वर्णन रहता है।
6. नगरबेरा :
7. भटेरा : झाड़ियों के प्रकार।
8. कन्यापन : दुल्हन की कीमत। भारत में सम्भवतया असम ही एक ऐसा राज्य है जहाँ दहेज-प्रथा नहीं है। इसके विपरीत कामरूप के कई गोसाइयों ने अपनी बहुओं को उपहार के तौर पर नक़दी के रूप में या वैसे, काफ़ी कुछ दिया। इस प्रथा का एक परिणाम यह भी हुआ कि दक्षिणी तट के कई ग़रीब ब्राह्मण युवकों को कुँवारा ही रह जाना पड़ा। उनमें से कुछ पुरोहित के नाते कमाई करने के लिए कूच-बिहार भी गये ताकि 'कन्यापान' के लिए रक़म जुटा सकें। इस तरह कूच-बिहार जाने की प्रथा को 'विलायत जाना' भी कहा जाता था।
9. मुग़ल-पठान : मुग़ल आक्रमणकारियों द्वारा असम में लाया गया एक खेल।
10. बंखा : बाँस की तरह की एक झाड़ी।
11. सांधा : चावल का चूरा जो दही या दूध तथा गुड़ के साथ लिया जाता है।
12. बोटा : गोरी लगी एक प्रकार की तश्तरी।
13. पूरा : ऊपरी असम में अनाज की तीन टोकरियाँ और कामरूप में चार टोकरियाँ या चार बीघे ज़मीन।
14. ब्रह्मोत्तर : अहोम राजाओं द्वारा ब्राह्मणों को दी गयी लगान-मुक्त भूमि।
15. धर्मोत्तर : शूद्र पुजारियों को अनुदान में मिली जागीर।
16. शाली : एक विशेष प्रकार का सुगन्धित चावल।
17. मण्डल : पटवारी (भूमि का सर्वेक्षण करने वाला)
18. चुंगापीठा : गुड़ और चावल-चूरे से बनी सोंधी मिठाई।
19. लारुआ गोपाल : बाल गोपाल।
20. नत्थीपत्र : ज़मीन के पट्टे के पुराने काग़ज़ात।

ISBN 81-7201-760-X

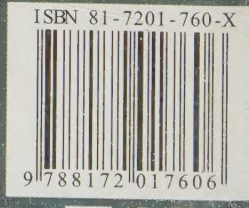


मूल्य : ₹ 120

साहित्य अकादेमी